सौ श्रेष्ठ बाल कहानियाँ

सौ श्रेष्ठ बाल कहानियाँ

संपादक
डा. रोहिताश्व अस्थाना

गोल्ड लाईन बुक्स, गाज़ियाबाद

प्रकाशक : गोल्ड लाईन बुक्स
बी-108, सूर्य नगर
जिला गाजियाबाद (उ०प्र०)
मूल्य : 350.00
प्रथम संस्करण : 2003
आवरण : इलहाम
मुद्रक : पवन ऑफसैट प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

समर्पण

परम श्रद्धेय बहिन–
श्रीमती शकुंतला सिरोडिया
एवं परम श्रद्धेय
अग्रज द्वय–
पं विनोद चंद पांडेय 'विनोद'
व डॉ. राष्ट्रबन्धु जी
जो स्वयं बाल साहित्य की त्रिमूर्ति हैं–
के कर-कमलो में
सादर - समर्पित

—डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
(संपादक)

भूमिका

बाल साहित्य में कविता और कहानी, दो विधाओं का सबसे अधिक विकास हुआ। उपन्यास और नाटक इसके बाद ही हैं। बच्चे कहानियाँ अधिक पसन्द करते भी हैं। जीवन की कोई घटना, किसी की वीरता का वृत्त, किसी के जीवन का त्याग, दया और करुणा के मार्मिक अक्सर सहयोग के उज्ज्वल क्षण, बालकों की अपनी विभिन्न समस्याएँ, देश और समाज से उनके सम्बन्ध तथा देश प्रेम की भावना आदि इतने विषय हैं कि बाल जीवन एक कथा सरित्सागर अपने आप बनता चला जाता है। प्रेमचन्द ने कहानियों की उपस्थिति सर्वत्र बताई थी। यह तथ्य बाल कहानी सृजन के सम्बन्ध में भी सही है।

बाल कहानी आधुनिकता की सीमा पार कर अतीत की ओर भी उन्मुख होती है। उपनिषद्, पुराण और इतिहास बाल कहानी के अच्छे संदर्भ स्रोत हैं। उन स्रोतों का दोहन हुआ भी है और अनेक अच्छी बाल कहानियाँ रची गई हैं।

बाल कहानी से जुडे कुछ सवाल भी उठाये गये जैसे परी कहानी बनाम, वैज्ञानिक कहानी और सामंती कहानी बनाम आधुनिक कहानी। परी कहानी का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। ये कहानियाँ पूर्णत. काल्पिनिक (कपोल) कल्पना पर आधारित होती हैं। बालक की आरम्भिक अवस्था के लिए ये कहानियाँ उपयुक्त हो सकती हैं। पर जब बच्चा बड़ा होने लगता है तो उसका यथार्थ कहानियों से ही सरोकर होना चाहिए और सामंतवाद समय के साथ समाप्त हो चुका है।

अब राजा-रानी का गुणगान करना बालक को कालातीत बनाना है। बालक को तो वर्तमान और भविष्य में अर्थात् इक्कीसवीं शताब्दी में जीना है। अतः यथार्थ वादी आधुनिक तथा वैज्ञानिक कहानी ही बालक के लिए उपयोग हो सकती हैं।

बाल कहानियों को संकलित करने की परम्परा आठवें दशक से चल पडी थी। विशेष रूप से अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के साथ।

सन् 1979 में जनलोक प्रकाशन, मथुरा से 'कथालोक' बाल कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ था। "केशव प्रयास का बाल कथा अंक" राजा की रजाई भी लगभग उसी समय प्रकाशित हुआ था। सन् 1979 मे ही "बच्चों की सौ कहानियाँ" संग्रह प्रकाशित हुआ था, जिस का सम्पादन डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने किया था और जो संकलन कार्य के लिए एक मानक था। इसी सग्रह ही भूमिका में बताया गया है कि हरि शंकर परशाई की 'मुन्नू की स्वतंत्रता' (1949) हिन्दी की प्रथम आधुनिक बाल कहानी हो सकती है, क्योंकि आधुनिक बाल चेतना का संस्पर्श इस कहानी में पहली बार देखने को मिला। इसी क्रम में डॉ. शोभ नाथ लाल के सम्पादन मे सन् 1991 में 'चौबीस बाल कहनियां' संग्रह प्रकाशित हुआ जबकि सन् 1993 में दो बाल कहानी

सग्रह प्रकाशित हुए शमशेर अ० "वान द्वारा सपादित 'बयालीस बाल कथाए' और बाल शौरि रड्डी द्वारा सपादित "श्रेष्ठ बाल कहानिया" भारतीय भाषा परिषद (कलकत्ता) द्वारा प्रकाशित "श्रेष्ठ बाल कहानियाँ" में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ बाल कहानियाँ सकलित की गई हैं। यह अपने ढग का पहला संग्रह है। जिसमें सभी भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि बाल कहानियाँ एक स्थान पर आ गई हैं।

'बाल साहित्य संवर्द्धन योजना' के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से मनोहर वर्मा के संपादन में सन् 1995 में 'प्रतिनिधि बाल कहानियाँ' संग्रह प्रकाशित हुआ। उस प्रकार इन संग्रहों के माध्यम् से बाल कहानियों का विशाल संकलन हो गया है। सभी सग्रहों की अपनी-अपनी दृष्टि हैं। यही कारण है कि जहां सभी संग्रहों में कुछ सामान्य लेखक है, वही हर संग्रह में कुछ नये लेखक भी हैं।

'चुनी हुई बाल कहानियाँ' संग्रह में प्रत्येक रचनाकार की दो-दो बाल कहानियां ली गई है। इसमें कुछ रचनाकार पहली बार संकलित हुए हैं। इन रचनाकारों में कहानी सृजन की भरपूर सम्भावनाएँ हैं। संकलन की कहानियों में बाल मानासिकता की पकड है।

प्रतिष्ठित रचनाकारों ने तो बाल कहानी को चरम बिन्दु तक पहुंचाया ही है, नये रचनाकारों ने भी थोड़े ही समय में अग्रिम पंक्ति में स्थान बना लिया है। संकलित कहानियो का फलक अत्यन्त व्यापक है। इसमें कल्पना की ऊंची उड़ान भी है, पौराणिकता और ऐतिहासिकता की छाप भी है, साथ ही बाल जीवन के यथार्थ की गहरी पैठ भी है। कहानियो मे पर्याप्त वैविध्य है। हर कहानी का अपना रस है। कहीं एक रसता नहीं है। बाल पाठक विविध कोणों से रची गई इन कहानियों का भरपूर आनन्द प्राप्त करेंगे।

संकलन की कहानियाँ भाषा, शिल्प और कथ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है रचनाकारो ने बाल कहानियों को भाषा का एक सुनिश्चित रूप प्रदान किया है और हर कहानी शिल्पगत सौन्दर्य की नई दिशा खोलती है और कथ्य ही नवीनता तो कहानियों का विशिष्ट आकर्षण है ही।

बाल कहानियों का संकलन कार्य कितना महत्वपूर्ण हो चुका है, यह इस संकलन से ज्ञात होता है। संकलन बाल कहानी को एक दिशा भी प्रदान करता है और बाल पाठको को जीवन मूल्यों से परिचित भी कराता है। डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ने बड़े परिश्रम से यह संकलन तैयार किया है। उनके 'चुने हुए बालगीत' संकलन की तरह ही हिन्दी जगत् 'चुनी हुई बाल कहानियाँ' संग्रह का भी स्वागत करेगा।

–डॉ. श्री प्रसाद

एन 9/87 डी 77

जानकी नगर

पो० – बजर डीहा

बाराणसी – 221109 (उ. प्र)

चुनी हुई बाल कहानियाँ

आजकल बच्चे कामिक्स के बाद दूसरे नम्बर पर बाल कहानियाँ पढ़ना पसन्द करते हैं। प्राचीन काल में जब हमारे समाज में संयुक्त परिवार का जीवन्त रूप देखने को मिलता था, तब बच्चे दादी और नानी से ये बाल कहानियाँ सुना करते थे। यह कहानियॉ कपोल कल्पनाओं से ओत-प्रोत होते हुए भी प्रेरणा प्रदान करने मे सक्षम हुआ करती थीं।

आज युग बदल गया है। आज सर्वत्र ही विज्ञान का बोलबाला है। आज बच्चे अपनी आयु की अपेक्षा अधिक समझदार हो गए हैं। अत: आज के बच्चों के लिए बाल मनोविज्ञान पर आधारित रोचक, तथ्यपरक बाल परिवेश पर आधारित, नैतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को जाग्रत करनेवाली सोद्देश्य एवं प्रेरक बाल कहानियों की विशेष आवश्यकता है।

इसी उद्देश्य से मैंने अनेक बाल कथाकारों की चुनी हुई बाल कहानियाँ इस सकलन के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत संकलन में जहा वरिष्ठ कथाकार गण सम्मिलित हैं। वहीं नए किन्तु प्रतिभा सम्पन्न कथाकारों को जोडना हमने अपना दायित्व समझा है। अनेक बाल कथाकारों से बार-बार आग्रह करने के उपरान्त भी अपेक्षित सामग्री न मिल सकी, अत: उनके नाम छूट जाना स्वाभाविक ही है। पर इसके लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं। मैंने यह भी प्रयास किया है कि प्रस्तुत संकलन स्वातंत्र्योत्तर बाल-कथा सहित्य का प्रतिनिधित्व कर सकें।

इन बाल कहानियों में भाव, कथ्य एवं शिल्प के विविध वर्ण स्वरूप सभिहित हैं। प्रत्येक बाल कहानी मनोरंजक होने के साथ-साथ प्रेरक भी है। इक्कीसवीं सदी की ओर जाते हुए बच्चों को यदि हम अपन अतीत के गौरव से परिचित करा सके। उनमें नैतिक मूल्य भर सकें और उन्हें राष्ट्र के भावी कर्णधार बनने की प्रेरणा दे सकें तो सचमुच यह एक महान् कार्य होगा।

इसी पृष्ठ भूमि मे प्रस्तुत संकलन का संपादन करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। जब मैं संपादन कार्य कर रहा था तो सोचा था कि भूमिका भी मैं ही लिखूंगा। परन्तु संयोग से दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ पर मुझे 'बाल साहित्य : एक शताब्द'' विषय पर बाल सहित्य के अधिकारी विद्वान डॉ श्री प्रसाद जी से साक्षात्कार लेने का अवसर मिला। उनकी विद्वता और वरिष्ठता को देखते हुए उसी समय मैंने

उनसे इस बाल कथा संकलन की भूमिका लिखने का आग्रह किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। निश्चय ही उनकी भूमिका से संकलन के गले पर चार-चाँद लग गए हैं। इसके साथ-साथ उनकी भूमिका से इस संकलन की कहानियों को पढ़ने व समझने में बड़ी सहायता मिल सकेगी। उनकी इस कृपा के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

मैं उन सभी बाल कथाकारों का हृदय से आभारी हूं जिनकी बाल कहानियाँ प्रस्तुत संकलन में संकलित हैं।

अनौपचारिक रूप से मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती बीना कुमार अस्थाना, बहिन श्रीमती सुलेखा पांडेय एवं पुत्रत्रयी-साकेत, सुलेख, सन्देश का हृदय से आभारी हूं जिनका स्नेह व आत्मीय भाव ही मेरे जीवन का सम्बल बन गया है।

एक विशेष आभार प्रदर्शन शेष है—अग्रजी श्री वेद प्रकाश जी के प्रति। वे सदैव ही प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान करते रहते हैं। प्रस्तुत संकलन को आकर्षक व स्तरीय रूप में प्रकाशित करना उनके ही सामर्थ्य की बात है।

आशा है "चुनी हुई बाल कहानियाँ" बच्चों, बड़ों और शोधार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

डॉ. रोहिताश्व अस्थना
(संपादक)
ऐकांतिका
निकट - बावन चुंगी चौराहा,
हरदोई-241001 (उ. प्र.)

विषय सूची

निरीह प्राणियों की बलि

एक गांव में अतुल, प्रतुल, दिलीप और संतराम चार दोस्त रहते थे। गांवों के सामाजिक वातावरण, रहन-सहन का पूरा-पूरा प्रभाव उन लोगों पर था। एक दिन चारों दोस्त गांवों की उत्तर दिशा में मुंगफली खाने खेत पर गये। वहां उस खेत से लगा हुआ एक छोटा सा तालाब था। तालाब के मेड़ पर एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ था। अचानक अतुल पीपल के ऊपर मधुमक्खियों का छत्ता देखकर जोर से चिल्लाया, "वो देखो-मधुमक्खियो का छत्ता–चलो पत्थर से मारते हैं, पत्थर मे जब शहद लगकर नीचे आयेगा चूसने में मजा आ जायेगा।" अतुल, दिलीप और सतराम कुछ समझ पाते इसके पहले प्रतुल पत्थर उठाकर छत्ते में मार चुका था। छत्ते पर पत्थर लगते ही मधुमक्खियां भिन्नभिनाती हुयीं उन लोगों की तरफ झपटीं। अतुल वहीं मुंगफली के पौधों के बीच झुककर छुप गया लेकिन शहद लगे पत्थर को पाने के लिए प्रतुल, दिलीप और संतराम भागे। मधुमक्खियां उड़-उड़ कर उन्हें डंक मारने लगीं। संतराम जल्दी से तालाब में कूद गया उसको देखकर प्रतुल और दिलीप भी तालाब में कूद गये। उसके बावजूद मधु मक्खियो ने उनका पीछा न छोड़ा। जब भी पानी से उनका कोई भी अंग बाहर निकलता था मधुमक्खियां डंक मार देती थीं। मधुमक्खियों ने अतुल को बिल्कुल भी डंक नहीं मारा था। संतराम के शरीर पर सबसे अधिक डंक थे। तालाब से बाहर आने बाद चारों मित्र गांव के मैदान की तरफ भागे। वहीं घने बरगद के नीचे पहुंच अपने-अपने शरीर में लगे डंक दिखाने लगे। संतराम की पूरी पीठ में डंक लगे थे। उसे निकालते हुये प्रतुल ने कहा "यार संतराम, गांव में तुमने देखा है न, कि बिच्छु के डंक मारने, सांप के काटने से या बुखार आदि आ जाने से बैगा को बुलाकर झाड़-फूंक कराया जाता है। बाद में उसे मुर्गी-बकरी आदि बली के लिये दी जाती है। वैसे उस तरह की झाड़-फूक तो हम लोग नहीं कर सकते लेकिन बलि देने के लिये कुछ कहो तो, तुम ठीक हो सकते हो।" प्रतुल जब बड़-बड़ कर रहा था तो अतुल बोला बनिया (ड्रेगन फलाई) की बलि देकर उसका धड़ इसके घावों मे लगाने से ठीक हो सकता है। इतना सुनना था कि दिलीप और प्रतुल बनिया पकड़-पकड़ कर उसका सर अलग कर देते थे और अतुल संतराम के घावो मे रगड़ता जाता था। उसी समय गांव के बड़े गुरूजी उधर से जा रहे थे। उन्होंने

चारो के नजदीक आकर पूछा 'क्या कर रहे हो गुरूजी' से प्रतुल ने डरते डरते सारी बात बतायी। उन्होंने चारों को डांटते हुए कहा, ''मूर्खों, अपनी मुर्खता के चलते निरीह प्राणियों की हत्या क्यों कर रहे हो ? फिर चारों को एक-एक झापड़ मारते हुए बोले, ''संतराम तुम मेरे घर चलो में दवा दूंगा जिससे ठीक हो जाओगे और आईदा से कहीं मैंने तुम लोगों को इस तरह का काम करते देख लिया तो मुझसे बुरा कोई न होगा। आदमी की बीमारी निरीह प्राणियों की बलि के देने से नहीं बल्कि दवाईयों से ठीक होती हैं।'' उन चारों के दिमाग में गुरूजी की बात आ गई, उस दिन से उन्होंने बलि के नाम पर निरीह प्राणियों को न मारने की शपथ ले ली।

—अक्षय मिश्रा
गौशालापारा रामभाठा
रोड़-रायगढ़

मूर्ख बाज

एक गांव में रामधन नाम का एक आदमी रहता था। उसे चूजों से बहुत प्यार था। वह अक्सर अपनी हथेली में चूजा लेकर घूमा करता था एक दिन एक बाज न जाने कहां से उड़ता हुआ आया और उसके हाथ से चूजे को झपटकर उड़ गया। रामधन बेचारा मन मसोसकर रह गया। वह अपनी आदत के अनुसार चूजे को बिना हथेली में रखे कहीं नहीं जाता था। अत: फिर से दूसरा चूजा हथेली मे रखकर घूमने लगा। चार दिन बाद फिर से वही बाज दूसरे चूजे को भी उसकी हथेली से ले उड़ा। रामधन इस हादसे से अत्यन्त दुखी हो गया। परन्तु वह अपनी आदत से लाचार था।

एक सप्ताह के बाद वह पुन: अपनी हथेली पर एक और चूजा लेकर निकला लेकिन इस बार वह सतर्क था। उसने अपने दूसरे हाथ की तर्जनी में तेजधार का एक ब्लेड बांध रखा था। वह अभी कुछ दूर चला ही था कि सामने से बाज को अपनी हथेली की ओर झपटते देखा। उसने तुरंत अपनी हथेली को थोड़ा नीचे करते हुए ब्लेड बंधी ऊंगली को ऊपर कर दिया जिससे ब्लेड बाज के पेट को फाडता चला गया। उसकी अंतड़ी बाहर लटकने लगीं। अचानक उस मूर्ख बाज ने उसे चूजे की अंतड़ी समझकर जोर से खींचा लेकिन पलक झपकते ही वह स्वय जमीन पर गिरकर तड़पने लगा। रामधन ने उस दिन अपनी चालाकी से चूजे को बचा लिया लेकिन बाज अपनी मूर्खता से अपनी जान गवां बैठा।

बच्चों, सोच समझकर काम करने से रामधन ने अपने शत्रु को नष्ट करने मे सफलता पायी जबकि बिना विचार किए कार्य करने में बाज का नाश हो गया।

—अक्षय मिश्रा
गौशालापारा रामभाठा
रोड़ रायगढ़ (म. प्र)

वर्षगाठ

बंटी की मम्मी सो कर उठीं तो रोज की तरह आज भी बंटी को जगाने के लिए उसके कमरे में गयीं, लेकिन यह क्या ? बंटी का बिस्तर तो खाली था। बंटी की मम्मी को बहुत आश्चर्य हुआ कि रोज सुबह कई बार जगाने, झिंझोड़ने और डांटने के बाद जगने वाला बंटी आज इतने सवेरे अपने आप कैसे उठ गया ? लैट्रीन का दरवाजा बन्द था इसलिए बंटी की मम्मी ने सोचा कि शयद बंटी लैट्रीन गया होगा। वह अपने काम में लग गयीं।

धीरे-धीरे पांच, दस, फिर पन्द्रह मिनट बीत गये। लेकिन बंटी लैट्रीन से नहीं निकला। बंटी की मम्मी को चिन्ता होने लगी उन्होंने लैट्रीन के दरवाजे को हल्के से ढकेला। हाथ का दबाव पड़ते ही दरवाजा खुल गया। बंटी लैट्रीन में नहीं था। बंटी की मम्मी परेशान हो उठीं और बंटी-बंटी आवाज लगाती आंगन की तरफ आयीं तो देखती क्या हैं। आंगन में पिछवाड़े की तरफ खुलने वाला दरवाजा खुला था। वह तेजी से पिछवाड़े पहुंची तो देखो कि बंटी एक खुरपी लिए जल्दी-जल्दी एक गड़्ढा खोदने में जुटा था।

"यह क्या बंटी.. ? सुबह-सुबह तुम यहां पिछवाड़े गन्दे में क्या कर रहे हो . ?'' बंटी की मम्मी ने डांटा।

मम्मी के एकाएक आ जाने से बंटी ऐसे सकपका गया जैसे उसकी कोई चोरी पकड़ी गयी हो। फिर खुद को संभालते हुए बोला "कुछ नहीं मम्मी...कुछ नही बस यूं ही थोड़ी सफाई कर रहा था...।''

"चलो अन्दर...सुबह-सुबह पढ़ना-लिखना नहीं है... ? बड़े आए सफाई करने वाले...''

मम्मी की डाँट सुन कर बंटी जल्दी से घर के अन्दर आ गया। हाथ की खुरपी उसने एक तरफ फेंकी और झट से लैट्रीन में घुस गया अब तक बंटी के पापा भी जग गए थे, बंटी की मम्मी उनसे बोलीं "बड़ा अजीब लड़का है...न जाने पिछवाड़े गन्दगी में क्या करता रहता है . चार पाँच रोज पहले भी एक दिन कर रहा था, आज भी खुरपी लिए न जाने क्या खोद रहा था पूछने पर कुछ बताता भी नहीं .''

बंटी के पापा ने अपनी पत्नी की बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया और बेसिन का टेप खोल कर आँख - मुँह धोने लगे। उसकी मम्मी भी किचन में घुस गयीं और अपने काम में व्यस्त हो गयीं।

आठ वर्ष का बंटी अपने पापा, मम्मी और छोटी बहन प्रिया के साथ रेलवे

कालोनी के सरकारी क्वाटर में रहता है. पूरी कालोनी में छ:-छ: क्वाटरों की दस लाइनें हैं जो एक के बाद एक क्रम से बनी हैं। क्वाटरों की दो पंक्तियों के बीच काफी खाली जगह है जहाँ घरों की नालियां बहती है और कूड़ा फेंका जाता है. वर्षों से सफ़ाई नहीं होने के कारण वहाँ काफ़ी झाड़-झंखाड़ भी उग आया है।

लगभग दो घंटे बाद जब बंटी स्कूल के लिए तैयार होकर निकलने लगा तो उसकी मम्मी बोलीं, "बंटी बेटे ! याद है न आज तुम्हारा जन्म दिन है ..''

"हाँ मम्मी ! भला यह भी कोई भूलने की बात है ?'' बंटी ने कहा " मैं तुमको इसलिए याद दिला रही हूँ कि आज भी शाम को स्कूल में खेलने मत लगना छुट्टी होते ही सीधे घर आना। शाम को तुम्हारे जन्म दिन के उत्सव की तैयारी करनी है और हाँ ! तुम चाहो तो अपने खास दोस्तों को भी शाम को बुला लेना।''

"ओ. के. मम्मी..'' बंटी ने कहा और स्कूल चला गया।

बंटी के स्कूल की छुट्टी शाम तीन बजे हो जाती है। अधिक से अधिक साढ़े तीन बजे तक उसे घर आ जाना चाहिए था लेकिन धीरे-धीरे साढ़े चार बज गए और बंटी स्कूल से नहीं लौटा, उसकी मम्मी मन ही मन खूब गुस्सा हो रही थीं, कुछ देर बाद वह घर से निकलीं और गेट पर खड़ी होकर बंटी की प्रतीक्षा करने लगीं। लगभग दस मिनट बाद बंटी अपने तीन-चार दोस्तों के साथ आता दिखायी पड़ा। उसके हाथ में आम का एक छोटा पौधा था तथा उसके दोस्तों के हाथ में कंटीली झाड़ियों की टहनियां। उन्हे देखते ही बंटी की मम्मी का पारा गरम हो गया लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कहतीं बंटी बोल पड़ा "सॉरी मम्मी ! देर हो गयी मुझे...मैं जानता हूँ आप बहुत गुस्सा होंगी लेकिन मैं आप को एक सरप्राइज देना चाह था...।''

"यह क्या लाए हो तुम ?'' बंटी की मम्मी ने पूछा।

"अरे ! आप देखती नहीं ? यह नन्हा सा, प्यारा-सा आम का पौधा है...।'' बंटी बोला।

"वह तो मैं देख रही हूं...लेकिन इसे किसलिए लाए हो...?''

"आज मेरा जन्म दिन है न मम्मी...अपने जन्म दिन पर मैं यह पौधा लगाऊंगा, मैं इसी के लिए तो पिछवाड़े की तरफ जगह साफ करके कई दिनो से गड्ढा बना रहा था...।''

"इससे क्या फायदा ? तुमको हमेशा फालतू काम ही सूझता है ?''

"फालतू नहीं मम्मी यह तो बहुत जरूरी काम है...हम सभी दोस्तों ने तय किया है कि अपने-अपने जन्मदिन पर हम सभी एक-एक फलदार पौधा लगायेंगे ताकि यह सूनी सी कालोनी हरियाली से भर उठे और फलों के मौसम में सभी को मीठे-मीठे फल भी खाने को मिलें...'' बंटी ने कहा।

"अरे बुद्धू ! देखते नहीं, यह आम का पौधा है...पूरे पांच साल के बाद फल देता है यह...तब तक तो हम लोग न जाने कहां रहेंगे...ट्रान्सफर वाली नौकरी का क्या भरोसा कि कब कहां रहें...तुम इसका फल खाने के लिए पांच साल तक यहीं बैठे रहोगे क्या ? मम्मी बोलीं।

"अच्छा यह बताइए मम्मी। हम लोग आम, अमरूद, सेव, सन्तरे आदि जितने

भी फल खाते हैं क्या उनके पौधे हमने लगाए थे ? नहीं न ? फिर जब दूसरो के लगाए पौधो के फल हम खा सकते हैं तो दूसरो के लिए पेड़ लगाना भी तो हमारा फर्ज बनता है...फिर पर्यावरण के रक्षा की बात भी तो है...लकड़ी के लिए, ईंधन के लिए और तमाम दूसरे कारणों से रोज-रोज हजारों लाखों पेड़ काटे जा रहे हैं। अगर पुराने पेड़ ऐसे ही कटते रहे और नए पेड़ न लगाए गए तो एक समय ऐसा भी आएगा। जब इस पृथ्वी पर कोई पेड़ ही नहीं बचेगा। फिर फल, छाया और लकडी तो दूर हमें सांस लेने के लिए शुद्ध हवा यानी आक्सीजन भी नहीं मिल सकेगी। इस लिए पेड़ लगाना बहुत जरूरी है मम्मी जी...'' बंटी ने कहा।

"चलो ! मनाती हूं तुम्हारी बात...लेकिन कभी यह भी सोचा है तुमनें कि इस कालोनी में सारे दिन कितने ढेर सारे आवारा पशु घूमते रहते हैं...वे एक ही दिन मे चट कर जायेंगे तुम्हारे पौधे को...'' बंटी की मम्मी बोलीं।

"आप चिन्ता न करें आंटी जी...पौधे की सुरक्षा का प्रबन्ध हम पहले ही कर चुके हैं...देखती नहीं कंटीली झाड़ियां हमारे हाथों में...पौधे के चारों तरफ हम इसकी बाड़ लगा देंगे.. और प्रत्येक पेड़ की देखभाल हम सारे दोस्त मिल-जुल कर किया करेंगे...'' बंटी का दोस्त बोला।

बातचीत में व्यस्त सभी ने देखा ही नहीं कि कब बंटी के पापा अपने आफिस से आकर पीछे खड़े हो गए थे और सब की बातें सुन रहे थे। वह बंटी की मम्मी से बोले "अच्छा यह बाताओ मंजू आज कौन सी तारीख है... ?''

"आज 19 तारीख है...उन्नीस नवम्बर...बंटी का जन्मदिन है आज...क्यों ? क्या हुआ ?'' बंटी की मम्मी ने कहा।

"और आज से तीन महीने नौ दिन बाद कौन सी तारीख होगी ?'' बंटी के पापा ने दूसरा प्रश्न किया।

"तीन महीने नौ दिन बाद अट्ठाइस फरवरी होगी...''

"अट्ठाइस फरवरी को क्या होता है... ?''

"क्या होता है ? कुछ तो नहीं ?''

"अरे भाई ! इतनी जरूरी बात भूल गयीं ? तुम्हें याद नहीं कि 28 फरवरी को हमारी शादी की वर्ष गांठ है...याद रखना अट्ठाइस फरवरी को हम लोग भी अपनी शादी की वर्ष गांठ पर एक पौधा लगायेंगे...'' बंटी के पापा ने कहा।

"अच्छा ! अच्छा ! लगाना पौधा... लेकिन अभी तो झटपट बाजार जाओ... ढेर सारा सामान लेकर आना है...'' बंटी की मम्मी ने कहा और घर के अन्दर चली गयीं।

मम्मी-पापा को बातचीत में व्यस्त देख कर बंटी अपने दोस्तों के साथ पिछवाडे की तरफ खिसक लिया और पहले से तैयार गड्ढे में पौधा रोपने लगा।

—अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

सब. रजिस्ट्रार

मिर्जापुर-231001

दीपावली की सीख

धीरे-धीरे अंधेरा घिर आया। मुहल्ले के सारे मकान बिजली के बल्बों, रंग-बिरंगी, झालरों और मोमबत्तियों की झिलमिलाती रोशनी से जगमगा उठे। जिधर भी देखो हर तरफ बस रोशनी ही रोशनी नजर आ रही थी, और रह-रह कर तड़-तड़, धड़-धड़ की आवाजें गूंज रही थीं। मुहल्ले के सारे बच्चे अपनी-अपनी छत्तों पर, लॉन में, घर के बाहर सड़कों पर और गलियों में उछल-कूद कर रहे थे, ऊधम मचा रहे थे, और पटाखे, चकरी तथा फुलझड़ियां छुड़ा रहे थे। उनके माता-पिता भी कुछ देर के लिए बच्चे बन गए थे और इस हो-हल्ला में खुलकर उनका साथ दे रहे थे। लेकिन रमेश माथुर का घर सन्नाटे में डूबा हुआ था। वहां न तो बच्चों का हो-हल्ला था न ही बम-पटाखों का शोर, माथुर साहब और उनकी पत्नी अपने लॉन में बेचैनी से चहल कदमी कर रहे थे। उन दोनों की परेशान निगाहें गेट की तरफ लगी हुई थीं। बल्कि श्रीमती माथुर तो दो-तीन बार गेट से बाहर निकल कर सड़क तक देख आयीं लेकिन उनके बच्चों मनोज और रंजना का कहीं दूर-दूर तक पता नहीं था। लगभग एक घंटा पहले माथुर साहब के दोनों बच्चे मनोज और रंजना उनसे पैसे ले कर अपनी पसन्द के बम-पटाखे, राकेट, फूलझड़ी आदि खरीदने के लिए चौराहे की दूकान तक गए थे। उन दोनो को अधिक से अधिक आधा घंटा में लौट आना चाहिए था लेकिन धीरे-धीरे एक घंटा बीत गया और वे नहीं लौटे। जैसे-जैसे देर हो रही थी माथुर साहब और उनकी पत्नी की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। पन्द्रह-बीस मिनट तब और प्रतीक्षा करने के बाद उन्होंने घर में ताला बन्द किया और मनोज व रंजना को ढूँढ़ने के लिए चौराहे की तरफ चल दिए।

चौराहे पर हर तरफ सड़कों की पटरियों पर तरह-तरह की आतिशबाजी से भरी दर्जनों दूकानें सजी थीं जिन पर औरत, मर्द और बच्चों की भारी भीड़ जमा थी, परेशान मिस्टर माथुर और उनकी पत्नी ने एक-एक कर के सारी दूकानें देख डालीं, चारों तरफ भीड़ में खोज डाला लेकिन मनोज और रंजना कहीं भी नहीं दिखे। माथुर साहब ने सभी दूकानदारों और वहां उपस्थित लोगों से अपने बच्चों की हुलिया बता कर बहुत पूछ-ताछ की, लेकिन उन दोनों के बारे में कोई भी जानकारी नहीं मिल सकी। हर तरफ से निराश होने के बाद माथुर साहब और

उनकी पत्नी भागे-भागे थाने पर पहुचे संयोग से पुलिस इन्सपेक्टर शुक्ला थाने पर मौजूद थे। माथुर साहब ने इन्सपेक्टर शुक्ला को सारी बात बताई, इन्सपेक्टर शुक्ला ने बहुत तत्परता दिखायी उन्होने झटपट रिपोर्ट लिखी फिर अपने साथ दो सिपाहियो को लेकर माथुर साहब के साथ मनोज और रजना की खोज में निकल पडे।

इन्सपेक्टर शुक्ला ने चौराहे पर अपनी जीप खड़ी की और पूछताछ करने लग। थाड़ी दर की पूछताछ के बाद एक रिक्सेवाले ने बताया कि लगभग डेढ़ घटा पहले उसने एक लड़का और एक लड़की को अस्पताल पहुंचाया है। उनके साथ एक बीमार बुढ़िया भी थी जो जोर-जोर से हांफ रही थी। लड़की की उम्र लगभग ग्यारह-बारह साल की थी, जो लाल बुंदीवाली फ्राक पहने थी तथा लड़के की उम्र लगभग सात-आठ साल की थी। वह भूरे रंग का हाफ पैन्ट तथा नीला-सफदे धारी वाला शर्ट पहने था।

"हां...हां... वे ही मेरे बच्चे हैं...।" श्रीमती माथुर बीच में ही बोल पड़ीं।

"लेकिन उनके साथ वह बीमार बुढ़िया कौन हो सकती है...।" माथुर साहब बोले।

"यहां बात करने से बेहतर होगा कि हम लोग सीधे अस्पताल ही चलें...।" इन्सपेक्टर शुक्ला ने कहा।

"हां इन्सपेक्टर साहब...जल्दी चलिए...।" श्रीमती माथुर बोलीं और फौरन जीप में बैठ कर सभी लोग अस्पताल चल पड़े।

अस्पताल पहुंच कर सभी ने देखा कि जनरल वार्ड के एक बेड़ पर गन्दी और फटी साड़ी में लिपटी एक बुढ़िया लेटी कराह रही थी, और उसके सिरहाने स्टूल पर बैठी रंजना उसका सर दबा रही थी। इससे पहले कि माथुर साहब या उनकी पत्नी कुछ पूछते रंजना खुद ही बोल पड़ी, "पापा ! जब मैं और मनोज पटाखे खरीदने के लिए घर से निकले तो चौराहे की तरफ मेन रोड़ से न आ कर जल्दबाजी में पिछवाड़े वाली गली से आए। जब हम लोग रास्ते में पड़नेवाली झोपड़ियों के पास से गुज़र रहे थे तो हमें एक झोपड़ी के अन्दर से कराहने की आवाज सुनाई पड़ी। हम दोनों रुक गए और एक दरार से झोपड़ी के अन्दर झाँकने लगे। हमने देखा कि यह बुढ़िया माई जमीन पर पड़ी कराह रही थी और दर्द के मारे छटपटा रही थी। झोपड़ी के अन्दर और कोई भी नहीं था। हम दोनो डरते-डरते झोपड़ी के अन्दर गए और इससे बातचीत की इसने बताया कि इसका बेटा रिक्सा-चलाता है। वह रिक्सा लेकर कहीं गया था। इसकी बहू भी किसी के घर चौका-बरतन करने गई थी। यह अकेली पड़ी छटपटा रही थी और इसका शरीर तेज बुखार से तप रहा था। हमने सोचा पता नहीं इसके बेटे-बहू कितनी देर में लौटें। तब तक कहीं इसकी हालत और ज्यादा न बिगड़ जाए। इसलिए

इसको रिक्से में लादकर हम अस्पताल ले आए और डाक्टर साहब को दिखा कर यहां भर्ती करा दिया। आप ने हमें पटाखे खरीदने के लिए जो रुपए दिए थे वह हमारे पास थे ही। उन्हीं पैसों में से हमने रिक्से का किराया दिया है और बाकी पैसे लेकर मनोज इसके लिए दवाईयां लाने गया है...।'' रंजना ने अपनी बात खतम की ही थी कि तभी दवाईयां लिए मनोज भी आ गया।

माथुर साहब उनकी पत्नी, सहित दरोगा, सिपाही आदि सभी लोग आश्चर्य से रंजना की बातें सुनते रहे।

"शाबास ! तुम दोनों ने बहुत अच्छा काम किया है बेटे... चलो अब हम तुम्हारे लिए ढेर सारे पटाखे और फुलझड़ियां खरीदेंगे...।'' माथुर साहब ने कहा।

"नहीं पापा... अब हम पटाखे नहीं खरीदेंगे...मैंने और दीदी ने यह तय किया है कि हर वर्ष दीपावली पर हम जिन रुपयों के पटाखे फुलझड़ी छुड़ा कर धुये मे उडा देते हैं अब हर साल उन रुपयों से किसी गरीब की सहायता किया करेंगे. पैसे कम पड़ जाने के कारण में इस बूढ़ी दादी की एक दवाई नहीं ला पाया हू. पापा ! आप उसे मंगवा दीजिए प्लीज...।'' मनोज ने कहा।

शाबास बेटे ! अगर हमारे देश के सभी बच्चे तुम्हारी ही तरह समझदार हो जायें तो फिर क्या कहने... हर साल दीपावली पर जो लाखों रुपए धुंआं और बारूद के रूप में उड़ा दिए जाते हैं उन रुपयों से सैकड़ों गरीबों की किस्मत बदल सकती है ।'' इन्सपेक्टर शुक्ला ने मनोज की पीठ थपथपाते हुए कहा और उसे गोद मे उठा लिया।

अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'
सब रजिस्ट्रार
मिर्जापुर-231001

परिश्रम का फल

बहुत दिनो की बात है, फूलपुर नाम काएक गांव था। उस गांव में सभी लोगो मे आपस में बड़ा प्रेम था। मुसीबत पड़ने पर सभी एक दूसरे की सहायता करते थे। गांव के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती व पशुपालन था। एक बार दुर्भाग्य से वहा अकाल पड़ा। वर्षा न होने से फसलें सब नष्ट हो गयीं। नदी, नाले व तालाब सूख गये। सभी लोग भूखों मरने लगे। संचित किया हुआ अनाज सब खत्म हो गया। आदमी तो क्या पशु-पक्षी तक सभी बेहाल हो गये। लोग पीने के पानी के लिये भी तरसने लगे। ऐसे में मुखिया ने पंचायत बुलायी और सबसे सलाह मांगी। कोई भी सही सलाह न दे पाया। रामू नाम के एक किसान ने कुआं खोदने की सलाह दी ताकि पीने के पानी की समस्या का निराकरण किया जा सके। कोई भी उसकी इस बात से सहमत न था। सभी को लग रहा था कि यह बहुत मेहनत का काम है और जरूरी भी नहीं कि जहां कुआं खोदा जाये वहां पानी निकल ही आये। रामू को पूरा विश्वास था कि यादि सभी लोग मिलकर परिश्रम करें तो कुआं अवश्य खोदा जा सकता है। पर कोई उसका साथ देने को तैयार न था। अन्ततः पंचायत बिना कोई निर्णय लिये ही उठ गयी पर रामू ने हिम्मत न हारी। रामू के मित्र शामू ने उसका साथ देने का निर्णय किया। दोनों मित्र कुदालें व फावड़े लेकर गांव के मदिर में पहुंचे। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की और वहीं मंदिर के किनारे ही कुआ खोदने का निश्चय किया। अपने हृदय में ईश्वर के प्रति असीम श्रद्धा व विश्वास लिये उन्होंने कार्य आरम्भ किया। वे दोनों कड़ा परिश्रम करते रहे। उन्होंने न रात को रात समझा, न दिन को दिन, बस मेहनत करते रहे। बहुत थक जाने पर थोडा विश्राम कर लेते और फिर जुट जाते। गांव के लोग उन्हें मूर्ख कहते रहे पर दोनों मित्र अपनी ही धुन में लगन और मेहनत से कुंआ खोदते रहे। सूरज की चिलचिलाती धूप भी उन्हें उनके निश्चय से डिगा नहीं पायी। उनके शरीर से धारों-धार पसीना बहता रहा, हाथों में छाले पड़ गये पर वे अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहे और आखिर वह दिन भी आ गया कि फावड़ा मारते ही जल की धारा फूट पड़ी। खुशी के मारे उनकी आंखों में आंसू आ गये और गले रुंध गये। उन्होंने ईश्वर को लाख लाख धन्यवाद दिया। उनकी मेहनत सफल हो गयी थी। गांववालों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। कल तक जो उनका मज़ाक उड़ाते थे आज उनके

सिर लज्जा से झुक गये। रामू और शामू ने दिखा दिया था कि लक्ष्य के प्रति दृढ विश्वास लेकर यदि कड़ी मेहनत और लगन से काम किया जाये तो असम्भव को भी सम्भव बनया जा सकता है। किसी ने सच कहा है कि "मेहनत का फल मीठा होता है।"

—डॉ० अर्चना पांडेय
पता : प्रवक्ता रसायन विज्ञान
सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज
इलाहाबाद (उ. प्र.)

जैसे को तैसा

जंगल के पास एक गांव था। गांव के पास ही से एक नदी बहती थी। उस नदी के किनारे एक बरगद का वृक्ष था। इसी वृक्ष पर एक चिड़िया अपना घोंसला बनाकर रहती थी। चिड़िया बहुत मेहनती व ईमानदार थी। स्वभाव से वह बहुत शान्त थी तथा हमेशा दूसरों की मदद करने के लिये तैयार रहती थी। वह रोज सुबह सूरज के निकलने पर अपने घोंसले से निकलती और भोजन की खोज मे गाँव भर में चक्कर लगाती। कभी मुन्नी के घर से तो कभी पप्पू के आंगन से चावल चुन कर लाती और अपने बच्चों को खिलाती। बच्चे अभी छोटे थे तथा उड़ना नहीं जानते थे। इसके अलावा चिड़िया तिनके, झाडू की सींकें और भूसा आदि लाकर अपने घोंसले की मरम्मत भी करती रहती ताकि घोंसला कमजोर न होंने पाये। इसके बाद उसके पास जो समय बचता उसे वह दूसरे पशु पक्षियों की सहायता में व्यतीत करती।

कुछ दिनों बाद एक कौआ उसी पेड़ पर रहने के लिये आया। चिड़िया ने बड़ी प्रसन्नता से उसका स्वागत किया पर कौआ स्वभाव से बड़ा ही दुष्ट प्रकृति का था। वह आलसी और कामचोर होने के साथ-साथ लालची भी था। उसे दूसरों को कष्ट पहुंचाने में बड़ा आनन्द आता था।

एक बार की बात है, चिड़िया दाने की खोज में गांव की ओर गयी हुई थी। उसके छोटे-छोटे बच्चे घोंसले में ही खेल रहे थे।

कौऐ ने जब बच्चों को अकेले देखा तो उससे रहा नहीं गया और वह चिड़िया के घोंसले में पहुंच गया। बच्चों को चोंच मारकर तंग करने लगा। चिड़िया के बच्चे घबराकर चीं चीं करके रोने लगे। इतने में ही चिड़िया उड़कर आती दिखायी दी। कौआ उड़कर तुरन्त ही भाग गया। चिड़िया ने जब बच्चों को रोते देखा तो रोने का कारण पूछा। बच्चों ने रोते हुये सारी बात कह सुनायी। सब सुनकर चिड़िया परेशान हो गयी। कौऐ के आने पर जब चिड़िया ने उससे पूछा तो वह गुस्सा होकर चिड़िया को बुरा-भला कहने लगा। चिड़िया चुपचाप अपने घोंसले मे आ गयी।

इस घटना के दो ही दिन बाद की बात है, चिड़िया को पप्पू के घर से एक रोटी मिल गयी। रोटी पाकर चिड़िया बहुत खुश हुई। जैसे ही रोटी लेकर वह

अपने घोसले मे पहुची, वैसे ही कौऐ ने झपट्टा मार कर रोटी छीन ली और उडकर दूसरे पेड़ पर जा पहुंचा। वहां बैठकर आराम से रोटी खाने लगा। चिडिया बेचारी दु.खी होकर रोने लगी।

कौआ रोज ही कोई न कोई उपाय कर चिड़िया को तंग करने लगा। एक दिन जब चिड़िया अपने बच्चों को उड़ना सिखाने के लिए ले गयी तो उसके पीछे कौऐ ने उसका घोंसला अपनी चोंच व पैरों से खींच-खींच कर तहस-नहस कर डाला। लौटकर चिड़िया अपने घोंसले की हालत देखकर घबरा गयी पर उसने हिम्मत नहीं हारी और तुरन्त ही घोंसले की मरम्मत करने में जुट गयी। जल्दी ही उसने अपना घोसला पहले की तरह ही मजबूत बना लिया।

किसी ने ठीक कहा है कि दुष्ट-प्रकृति के प्राणी का साथ नहीं करना चाहिये। चिड़िया ने इस बात को अच्छी तरह से समझ लिया था। अब चिड़िया के सामने दो ही उपाय थे--एक तो यह कि वह स्वयं उस पेड़ को छोड़कर कहीं और जाकर अपना घोंसला बनाये या कौऐ को ही वहां से भगा दे। फिर चिड़िया ने सोचा कि यदि वह किसी और पेड़ पर भी जाकर रहती है तो कौआ वहां भी पहुंचकर उसे तंग करेगा अत: उसने कौऐ को ही सबक सिखाने के बारे में सोचा।

वह हाथी दादा के पास पहुंची और उन्हें अपनी सारी कहानी सुनायी। हाथी दादा चिडिया को बहुत मानते थे क्योंकि एक बार उसने हाथी दादा की सूड़ में चुभे हुये कांटे को अपनी पैनी चोंच से खींचकर निकाल दिया था। हाथी दादा तुरन्त चिड़िया को अपनी पीठ पर बैठाकर चल पड़े। पेड़ के पास पहुंच कर उन्होंने देखा कि कौआ आराम से सो रहा था। अच्छा अवसर जानकर हाथी दादा ने तुरन्त कौऐ को अपनी सूंड में जकड़ लिया और धमकाया कि यदि वह चिड़िया को तंग करना नहीं छोड़ेगा। तो उसे अपने पैरों के नीचे कुचलकर मार डालेंगे। अब तो कौआ बहुत घबराया, उसे आंखों के सामने अपनी मौत दिखाई देने लगी। वह गिडगिड़ाकर हाथी दादा से माफी मांगने लगा और उसने यह वचन दिया कि वह यह गाव छोड़कर चला जायेगा और फिर कभी चिड़िया को तंग नहीं करेगा। हाथी दादा ने उसे छोड़ दिया और कौआ तुरन्त ही वहां से नौ दो ग्यारह हो गया। किसी ने ठीक ही कहा है--

"लातों के भूत बातों से नहीं मानते।"

—डॉ. अर्चना पांडेय

पता : प्रवक्ता, रसायनविज्ञान,
सी. एम. पी. डिग्री कालेज
इलाहाबाद

दाने का मोल

कल्याणपुर ग्राम के मुखिया का चुनाव होना था। सब चाहते थे कि पुराने मुखिया सुखदेव जी ही मुखीया बनें। किन्तु सुकदेव जी मुखिया बनने को तैयार नहीं थे। वे बूढ़े हो गये थे और अस्वस्थ रहत थे। सुकदेव जी ने गॉववालों से कहा कि इस बार किसी और को मुखिया चुन लें। अब वे दौड़-धूप नहीं कर सकते है।

गाँववालों का कहना था–आप मुखिया रहें। दौड़ धूप का काम जिसे जब आप कहेगे, कर लेगा।

सुकदेव जी का कहना था–ऐसा नहीं होगा, जो काम करे उसे आगे आना चाहिए। हाँ, वे उसे सहयोग देते रहेंगे। इसी में लोकतंत्र की महत्ता है।

इस पर गाँववालों ने आग्रह किया, "मुखिया बाबा ! आप ही एक मुखिया चुन दीजिये। वही निर्विरोध चुना जायेगा।"

"ठीक है, कल सुबह पंचायत-भवन मे आप सब आइये।" सुकदेव जी ने कहा।

दूसरे दिन पंचायत-भवन के सामने मैदान में गाँव-भर के लोग जमा थे।

सुकदेव जी ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि युवा वर्ग आगे आये। इसलिए जो-जो युवक मुखिया का काम कर सकते हैं, जिनके पास यह सेवा करने के लिये समय हो, वे आगे आयें। मै उन्हीं युवकों में से मुखिया का चुनाव करूँगा।

सुकदेव जी की बात सुनकर चार युवक सामने आये। गाँव-भर की नज़र चारो युवकों पर थी। चारों युवक पढे-लिखे थे। सब यही सोच रहे थे–देखें किस आधार पर सुकदेव जी मुखिया का चुनाव करते हैं।

सुकदेव जी ने कहा, "भाइयो हमारा देश कृषि-प्रधान है। अतएव मेरा चयन का नज़रिया भी यही रहेगा।"

इसके बाद उन्होंने एक थैली में हाथ डाला। बँधी मुट्ठी बाहर आयी। सब उत्सुक थे यह जानने को कि मुट्ठी में क्या है ? सुकदेव जी ने मुट्ठी खोली। सामने हथेली कि उन्होंने। हथेली में चने के दाने थे। ये चने के दाने पुष्ट थे उन्होने पूछा, "यह क्या है ?"

एक साथ कई लोगों ने कहा, "चना।"

"शान्त !" सुकदेव जी की गम्भीर वाणी गूँजी। मेरे प्रश्नों का उत्तर इन युवकों को देना है।" सुकदेव जी की इस घोषणा से चारों युवक सतर्क हो गये। सुकदेव जी ने सवाल किया, "मेरी हथेली पर चने के दस दाने हैं। इनकी कीमत कितनी है ?

इस सवाल पर गाँव वाने फुसफुसाने लगे अजीब सवाल है मुखिया बाबा का लगता है, बाबा की अक्ल मारी गई है।

युवक सवाल का जवाब सोचने लगे। सुकदेव जी ने चारों युवकों को एक-एक कागज़ दिया और कहा, "इस कागज़ पर मेरे सवाल का जवाब लिखें। इसके लिये पाँच मिनट का समय दिया जाता है।"

पाँच मिनट का समय होते ही चारों युवकों ने अपना उत्तर लिखा कागज सुकदेव जी के आगे बढ़ा दिया। सुखदेव जी उत्तर पढ़कर मुस्कराये। मुखिया बाबा क्यो मुस्करा रहें है ? युवकों ने क्या उत्तर दिया ? एक वृद्ध ने कहा, "मुखिया जी ! किसने क्या लिखा, जरा हम सब सुनें।

"ठीक है।" कहा मुखिया बाबा ने। उन्होंने कहा, "एक ने लिखा है–चना आठ रुपये किलो है। ऐसे में दस दाने की कीमत एक पैसा होगी।"

"दूसरे ने लिखा है–पीतल की अँगूठी बड़े आदमी के पास हो तो लोग सोने की कहते हैं। इसी तरह ये चने के दाने आपके हाथ में होने के कारण चार आने के हैं। वैसे दस दानों की कोई कीमत नहीं।"

यह सुनकर तो कुछ लोंगों ने कहा–युवक होशियार है। मुखिया ने अगले युवक का उत्तर सुनाते हुए कहा - तीसरे ने लिखा है–ये चने के दाने पुष्ट हैं। शायद बाहर से मँगाये गये हैं। ये दाने बीज के हैं। अतएव बत्तीस रुपये किलो भी हो सकते हैं। इस हिसाब से इन दानों की कीमत लगनी चाहिए।"

इस उत्तर पर गाँव वाले सोचने लगे–बाजी यही मारेगा।

अब आखिरी युवक का उत्तर सुनाना था। मुखिया बाबा ने कहा, "चौथे युवक ने लिखा है–ये दाने लाख रुपये के हैं।"

इतना सुनते ही कितने लोग हँसने लगे। सुकदेव जी ने चौथे युवक को बुलाया और कहा, "लाख रुपये के कैसे हैं, यह बतलाइये ?"

युवक ने कहा, "चने के इन दानों को बो दें तो एक किलो चना फलेगा। फिर एक किलो चनों को बो दें तो कम से कम साठ किलो चनें होंगे। फिर साठ किलो को बो दें... और इस तरह से दस दाने कि बदौलत एक दिन गोदाम भर जायेगा। अब आप ही कहें–ये चने के दस दान लाख रुपये के हुए कि नहीं।"

चौथे युवक के उत्तर से सब वाह वाह कर उठो मुखिया जी ने पीठ ठोंक कर कहा–शाबास ! बूँद-बूँद कर समुद्र बना है। कण-कण कर धरती बनीं है। जो एक दाने को सम्मान देगा वही हमारे गाँव को भूखा मरने से बचायेगा।

हर व्यक्ति यह समझ ले तो कभी अकाल नहीं होगा।"

चौथा युवक निर्विरोध मुखिया चुन लिया गया।

–आचार्य शशिकर

संस्थापक : अ. मा. कवि सभा सीतारामपथ।

दीपग्राम, चक्रधरपुर 433102, (बिहार)

भगवान् किन से खुश होते हैं ?

यह कहानी लगभग दो सौ साल पहले की है। उन दिनों राँची (बिहार) एक बहुत छोटी जगह थी। पूरा राँची एक गाँव-जैसा था। न कहीं ऊपर बाजार था, न कहीं नीचे बाजार।

लोग कहते है, आज जिस इलाके को ऊपर बाजार कहा जाता है, वहीं पर पदारथ साव का घर था। पदारथ साव बड़े धर्मिक व्यक्ति थे। कथा-संत्संग बराबर किया करते थे।

एक रात साव जी कथा सुनाकर लौटे और सोचने लगे—भगवान् को खुश किया जाये। आज कथावाचक ने कथा के अंत में कहा था, "जो भगवान् को निरंतर याद करते हैं, भगवान् उनसे खुश रहते हैं।''

दिन-रात में चौबिस घंटे होते हैं। दिन भर काम-धाम करना पड़ता है। रात मे नींद आ जाती है। अब भगवान् को निरंतर कैसे याद किया जा सकता है ? साव जी रात भर यही सोचते रहे। सुबह वे पहाड़ी की ओर चल पड़े। उन दिनों राँची घनघोर जंगलों से घिरा हुआ था। पहाड़ी पर कोई जाता नहीं था। पदारथ साव वहीं पहुँचे। उन्होंने तय किया, वे पहाड़ी पर रहेंगे और दिन-रात भगवान् को याद करेगे। गृहस्थी में रहकर भगवान् को खुश नहीं किया जा सकता है। वे एक टीले पर बैठकर भगवान्-भगवान् जपने ही वाले थे कि उनकी नजर एक साधु पर पडी। साधु उन्हीं की ओर आ रहे थे। साव जी ने साधु को प्रणाम किया। साधु ने सवाल किया—

"घर में और कौन-कौन हैं ?

'घरवाली है और दो बच्चे हैं।''

"बच्चों के नाम ?'' साधु ने पूछा

"राम और श्याम',—साव जी ने उत्तर दिया।

अच्छा साव जी, यह बतलाइए कि आपका एक लड़का दिन-रात पिताजी ! पिताजी !! करता रहे और कुछ काम न करे, आप उससे खुश होंगे या जो अपना काम करे, उससे खुश होंगे ?

साधु के सवाल पर साव जी कुछ देर सोचते रहे, फिर बोले—

"जो अपना काम-धाम करेगा, मैं उसी से खुश होऊँगा।''

साव जी का उत्तर सुनकर साधु ने कहा, भगवान् के साथ भी यही बात है भगवान् भी उन्हीं से खुश होते हैं, जो अपना काम करते हैं। आप घर लौट जाइए और अपना काम कीजिए।''

"फिर कथावाचक ने ऐसा क्यों कहा कि जो भगवान् को निरंतर याद करते हैं, भगवान् उनसे खुश होते हैं।'' साव जी ने खुलासा समझना चाहा।

साधु मुस्कराये और बोले, "इसका मतलब है, जो काम करो भगवान् का काम समझ कर करो। ऐसा करनेवाला आदमी गलत काम नहीं करता। इससे भगवान् की निरंतर याद बनी रहती है और उनसे भगवान् खुश रहत हैं।''

साव जी को बात समझ में आ गई। वह घर लौट आये। उनका स्वभाव पहले से भी अधिक [illegible] किसी [illegible] नहीं पहुँचाता, अतएव बिना किसी का नुकसान पहुंचाय वह काम-धाम चलान लग।

अब साव जी से सभी खुश रहने लगे। उन्हें सत्संग की बात याद आ गई–जिनसे भगवान् खुश होते हैं, उनसे सभी खुश होते हैं।

–आचार्य शशिकर
संस्थापक
अ. मा. कवि सभा
सीतारामपथ। दीपग्राम
चक्रधरपुर 433102, (बिहार)

अंधों की दुनिया

रतन पुर में सोहन जी नाम के एक राजा राज्य करते थे। उनके मंत्री का नाम मोहन जी था। दोनों ही बुद्धिमान थे। एक दूसरे के बिना उनका काम चल ही नहीं पाता था।

एक दिन की बात है कि दरबार लगा हुआ था। तरह-तरह की बातें हो रहीं थीं, हंसी के फव्वारे छूट रहे थे। उसी समय मोहन जी बोल पड़े कि सचमुच इस दुनिया में अंधे ही अंधे भरे हुऐ हैं। सुनते ही एक दरबारी बोल उठा इस दुनिया मे तो देख सकनेवाले लोग ही अधिक हैं। अंधे तो कभी-कभी दिखाई पड़ते हैं। फिर आप ऐसा क्यों कहते हैं।

राजा भी बोल उठे—मंत्री जी यदि आप सच कह रहे हैं तो उसे सिद्ध करके बताइए। नहीं तो यह स्वीकार कीजिए कि आप झूठ बोल रहे हैं।

मंत्री जी बोले कि मैं जो कुछ भी बोलता हूं, सोच समझ कर ही बोलता हूं। यह सारी दुनिया अंधों से ही भरी हुई है। यदि आप सब यह देखना चाहते हैं तो कल सुबह गांव की सीमा पर पीपल के पेड़ के पास आ जाइए। उसी समय आप सब यह मान जाएंगे कि मेरी बात सच्ची है।

राजा के साथ सभी दरबारियों ने यह बात स्वीकार कर ली। दूसरे दिन सुबह मोहन जी एक कुदाली लेकर उस पीपल के पेड़ के पास पहुंच गए। उनके साथ एक नौकर भी था। उन्होंने उस नौकर को कागज और पेंसिल देते हुए कहा—जो आदमी यंहा आकर मुझसे पूछता है कि मंत्री जी आप क्या कर रहें हैं तो उनका नाम तुम उस कागज पर लिखते जाना। इसके बाद मंत्री मोहनजी पीपल के पेड की बगल में एक गड्ढा खोदते रहे और उनका नौकर उन सब पूछनेवालों के नाम लिखता रहा। थोड़ी ही देर बाद राजा सोहन जी अपने दरबारियों के साथ आ पहुँचे। उन्होंने भी अचरज के साथ यह पूछा कि मंत्री जी यह आप क्या कर रहे हैं। अधिकांश दरबारियों ने भी उनसे यही सवाल किया। मोहन जी तो चुपचाप गड्ढा खोदते रहे। जब लोगों ने प्रश्न पूछना बन्द किया तब मंत्री जी ने वह कागज राजाजी के हाथ में रख दिया। राजा जी ने वह कागज देखा। उसमें अंतिम नाम उन्हीं का लिखा हुआ था। उस नामावली का शीर्षक दिया गया था-अंधों की दुनिया।" कागज देखकर राजा को बड़ा स्सा आया। उन्होंने तमतमा कर मत्री

जी से पूछा, आपकी नजर मे क्या हम सब अन्धे हैं ? मत्री जी ने शातिपूर्वक कहा, "राजा जी। मेरी नजर में आप सब अंधे ही हैं। क्योंकि मुझे गड्ढा खोदते देखकर भी आप सब लोग पूछते रहे कि मैं क्या कर रहा हूँ। अतएव आप सब अंधे नहीं तो और क्या हैं ?" मेरी इस सूची में अनेक नाम हैं। इसीलिए मैंने पहले ही कहा था कि यह दुनिया अंधों से भरी हुई है।

राजा सोहन जी समझ गए कि मंत्री मोहन जी ने कल जो बात कही थी उसे आज सत्य साबित कर दिया है। राजा के साथ सभी दरबारी मंत्री मोहन जी की बुद्धि पर खुश हो गए और राजा जी ने उन्हें बहुत-बहुत बधाई दी। सभी एक साथ बोल उठे, "वाह ! मोहन जी वाह।"

—श्रीमती इन्दिरा परमार
पीटर कालोनी, टिकरापारा
धमतरी (म. प्र.)

प्रमाणिता का फल

एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। उसके दो लड़के थे। दोनों लड़के मजदूरी करते थे और इसी तरह सादगीपूर्ण ढंग से उनकी गुजर बसर हो रही थी।

एक बार अकाल के कारण ऐसा हुआ कि लड़कों को काम मिलना बन्द हो गया। इससे बुढ़िया को चिन्ता हुई। एक दिन उसने अपने दोनों लड़कों को बुलाकर कहा कि यहां तो अब तुम लोगों को काम मिलने से रहा। अच्छा हो अब तुम लोग परदेश चले जाओ और वहीं रहकर काम करो। मेरा क्या, मैं तो यहा किसी न किसी तरह रह ही लूंगी और तुम दोनों की कमाई करके लौट आने की राह देखूंगी। लेकिन हां, तुम दोनों जहां। भी जाओ, प्रमाणिकता से काम करना। प्रमाणिकता का फल देर सबेर मिलता ही है।

मां की आज्ञा पाकर दोनों भाई परदेश के लिए चल पड़े।

जंगली रास्ते पर काफी सन्नाटा था। दोनों भाई आगे बढ़ते चले जा रहे थे कि तभी उनके सामने आसमान से कोई चीज गिरी। उन्होंने देखा तो एक चील ऊपर मण्डरा रही थी। वे समझ गये कि जरूर यह चील सांप समझकर किसी का हार उठा लाई है। वही हमारे सामने गिरा है।

छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा कि यह हार जरूर कीमती होगा, इसे हम किसी जौहरी को बेच देंगे तो हमें आशा से अधिक पैसे मिलेंगे। बड़े भाई ने कहा–"नहीं। हमे अपनी मां की सलाह को इतनी जल्दी भूल नहीं जाना चाहिए। हम आगे चल कर गांव में पता लगाते हैं कि किसी का हार गुम तो नहीं हुआ जिस किसी का हार गुम हुआ होगा वह बहुत परेशान होकर उसे ढूंढ रहा होगा।"

दोनों भाई आगे बढ़े। सामने वाले गांव में ही वे क्या देखते हैं कि लोग झुडो मे खड़े हैं और काफी परेशान नज़र आ रहे हैं। पूछने पर पता चला कि उस राज्य की राजकुमारी का कीमती हार आज सुबह ही गुम हो गया है; और राज कुमारी अपने उस हार को पाने का हठ लेकर बैठी है, न खाती है न पीती है। उसका हठ देखकर तो राजा रानी भी चिंतित हो उठे। उन्होंने अपने सिपाहियों को ढूंढ़ने के लिए चारों ओर लगा रखा है।

बड़े भाई ने सोचा कि क्यों न हस हार को दरबार में जाकर राजा को सौंप दिया जाये। छोटे भाई को भी यह बात पसन्द आ गई। सोचने लगा कि हार पाकर

राजा उन्हें कुछ न कुछ इनाम तो देगा ही। उस इनाम को लेकर ही वे अपने घर लौट जाएंगे।

दोनों भाई राज दरबार में पहुंचे और राजा के सामने हार रख दिया। गुम हुए हार को पाकर राजा की प्रसननता का ठिकाना न रहा। उन्होंने उन दोनों भाइयों का बहुत आभार माना और राजकीय अतिथि की हैसियत से उनके ठहरने और खाने पीने की व्यवस्था कर दी। साथ ही उनका पता ठिकाना भी पूछ लिया।

आठ दिन तो पलक झपकते ही गुजर गये। अब राजा ने उन्हें घर आने की आज्ञा दी। जाते समय भी राजा ने उन्हें कुछ इनाम न दिया, इससे छोटे भाई को बड़ी निराशा हुई। लेकिन अब किया भी क्या जा सकता था। आठ दिन राज महल में रह लिया यही क्या कम है ? बड़ा भाई तो वही सोचता रहा।

दोनों भाई किसी तरह अपने गांव लौटे। जब वे अपने घर के सामने पहुंचे तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वहां तो एक आलीशान हवेली खड़ी थी। उन्हें लगा कि कहीं वे स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं। तभी उनकी बूढ़ी मां बाहर निकली और कहा कि आठ दिन पहले ही राजा के आदमियों ने यह हवेली खड़ी कर दी है। बड़े भाई की समझ में अब यह बात आ गई कि राजा ने उन्हें आठ दिन अपने महल में रोककर उन्हें प्रामाणिकता का यह इनाम दिया है। उन्होंने अपनी मां को सारी बात सिलसिलेवार बता दी। अपने बेटों की इस प्रामाणिकता से मां बहुत खुश हुई। तब बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा– "देख लिया न प्रमाणिकता का फल।"

—श्रीमती इन्दिरा परमार
पीटर कालोनी, टिकरापारा
धमतरी (म. प्र.) 493773

एक पैसे की कुबुद्धि

"बुद्धि ले लो बुद्धि ! दो तरह की बुद्धि"। गली में आवाज सुनाई दी।

अरे वाह आज तो बुद्धि बिक रही है। कल इम्तहान है चलो थोड़ी सी बुद्धि मैं भी खरीद लूं। मां से रूठकर पलंग पर लेटे हुए सोनू ने सोचा और दौड़कर दरवाजे पर आकर आवाज दी, "अरे भैया, बुद्धिवाले, जरा ठहरना !"

हां छोटे बाबू क्या चाहिए ? कहते हुए बुद्धि वाला ठहर गया। सोनू उत्सुक होकर बोला, "तुम बुद्धि बेचते हो ना वही चाहिए क्या भाव दी ?"

"सुबुद्धि तो दो हजार रुपये में एक ग्राम ! और कुबुद्धि दी है एक पैसे में हजार ग्राम ! बोलो तुम्हें कौन सी चाहिए ?"

सोनू ने सोचा - बुद्धि तो बुद्धि है। सुबुद्धि और कुबुद्धि से क्या फर्क पडेगा ? मां भी तो असली घी महंगा होने के कारण वनस्पति घी का डिब्बा खरीद लेती है। असली सिल्क की साड़ी महंगी होने की वजह से नकली सिल्क पहनती है। महगे काजू की जगह सस्ती मूंगफली खिलाती है। जब कीमत में इतना फर्क है तो वह सुबुद्धि क्यों खरीदे ?

बस भाग कर अन्दर गया सोनू और अपने बस्ते में से एक छेदवाला पैसा निकाल लाया। एक पैसा आज कल चलता नहीं। दादी की संदूकची में रखा देखकर कुछ दिन पहले उसने मांग लिया था। दोस्तों को दिखाने के लिए आज ही बस्ते मे रखकर स्कूल ले गया था। चलो, वही सिक्का एक किलो बुद्धि खरीदने के काम आ गया। हजार ग्राम का मतलब एक किलो होता है. इतना हिसाब वह जानता था।

पर अजीब बात यह हुई कि उस छेद वाले पैसे को लेकर बगैर कुछ दिए ही बुद्धिवाला आगे बढ़ने लगा। सोनू जल्दी से चिल्लाया, "ऐ, बुद्धि वाले तुम तो बडे चालाक हो। पैसा भी रख लिया, बुद्धि भी नहीं दी।"

बुद्धिवाला मुसकराया, "आप भी छोटे बाबू कमाल करते हैं। भला बुद्धि भी कोई कागज के लिफाफे में रखकर देने की चीज है। यह तो दिमाग में भर दी जाती है, वह मैंने भर दी। पूरी किलो भर कुबुद्धि दी है आपको ! देखना कैसा असर दिखाती है ?"

सोनू की समझ में कुछ नहीं आया पर बुद्धि वाले की बात पर भरोसा करके वह अन्दर चला गया। कमरे में पहुंचकर उसे ध्यान आया – कल इम्तहान है।

पढाई उसने कुछ की नहीं है। चलो अभी भी किताब उठाकर कुछ पढ़ लें, तो पास होने लायक नम्बर पा जायेगा।

पर अभी-अभी खरीदी कुबुद्धि ने उसे उकसाया भाड़ में जाये इम्तहान। जेब मे कंचे भरो और गली के दोस्तों के साथ जी भरकर खेलो।

कुबुद्धि की सलाह बहुत पसन्द आई सोनू को। झट जेब में कंचे भरकर वह निकल गया और अंधेरा होने तक खेलता रहा।

जब लौअकर घर आया तो फिर उसे इम्तहान की बात याद आ गई। मन ने कहा, "बहुत खेलकूद हो चुका, अब थोड़ा पढ़ लेना चाहिए।"

कुबुद्धि झट बोल पड़ी, "पागल हो क्या ? पढ़ने बैठोगे तो बोर हो जाओगे। टेलीविजन खोल लो बढिया बढिया कार्यक्रम आ रहे हैं। उन्हे देखो और मौज उडाओ।"

सचमुच कुबुद्धि की यह सलाह भी बहुत बढ़िया थी। कहाँ किताबों की थकाने वाली दुनियां और कहाँ टेलीविजन की मन बहलानेवाली दुनिया। वाह ! घंटों देखते रहो, तब भी न थको। खुश होकर सोनू टेलीविजन के सामने बैठ गया। आँखें जब नींद से मुंदने लगी तभी वहाँ से हटा वह और बिस्तर पर लेटते ही सो गया।

सुबह उठते ही डर के मारे उसकी हालत खराब होने लगी कि अब इम्तिहान मे क्या करेगा वह कुबुद्धि ने फिर उकसाया, "बुद्धु राम जी डरो मत। चिन्ता की कोई बात नहीं है। कागज के एक पुर्जे पर सभी सवालों के हल लिखकर स्कूल लेते जाओ। कागज को सम्हाल कर जेब में रखे रहना। मौका पाते ही उसे बाहर निकालकर सारे सवालों के जवाब इम्तहान की कापी पर नकल कर लेना !"

क्या बढ़िया सलाह थी। सोनू ने फौरन उस पर अमल किया। एक कागज से भला क्या काम चलता है ? नकल के लिए चार-पांच पुर्जे बनाये और संभाल कर जेब में रख लिये।

जैसे ही स्कूल पंहुचने पर इम्तहान शुरू हुआ, पर्चे में शुरू से आखिर तक एक भी सवाल का जवाब सोनू को याद नहीं आया। पर चिन्ता किस बात की थी। कुबुद्धि की सलाह मानकर उसने ढेर सारे पर्चे जो बना रखे थे। जैसे ही जेब से निकाल कर पहले पुर्जे की उसने नकल उतारना शुरू की नकल पकड़नेवाले उडनदस्ते ने आकर उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। पूरी कक्षा के सामने बेइज्जती [illegible] हुई ही इम्तहान से दो साल के लिए ऊपर से निकाल दिया गया। इतनी शरम आई सोनू को कि आँखों में आँसू भरे हुए वहाँ से बाहर निकला।

उदास चेहरा लिए जब वह सड़क पर आया और घर की तरफ बढने लगा तो कुबुद्धि ने उसे टोका कंहा जा रहे हो यार ? घर ? लेकिन ध्यान रहे दूसरे लडके जब तुम्हारे नकल में पकड़े जाने की और इम्तहान से निकाल दिये जाने की खबर घर आकर सुनाएगे तो पापा वो धुनाई करेंगे वो धुनाई कर [illegible] नेपत ग्रस्त हो

जाएगी। अभी भी समय है जाओ और जाकर रेल की पटरी पर।''

'नहीं' - सोनू गला फाड़कर चीखा !

चीखने के साथ ही उसकी आँख खुल गईं – ओह, तो यह सपना था. कैसा भयानक सपना।

बेटे की चीख को सुनकर मां पास आई। पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली " मेरे लाल, लड़-झगड़कर मां से रूठकर सो गये थे तभी डरावना सपना देखकर चीख पड़े हो मैंने तो तुमसे अक्ल की एक बात कही थी कि कल इम्तिहान है, कुछ पढ लिख लो, तुम्हे नहीं पसन्द तो जाओ गली में जाकर खेलो।''

नहीं मां तुमने तो मुझे सुबुद्धि दी थी, बिना कोई कीमत लिए। मैं ही बेवकूफ हूं जो एक पैसे की कुबुद्धि खरीदकर अपना सर्वनाश किये ले रहा था 'सोनू पछतावे भरी आवाज में बोला।

उठकर ठंडे पानी से मुंह धोया उसने और किताबों की अलमारी की तरफ बढ गया।

मां अभी भी पलंग के पास उलझन में भरी खड़ी थी। मतलब क्या है लड़के की इस बात का एक पैसे की कुबुद्धि ? पर इसका मतलब तो सिर्फ सोनू जानता था जिसे सुबुद्धि और कुबुद्धि का फर्क मालूम पड़ गया था। मां उस सपने की बात कैसे जान सकती थी।

—उषा यादव

73 नार्थ ईदगाह

आगरा (उ.प्र)

रसगुल्ला

'रसगुल्ला' – नन्ही मीनू ने बंद अलमारी की तरफ उंगली से इशारा करते हुए पांचवी बार कहा।

मां की भौंहों पर बल पड़ गए। उफ यह लड़की है या शरारत की पिटारी। देखने में बित्ते भर की पर अक्ल में बड़े-बड़ों के कान काटनेवाली। देखे न कुछ देर पहले मैंने रसगुल्लों की हंडिया कितने चुपके से अलमारी में रखी थी। कोई दूसरा बच्चा होता तो कुछ नहीं समझ पाता। पर यह चंटो फौरन भांप गई। तब से वही रट – रसगुल्ला ! घर में मेहमान आने को हैं। अगर अभी से रसगुल्ले बांटने लगे तो समझो हो गई मिठाई की छुट्टी।

मां गंभीर हो उठीं। जैसे कुछ सुना ही न हो, ऐसे चुपचाप आलू छीलने में लगी रहीं।

मीनू ने एक दो मिनट इन्तजार किया। फिर जरूरत समझकर आवाज और तेज कर दी'' – सुनती नहीं, रसगुल्ला दो न।''

'काम करने दो – मां माथे का पसीना पोछते हुए बोलीं – "अंकल – आंटी आने वाले हैं। उनके लिए अभी मुझे सारा खाना पकाना है।''

"मैं कुछ कहती थोड़े ही हूँ। तुम खना बनाती रहो। बस मुझको एक रसगुल्ला दे दो। मीनू ने पूरी दादी अम्मा बनकर मां को समझाया और ललचाये होंठों पर जबान फेरी "ठीक है दे दूंगी। पहले तुम कुछ देर खेल आओ।'' मां ने प्यार से फुसलाया।

'ऊं हूं।' मीनू भला टलनेवाली थी।

मां ने पलभर सोचकर उसका ध्यान बंटाने के लिए दूसरा उपाय खोजा – "मीनू बेटे ?''

'जी' मीनू तपाक से बोलीं !

देखिए आपकी डौली नीचे पड़ी हुई है। बेचारी जाने कब से रो रही है। उसे गोद में उठाकर आप चुप नहीं करायेंगी।''

चारपाई के नीचे पड़ी अपनी टूटी गुड़िया पर एक निगाह डालते हुए मीनू मां की मूर्खता पर हंस दी- यह डौली तो पुरानी है। इसे मैं अब खेलती भी नहीं हूं। नई डौली पलंग पर सो रही है।

काम मे जुटी मा ने यह बत नहीं सुनी पलग पर सोई गुडिया को सिर उठाकर देखने की फुरसत उनके पास कहा थी ?

लेकिन मीनू जिद पर अड़ गई। – मां देखो न वह उधर... !

'ठीक है....ठीक है'–मां झुंझला उठी, "तू अब मेरी जान छोड़ और कुछ देर के लिए यहाँ से टल।"

'रसगुल्ला'–मीनू ने शायद सातवीं बार अपनी मांग दोहराई।

"पहले मेरा एक काम करोगी ?" मां ने मिठाई की तरफ से उसका ध्यान हटाने की आखिरी कोशिश की 'हूँ' – मीनू झट तैयार हो गयी।

'देखो ये काँच के गिलास मैंने कुछ देर पहले धोये हैं। इन्हें एक-एक करके मेज पर सजा दो। लेकिन खूब संभालकर ले जाना। टूटे एक भी नहीं।" मा बोली।

मीनू जोश में आ गई। फौरन इस काम में जुट गई। एक-एक करके पाँच गिलास तो उसने मेज पर सही-सलामत पहुँचा दिए पर छठा गिलास लेकर जाते। समय पता नहीं कैसे पांव लडखड़ाया और 'झन्न' की आवाज के साथ गिलास गिरकर चूर-चूर हो गया।

मीनू फक्क ! अब क्या करे वह ? यह तो बड़ी गड बड हो गई। रसगुल्ला गया भाड में; पिटाई की नौबत आ गई। उधर् मेहमान आने को, उधर मां के लिए काँच बटोरने का एक और काम बढा दिया उसने। भला गुस्सा नहीं आयेगा उन्हें ?

सचमुच यही हुआ। गुस्से से मेरी मां उठी और मीनू की पीठ पर एक जोरदार धौल जमाते हुए चीखीं, "काम की न काज की, दुश्मन अनाज की। आखिर कर दिया न सत्यानाश। चल भाग यहां से।"

मीनू न रोई न चिल्लाई। चुपचाप मुंह लटकाये हुए वहां से हट गई। सीधे पलग के पास पहुंची और सिर से पांव तक चादर ओढ़कर लेट गई। मां भी जमीन पर बिखरे कांच के टुकड़े बटोरकर रसोई में जुट गई। कुछ की देर में सारी घटना उनके दिमाग से निकल गई। ढेर सारा काम जो घर में फैला हुआ था।

तभी पापा ने अंदर आकर पूछा, "मीनू, नहीं दिख रही। कहाँ है ?"

"यहीं कहीं होगी" कहते हुए मां के चेहरे का रंग उड़ गया। गुस्से में मीनू को पीटने की बात उन्हें याद हो आई। डर भी लगा कि अब पापा की दुलारी बिटिया रो-रोकर शिकायत किये बिना नहीं मानेगी।

"तुमने छोटी सी बच्ची पर हाथ क्यों उठाया ?" कहकर फिर पापा नकली गुस्सा दिखाएंगे। पास बुलाकर मां को दिखाने की डांट लगाएंगे। झूठ-मूठ की उनकी पिटाई करेंगे। तब जाकर कहीं बिटिया रानी मानेंगी। इतने सब तमाशे मे पन्द्रह मिनट से कम भला क्या लगेंगे। काम का कितना हरज होगा उफ ?

पर पापा सचमुच परेशान थे। घबराई आवाज में पूछ रहे थे, "तुमने बताया

नहीं मीरा ! मीनू आखिर है कहाँ ?''

"पलंग पर लेटी है।'' मां को डरते हुए बताना पड़ा।

'ऐं ..लेटी है ? क्यों ? तबियत तो ठीक है न ? पापा ने एक साथ कई सवाल पूछ लिए ओर अपनी लाड़ली बिटिया के पास पहुंचे। जैसे ही उन्होंने चादर हटाई मीनू स्प्रिंग वाले बबुए की तरह फौरन उठकर बैठ गई। अपनी नई गुड़िया को एक हाथ में पकड़े हुए थी वह।''

मां का कलेजा जोर से धड़कने लगा। 'झन्न' की आवाज के साथ कांच का गिलास फूटना...'धम्म' से फूल जैसी कोमल बेटी की पीठ पर धौल पड़ना। सभी कुछ उनके कानों में गूंज उठा। सचवमूच गलती तो अब हो ही चुकी थी। किसी तरह लड़की उस पिटाई की बात भूल जाती तो।

पर ऐसा कैसे हो सकता था ? धौल जरूर काफी जोर से पड़ा होगा, तभी 'धम्म' की आवाज आई थी। बिलबिलाकर रह गई थी बेचारी ! पीठ अभी तक दुख रही होगी। कितना अच्छा होता कि रात में "अना शहजादी'' की कहानी सुनाने का लालच देकर इसे मना लिया होता। लेकिन अब इसका की समय निकल चुका था।

मां ज्यादा देर सोच नहीं सकीं। मीनू मुंह फुलाए पापा से शिकायत कर रही थी "मां गंदी हैं। आप उन्हें डांटिये।''

"जरूर डाटूंगा। पहले बताओ तो क्या किया है तुम्हारी मां ने ?'' पापा ने मीठी आवाज में पूछा।

"असल में वो....' घबराकर मां ने सफाई देने की कोशिश की, पर बात के बीच में ही मीनू ने बंद अल्मारी की तरफ उंगली उठा दी। शायद आठवीं बार होठो पर जीभ फेरते हुए बोली, "मुझे देती नहीं—रसगुल्ला !''

—उषा यादव
73, नार्थ ईदगाह
आगरा (उ.प्र)

दुलारी

'मैडम, दूध ले जाइए।' बाहर से दुलारी ने चिल्ला कर कहा।

'आती हूं।' मम्मी काम में लगे-लगे ही बोलीं।

'जल्दी आईए, जल्दी, मुझे देर हो रही है। वह बराबर बोले जा रही थी।

'कहीं आफिस जाना है क्या ?' मम्मी हाथ में दूध का बरतन लिए बाहर निकलीं।

'अरे मैडम, आफिस-वाफिस हमारे भाग में कहा है। हमें तो घर-घर जाकर दूध ही बेचना पड़ेगा जिन्दगी भर।' उसने बड़े-बूढ़ों की तरह सिर हिलाते हुए कहा और दूध का बरतन मम्मी के हाथ से ले लिया।

'हाथ भर की है, नहीं और बातें करेगी सयानों की तरह।' मम्मी ने मुस्कराते हुए कहा।

दूध लेकर मम्मी अदर जाने को मुड़ीं। अभी किचन में भी नहीं पहुंची थीं कि उन्हें कुछ याद आया। वे दूध का बरतन लिए ही बाहर निकलीं। लेकिन तब तक तो दुलारी पहाड़ के टेढ़े-टेढे ढलवां रास्ते से सरपट भागती-भागती काफी नीचे पहुच चुकी थी।

'इसको तो मैं दूध का पैसा कभी नहीं दे पाऊंगी।' मम्मी बडबड़ाती हुई अदर चली गयीं।

दुलारी हमारे दूधवाले की तीसरी लड़की है। तेरह-चौदह साल की है वह। उसकी दो बड़ी बहनों की शादी आसपास, के गांवों में हो चुकी थी। उसके दो भाई हैं, जो स्कूल जाते हैं। दुलारी की बड़ी इच्छा थी कि वह भी स्कूल जाये बस्ता लटकाकर। उसने पांचवीं तक पढा भी। लेकिन बहनों की शादी हो जाने के बाद उसकी पढ़ाई बंद करा दी गई। उस दिन दुलारी बहुत रोयी। पूरन चाचा ने दुलारी के पिता से पूछा भी, 'तुमने दुलारी की पढ़ाई क्यों छुड़ा दी रामप्रसाद।'

'गुरुजी, उसकी मां बहुत बीमार रहती थी। अभी तक तो दो बडी लड़कियो का सहारा था। अब तो दोनों ससुराल चली गयीं हैं। इसी का सहारा है।' दुलारी के पिता बोले।

पूरन चाचा क्या कहते। वे यहां पर जूनियर हाईस्कूल में अध्यापक थे। पहाड की परेशानियों से अच्छी तरह परिचित थे। ऊंचे नीचे पहाडों पर बने खेतों पर

काम करना आसान नहीं है . चढ़ते चढ़ते ही थक जाते हैं लोग और फिर वहा काम करना। लौटते समय गाय-भैंस के लिए घास सिर पर रखकर लाते। सुबह से ही लकड़ी लाना, पानी भरना, वह भी दूर दराज से। दुलारी को भी यह सब काम करना पड़ता था। पढ़ने या स्कूल जाने का समय ऐसे में भला उसे कहां मिलता। लेकिन इस सब के बाद भी वह कभी-कभी मेरे भाई रोहित की किताबें ले जाया करती थी। एब बार जब वह मेरे भाई रोहित से कोई किताब मांग रही थी तो उसने हंसकर कहा, 'अरी दुलारी, तू किताब का क्या करेगी ?'

वह तनकर खडी हो गयी। बोली, 'तू क्या करता है'

'मैं तो पढ़ता। और तू'

'मैं भी पढ़ती हूं।' वह बोली।

'तू क्यों पढ़ती है ?' रोहित बोला।

'और तू क्यों पढ़ता है ?' उसने उल्टे ही रोहित से पूछा।

'मैं तो पढ़कर कुछ बनूंगा। प्रोफेसर, वकील, कुछ भी। तू भला क्या बन पायेगी।' रोहित घमंड से बोला।

'क्यों नहीं, मैं प्रोफेसर न भी बनी, कुछ न कुछ तो जरूर बनूंगी।' उसने बडे आत्मविश्वास से कहा।

रोहित भी उसे पूरी तरह छेड़ने के मूड में था। बोला 'अच्छा, ये बता दुलारी, मैं तो नौकरी कुछ कमाने के लिए करुंगा, मगर तुम नौकरी भला क्यों करोगी ? तुम तो अभी से कमा रही हो दूध बेचकर।'

दुलारी को उत्तर देते न बना। वह चुपचाप जाने लगी। उसे रोहित का ऐसा व्यवहार बहुत बुरा लगा। उसकी चाल ही बात रही थी। क्योंकि दुलारी ने तो धीरे चलना सीखा ही नहीं था। उछलती-कूदती, हंसती, दुलारी को ही हमने देखा था। रोहित ने उसे किताब नहीं दी थी। मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने रात को खाना खाते समय मम्मी से कहा, 'मम्मी, आज बेचारी दुलारी ने जब रोहित से किताब मांगी तो उसने उसे किताब तो नहीं दी, ऊपर से उसे परेशान भी किया।'

मम्मी ने रोहित की ओर देखा तो उसने तुरंत सफाई दी, 'नहीं, मम्मी, मैंने सोचा, वह रोज-रोज मेरी किताबें मांग कर ले जाती है। क्या करेगी किताबों का वह। चित्र देखेगी और क्या ? पढ-लिख कर नौकरी तो उसे करनी नहीं है। एक तो लड़की ऊपर से दूधवाली।'

'क्यों, लड़कियों को पढ़ना-लिखना नहीं चाहिए क्या ? दूधवाली है तभी तो तुमसे किताबें मांगती है। गरीब न होती तो क्या मांगती ? मम्मी रोहित को डांटते हुए कहा।

'मैं भी पढ़ी-लिखी हूं। तभी तो तुम्हें पढ़ा सकती हूं। क्यों तुम मुझे ही पेरेन्ट्स मे आने को कहते हो ? अपनी दादी से क्यों नही कहते। रोहित, तुम्हीं ने तो कहा

था, एक दिन–मम्मी आप पढ़ी-लिखी हैं तो हमें कभी होमवर्क की समस्या नहीं होती। रवि और किशोर तो बेचारे मेरी कापी से ही नकल करते हैं।

मम्मी आगे बोलीं, 'रोहित, तुम्हें एक बात बताऊं। तुम्हारे दादा पढ़े-लिखे नहीं थे। उस जमाने में लोग ज्यादा पढ़ते-लिखते भी नहीं थे। तुम्हारे दादा भी सीधे-सादे किसान थे। खेती करते थे।' मम्मी फिर बोलीं, 'एक बार उन्होने जानवर खरीदने के लिए बैंक से ऋण लिया। जब फसल आ गई तो अनाज बेचकर बैंक का ऋण दे दिया। पर क्लर्क ने पासबुक में क्या लिखा, दादा को पता नहीं लगा। पढ़ना तो आता नहीं था। छह महीने बाद बैंक में फिर मांगा गया। दादा ने कहा, 'मैं तो रुपये दे चुका हूं। पर उनकी बात किसी ने नहीं मानी, क्योंकि क्लर्क ने आधा ही रुपया जमा किया था, आधा उसने अपने पास रख लिया था। यदि वे पढ़े-लिखे होते तो उन्हें परेशानी नहीं होती।

रोहित की मम्मी ने और भी उदाहरण दिये। 'पिताजी के दफ्तर के चपरासी से स्टेशन पर टिकट के ज्यादा पैसे ले लिये। टिकट चौहत्तर रुपये का था, पर उससे टिकटवाले ने अस्सी रुपये ले लिये। यह भी पढा-लिखा न होने के कारण ही हुआ। पढ़ा-लिखा होना तो बहुत जरूरी है। नहीं तो दिक्कत ही दिक्कत हैं।

मम्मी ने रोहित की तरफ देखते हुए कहा, 'इसलिए दूधवाली के मन मे पढ़ने-लिखने की इच्छा पैदा हुई है तो यह बड़ी अच्छी बात है। सभी को पढ़ा-लिखा होना चाहिए, चाहे वह दूधवाला हो, चाहे किसान, चाहे चौकीदार हो, चाहे कोई भी हो।

रोहित चुपचाप बातें सुन रहा था। उसकी समझ में यह आया या नहीं मैं नहीं जानती, मगर दूसरे दिन उसने दुलारी को वे सब किताबें दीं जो उसने मांगी थीं।

इस साल रोहित को आठवीं की बोर्ड की परीक्षा देनी थी। वह खूब पढ़ता था। पहली परीक्षा देकर आया तो उसने आते ही बताया, 'मम्मी, दुलारी भी परीक्षा दे रही है। कह रही थी पेपर अच्छा हुआ है।'

'अच्छा', हम सब आश्चर्य में पड़ गये। अब हमारी समझ में आया कि वह किताबें क्यों ले जाती है। लेकिन उसने हमें यह बात कभी नहीं बतायी।

एक हफ्ते से रोज उसके पिता दूध देने आते थे। मम्मी ने पूछा, 'रामप्रसाद, दुलारी परीक्षा दे रही है ?'

'जी हां, क्या करें। बड़ी जिद्दी लड़की है। कहती है पढ़ेगी। दिन भर काम करती है। रात भर पढ़ती है। मैं कहता हूं, सो जा, मगर नहीं मानती। रामप्रसाद बोला।

'यह तो बड़ा अच्छा कर रही है। तुम दिन भर इधर-उधर घूमते हो। उसका आधा काम तो तुम्हीं कर सकते हो। थोड़ा-थोड़ा उसे भाइयों से करवाओ, तो उसके काम का भार हल्का होगा। पढने और सोने दोनों की फुरसत मिलेगी उसे।'

मम्मी बोलीं

'जी माताजी। मैंने गाय-भैंस', पानी और लकड़ी का काम खुद ही संभाल लिया है। अब जब उसकी पढ़ने की इच्छा है तो पढ़े। वह बोला।

'शाबास, तुम बडे अच्छे पिता हो। आज से उसकी किताबें मैं खरीदकर दूंगी।' मम्मी बोलीं।

रामप्रसाद बहुत खुश हुआ। दुलारी और रोहित दोनों नवीं कक्षा में आ गये। दुलारी लड़कियों के स्कूल में थी। उसके पिता ने उसका नाम उसी स्कूल में लिखवा दिया।

देखते ही देखते दुलारी और रोहित ने हाईस्कूल और इंटरमीडिएट पास कर लिया। रोहित को आगे की पढ़ाई के लिए बाहर भेज दिया गया। दुलारी ने नर्सिंग ट्रेनिंग के लिए आवेदन किया। उसको नर्सिंग ट्रेनिंग के लिए बुला लिया गया। दुलारी बड़ी खुश थी। दुलारी ही क्या, हम सब खुश थे। पूरा पहाड़, वे टेढ़े-मेढे रास्ते जिनसे दौड़कर दुलारी उतरा करती थी, वे खेत जिनमें दलारी रात-दिन मेहनत कर पसीना बहाती थी, वे जंगल जिनसे वह घास, लकडी काटकर लाती थी, आज सब खुश थे; और सबसे ज्यादा खुश रोहित था, जो मन ही मन सोचता था कि दुलारी कभी कुछ बन पायेगी।

–उषा विमलांशु
एफ, 5/64, चार इमली
भोपाल–462016

सांवली

सावनी आज बहुत खुश थी। दौड़ कर मेरे पास आयी।

'कुन्तो, कुन्तो मेरे घर चलो।'

'क्यों ?' मैने पूछा।

मेरे बाबाजी मेरे लिए एक चीज लाये हैं।

'बकरी ले आये तेरे बाबाजी, क्यों ?' मैंने पूछा।

अरे तुझे कैसे पता चला ?

'जादू से' मैंने कहा।

वह हंसने लगी और हम दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े पहाडी से नीचे उतरने लगे।

मैं गर्मियों की छुट्टियों मे गांव आयी थी। सावनी मेरे घर से थोड़ी दूरी पर रहती थी। हम हर साल गर्मियों में गांव आते थे। एक ही उम्र होने के कारण सावनी से मेरी गहरी दोस्ती हो गयी थी। जैसे ही मैं गांव पहुंचती दौड़कर सावनी के घर जाती या फिर सावनी मुझसे मिलने आती। फिर हम दोनों साथ-साथ ही रहते। पहले मैं सांवनी को उसके नाम से खूब चिढ़ाया करती थी। वह सावन के महीने में पैदा हुयी थी इसलिए उसका नाम सांवनी रख दिया गया था।

मुझे वह कुन्तो ही कहा करती थी। वैसे मेरा नाम कुन्तल था। लेकिन गाव मे सभी मुझे कुन्तों ही कहते।

सावनी के घर में उसके माता-पिता के अलावा उसकी दादी, दादा और चाचा रहते थे। वे काफी गरीब थे। उनके पास कुछ खेत थे जो अधिक उपजाऊ नहीं थे। अधिकांश तो ढ़ालू जमीन पर थे जिनमें पानी ठहरता ही न था। अनाज तो बस नाम मात्र का ही पैदा होता था। किसी तरह घर चल रहा था।

मेरी मम्मी बताती हैं कि सांवनी माता पिता की इकलौती सन्तान थी। सावली की मां ने पुत्र के लिए बड़ी मनौतिया की थी। सावली के जन्म से पहले पूजा-पाठ करवाये। उस गरीबी हालत में भी उसके माता-पिता किसी तरह तन्त्र-मन्त्र टोने-टोटके करवाते रहे। लेकिन जब सावनी ने जन्म लिया तो वे निराश हो गये। पुत्र की कामना की लेकिन पुत्री पैदा हो गयी। इससे दुखी तो सभी थे लेकिन सावनी की दादी बड़ी दुखी हुई। वे तो रोने ही लगी थीं। वे सांवनी से बेहद

चिढ़तीं। उसे कभी गोदी में नहीं उठाती थीं। लेकिन सांवली के दादा सांवनी को चाहते थे। कभी-कभी जब वह सावनी को प्यार से 'लक्ष्मी' कहते तो दादी बिगड पढ़ती--बड़ी आयी लक्ष्मी, तुम इसे ज्यादा सिर पर न चढ़ाया करो।

दादाजी जब सांवनी की दादी को समझाने की कोशिश करते तो वे वहा से उठ जातीं। लेकिन सांवली अपनी दादी को बहुत प्यार करती थी। वह उनको उनकी लाठी लाकर देती जो वह कहीं भी रख कर भूल जाती थीं। दादी भी हर समय हर काम के लिए सांवनी को ही आवाज देती थीं।

सावनी के घर में कोई उसको अधिक प्यार नहीं करता था, एक दादा को छोडकर। सांवनी बडी मेहनती थी। बहुत सा काम तो वह अकेले ही कर लेती। उसे पढ़ाई-लिखाई का बहत शौक था। जब भी मैं शहर से आती तो वह पूछती-'कौनसी में गयी कुन्तो इस साल ?'

मैं चिढ़ जाती, 'क्या सांवनी, तू तो बस हर साल यही पूछती हैं कि कौन सी मे गयी। कोई मैं फेल होती हूं जो उसी कक्षा में रह जाऊंगी।'

अरे नहीं नहीं, तुझे देखकर मैं सोंचती हूं कुन्तो कि मैं भी उसी कक्षा में पहुच जाती लेकिन....... ..'

'लेकिन क्या, तूने पढ़ा क्यों नहीं। यहां तो स्कूल भी हैं। मैं पूछती।

मेरा नाम लिखा था स्कूल में। लेकिन तू तो जानती है, हम कितने गरीब हैं। फीस नहीं दी तो नाम कट गया; और फिर मेरे घर वाले भी पढ़ाई में ज्यादा रुचि नहीं दिखाते। वे तो सोचते हैं कि मैं ज्यादा से ज्यादा खेती में हाथ बटाऊं मा के साथ।

'तू पढ़ना चाहती है सांवनी।'

उसने सिर हिला दिया।

'तो फिर ठीक है, मैं तुझे पढ़ाऊंगी।'

उस दिन से मैं सावली को पढ़ाने लगी। वह काफी होशियार थी। जल्दी-जल्दी सीखने लगी। दो महीने खेतों पर भी काम नहीं होता; और फिर मैं हर समय उसके साथ होती। उस साल चलते समय मैंने उसे अपनी पुरानी कापी और पेंसिल दे दी। दूसरे साल जब मैं आयी तो उसने मुझे वही कापी दे दी। उसने सारी वर्णमाला रट डाली थी। मैं हर साल उसे दो महीने पढ़ाती। कविताएं रटाती। इसलिए वह यह मानती थी कि वह उस-उस कक्षा को पास करती है जिस कक्षा को मैं पास करती हूं।

हम उसके घर पहंच गये। आंगन में ही बकरी बंधी थी, छोटी सी। उसके गले मे माला थी और सिर पर लाल सिन्दूर का टीका।

'अरे इसे माला किसने पहनायी और ये टीका...मैंने पूछा।

'मैंने पहनाई है इसे माला। समझी। मैंने इसकी पूजा भी की है। कहीं इसे

नजर न लग जाये। सांवनी ने खुश होते हुए कहा।

'तूने इसका कोई नाम रखा है अभी तक' मैंने पूछा।

'नहीं, अब तू ही रख दे अच्छा सा नाम, जो शहर का हो।'

मैं सोच में पड़ गयी। बकरी काले रंग की थी। मैंने सांवनी से कहा, 'सावनी तेरे नाम से मिलता जुलता नाम रख दूं तो।'

'तो फिर और भी अच्छा। जो नाम तू रख देगी वही ठीक रहेगा। ?'

'तो इसका नाम सांवली रख दे। वैसे भी काले रंग की है तेरी बकरी।'

'बहुत अच्छा, उसने बड़े दुलार से बकरी की पीठ पर हाथ फिराया और बोली, 'सांवली'

इतने में उसकी मां बाहर निकली। मुझे देखकर बोली, 'अरे बेटी, कब पहुंची।'

अभी-अभी आयी हूं चाची, बकरी देखने।

'हां, सांवनी बड़ी जिद्द कर रही थी दो साल से। लेकिन बेटी, हम हैं गरीब लोग। पेट भर खाना नहीं खा सकते तो बकरी कहां से लेते। सांवनी की मां ने कहा और फिर सांवनी को आवाज दी जा, जरा चाय का पानी चढ़ा दे चूल्हे पर। और अन्दर से घास लाकर बकरी को डाल दे।

मैं धीरे-धीरे बकरी के थोड़ा पास पहुंची। मुझे बकरी, गाय, भैंस से बहुत डर लगता था। वहीं उसे देखने लगी कि तभी सावनी दो गिलासों में चाय लेकर आ गयी।

'तू भी कितना डरती है। आ मेरे साथ। हाथ लगाकर देख सांवली कितनी मुलायम है।'

'नहीं मुझे डर लगता है।'

'अरे, बकरी से डर,' वह मुझे घसीटते हुए पास ले गयी। मैंने बकरी को छुआ धीरे से, कितनी कोमल थी सांवली।

'ले बेटी, चाय पी, दूध नहीं था। चाय तो काली ही हैं' सांवनी की मां ने मुझे बुलाया।

'अरे, काली है तो क्या हुआ चाची जी। यहां तो मुझे हर चीज बहुत पसन्द है।' मैने गिलास उठा लिया।

कुन्तो, जब तू आयेगी न अगले साल तो तुझे इस बकरी के दूध की चाय पिलाऊंगी' सांवनी ने कहा।

सावनी दो साल से अपने दादा जी के पीछे पड़ी थी बकरी के लिए। उसका कहना था लोगों के घर में तो गाय हैं, भैंस हैं बैल हैं। और उनके घर में कुछ भी नहीं। भले ही गाय, भैंस, बैल न हो, बकरी तो हो। जब भी मैं छुट्टियों में आती तो यही कहती थी. 'कुन्तो मुझे बकरी चाहिए एक सुन्दर सी।'

'बकरी आयेगी तो मेरा काम भी तो बढ़ जायेगा। मैं कहती।

'कुछ काम नहीं बढ़ेगा। जब मैं घास काटने जाऊंगी तो अपने साथ ले जाऊगी। जंगल में वह चरती रहेगी बस; और फिर जब मेरा छोटा भाई आयेगा तो वह भी इसका दूध पीकर प्रेमू दादा की तरह बलवान हो जायेगा।

घर वालों की तरह सावनी भी चाहती थी कि उसका एक छोटा भाई भी होना चाहिए। सांवनी के घर में आये दिन पूजा-पाठ चलता रहता। पंडित-पुरोहित आया करते थे। उसकी माँ तो हफ्ते में चार दिन व्रत रखती। दादी बड़े श्रद्धा भाव से पडितों की सेवा करतीं। भाई तो सांवनी चाहती थी लेकिन पंडित-पुरोहितों से वह चिढती थी। बेकार ही उनकी मेहनत की कमाई का अन्न उनके पेट में जाता है और घरवालों को कभी-कभी भूखा ही सोना पड़ता है।

लेकिन अब सांवनी को किसी से कोई मतलब नहीं था। सुबह से ही वह सांवली की रस्सी थाम हमारे घर पहुँच जाती। फिर वह और मैं गांव की ऊँची ऊँची पहाड़ियों पर चढते। सांवली को अपने हाथ से हम दोनों घास खिलाते। वह हमारे आस-पास ही रहकर घास चरा करती। पुचकारने पर हमारे पास आती और हमारे हाथ पैर चाटती। अपनी पूंछ हिलाती, मानो कह रही हो– मैं भी तुम्हारी दोस्त हू।

मेरी छुट्टियां खत्म हो रही थी। इसलिए हमें वापस जाना था। सांवनी बडी उदास हो गयी। वह सांवली की रस्सी पकडे मुझे छोड़ने गांव के चौराहे तक आयी। मै गाड़ी की खिड़की से मुंह निकालकर उन्हें तब तक देखती रही जब तक कि वह पहाड़ी के पीछे ओझ नहीं हो गयी। उसकी सांवली दूर से खूब चमकीली दिखायी दे रही थी। चलते समय सांवनी ने मुझसे कहा कि मैं जब गांव आऊं अगली गर्मी मे तो सांवली के लिए एक छोटी घंटी लेकर आऊ।

मैंने शहर पहुंचते ही सबसे पहले मम्मी से कहकर सांवली के लिए घंटी खरीदी और फिर सांवनी को चिट्ठी में लिख भी दिया। इस साल मुझे दसवीं कक्षा की परीक्षा देनी थी। बोर्ड की परीक्षाएं थीं। सांवनी को पत्रोत्तर आया। उसने मुझे खूब मेहनत से पढ़ने को कहा था और इसके अलावा सारी बातें सांवली की थीं। वह क्या करती है, कैसे उछलती है, कूदती है खाती है आदि। उसने लिखा था कि जब घटी आ जायेगी तो उसकी सांवली और भी सुन्दर दिखेगी और उछलेगी तो घंटी की रुनझुन होगी।

मेरी परीक्षाएं समाप्त हो गयीं। पापा ने बताया कि इस वर्ष मेरी लम्बी छुट्टिया है, इसलिए हम लोग छुट्टी बिताने कहीं दूसरी जगह चलेंगे।

मैं बहुत खुश हुई लेकिन सांवनी की याद आते ही मैं दुखी हो गयी। बेचारी यह ता रोज अपनी सांवली के साथ चौराहे पर आती होगी; और फिर इस साल तो वह मेरा बहुत इंतजार कर रही होगी। सांवली के लिए घंटी जो मंगवाई थी। मैंने उसे पत्र लिखा कि इस साल तो गर्मी में हम लोग दूसरी जगह जा रहे हैं, लेकिन दशहरे

की छुट्टियो मे गाव आयेगे

दशहरे की छुट्टियों में हम सब लोग गांव आये। हम पहली बार दशहरे में गाव आये थे। हमारे गांव में खूब धूमधाम से पूजा होती थी। सावनी खूब खुश थी। उसकी बकरी काफी बड़ी हो गयी थी। आते ही मैंने पहले उसके गले में घन्टी बाधी। टुनटुन आवाज हुई। हम तो खुशी से नाच उठे। सांवली की समझ में भी नहीं आ रहा था कि वह क्या हो रहा है, वह बार बार गरदन हिलाती तो टुन-टुन आवाज होती।

दिन भर मैं, सांवली और सावनी पहाड़ों पर कूदते फिरते। शाम को घर वापस आते। एक दिन सावनी ने कहा पाता है कुन्तो इस पहाड़ी के पीछे दूसरी तरफ माता भगवती का मन्दिर है। वहां अष्टमी वाले दिन खूब पूजा होती है। बलि भी चढाते हैं।

'बलि ? क्यों।' मैंने पूछा।

'जो लोग मनौती मानते हैं, अगर पूरी हो जाये तो बलि चढ़ाते हैं, भैंसे की, बकरी की।' फिर उसने चौंक कर अपनी सांवली को देखा। वह आराम से घास चर रही थी।

'चलो मन्दिर चलोगी, सांवनी, मैं भी देखूं। खूब सजा होगा न मन्दिर।

'हां, सजा तो होगा ही, लेकिन मैं वहां नहीं जाती। मुझे ऐसी जगह से चिढ़ है जहां निर्दोष पशुओं की हत्या होती है। पता नहीं ये बड़े लोग ऐसा क्यों करते हैं। कहते-कहते वह उदास हो गयी।

'अच्छा, चलो घर चलते हैं' मैंने कहा।

रास्ते में उसने बताया कि इस बार अष्टमी को उसके घर में विशेष पूजा होगी भाई के लिए। उसकी मां का व्रत था जो वह उसी दिन तोड़ेगी। उसकी दादी मा, दादा और पंडित, पुरोहितों का कहना है कि इस बार उसे भाई जरूर मिलेगा। सावनी खुश थी

दूसरे दिन सावनी मेरे घर नहीं आयी। सुबह से दोपहर हो गयी। मैंने सोचा, अब मैं ही चलकर देखूं। मैं चलने ही वाली थी कि हांफती-हांफती सांवनी, सांवली की रस्सी कस कर थामे हमारे घर आ पहुंची। इसके पहले कि मैं कुछ पूछती, वह जोर-जोर से रोने लगी।

'क्या हुआ' मेरी मम्मी ने पूछा।

'ताई जी, मेरी सांवली को यहां छिपा दीजिए।' उसने रोते-रोते कहा।

उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। वह बहुत डरी हुई थी। सांवली भी कातर नेत्रो से देख रही थी।

'क्यों, केदारू बेच रहा है तेरी बकरी ?' मेरी मम्मी ने पूछा। केदारू उसके पिता का नाम था।

'नहीं, उसकी तो आवाज ही नहीं निकल रही थी।

तो ?

वें इसे मार डालेंगे। मुझे भाई नहीं चाहिए, सांवली के बदले।' उसने कहा।

मैं समझ गयी। कल ही तो वह बलि के बारे में बता रही थी। पडितों ने कहा होगा कि बकरी की बलि से पुत्र उत्पन्न होगा और उसके गरीब माता-पिता इसी बकरी को बलि बढ़ा देंगे। कितना अन्ध-विश्वास था ये।

'अच्छा, अपनी बकरी यहीं बांध दे, मम्मी ने कहा।

उसने बकरी बांध दी; और उसके गले से लिपट गयी। मेरी-आंखों में आंसू आ गये। सांवली के गले की घंटी टुन-टुन बज रही थी। शाम को सांवली घर चली गयी। उसने बकरी हमारे घर ही छोड़ दी।

अगले दिन वह आकर बकरी ले गई और बोली, 'मेरे घर वाले बलि नहीं चढायेंगे। इसलिए मैं बकरी ले जा रही हूं।' कल अष्टमी भी है।

वह चली गयी। मैं सारे दिन अकेले ऊब गयी। अकेली ही मैं घूमने निकल गयी। पहाडी के ऊपर पहुंच कर मैंने देखा, नीचे सब घर दिखाई दे रहे थे। सावनी के घर में खूब पतंगियां लगी थीं, खूब सजा था उसका घर। मैं घर लौट गयी।

दूसरे दिन अष्टमी थी। चारों ओर ढोल और बाजों की आवाज सुनाई दे रही थी। आज मेला था। सब बहुत खुश थे। मम्मी ने सुबह से मुझे भी अच्छी सी फ्राक पहनने को दी। हमारे घर में भी छोटी मोटी पूजा थी। वह सुबह ही खत्म हो गयी। उसके बाद में सांवनी के घर गयी। सांवनी नहीं दिखाई दे रही थी। बाहर आगन में सांवली खड़ी थी। उसके गले में फूलो की मालाएं लदी थीं।माथे पर सिन्दूर का टीका। मुझे पहले वाला दिन याद आ गया। ऐसी ही तो खड़ी थी सांवली उस दिन लेकिन उस दिन कितनी निर्भय और मस्त थी, आज उतनी ही डरी हुई बेबस। उसने मेरी ओर देखा। मेरी आखें भर आयीं।

मैं सांवली से लिपट गयी। सांवली मुझे चाटने लगी। वह आज बहुत चुप थी। घास भी नहीं खा रही थी। मेरी हिम्मत न हुई कि मैं घर के अन्दर जाऊं। आगन अगरबत्ती की खुशबू से महक रहा था। मैं चुपचाप सांवली के पास बैठ गयी।

तभी सांवनी के जोर-जोर से रोने की आवाज सुनाई दी। इधर सांवली खूटे मे ही उछलने लगी। वह बार-बार मुझे देखी। उसके गले की घंटी लगातार बज रही थी। सावली को घसीटते हुए उसके पिता और माता ला रहे थे और उसके पीछे सभी लोग थे।

'खोल इसे', उसकी दादी ने आदेश दिया।

'मैं नहीं खोलूंगी', वह चिल्लायी। तुम ही खोल कर ले जाओ।

'तू ऐसे नहीं मानेगी।' उसके पिता ने उसे एक चांटा मारा। सब उसे समझा

रहे थे कि तेरी सांवली तो भगवान को चढ़ रही है और फिर तेरे घर भाई भी तो आयेगा।

मुझे भाई नहीं चाहिए। मेरी सांवली को मत मारो—वह बराबर यही दोहरा रही थी।

लेकिन बहुत पिट जाने के बाद उसे सांवली को खोलना ही पड़ा, क्योंकि सावली किसी और के खोलने से चल ही नहीं रही थी। शायद उसे महसूस हो रहा था कि यह यात्रा उसकी अन्तिम यात्रा होगी। वह लगातार सांवनी और मुझे देख रही थी। जैसे ही सांवनी ने उसे खोला वह चल पड़ी। मैं भी पीछे-पीछे चल रही थी। गांव के काफी आगे चले जाने पर पंडित ने सांवली की रस्सी अपने हाथ मे ले ली। उसके गले की घंटी को वहीं तोड़कर फेंक दिया। सांवनी ने झपट कर घटी उठा ली। मैं और वह वहीं रुक गयी। पहाड़ी के ऊंचे नीचे चक्करदार रास्तो से होकर जाती सांवली लगातार पीछे की ओर देख रही थी। ढोल और नगाड़ो मे उसकी करुण पुकार हमें सुनाई नहीं पड़ रही थी। लेकिन हम महसूस कर रहे थे। सावली दूर होती जा रही थी। बाद में वह छोटी सी दिखने लगी। हम वहीं बैठ गये। सांवनी ने सांवली की घंटी को देखा और फूट-फूट कर रोने लगी।

वह सांवली सांवली चिल्ला रही थी। पूरी पहाड़ी पर उसकी आवाज गूंज रही थी। मानो कह रही हो—सांवली को मत मारो सांवली को मारने से भाई नहीं मिलेगा, कभी नहीं मिलेगा। तभी हमें बकरी की मिमयाहट सुनाई पड़ी।

अचानक ढोल की आवाज बन्द हो गयी। हम दोनों चौंक कर खड़े हो गये। वह क्या हुआ। दूर से देखने पर हमे लगा कि वे लोग आपस में कुछ बहस कर रहे हैं। थोडी देर बाद सांवनी के दादा बकरी के साथ लौटते दिखाई दिये। मैं और सावनी दोनों दौड़ कर उस तरफ बढ़ गये। सावली के दादा ने पास आकर बकरी की रस्सी सांवनी को थमा दी और कहा, 'इसे घर ले चल, मैं अभी लौटती हू।'

हम दोनों को विश्वास नहीं हो रहा था। सांवनी ने जल्दी से बकरी के गले मे घटी बांध दी और हम तीनों उछलते कूदते घर वापस आ गये।

—उषा विमलांशु

एफ 5/64, चार इमली

भोपाल—462016

होली का रंग

बहुत पुरानी बात है। उन दिनों धरती पर चारों तरफ हरे भरे जंगल ही जगल थे। उन्हीं जंगलों के बीच-बीच में बाकी दूरी पर इक्का दुक्का गांव बसे हुए थे। तब न तो बड़े-बड़े शहर थे, न कस्बे। केवल छोटे-छोटे गांवों में लोग रहते थे। लोगों में आपस में बहुत ही मेल मिलाप रहता था। कोई भी त्योहार आता तो गाव भर के छोटे-बड़े सब लोग मिलजुल कर अपना त्योहार घूमधाम से मनाते थे।

होली का त्योहार नजदीक आते ही जंगल का जंगल होली के रंग में रंग जाता था। लाल-लाल टेसू फूल उठते थे। आम बौरों से लदर-बदर हो उठते थे। सारी लता वल्लरियां फूलों से भर उठती थीं। इधर जंगल के सारे पेड़-पौधे होली के रंग मे रंग जाते थे तो इधर उन जंगलों के बीच में बसे गांवों में लोग भी होली के दिन रग गुलाल से सरावोर हो उठते थे।

जंगल के पेड़ पौधों और उन जंगली के बीच उसे गांवों के लोगों का होली खेलना देखकर एक बार सारे जंगल के पशु-पक्षी भी आपस में सलाह करते कि हम लोग भी इस साल रंगों की होली खेलेंगे। सारे जंगल के पशु पक्षी यह प्रस्ताव लेकर जगल के राजा शेर सिंह के पास पहुंचे। शेर सिंह जंगल में होली मनाने की बात सुनकर फूले नहीं समाये। वह तो पहले से ही चाहते थे कि जंगल के पशु-पक्षी भी आदमियों की तरह धूम धाम से होली का त्योहार मनाते तो कितना अच्छा होता। जगल के पशु पक्षिओं का प्रस्ताव सुनकर तो वे और भी मगन हो गये।

जंगल के राजा शेर सिंह पक्षियों को इस साल धूम-धाम से होली मनाने के लिए कहकर स्वयं भी होली मनाने की तैयारी करने लगे। सारे पशु-पक्षी जंगल के पेड़-पौधों के फूल और पत्तियों से रंग तैयार करने लगे पशुओं में इस साल होड लग गई कि किस का रंग सबसे बढ़िया होता है। उधर पक्षीगण अलग अपना-अपना रग तैयार में लग गये।

धीरे-धीरे करके होली का त्योहार आ गया। भालू दादा अपनी टोली लेकर नाचते गाते आ गये। बन्दर दादा अपनी टोली लेकर उछलते कूदते आ गये। लोमड़ी, सियार लक्कड़बग्गा खरगोश आदि भी अपनी अपनी टोली लेकर सुबह से ही बीच जंगल में जुट गये। उधर बूढ़े बरगद पर सारे पक्षी रंग बिरंगा रंग लिये पख फड़फड़ा कर नाचते-गाते इकट्ठा हो गये। सारे पशु-पक्षी अपनी-अपनी धुन मे

नाच गा रहे थे कि इतने में जंगल के राजा शेर सिंह भी आ गये। पशु पक्षियों की मस्ती भरी होली से सारा जंगल गूंज उठा। शेर सिंह के आते ही रंगों की होली शुरू हो गयी।

किसी ने भालू दादा पर एक भरी बाल्टी काला रंग उड़ेल दिया। बन्दर ने लंगूर के मुंह पर काला रंग लगा दिया। लंगूर ने देशी बन्दर के मुंह पर लाल रंग पोत दिया। किसी ने हिरन पर बाघ दादा पर कत्थई रंग फेंक दिया।

इस तरह सुबह से शाम तक लोग रंग खेलते रहे। दिन डूबने के बाद जंगल की होली खत्म हुई। दूसरे दिन भालू दादा रंग छुड़ाने लगे तो उनका रंग नहीं छूटा। लंगूर के मुंह का काला रंग नहीं छूटा। तथा देशी बन्दर के मुंह का लाल रंग नहीं छूटा। इसी तरह लाख कोशिश के बाद भी बाघ दादा तथा हिरन भइया का रंग पूरा नहीं छूटा और वे चितकबरा हो गये।

इतने पक्के पंग से होली खेलने की शिकायत लेकर लोग जंगल के राजा शेर सिंह के पास पहुंचे। तो शेर सिंह ने सारे जंगल के पशु पक्षियों से कहा कि अब जब तक पिछले साल की होली का लगा हुआ रंग नहीं छूट जाता तब तक जंगल में होली तो होगी लेकिन किसी पर कोई रंग नहीं डालेगा।

तभी के भालू दादा का रंग लाल, लंगूर का मुंह काला, देशी बंदर का मुंह लाल, हिरन और बाघ का रंग चितकबरा बना हुआ है और अभी उनका रंग नहीं छूट पाया। इसी लिये आज भी होली पर जंगल के जानवर किसी पर रंग नहीं डालते है और जब तक उन लोगों का रंग छूट नहीं जायेगा तब तक जंगल में होली पर रंग नहीं डाला जायेगा।

—कल्पनाथ सिंह
श्री नगर, देवा रोड़,
बाराबंकी (उ.प्र.)

नकली भूत

भोला अच्छा सच-सच बता क्या तुमने कभी भूत देखा है ? नीरज भोला से इतना पूछ कर शान से सभी लडकों की ओर देखने लगा। तभी भोला पूछ बैठा–मैने तो भूत कभी नहीं देखा है। क्या तुमने देखा है ?

हां, मैने भूत देखा है। तुम लोग भी देखोगे।

भूंत की बात सुन कर सारे बच्चे सकते में आ गये। किसी की समझ में नही आता नीरज को क्या जवाब दिया जाये। तभी भोला फिर बोला, "और अगर भूत पकड़ ले तो क्या होगा ?"

अरे यार ! तू चिन्ता क्यों करता है ? भूत पकड़ेगा कैसे ? तुम लोग भूत देखना चाहते हो कि नहीं ? और तुम लोगों को विश्वास न हो तो महेश गनेश आदि से पूछ लेना। वे कल भूत देख आये हैं।

भूत देखने की बात बड़ी डरावनी है। हम लोग अभी नहीं, कल बतायेंगे। जब महेश गनेश से पूछ लेंगे तब। लेकिन तुम अभी साफ–साफ बता दो, भूत पकड़ेगा तो नहीं ? भोला यह कह कर नीरज की ओर देखने लगा तो नीरज बोल पडा–"अरे पकड़ना होता तो महेश गनेश हो नहीं पकड़ लेता। उनसे पूछना। अच्छा चलो मैं पक्का वादा करता हूं कि भूत नहीं पकड़ेगा। अब बोलों तुम लोग भूत देखोगे ?"

हां ! हम लोग देखेंगे।

स्कूल से छुट्टी होने के बाद कल तुम लोग शाम को नदी के किनारेवाले बाग मे आना। भूत रोज पेड़ से उतरकर वहां घूमता है। देख लेना।"इतनी बातें होने के बाद सभी बच्चे अपने–अपने मन में एक अजीब कौतूहल कर अपने–अपने घर चले गये।"

असल में नीरज अपने स्कूल का बड़ा ही चंचल और खुराफाती लड़का था। कोई न कोई चमत्कार करके सभी लड़कों पर रौव दिखाना, उसकी आदत बन गई थी। उसकी इस हरकत के लिये भी कोई मना करता तो वह उससे लड़ाई कर बैठता। मां बाप भी समझा कर हार गये थे लकिन नया–नया कारनामा दिखाने की उसको ऐसी लत पड़ गई थी कि किसी की भी बात वह नहीं मानता था। इधर अपने चाचा के साथ वह दिल्ली गया था तो कई प्रकार के डरावने मुखौटे वह

खरीद लाया था . अपने गाव के बच्चो पर रोब जमाने के लिये वह भूत दिखाने का नाटक कल कर चुका था और उसमें वह कल सफल भी रहा। इसीलिये आज वह शाम को नदी के किनारेवाले बाग में बुलाया।

दूसरे दिन वह स्कूल से छुट्टी होने के बाद शाम को नदी के किनारेवाले बाग में भूत का भयानक मुखौटा लगा कर एक मोटे पेड़ पर जाकर बैठ गया। उस पेड पर एक मोटा बन्दर पहले ही से बैठा था। नीरज को मुखौटा लगाकर उसी पेड पर चढ़ता देखकर बन्दर मन में सोचने लगा कि वह कोई नया जानवर आज उसे इस पेड़ से भगाने आ गया है। इसलिये बन्दर बराबर नीरज पर नजर गड़ाये था।

उधर शाम होते ही भोला अपने तीन साथियों के साथ रमेश को लेकर नदी के किनारेवाले बाग में ज्यों ही पहुंचा कि नीरज मुखौटा लगा कर भूत बना धीरे-धीरे पेड़ के नीचे उतर आया। सारे बच्चे दूर से शाम के झुटपुटे में एकटक भूत बने नीरज को देखते रहे। नीरज दो चार मिनट के बाद फिर पेड पर चढ़ गया। सारे लड़के मन में एक डर भरे कौतूहल के साथ अभी वहीं खड़े दुबारा भूत देखने का इन्तजार कर रहे थे। उधर भूत बना नीरज ज्योंही दुबारा पेड़ पर चढ़ने लगा कि पेड़ पर पहले से बैठा बन्दर अपने रक्षा के लिए भूत बने नीरज पर खो-खो करता टूट पडा। अचानक बन्दर के हमले से घबड़ा कर नीरज चीखता चिल्लाता पेड से नीचे उतरने लगा कि तब तक हड़बडाहट में नीचे आते गिर पडा। बन्दर भी इतने गुस्से में था कि पेड़ से नीचे गिर जाने के बाद भी नीरज को नहीं छोड़ा। नीरज की चीख पुकार सुनकर उसके सारे साथी उनकी आवाज पहचान कर उसके पास दौड़ पड़े तो बन्दर उसे छोड़कर भाग गया।

पेड से गिरने तथा बन्दर के काटने से नीरज काफी घायल हो गया था। अब सारे लड़कों की समझ में आया कि वह भूत का नाटक रचकर नीरज खुद हम लोगों को डराना चाहता था। लेकिन उस की सारी चालाकी धूल में मिल गई। सारे बच्चे उठा कर घर लाये। कई दिनों की दवा एवं इलाज के बाद नीरज ठीक हुआ। उसी दिन से उसकी सारी शरारत और खुराफात खत्म हो गई। फिर वह जीवन भर के लिये सुधर गया।

—कल्पनाथ सिंह
श्रीनगर, देवा रोड
बाराबंकी।
उ. प्र.-225001

दमड़ीचंद का कुंआ

किसी नगर में दमड़ीचंद नाम का एक धनवान रहता था। वह था तो धनवान, किंतु बहुत अधिक कंजूस था। पूरे नगर में लोग उसे जानते थे। चमड़ी जाए पर दमडी न जाए वाली प्रकृति का होने के कारण ही उसका नाम दमड़ीचंद पड़ गया था।

कपड़ों में कंजूसी, खाने में कंजूसी, और तो और, पानी पीने में भी कंजूसी करता था वह।

एक दिन उसकी पत्नी ने उससे कहा, "पानी पीने में कंजूसी क्यों करते हो ? पेट भरकर पानी तो पीओ। वह तो मुफ्त में मिलता है। दमड़ी भी खर्च नहीं होती।"

दमड़ीचंद बोला, "एक चीज का भी अधिक उपयोग करने से वह आदत दूसरी चीजों में भी आ जाएगी। इसलिए मुफ्त का मिलने पर भी पानी का उपयोग कम ही करता हूं, जिससे आदत बिगडने न पाए।"

एक बार दमड़ीचंद ने दक्षिण भारत की यात्रा पर जाने का विचार किया। उसकी पत्नी बोली, "मैं भी साथ चलूंगी।"

दमड़ीचंद ने कहा, "फिर इस घर की रखवाली कौन करेगा ? हमारे तीर्थयात्रा पर चले जाने पर कोई चोर-डाकू ताला तोडकर सारा सामान चोरी कर ले जाएगा, तब ?"

सेठानी बोली, "किसी रिश्तेदार को बुला लें। तब तक वह रखवाली करेगा।"

दमड़ीचंद ने कहा, "नहीं, नहीं। किसी का विश्वास नहीं करना चाहिए। कल को उसकी नीयत बदल जाए तो ?"

सेठानी निराश हो गई। बोली, "फिर क्या करेंगे ?"

दमड़ीचंद ने कहा, "ऐसा करें कि हम अपना यह मकान ही बेच दें।"

पत्नी ने पूछा, "लेकिन लौट कर आएंगे, तब रहेंगे कहां ?"

दमड़ीचंद बोला, "तब नया मकान खरीद लेंगे।"

दमड़ीचंद को कोई संतान नहीं थी। पति-पत्नी बस दो ही थे। इसलिए उसने मकान बेचने का निश्चय कर लिया। दमड़ीचंद अपना मकान बेच रहा है, यह बात में फैल गई

लोगों ने पूछना शुरू किया, "क्यों बेचते हैं मकान ?"

दमड़ीचंद कहता, "दक्षिण भारत की यात्रा करने जा रहे हैं। वापस लौटें या न लौटें। इसलिए बेच रहा हूं।

ग्राहक आने लगे। लेकिन दमडीचंद की एक शर्त थी, "घर बेचूंगा, लेकिन घर के आगे का आंगन तथा कुंआ नहीं बेचूंगा।"

बिना आंगन और कुंए के कोई घर खरीदने को तैयार नहीं होता था। आखिर कम कीमत पर नगर के लखपति सेठ ने दमड़ीचंद का मकान खरीदना स्वीकार कर लिया।

दमड़ीचंद ने लिखा-पढी करवाकर उसे मकान बेच दिया। लखपति सेठ ने रुपये गिन दिए। दमड़ीचंद ने सारा रुपया तथा अपने कीमती आभूषण सब एक बक्से में रखे और उस बक्से को आंगन के एक तरफ बने कुंए में एक बड़े से आले मे चुपचाप छिपा दिया। वहां तक किसी की नजर नहीं जा सकती थी और फिर कुए मे भला कौन उतरता ?

अब दमड़ीचंद और उसकी पत्नी दोनों दक्षिण-भारत की यात्रा पर चले गए। समुद्र में स्नान किया। मंदिरों में दर्शन-पूजन किया, घूमे-फिरे और मौज-मस्ती ली।

महीने-डेढ़ महीने के बाद दमड़ीचंद तथा उसकी पत्नी तीर्थयात्रा से वापस अपने नगर लौटे। लौटकर देखा तो लखपति सेठ ने उनका आंगन तथा कुंआ भी अपने कब्जे में कर रखा था। कब्जा ही नहीं, उसने कुएं को बंद कर दिया था।

दमड़ीचंद ने उससे पूछा, "लखपति सेठ, हमारे आंगन का उपयोग तुम क्यो करते हो ? और हमारा कुंआ क्यों बंद कर दिया है ?"

लखपति सेठ ने कहा, "बिना आंगन का भी भला कोई घर होता है ? हमने आगन तथा कुंआ भी घर के साथ खरीदा है।"

दमड़ीचंद गुस्सा होकर बोला, "झूट मत बोलो, हमारी लिखा-पढ़ी में साफ लिखा गया था कि घर बेचा है, आंगन तथा कुंआ नहीं।

लखपति सेठ ने कहा, "अरे दमड़ीचंद, उसने तो लिखा है आंगन और कुंए के सहित घर बेचा है।

"यह झूठ है। मैंने तो यह लिखवाया था कि आंगन और कुंए के 'रहित' घर बेचा है।" दमड़ीचंद आश्चर्य तथा क्रोध के स्वर में बोला।

लखपति सेठ ने कहा, "इसमें तो लिखा है आंगन और कुएं 'सहित' बेचा है।

दमड़ीचंद बोला, "आपने 'रहित' शब्द को 'सहित' बना लिया है।

"जो लिखा है, वह इस कागज में लिखा है और लिखी बात ही सच होती है।"

दमड़ीचंद ने बहुत कहा-सुना, लेकिन लखपति सेठ नहीं माना। दमड़ीचंद ने कोर्ट में उस पर दावा कर दिया। न्यायाधीश ने लखपति सेठ का कागज देखा

उसमें आंगन और कुएं सहित लिखा था।

दमड़ीचंद ने अदालत से कहा, "सरकार, हमने तो आंगन और कुंए रहित मकान बेचा था। इस लखपति सेठ ने 'रहित' शब्द को 'सहित' बना लिया है।

"तुम्हारे पास इस बात का क्या सबूत है कि लखपति सेठ ने कागज में फेरफार कर 'रहित' का 'सहित' बना लिया है ?" न्यायाधीश ने दमड़ीचंद से पूछा।

दमड़ीचंद क्या सबूत देता ?

न्यायाधीश ने उसका दावा खारिज कर दिया।

दमड़ीचंद के दुख का पार न रहा। उसे लगा कि अब राजा के महल के सामने लकड़ियां की चिता बनाकर जल मरने के सिवा और दूसरा कोई रास्ता नहीं है और उसने राजा के महल के सामने लकड़ियों की चिता तैयार करनी शुरू कर दी। राजा के सिपाहियों ने यह देखकर उससे पूछा, "यह क्या कर रहे हो तुम ?"

दमड़ीचंद ने कहा, "मैं अपनी पत्नी के साथ जीवित जल-मरूंगा।"

चौकीदार ने पूछा, "क्यों ?"

दमड़ीचंद बोला, "महाराज के राज्य में हम ठगे गए हैं। यहां सही न्याय भी नहीं मिलता। हमारा आंगन और कुंआ उस लखपति सेठ ने हजम कर लिया है इसलिए हम जल-मरेंगे।"

चौकीदार ने जाकर राजा को यह समाचार दिया। राजा ने दमड़ीचंद को दरबार में हाजिर करने की आज्ञा दी। चौकीदार दमड़ीचंद को राजा के पास ले गया। सारी बातें सुनने के बाद राजा को लगा कि दमड़ीचंद सच बोल रहा है। लखपति सेठ ने निश्चय ही कपट किया होगा। कागज में उसने 'रहित' का 'सहित' बनाया होगा। लेकिन यह बात प्रमाणित कैसे हो ?

राजा स्वयं विचार करने लगा, लेकिन कोई उपाय नहीं समझ में आया। रानी ने राजा को चिंतित देखकर कारण दूछा तो राजा ने दमड़ीचंद की पूरी कथा रानी को सुना दी और कहा, "मैं चाहता हूं दमड़ीचंद के साथ अन्याय न हो। लेकिन कोई उपाय नजर नहीं आता।

रानी को एक उपाय सूझ गया। उसने कहा, "उस लखपति सेठ को सभा मे बुलाया जाए। मैं उससे सच बातें उगलवा लूंगी।"

सभा में लखपति सेठ को बुलवाया गया। दमड़ीचंद भी आ गया था। राजा ने बहुत पूछा, "लेकिन लखपति सेठ किसी भी तरह यह मनाने को तैयार नहीं हुआ कि दमड़ीचद ने उसे आंगन तथा कुंआ रहित मकान बेचा था।

अंत में रानी ने कहा, "मैंने सुना है कि कुंए में दमड़ीचंद ने रुपये तथा कीमती आभूषणों की पेटियां छिपा रखी हैं।" वह तुमने निकाल कर कुंआ बंद कर दिया है।"

लखपति सेठ बोला, "नहीं, नहीं, कुंए में तो मैं उतरा ही नहीं हूं।"

रानी ने आगे कहा, "आंगन में गड्ढा खोदकर दमड़ीचंद ने अपना कुछ

रुपया-पैसा छिपा रखा था, वह भी तुमने निकलवा लिया है। यह बात सच है य नहीं।''

"एकदम झूठ !'' लखपति सेठ ने तुरंत विरोध किया।

रानी ने फिर अपनी बात कही, "ठीक है तुम दोनों मे जो भी झूठा होगा, उसे मौत की सजा मिलेगी। बोलो दमड़ीचंद, तुमने मकान बेचा, लेकिन आंगन और कुंआ क्यों नहीं बेचा ?''

दमड़ीचंद ने बताया, "कुए में मैने एक पेटी रखी थी। उस पेटी को एक बड़े संदूक में रखा था। उसमें हमारे कीमती गहने-आभूषण भरे थे।''

इतना सुनते ही लखपति सेठ जोर से बोल पड़ा, "महाराज, यह दमड़ीचंद झूठ बोलता है। संदूक में गहने-आभूषण नहीं थे। मात्र पत्थर भरे थे।''

रानी ने पूछा, "तुम सच बोल रहे हो ? क्या संदूक में पत्थर भरे थे ?''

लखपति सेठ बोला, "जी, हां।''

रानी ने आगे कहा, "दमड़ीचंद झूठ बोलता होगा तो उसे मौत की सजा मिलेगी ही, लेकिन तुम वह संदूक दिखला सकते हो ?''

लखपति सेठ बोला, "क्यों नहीं ? टूटी-फूटी हालतवाला वह संदूक सुरक्षित रखा है।''

रानी ने अब अपना फैसला सुनाते हुए कहा, "लखपति सेठ, यह प्रमाणित हो गया कि असली अपराधी तुम ही हो। पहले तुमने कहा कि कुंए में कुछ नहीं निकला, फिर यह पत्थरोंवाला संदूक कहां से आ गया ? निश्चय ही उसमें का सामान प्राप्त करने के लिए ही तुमने उसे तोड़-मोड़ा है।''

लखपति सेठ गिड़गिड़ाने लगा और क्षमा मांगने लगा।

रानी ने कहा, 'तो तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो ? और क्षमा तो तुम्हे दमड़ीचंद ही दे सकता है।''

लखपति सेठ ने स्वीकार कर लिया कि उसने कागज में 'रहित' शब्द का 'सहित' बनाया था। उसने दमड़ीचंद को मकान वापस दे दिया और रुपयों-पैसो वाला संदूक भी वापस दे दिया।

दमड़ीचंद ने उसे क्षमा कर दिया।

रानी ने दमड़ीचंद से कहा, "दमड़ीचंद, अब तुम भी अपनी कंजूसी छोड़ दो।''

लखपति सेठ ने ठगी छोड दी और दमड़ीचंद ने फिर कभी कंजूसी नहीं की।

—गोपाल दास नागर

26/16 ए, चौखम्भा,

221001 (उ प्र)

एक थी चिड़िया, एक था चिड़ा

एक थी चिड़िया, ए कथा चिड़ा। फुर्र-फुर्र करते दोनों इधर-उधर उड़ रहे थे। थक कर जा बैठे एक घर की छत पर। चिड़ा अपनी चोंच खुली रखे देख रहा था।

चिड़िया बोली, "इस तरह चोंच फाड़े क्यों बैठे हो ?"

चिड़े ने कहा, "तो क्या करुं ? तुम्हें कोई जगह पसंद ही नहीं आती। मैं तो थक कर यह बैठा ! अब तुम्हें जहां घोंसला बनाना हो, वहां बनाओ।"

चिड़िया ने उत्तर दिया, "मुझे अकेले घोसले में नहीं रहना है। यह क्यों नही कहते कि तुम्हें घोंसला बनाना ही नहीं है। आखिर हम दोनो को घोंसले मे साथ-साथ रहना है।"

चिड़ा बोला, "तुम जगह ढूंढ लो। मैं वहां घोंसला बनाने में तुम्हारी मदद करूगा।"

इस तरह चिड़ा और चिड़िया आपस में बातें कर रहे थे।

चिड़े ने चिड़िया से कहा, "अब तक पांच-सात जगह देखीं। तुम्हें एक भी पसद नहीं आयी। अब तो कहीं भी घोंसला बना लो।"

चिडिया बोली, "चाहे जहां घोंसला नहीं बनाया जा सकता। बिल्ली न पहुच सके, सूर्य न आ सके, और कौआ न देख सके, ऐसी जगह घोंसला होना चाहिए। नहीं तो हमारे अण्डे जीवित नहीं बचेंगे।"

तभी उस घर का दरवाजा खुला। हसन मियां अंदर आए।

चिड़ा चिड़िया की तरफ देखकर बोला, "भागो।"

चिड़िया ने पूछा, "क्यों ?"

चिड़े ने कहा, "देखती नहीं हो, वह कौन है ?"

चिडिया ने पूछा, "कौन ? वह दाढी वाला ?"

चिड़े ने कहा, "देर न करो। जल्दी भागो।"

चिड़िया ने पूछा, "अरे, वह तो तोते को कैद रखने का घर है।"

तभी वहां हसन मियां की छोटी बेटी अमीना दौड़ आयी। आकर अपने अब्बू से लिपट गई।

हसन मियां ने कहा, "देखो बेटी अमीना, कैसा सुदर पिंजरा लाया हूं। तुम

रोज कहती थीं न–पिंजरा लाओ। तोता रखेंगे।

अमीना बोली, "संदर पिंजरा है। अब एक एक सुंदर सा तोता भी लाएंगे।"

"हां, हां, एक-दो दिन में तोता भी ला दूंगा।" हसन मियां ने कहा और पिंजरा एक कड़ी से लटका दिया।

अमीना अंदर से अपनी अम्मी को बुला लायी। सुंदर पिंजरा दिखलाया। उसकी अम्मी भी खुश हो गयी। उसे भी पिंजरा खूबसूरत लगा। पसंद आया।

उधर चिडिया ने आवाज दी, "प्यारे चिड़े !"

चिड़ा बोला, "क्या ?"

चिड़िया ने पूछा, "मेरी बात मानोगे ?"

चिड़ा बोला, "कहो।"

चिड़िया ने कहा, "इस पिंजरे में घोंसला बनाएं तो ?"

चिड़ा हंस पड़ा।

चिड़िया ने पूछा, "क्यों, क्या हुआ ? हंसे क्यों ?"

चिड़ा बोला, "वह तुम्हारे घोंसले को तोड़-फोड़ कर फेंक देगा और तुम्हारे पख भी तोड़-फोड़ डालेगा। ऐसा है वह दाढ़ीवाला।"

चिड़िया ने कहा, "नही, नहीं ! सब ऐसे क्रूर नहीं होते। मुझ तो उस पिजरे मे ही घोंसला बनाना है। फिर चाहे जो हो !"

चिड़ा बोला, "तो बनाओ। बाद में पछताओगी।"

चिड़िया ने चिड़े की बात अनसुनी कर दी। फुर्र करती उड़ गई। अच्छे-अच्छे बहुत सारे तिनके मुंह में दबाकर लौटी। पिंजरे में ले जाकर तिनके जमा किये। इस तरह बहुत सारे तिनके बारी-बारी से ले आयी। लगी बनाने घोंसला। शाम तक तो आधा घोंसला तैयार हो गया। फिर तो चिड़ा भी लगा दौड़ लगाने। तिनके लाता और घोंसला बनाने में चिड़िया की मदद करता।

सुबह हुई। चिड़िया जल्दी से उठ गई और काम में लग गई। चिड़ा राजा भी उसकी मदद करने लगे। घोंसला बनकर तैयार हो गया। चिड़िया की खुशी की ठिकाना न रहा।

चिड़िया ने आवाज दी, "प्यारे चिड़े !"

चिड़ा बोला, "क्या है ?"

चिड़िया ने कहा, "देखो, कितना अच्छा घोंसला बना है।"

अमीना ने भी देखा। बहुत देर तक वह उसे देखती रही। दौड़कर घर के अदर गई। अपनी अम्मी को बुला लायी। बोली, "देखो अम्मी, चिड़े ने और चिड़िया ने मिलकर पिंजरे में कितना सुंद्रर घोंसला बनाया है।"

अम्मी ने कहा, "अरे, यह तो आश्चर्य की बात हुई !"

अमीना बोली, "अम्मी, चिड़ा और चिड़िया कितने सुंदर लगते हैं। देखो, चिडिया

घोसला बना रही है और चिड़ा तिनके ला-ला कर दे रहा है।''

अम्मी ने कहा, "बेचारे भले न रहें इसमें। हम अभी तोता नही लायेंगे।''

अमीना बोली, "हां अम्मी, मुझे चिड़ियां बहुत अच्छी लगती हैं। पिंजरे में भले ही इनका घोंसला रहे। हम तोते की जगह चिड़ियां पालेंगे।''

फिर तो अमीना रोज आंगन में चावल के दाने बिखेर देती। चिड़ा और चिडिया दाने चुगते। पिंजरे में रह कर मौज मनाते। इसी तरह दिन बीतने लगे।

एक दिन अमीना ने दाना डाला। चिड़ा तो पिंजरे से बाहर उड़कर दूर जा बैठा। चिड़िया ने उसे बुलाया, "चलो चिड़े, देखो चावल के दाने बिखरे हैं।''

चिड़ा बोला, "आता हूं। तुम चुग लो।''

चिड़िया दाने चुगने लगी। चिड़ा आलसी की तरह अभी तक बैठा था। चिडिया ने दाने चुग लिए। पानी पी लिया और वापस उड़कर पिंजरे के अंदर चली गई।

चिड़े ने अंगडाई ली। दो-तीन बार उछल-कूद। पंख फड़फड़ाकर तैयार हुआ। दाने चुगने के लिए उड़कर नीचे आंगन में आया कि पीछे-पीछे उसका काल भी आया। एक बिल्ली छिप कर बैठी थी। किसी ने उसे देखा नहीं था। चिड़ा नीचे बैठा और एक दाना मुंह में डाला कि बिल्ली कूदी, झपटकर चिड़े को मुंह में दबा लिया और भाग गयी।

चिड़िया चीं-चीं, चीं-चीं चिल्लाती रही। चिडा भी एक-दो क्षण चीं-चीं करता रहा। अमीना ने देखा तो एक दम बिल्ली के पीछे दौड़ी, लेकिन बिल्ली भाग गई।

चिडिया रोती रही, रोती रही, बस, रोती ही रही।

बिल्ली ने चिड़े को मार डाला। अमीना और उसकी अम्मी बहुत दुखी हुए। चिड़िया लगातार रोये चली जा रही थी। उसका रोना देखकर अमीना तथा उसकी अम्मी की आंखों में भी आंसू भर आये।

दूसरे दिन अमीना ने दाना डाला। चिड़िया पिंजरे में थी। दाना चुगने बाहर नहीं निकली। अमीना ने बहुत देर तक प्रतीक्षा की, लेकिन चिडिया बाहर नहीं ही आयी। सारा दिन पिंजरे में ही बैठी रही। अमीना बार-बार देखती। उसके लिए पानी ले आयी।

"अम्मी, इसके पिंजरे में पानी रख दूं ?''

अम्मी बोली, "हां, एक कटोरी में रख दे।''

उचक कर अमीना ने पिंजरे में देखा। चिडिया गुमसुम सी बैठी थी। उसने एक कटोरी में पानी रखा और दूसरी कटोरी में चावल के दाने रखे। लेकिन चिडिया ने एक दाना भी नहीं चुगा। एक बूंद पानी भी नहीं पिया।

दूसरे दिन अमीना ने देखा–चिड़िया वैसी की वैसी बैठी है। आंखें बंद हैं।

अमीना ने अपनी अम्मी को बुलाकर कहा, "देखो अम्मी, चिड़िया को कुछ हो गया है।''

अम्मी ने देखा–चिड़िया मर चुकी थी। उसके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। अमीना से बोली, "बेटी, चिड़िया मर चुकी है।"

अमीना बोली, "अरे, नहीं-नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता।"

अम्मी ने कहा, "अब इसे फिंकवा दो।"

अमीना बोली, "नहीं अम्मी, चिड़िया सो रही है।"

अम्मी ने कहा, "नहीं, यह अपने चिड़े के पास चली गई है।"

अमीना ने कहा, "अब हम तोता नहीं लायेंगे। पिंजर रख दो।"

–गोपालदास नागर

26/16 ए, चौखम्भा

वाराणसी–**221001** (उ. प्र.)

मीठा गीत गानेवाली चिड़िया

एक नन्हीं चिड़िया थी–बड़ी प्यारी-प्यारी। उसकी आवाज बड़ी मीठी थी। वह अपनी मीठी आवाज में कभी-कभी बड़े सुरीले गीत गाया करती थी। चिड़िया जंगल मे एक बहुत ऊंचे पेड़ पर घोंसला बनाकर रहती थी। चिड़िया के साथ उसका चिड़ा और छोटा बच्चा भी रहा करता था।

एक बार उस देश का राजा शिकार खेलने के लिए निकला। घूमता-घामता राजा अपने दरबारियों के साथ जंगल में उस स्थान पर जा पहुंचा, जहां पेड पर मीठा गीत गाने वाली चिड़िया रहा करती थी। चिड़िया अपने घोंसले में बैठी हुई अपनी मधुर आवाज में सुरीला गीत गा रही थी। उसका चिड़ा खाने की तलाश मे कहीं दूर गया हुआ था। चिड़िया का छोटा बच्चा अभी उड़ने के योग्य नहीं हुआ था। वह वहीं पास में बैठा, टुकुर-टुकुर दृष्टि से अपनी मां की ओर देखता हुआ उसका गीत सुन रहा था।

राजा और उसके दरबारी जब चिड़िया के पेड़ के निकट पहुंचे तो चिड़िया का सुरीला गीत सुनकर राजा और दरबारी चकित रह गए। वे अपनी सुध-बुध खोकर चिड़िया का स्वर्गिक संगीत सुनने लगे। जब गीत समाप्त हुआ, तब वे लोग अपने होश में आए।

राजा को चिड़िया का गीत बड़ा प्यारा लगा। उसने अपने दरबारियों को आदेश दिया कि वे पेड़ पर चढ़कर चिड़िया को पकड़ लाएं। वह उस चिड़िया को अपने महल में ले जाएगा।

राजा का आदेश पाते ही कुछ दरबारी पेड़ पर चढ़ने लगे। वे अब चिड़िया के घोसले की ओर बढ़ रहे थे। दरबारियों को घोंसले के निकट आते देखकर चिडिया फुर्र से उड़ गयी पर दरबारियों ने चिड़िया के छोटे बच्चे को पकड़ लिया, क्योकि बच्चा अभी छोटा ही था और उड़ने के योग्य नहीं हुआ था। दरबारी लोग चिडिया के बच्चे को पकड़कर नीचे उतर आए। अब राजा ने सबको महल की ओर लौटने की आज्ञा दी। सभी दरबारी चिड़िया के बच्चे को लेकर महल की ओर चल पडे। पर यह कितने आश्चर्य की बात थी कि गीत गानेवाली चिड़िया भी ऊपर उड़ती हुई साथ-साथ चल रही थी।

महल में जाकर राजा ने चिड़िया के बच्चे को एक सोने के पिंजड़े में बन्द कर

दिया उसके खाने के लिए मीठे मीठे फल और पीने के लिए ठंडा पानी सोने की छोटी-छोटी कटोरियों में रखवा दिये।

अब चिड़िया स्वयं आकर उस पिंजड़े के समीप बैठ गयी जिसमें उसका बच्चा बंद था। चिड़िया उदासीनता की मूर्ति-सी बनी वहां चुपचाप बैठी रही। तभी एक कर्मचारी वहां आ गया। उसने चिड़िया को भी पकड़ कर उसी पिंजड़े के अन्दर बंद कर दिया। अब चिड़िया और उसका बच्च दोनों एक ही पिंजड़े के अन्दर बंद थे। चिड़िया अपने बच्चे के प्रेम में ही आकर पिंजड़े में बंद हो गई थी।

धीरे-धीरे कई दिन बीत गए। पर चिड़िया न तो कुछ खाती थी न पीती बस उदास बनी चुपचाप पिंजड़े में बैठी रहती थी। चिड़िया दिन पर दिन कमजोर होती जा रही थी। उसने पिंजड़े में आकर कभी अपना मीठा गीत नहीं गाया था। हां, चिड़िया का नन्हा बच्चा अब अपनी मां को अपने पास पाकर बड़ा प्रसन्न था। वह खूब पेट भर कर खाता-पीता था और दिन-प्रतिदिन मजबूत और तगड़ा होता जा रहा था।

राजा को यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई थी कि गीत गानेवाली चिड़िया खुद आकर पिंजड़े में कैद हो गई। उसको आशा थी कि अब चिड़िया का मीठा गीत फिर से सुनने को मिलेगा। पर पिंजड़े में बंद चिड़िया ने अपना सुरीला गीत फिर से नहीं गाया। ऊपर से वह दिनों दिन कमजोर भी होती जा रही थी।

राजा को यह देखकर बड़ी चिन्ता हो रही थी। उसे अब अपने किए पर कुछ पश्चाताप भी हो रहा था कि उसने वन के आजाद पंछी और बच्चे को पिंजडे मे बन्द करवा दिया। पर तब भी चिड़िया का स्वर्गिक गीत भी उसे सुनने को न मिला।

प्रतिदिन राजा ने अपनी प्यारी रानी से अपने दिल की बात कही तो राजा को रानी की सलाह पसन्द आ गई। उसने चिड़िया और उसके को पिंजड़े से निकलवा कर महल की छत पर बैठा दिया। फिर सब छत से नीचे चले आए।

जब चिड़िया के पास कोई भी मनुष्य नहीं रहा और सभी लोग छत से उतर गए, तो चिड़िया ने बहुत दिनों के बाद अपने सुरीले स्वर में फिर गीत प्रारम्भ कर दिया। आज उसके स्वर में गज़ब का आकर्षण था। नीचे से राजा, रानी और सारे दरबारी चिड़िया का सुरीला गीत सुनकर हर्ष से विभोर हो रहे थे।

गीत समाप्त होने पर चिड़िया ने अपने पंख फडफड़ाए और अपने बच्चे के साथ उड़कर जंगल की ओर चली गई।

—चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'

261, फेथफुल गंज, कैन्ट, कानपुर-208004 (उ. प्र.)

वीर बालिका

बहुत पुरानी बात है। किसी देश मं एक मनुष्य रहता था। उसके सात लडके थे। उसकी बड़ी इच्छा थी कि मेरी एक पुत्री भी हो। आखिर एक दिन ऐसा आया और उसके यहाँ एक लड़की ने जन्म लिया। माता-पिता दोनों को ही बड़ी प्रसन्नता हुई कि ईश्वर की कृपा से उनकी बहुत दिनों की इच्छा पूरी हुई। किन्तु नवजात बच्ची बहुत दुबली और कमजोर थी। इससे माता-पिता को उसके विषय में बडी चिन्ता हो गई। तभी उनके कुल-पुरोहित ने बतलाया कि नवजात बच्ची को यदि मत्र से पवित्र किया हुआ, पास की नदी का जल पिला दिया जाए, तो बच्ची दीर्घायु प्राप्त करेगी और उसके जीवन को कोई भय न रहेगा।

गाँव से थोड़ी दूरी पर निर्मल जल से लहराती हुई एक नदी बहती थी। उसने अपने लड़कों को बुलाकर उन्हें एक बरतन देकर जल्दी से नदी का जल ले आने को कहा। लड़के बरतन को लेकर उछलते-कूदते नदी के तट पर जा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर प्रत्येक लड़का यह प्रयत्न करने लगा कि नदी के जल को लेकर मैं ही सबसे पहले घर पहुँचूँ, ताकि उनका पिता उसी से प्रसन्न हो जाए। अत: बरतन को भरने के लिए वे लोग आपस में छीना-झपटी करने लगे। इसी छीना-झपटी मे वह बरतन उनके हाथ से छूटकर नदी में गिर पड़ा और देखते-देखते गहरे पानी में डूब गया।

अब तो सातों लड़के बहुत घबड़ाए। वे वहीं पर खड़े-खड़े सोचने लगे कि क्या करें, क्या न करें ? अगर वे बिना बरतन के और बिना नदी का जल लिए खाली हाथ घर पहुँचते हैं तो उनका पिता अच्छी मरम्मत करेगा। लड़के डर के मारे नदी के किनारे बैठकर अपनी परेशानी पर विचार करने लगे।

उधर जैसे-जैसे देर हो रही थी, पिता का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। उसने सोचा कि सातों लड़के बड़े शैतान हैं। खेल-कूद में उनका मन बहुत लगता है। मालूम होता है कि वे शैतान किसी खेल में उलझ गए और नदी का जल लाने की बात ही भूल गए हैं। लड़कों का पिता अब मन में घबड़ाने लगा कि नदी का जल न आ सकेगा, और नन्हीं-मुन्नी बच्ची असमय ही काल के गाल में समा जाएगी। यह सोच कर पिता क्रोध में भर उठा और दाँत पीसते हुए उसके मुख से निकला "कितना अच्छा होता कि ये शैतान लड़के कौवे बन जाते।"

उस मनुष्य के मुख से ये क्रोध भरे शब्द मुश्किल से निकल पाए होंगे कि ऊपर आसमान पर 'सर' की आवाज हुई और सात कौवे उड़ते हुये उसके घर के ऊपर से निकल गए।

अब तो वह मनुष्य मारे भय के पीला पड़ गया। क्या उसका शाप सच हो गया ? क्या उसके सातों लड़के सचमुच ही कौवे बन गए ? धीरे-धीरे समय बीतता गया, पर लड़के वापस न लौटे।

कुछ देर बाद वह व्यक्ति स्वयं ही जाकर नदी का जल ले आया और अपने कुल-पुरोहित से नदी के जल को मंत्र से पवित्र करवाकर अपनी नवजात पुत्री को पिला दिया। पर उसके सातों लड़कों का कोई पता नहीं चल सका वे लोग घर लौटे ही नहीं।

अन्त में माता-पिता अपनी छाती पीटकर चुप बैठ गए। अब उनकी आशाओं का एकमात्र सहारा उनकी नन्हीं बेटी ही थी। उसी को वे लोग बड़े प्रेम से पालने लगे।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, बालिका बड़ी होने लगी। वह दिनों-दिन स्वस्थ और अधिकाधिक सुन्दर होती गई। धीरे-धीरे कई वर्ष बीत गए। अब वह बालिका पन्द्रह वर्ष की हो गई थी। देखने मे वह जितनी सुन्दर थी, उतना कोमल उसका हृदय भी था। दयालुता के भाव उसके हृदय में थे। पर अपने भाइयों के विषय में अब तब कुछ भी मालूम न हुआ था क्योंकि माता-पिता ने इस बारे में अत्यधिक सावधनी बरती थी। उससे उसके भाइयों के बारे में कोई जिक्र न किया था, नहीं तो बेचारी के कोमल हृदय को दुःख होता।

पर यह बात अधिक दिनों तब बालिका से छिपी न रह सकी। एक दिन उसने कुछ लोगों को आपस में बातें करते हुए सुना, "यह लड़की कितनी अच्छी है। कितनी सुशील है। पर इसका भाग्य अच्छा नहीं है। यह अभागी है, अभागी ! इसी के कारण इसके सात भाइयों के साथ न जाने कैसी बीती ? राम जाने वे बेचारे आजकल कहाँ और किस दशा में होंगे ?''

इन शब्दों ने बालिका के मन में हलचल मचा दी। "...तो क्या मेरे सात भाई और थे ? पर वे तो घर में दिखाई नहीं देते ? फिर वे कहाँ चले गए ? और क्या यह सब मेरे ही कारण हुआ है ?''

बालिका इन्हीं विचारों में डूबी अपने घर आई। घर आकर उसने अपने माता-पिता से अपने भाईयों के विषय में पूछा। माता-पिता ने बात को टालने की कहुत कोशिश की। पर बालिका तो सच बात जानने के लिए तुल गई थी। वह एक न मानी। अन्त में विवश होकर माता-पिता को उसे सारी बात बतानी पड़ी। फिर उन्होंने बालिका को यह भी समझाया कि जो कुछ भी हुआ, वह भगवान की मर्जी थी। अतः वह अपने मन में किसी प्रकार का दुःख न करे।

पर उस बालिका को माँ-बाप के इस कथन से सन्तोष न हुआ। वह एक साहसी और वीर बालिका थी। उसने निश्चय किया कि वह घर से निकलकर अपने खोए भाइयों को ढूँढने जाएगी। चाहे उसे बीहड़ वनों में जाना पड़े, चाहे आसमान से बात करती हुई पहाड़ों की चोटियों पर ! स्वर्ग में जाना पड़े, या पाताल में; पर वह अपने भाइयों को साथ लेकर ही घर लौटेगी। यदि वह ऐसा न कर सकी तो भाइयों को खोजते-खोजते स्वयं भी कहीं मर-खप जाएगी। अतः उस वीर बालिका ने अपने माता-पिता को अपने दृढ़ निश्चय की सूचना दे दी। माता-पिता ने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया, पर बालिका अपने निश्चय पर अडिग रही; और एक दिन वह वीर बालिका अपने खाने के लिए एक रोटी, पीने के लिए एक बोतल पानी और चलते-चलते थक जाने पर आराम के लिए एक छोटी-सी कुर्सी लेकर अपने खोए हुए भाइयों की तलाश में घर से निकल पड़ी। हाँ, उसने अपनी पहचान के लिए अपने माता-पिता की एक सोने की अंगूठी भी अपने पास रख ली थी।

अब वह वीर बालिका अपने घर से दूर, और दूर, और बहुत दूर चली गयी। चलते-चलते वह दुनिया के एक सिरे पर पहुँच गई। अब वह सूर्य के पास आ गई थी। लेकिन सूर्य के निकट इतनी गरमी थी कि वहाँ से उसको भागना पड़ा, नहीं तो सूर्य देवता उसे भस्म कर डालते।

लड़की सूर्य के पास से चलकर चन्द्रमा के पास जा पहुँची। लेकिन वहाँ इतनी ज्यादा ठंडक थी कि वह वहाँ से भी भाग खड़ी हुई। अगर वह ऐसा नहीं करती, तो चन्द्रमा उसे ठंड से जमाकर बर्फ ही बना देता।

इसके बाद बालिका तेजी से चलती हुई तारों के पास जा पहँची। तारे बडे दयालु हृदय और मेहरबान थे। हर तारा अपनी-अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ उस लडकी की ओर देखकर मुस्करा रहा था। लेकिन सुबह का तारा अत्यन्त चमकीला और स्वभाव का बहुत ही अच्छा था। उसने लड़की की ओर देखकर प्यार से पूछा, "प्यारी बच्ची। तुम यहाँ क्यों आई हो ?"

"मेरे सात भाई खो गए हैं। मैं उन्हें ही ढूँढने निकली हूँ।" लड़की ने उत्तर दिया।

इस पर सुबह के तारे ने उसे एक चमकदार छोटी-सी छड़ी और चाकू दिया और कहा, "लो बच्ची, यह छड़ी और चाकू तुम अपने पास रख लो। तुम यहाँ से सीधी चली जाओ। आगे तुम्हें शीशे का पहाड़ मिलेगा। उस पहाड़ के अन्दर जाने का रास्ता इसी छड़ी से खुलेगा। पहाड़ के छेद में इस छड़ी को डाल देना तो अन्दर जाने का दरवाजा खुल जाएगा। लेकिन, यदि यह छड़ी तुमसे खो गई तो तुम्हें अपने हाथ की उँगली काटकर उस छेद में डालनी पड़ेगी, तभी दरवाजा खुल सकेगा। उसी शीशे के पहाड़ के अन्दर तुम्हारे भाई तुमको मिलेंगे।"

बालिका ने सुबह के तारे से वह छडी लेकर अपने दुपट्टे में लपेटकर बगल में

दबा ली और सुबह के तारे को धन्यवाद देकर अपने रास्ते पर चल पड़ी।

चलती-चलती वह शीशे के पहाड़ के पास पहुँच गई। दिन की रोशनी में शीशे का पहाड़ चम-चम-चम चमक रहा था। ऐसा लगता था जैसे चाँदी का पहाड़ हो। बडा ही सुन्दर दृश्य था। उस वीर बालिका ने सुबह के तारे द्वारा दी गई चमकदार छडी को देखना चाहा क्योंकि पहाड़ का छेद सामने ही दिखई पड़ रहा था। पर वह चमकदार छड़ी रास्ते में ही न जाने कहाँ गिर गई थी। लड़की को अपनी जल्दबाजी में छड़ी का गिरना पता न चल सका था। अब तो बालिका अपने मन में बहुत घबड़ाई। छड़ी खो जाने पर वह आगे रास्ता किस प्रकार पा सकेगी। अब वह करे तो क्या करे ? वह इसी चिन्ता में खोई काफी देर तक वहीं खड़ी रही। तभी उसे सुबह के तारे की बात याद आ गई। उसने झट चाकू से अपने बाँए हाथ की उँगली काट दी और अपनी उसी कटी हुई उँगली को शीशे के पहाड़ के छेद में डाल दिया।

उँगली के अन्दर जाते ही शीशे के पहाड में एक दरवाजा बन गया और लडकी अन्दर चली गई। अन्दर उसे एक छोटा-सा बौना दिखाई पड़ा। वह अपने सिर पर एक फुंदने वाली लम्बी टोपी पहने था।

बौने ने लड़की से बहुत मीठे स्वर में पूछा "प्यारी बच्ची, तुम यहाँ क्यों आई हो ?" मैं यहाँ अपने खोए हुए सात भाइयों की तलाश में आई हूँ। दुर्भाग्य से वे लोग कौवों की शक्ल में हो गए थे।" लड़की ने कहा। "कौवे राजा तो अभी घर पर नहीं हैं। वे लोग बाहर गए हैं। तुमको उनके लौटने तक प्रतिक्षा करनी पडेगी।" बौने ने कहा।

"मैं खुशी से प्रतीक्षा कर लूँगी।" लड़की कुर्सी पर बैठकर प्रतीक्षा करने लगी। तभी वह बौना सोने की सात छोटी-छोटी थालियों में स्वादिष्ट भोजन और चॉदी के सात छोटे-छोटे गिलासों में जल ले आया। थालियॉ और गिलास उसने खाने की मेज पर रख दिए। लड़की ने प्रत्येक थाली में से एक-एक कौर भोजन खाया और प्रत्येक गिलास से एक-एक घूँट जल पी लिया और सातवें गिलास में उसने अपने घर से लाई हुई सोने की अंगूठी डाल दी।

इतने में पक्षियों के उड़कर आने की आवाज़ सुनाई पड़ी। बौने ने लड़की से कहा, "कौवे राजा आ रहे हैं। बेटी, तुम जल्दी से परदे के पीछे छिप जाओ।"

लड़की झटपट परदे के पीछे छिप गई। तभी वहाँ उड़ते हुए सात कौवे आए। वे खाने की मेज पर आकर बैठ गए। एक के बाद एक कौवे के मुख से निकला, "अरे, मेरे खाने में से किसी ने खाया है" फिर पानी पीते समय भी एक के बाद एक कौवे के मुख से निकला, "अरे, मेरे गिलास से किसी ने पानी भी पिया है।"

तनिक देर के बाद एक कौवे ने कहा, "यहाँ तो किसी मनुष्य की महक भी आ रही है

सबसे छोटे कौवे ने अपना पानी पी लेने पर गिलास में पड़ी हुई अंगूठी को देखा।

"अरे, यह क्या है?'' कहकर उसने अपना गिलास उलट दिया। अंगूठी मेज पर गिरकर चमकने लगी।

"अरे, यह तो हमारे माता-पिता की अंगूठी है। यह यहां कैसे आई ?'' सभी कौवे एक साथ चिल्ला उठे।

तभी उनमें से एक कौवा बोला, "हाय ! अगर हमारी बहिन यहां आ जाती, तो हम लोग अपनी असली शक्ल में आ जाते।''

यह सुनकर बालिका परदे के अन्दर से निकल आई और बोली, "मेरे प्यारे भैया ! देखो मैं आ गई हूँ।''

बहिन की आवाज़ सुनते ही सातों कौवे अपनी-अपनी असली शक्ल में आ गए। सातों भाई और बहिन आपस में मिलकर प्रसन्नता से फूले न समाए। सभी भाइयों ने अपनी बहिन को बहुत-बहुत प्यार किया।

फिर सातों भाई और बहिन खुशी-खुशी अपने घर लौट आए। इतने दिनों से बिछुड़े अपने बच्चों को पाकर माता और पिता परमात्मा को बार-बार धन्यवाद देने लगे।

—चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'
261, फेथफुल गंज कैन्ट,
कानपुर-**20804** (उ. प्र.)

अनोखा पुरस्कार

रामू सातवीं कक्षा में पढ़ता है। उसका रहन-सहन बहुत अजीब लगता है। अपने से बड़े लोंगों की बातों का उस पर कम ही असर होता। वह हमेशा अपनी धुन में ही मगन रहता। अपना काम अपनी इच्छा के अनुसार ही करता। पढने-लिखने में साधारण लेकिन खेलकूद में ठीकठाक है। खो-खो उसका प्यारा खेल है।

साफ-सुथरा रहना उसे अच्छा नहीं लगता। विद्यालय में उसे कई बार हिदायते दी गई पर वह हर बार उन्हें अनसुनी कर देता।

कपड़े सदैव उसके मैले ही रहते हैं। सफेद कमीज तो ऐसी लगती है जैसे बदरंगी है। दातुन करना उसे पसंद नहीं, इसलिए दांत पीले पड़ गए। नाखून काटने को वह बेकार का काम समझता है। उसके बड़े-बड़े नाखून गंदगी से भरे रहते।

एक बार अध्यापक के पूछने पर उसने बताया कि वह आठ - दस दिनो में नहाता है। उसे रोज फुर्सत ही नहीं मिलती। घर में खेती और पशुओं का काम रहता है इसलिए वह स्नान के लिए समय नहीं निकाल पाता।

सर्दी के दिनों में उसके शरीर की हालत तो कुछ और होती। हाथों और पैरो मे इतना मैल जम जाता कि वे कोयले की रंगत को भी मात दे रहें हों।

बालों में प्रतिदिन तेल डालना वह आवश्यक नहीं मानता। पानी डाल कर कंघी करने से ही काम चल जाता है। हां, कभी-कभी बाल बिना संवारे भी रह जाते हैं।

अध्यापकों ने उसकी यह आदत बदलने के लिए कई प्रयास किए। कभी थोडी बहुत सफलता भी मिल जाती तो वह अधिक दिनों तक टिकती नहीं।

कई बार उसके पिता को विद्यालय में बुला कर बताया गया। पिता ने पूरा आश्वासन दिया कि उनका बच्चा हमेशा साफ-सुथरा रहेगा, परन्तु सभी प्रयास बेकार गए। इस बार अध्यापकों नें एक और प्रयास करने के लिए सोचा। उन्होने आपस में विचार कर एक ऐसी योजना बनाई कि रामू साफ-सुथरा रहने लगे। कुछ ही दिनों बाद विद्यालय में वार्षिक उत्सव का आयोजन होने जा रहा था। उसके लिए खेलकूद और विभिन्न प्रतियोगिताए चल रहीं थी

निश्चित समय पर वार्षिक समारेह शुरू हुआ बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग

लिया। अनेक बालक विजेता के रूप मे पुरस्कार पाने के अधिकारी बन गए। समापन-समारोह में इन्हें इनाम दिया जाना था।

समापन-समारोह में पुरस्कार पानेवाले बालकों को मंच के पास बुला लिया गया। कुछ बालक ऐसे भी थे जो, प्रतियोगिताओं में तो विजयी नहीं हुए फिर भी उन्हें पुरस्कार के लिए चुन लिया गया जैसे, विद्यालय की परीक्षा में सबसे अधिक अंक पानेवाला, अनुशासन में उत्तम, सफाई में श्रेष्ठ और किसी क्षेत्र विशेष में मुख्य रहनेवाला छात्र। ऐसे ही कुछ विद्यार्थियों में रामू का नाम भी था।

परन्तु रामू समझ नहीं पा रहा था कि उसे किस बात के लिए सम्मानित किया जाएगा। फिर भी उसने मन ही मन संतोष किया कि शायद खो-खो में अच्छे प्रदर्शन के लिए उसे चुना गया हो। रामू के चुनाव पर अन्य बालकों में भी पुरस्कार का विषय जानने की उत्सुकता थी।

समापन समारोह में एक-एक बालक अध्यक्ष के सामने आ-आ कर अपना पुरस्कार लेकर अपने स्थान पर लौट आता। उस समय संयोजक प्रत्येक बालक की विशेषता का उल्लेख कर रहे थे। सभी दर्शक तालियां बजा-बजा कर पुरस्कार पानेवाले एक-एक बालक का उत्साह बढ़ा रहे थे।

ज्योंही रामू का नाम पुकारा गया, वह अध्यक्ष के सामने पहुंच ही रहा था कि उसके बारे में संयोजक द्वारा बताया जाने लगा कि रामू उनके विद्यालय का सबसे अधिक साफ-सुथरा रहनेवाला और आज्ञाकारी बालक है। उसे साबुन की टिकिया पुरस्कार में दी जा रही है......।

संयोजक की बात पूरी भी न हो पाई कि दर्शक, विशेष रूप से बालक जोर-जोर से वाह - वाह कहते हुए तालियों बजाने लगे। सारा वातावरण जोरदार हंसी-ठहाकों से गूंज उठा।

रामु तो बिना पुरस्कार लिए वहां से भाग छूटा। लोंगों ने उसका बहुत अधिक आनंद लूटा।

दूसरे दिन विद्यालय में सबने देखा कि रामू बिल्कुल बदला हुआ है। साफ कपड़े, शरीर का मैल उतरा हुआ, दमकते हुए दांत, कटे हुए नाखून और सिर में तेल डाल कर संवारे हुए बाल। अब रामू बिल्कुल स्वच्छ है। उस पुरस्कार ने रामू का जीवन ही बदल दिया। उस दिन से रामू साफ-सुथरा और सचमुच आज्ञाकारी बालक बन गया।

—जगदीशचंन्द्र शर्मा

पो. गिलूंड - **313207,**

(जि. राजीनमंद : राजस्थान)

शहद का स्वाद

ललित और कपिल पांचवी कक्षा में पढ़ते हैं। दोनों अच्छे मित्र हैं और अधिकतर साथ रहते हैं।

एक दिन उन्होंने शहद खाने का विचार किया। बाजार से खरीदे हुए शहद मे वह स्वाद नहीं होता है। इसलिए मधुमक्खीयों की खोज शुरू हो गई। खोज के काम में दोनों जुट गए।

मधुमक्खीयां उस जगह अधिक मिलती हैं जहां खेत हो, पेड़-पौधे अधिक हो और पानी आदि की सुविधा मिले। क्योंकि मधु की मक्खियां फूलों पर जा-जा कर वहां से पराग और मधु के कण अपने मुंह में भर कर छत्ते पर ले जाती हैं। वहा छत्ते के ऊपरी भाग में मोम की कुंडलियां बना कर उसमें भरती रहती है। इस प्रकार छत्ते का ऊपरी हिस्सा शहद के भंडार के रूप में विकसित हो जाता है। उसी से लोग शहद प्राप्त करते हैं।

दूसरे दिन ललित ने कपिल को बताया कि उसके खेत की कांटोवाली बाड़ मे कुछ ऊचाई पर एक बड़ा सा मधुमक्खीयों का छत्ता बैठी है। कल रविवार की छुट्टी पर वही चलकर शहद खाया जाए।

कपिल को भी यह बात बहुत अच्छी लगी।

रविवार को दोनों साथी खेत के लिए चल पड़े। ललित ने अपने साथ ज्वार के डंठल की एक लम्बी सी लकड़ी भी ले ली। कपिल को एक बड़ा-सा गिलास थमा दिया।

खेत पर जाकर उन्होंने मधुमक्खीयों का छत्ता देखा। वे उसे देखकर खुश हो गए। अब वे जल्दी से जल्दी शहद खाना चाहते थे क्योंकि शहद के स्वाद की कल्पना में एक अनूठा सा आकर्षण जो था।

वे यह भी जानते थे कि मधुमक्खियां अपनी और अपने शहद की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहती है। संकट आते ही वे संघर्ष करने पर उतारू हो जाती हैं। उनके तीखे डंक बिच्छू और ततैया के डंक की तरह तीव्र पीड़ा पहुंचानेवाले होते हैं। कोई भी व्यक्ति मधुमक्खी का डंक लगाते ही दर्द से तिलमिला उठता है।

ललित ने उसी डर से दूर खड़े रह कर ज्वार की लकड़ी मधुमक्खी के शहद भरे पिंड में चुभोई कुछ शहद टपकने लगा त्योंही दस-बीस मक्खिया उड़ कर

उसे काटने के लिए मंडराने लगी। वे ललित को खोज रही थीं। दूर खड़ा ललित बार-बार लकड़ी को पिंड पर चुभोने लगा जिससे पिंड के कुछ टुकड़े जमीन पर गिरने लगे।

कपिल जो, गिलास लेकर पास ही खड़ा था झुक कर छत्ते के नीचे बाड़ के पास चला गया। वह शहद भरे पिंड के टुकड़ों को गिलास में भरने लगा। इसी बीच कपिल ने पिंड का एक छोटा सा टुकड़ा मुंह में डाला था कि उसकी चीख निकल गई। उसने एकदम थूक दिया। पिंड का टुकड़ा ज्यों का त्यों जमीन पर गिर पड़ा। कारण यह था कि शहद भरे उस पिंड के टुकड़े पर एक मक्खी थी जिसने कपिल की जीभ पर डंक मार दिया। उसकी तीव्र पीड़ा से कपिल चीख उठा।

ठीक उसी समय मधुमक्खी के छत्ते से तीन-चार मक्खियां ललित की तरफ तेजी से उड़कर आईं। उन्होंने ललित के चेहरे पर अपने तीखे डंक चला कर तीन-चार जगह काट दिया। असहाय दर्द के मारे ललित चिल्ला कर दूर हो गया।

अब ललित और कपिल एक साथ दर्द से पीड़ित होकर सिसकियां भरने लगे। न तो कपिल कुछ कह पा रहा था और न ललित। दोनों ही दर्द के मारे भुनभुना रहे थे।

कुछ देर बाद ललित का चेहरा सूज कर भारी हो गया। आंखों का पूरी तरह खुल पाना भी मुश्किल था। कपिल की जीभ भी सूज कर फूल गई जिसके कारण उसे बोलने में कठिनाई होने लगी।

दानों मित्रों ने सोचा कि यह तो अजीब मुसीबत गले पड गई। शहद का स्वाद भी न ले पाए।

—जगदीशचंन्द्र शर्मा

पो. गिलूंड 313207

(जि. राजीनमंद : राजस्थान)

लोमड़ी का पट्ठा

किसी जंगल में लोमड़ी और लोमड़ी का एक जोड़ा रहता था। दोनों ने एक घनी झाड़ी के नीचे अपनी भाटी खोद रखी थी। दिन भर उसी भाटी में दोनो आराम करते और शाम को जब थोड़ा-थोड़ा अंधेरा हो जाता तब दोनों बाहर निकलते। इधर-उधर की चीजें खाकर अपना पेट भरते और सो जाते। जंगल मे वे दूर-दूर तक घूमते रहते थे। इसलिए जंगल के चप्पे-चप्पे से वे परिचित हो गए थे। जब कभी जंगली कुत्ते उनका पीछा करते तो वे उन्हें भूल-भूलैयों में डाल देते और सुरक्षित अपनी भाटी में आ जाते।

जंगल दिनों दिन कटते चले जा रहे थे। लोमड़ और लोमड़ी को इसकी बहुत चिन्ता थी। वे दोनों सोचते कि यदि इसी तरह जंगल कटते रहे तो आखिर हम कहा जाएंगे ? दोनों इसी चिन्ता में सूखते चले जा रहे थे. जंगल में सरकार की ओर से वन रक्षक नियुक्त थे। वे जंगल की रक्षा करते. कोई पेड़ काटता, तो उसे वे रोकते। यदि नहीं मानता तो उसे पकड़कर ले जाते. लोमड़ और लोमड़ी की वन रक्षकों से बहुत आशा थी।

एक दिन शाम के समय लोमड़ और लोमड़ी अपनी भाटी से बाहर निकले। वे दोनों घूमते - घूमते जंगल के पूर्वी छोर तक पहुँच गए. वहा पहुँच कर उन्होंने देखा कि बहुत से आदमी कुल्हाड़ियों से पेड़ काट रहे हैं। वहीं पर एक मोटर खड़ी हुई है जिसमें एक आदमी बैठा हुआ है. लोमड़ और लोमड़ी को लगा कि यही आदमी जंगल कटवा रहा है। यह निश्चित ही कोई चोर है। वे दोनो सोचन लगे कि अभी वन-रक्षक आएंगे और इन्हें पकड़ कर ले जाएंगे। पेड़ काटने की आवाज वन-रक्षकों ने भी सुनी। आवाज सुनकर चार वन रक्षक वहां आ गए।

"आप लोग पेड़ क्यों काट रहे हैं ? आप जानते हैं कि यह जंगल के कानून में अपराध है ?.....हम आपको पकड़ कर जेल भेज देंगे।'' एक वन रक्षक ने पेड़ काटनेवालों को धमकाया।

लोमड़ और लोमड़ी यह देखकर बहुत खुश हो रहे थे। वे सोच रहे थे कि ये दुष्ट अब जेल जाएंगे। बड़े आए थे पेड़ काटनेवाले.....पता नहीं इन आदमियों को क्या हो गया है कि जंगल के दुश्मन बन बैठे. जब देखो तब पेड़ काटते रहते हैं।

पेड़ काटने वालों ने पेड़ काटना रोक दिया और सब एक जगह इकट्ठे हो गए। मोटर में बैठा आदमी भी उतर कर वन रक्षकों के पास आ गया।

लोमड़ और लोमड़ी की झाड़ी में छुपे यह कार्यवाही बड़े ध्यान से देख रहे थे और खुश हो रहे थे।

"आप पेड़ क्यों कटवा रहे हैं ?'' एक वन रक्षक ने मोटर में बैठे आदमी के आने पर कहा।

"हमने उस जगह को खरीद लिया है। मेरे पास इसका पट्टा है.........मैं अभी आपको पट्टा दिखाता हूँ।'' आदमी ने कहा और मोटर की ओर पट्टा लेने चला गया।

लोमड़ी सोचने लगी, यह पट्टा क्या होता है ?....जरूर या कोई बड़ी चीज होती होगी.....तभी वो वनरक्षक पट्टे का नाम सुनकर चुप हो गया।

लोमड़ी और सचेत हो गई और टकटकी लगा कर देखने लगी।

मोटर वाला आदमी मोटर तक गया और वापस आ गया। उसके हाथ मे कागज का एक टुकड़ा था। उस आदमी ने वन रक्षक को कागज का वह टुकडा दिखाया। वन रक्षकों ने कागज के उस टुकड़े को, जिसे वह आदमी पट्टा कह रहा था, देखा और मोटरवाले आदमी को चुप-चाप वापस कर दिया। वन रक्षक चले गए। मोटरवाले आदमी ने मजदूरों को पेड़ काटने का आदेश दिया। तभी मजदूर फिर से पेड़ काटने में जुट गए।

लोमड़ी सोचने लगी कि, 'यह कागज का टुकड़ा ही पट्टा होता है.....यह तो वन रक्षकों से भी बड़ा होता है.....इसे देखकर वन रक्षक कैसे चुप-चाप लौट गए।.......इसे दिखाकर तो कहीं भी जाया जा सकता है।

लोमड़ी अब रात-दिन यही सोचती रहती कि किसी तरह ऐसा ही एक पट्टा उसे भी मिल जाए, फिर क्या.... जहाँ जी चाहेगा वहाँ घूम सकेगी। जंगली कुत्ते फिर उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे.......जरा सा पट्टा दिखाते ही कुत्ते पूँछ दुबका कर भाग जाएंगे कितना अच्छा हो कि 'हमें भी एक पट्टा मिल जाए।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। एक दिन पूर्णमासी की रात दोनों घूमने निकले। रात में भी दिन की तरह उजाला था. लोमड़ और लोमड़ी जंगल से थोड़ा बाहर निकल गए। रास्ते में लोमड़ी को कूड़े के ढेर पर कुछ पड़ा हुआ दिखाई दिया। पास जाकर लोमड़ी ने उसे देखा....यह एक कागज का टुकड़ा था। लोमड़ी को ध्यान आया कि ऐसा ही कागज का टुकड़ा तो उस मोटरवाले आदमी के पास था। कहीं यह पट्टा ही तो नहीं है ?.......लोमड़ी ने उस कागज के चमकने टुकड़े को उठा लिया......उसे उलट पलट कर बड़े ध्यान से देखा। लोमड़ी उस कागज के उस टुकड़े को लेकर खुशी से उछलती कूदती लोमड़ के पास आई. दोनों ने कागज के उस टुकड़े को उलट पलट कर देखा..... .लोमड़ी को अब पूरा - पूरा विश्वास हो

गया कि कागज का यह टुकड़ा पट्टा ही है।

लोमड़ी आज बहुत खुश थी. उसका सपना आज सच होने जा रहा था...... उसके पास अब ऐसी चीज थी। जो जंगल में किसी के पास नहीं थी।

थोड़ी ही दूरी पर गाँव था। चांदनी रात में गाँव बहुत सुन्दर लग रहा था। लोमड़ी का मन गाँव देखने को ललचा आया। वह लोमड़ से बोली, "चलो आज गाँव की दीवारों तक घूम कर आएंगे। अब तो हमारे पास पट्टा है। इसे दिखाते ही गाँव के कुत्ते पूंछ दुबका कर भाग जाएंगे....... ....अब हमें किसी से क्या डर है ? लोमड गाँव जाने में कतरा रहा था. बचपन में एक बार उसे गाँव के कुत्तों ने घेर लिया था। उसकी आधी पूँछ तो कुत्ते नोंच कर खा गए थे। किसी प्रकार बेचारा बच पाया था। बचपन की याद करके लोमड़ गाँव जाने के नाम से ही कांपने लगा।

लोमड़ बोला, 'मेरी मानो तो गाँव के पास जाने की बात छोड़ो.......पता नहीं कुत्ते पट्टे को देखकर इसे माने या न माने। इसलिए जान की बाजी लगाना ठीक नहीं।

तुम तो बेकार ही डरते हो. इतना डर भी ठीक नहीं.....अरे ! जब हमारे पास पट्टा है तो फिर कैसा डर ? तुम नहीं जाना चाहते हो तो मत जाओ, मैं तो जरूर जाऊंगी. और गाँव की ओर चल दी।

लोमड़ी को जाते देख बेचारा लोमड़ भी उदास मन से चल दिया। लोमड़ी ने पट्टा अपने मुँह में दबा रखा था......दोनों गाँव की ओर चले जा रहे थे। आज उन्हे किसी बात का डर तो था ही नहीं......गाँव के पास छोटी सी नहर थी। नहर के किनारे दोनों बैठ गए। यहाँ से गाँव बहुत अच्छी तरह से दिखाई दे रहा था। दोनो ने नहर का ठण्डा-ठण्डा पानी पिया और बैठकर गाँव देखने लगे।

लोमड़ ने फिर कहा कि गाँव के और अधिक पास जाना ठीक नहीं। हमने गाँव देख लिया है... .अब चलो वापस लौट चलें। परन्तु लोमड़ी को तो पट्टे पर कुछ ज्यादा ही भरोसा था। वह बोली, गाँव के और पास तक चलेंगे तुम तो यूं ही डरते हो।

लोमड़ बेचारा चुप हो गया। लोमड़ी ने छलांग लगा कर नहर पार की, पीछे-पीछे लोमड़ भी उदास मन से डरते-डरते चल दिया.......रास्ते में दो तीन कुत्ते लेटे हुए थे। जैसे ही कुत्तों की निगाह लोमड़ और लोमड़ी पर पड़ी, वे उनकी ओर झपटे....कुत्तों ने इतनी शीघ्रता से झपट्टा मारा कि लोमड़ और लोमड़ी घबरा गए.....दोनों सरपट भागने लगे। किसी तरह नहर पार की....आगे-आगे लोमड और लोमड़ी तथा पीछे-पीछे कुत्ते......भागते-भागते दोनों बेदम हो गए. दोनों को लग रहा था कि आज कुत्ते खा ही जाएंगे। पट्टा दिखाने का तो समय ही कहां था।

किसी तरह गिरते पड़ते भाटी तक पहुँचे। लोमड़ी आगे थी इसलिए भाटी में पहले घुस गई उसके पीछे लोमड़ घुसने लगा लोमड़ भाटी में आधा ही घुस पाया

था. तब तक कुत्ते आ.गए। कुत्तों ने लोमड़ी की आधी कटी हुई पूंछ पकड़ ली..
कुत्ते उसे काहर खींचते और वह अन्दर की ओर खींचता. वह सोचने लगा कि आज जान नहीं बचेगी। वह लोमड़ी से बोला, "पट्टा दिखा...पट्टा......कुत्ते मुझे नोचें डाल रहें हैं'' लेकिन पट्टा दिखाने का अवसर ही कहाँ था ? और उसे देखता भी कौन ?.......कुत्ते तो आखिर कुत्ते ठहरे।

लोमड़ और लोमड़ी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे........लोमड़ की रही सही पूँछ भी कुत्तों ने नोच डाली। उसकी पीठ में भी कई जगह घाव हो गए. लेकिन किसी तरह जान बच गई।

"तुमने मेरी बात नहीं मानी। कहाँ गया था... तुम्हारा पट्टा उस समय जब कुत्ते मुझे नोंच रहे थे........अरे ! पट्टा उसे दिखया जाता है.......जो उसे देखना जानता हो। तुब आदमियों की बराबरी करने चलीं थीं.......आदमी तो पढ़े लिखे होते हैं.. वे नियम कानून की बातें जानते हैं और मानते भी हैं........तुमने बिना सोचे-समझे निर्णय ले लिया... ..मेरी तो दुर्गति हो ही गई।'' कराहते हुए लोमड़ ने कहा।

"गलती मेरी थी। मैने बिना सोचे-समझे आदमियों की नकल करनी चाही... मेरी मूर्खता का दण्ड तुम्हें मिला। किसी प्रकार जान बच पाया है। मुझे माफ कर दो।'' कहकर लोमड़ी सिसकने लगी।

दोनों ने कसम खाई कि आज से बिना सोचे - विचारे कोई कार्य नहीं करेंगे।

—डा. जगदीश व्योम

बी-4/केन्द्रीय विद्यालय परिसर

मथुरा छावनी उ.प्र

पिन कोड - 281001

जूबू शेर का अन्त

"जूबू" शेर से जंगल के सभी जानवर परेशान थे। जुबू बहुत मनमौजी और सनकी था। वह किसी भी जानवर की गुफा में पहुँच जाता और उसे मार डालता। जब तक "जूबू" का मन होता, वह उस गुफा में रहता। जब मन भर जाता तो और कहीं रहने को चला जाता। वह दुबारा उसी गुफा में फिर कब आ जाएगा, उसे कोई नहीं जानता था। जंगल के जानवर रात को सो नहीं पाते थे। उन्हें यही चिन्ता लगी रहती थी कि न जाने कब "जूबू" को उनका घर अच्छा लग जाए और वह आ धमके। अनेक जानवरों के घर "जूबू" ने छीन लिए थे। उनमें रहनेवाले जानवरों को या तो जूबू ने मार डाला था या फिर वे भाग गए थे।

जानवरों की अनेक बार सभाएं हुईं। परन्तु इस समस्या का कोई समाधान नहीं निकला।

दीनू सियार का घर भी जूबू ने छीन लिया था। दीनू ने अपनी गुफा में एक चोर दरवाजा पहले से ही बना रखा था। उसी दरवाजे से भागकर उसने अपने प्राण बचाए थे। दीनू सियार अपनी सियारनी के साथ भटकता फिरता रहता। कभी कहीं रात बिता लेता तो कभी कहीं। पूरी रात भर उसे नींद नहीं आती। दीनू, "जूबू" से बदला लेने की योजना बनाता रहता। परन्तु उसे कोई सही युक्ति अब तक नहीं सूझ पायी थी।

एक दिन दीनू और उसकी पत्नी जंगल में शिकार की तलाश में घूम रहे थे। तभी जंगली कुत्तों ने उन्हें देख लिया। कुत्तों को देखकर दीनू सियार और उसकी सियारनी भाग खड़े हुए। भागते-भागते उन्हें एक गुफा दिखाई दी। वे दोनों उस गुफा में घुस गए। कुत्ते निराश होकर लौट गए। दीनू और उसकी पत्नी ने राहत की सांस ली।

दीनू ने देखा कि गुफा बहुत लम्बी-चौड़ी है। गुफा पूरी तरह से सुरक्षित भी है। उन दोनों ने पूरी रात उसी गुफा में बितायी। दीनू समझ गया कि यह गुफा "जूबू" की है। वह कभी भी उस गुफा में आ सकता है। दीनू सियार किसी भी कीमत पर इस गुफा को छोड़ना नहीं चाहता था। क्योंकि यह बहुत सुरक्षित गुफा थी। वह "जूबू" को मूर्ख बनाने का उपाय सोचने लगा। गुफा में रहते-रहते दीनू को लगभग एक महीना बीत गया। इस बीच दीनू सियार की पत्नी ने दो बच्चों को

जन्म दिया। दीनू ने बड़े बच्चे का नाम "चुनमुन" और छोटे का नाम "मुनमुन" रखा। दीनू अब अपनी पत्नी को चुनमुन की अम्मी कहकर बुलाता। उसकी पत्नी उसे चन्दबदन कहकर बुलाती।

दीनू को हर समय यही चिन्ता लगी रहती कि न जाने कब "जूबू" आ जाए। दीनू ने जूबू से बदला लेने की एक योजना अपने दिमाग में बना रखी थी।

एक दिन शाम के समय दीनू और उसकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खेल रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि जूबू आ रहा है। दोनों डर गए... दीनू ने अपनी पत्नी को पूरी योजना समझा दी। वह जल्दी से अपने बच्चों को लेकर गुफा के अन्दर चली गई। दीनू जूबू के निकट आने की प्रतीक्षा करने लगा। दीनू सोच रहा था कि आज वह जूबू को ऐसा सबक सिखाएगा कि वह भी हमेशा याद करेगा। "जूबू" जितना सनकी है। उतना ही मूर्ख भी है। यह दीनू अच्छी तरह जानता था।

दीनू यह सोच ही रहा था कि जूबू गुफा से थोड़ी दूर पर आता दिखाई दिया। जब दूरी इतनी रह गई कि दीनू की आवाज जूबू अच्छी तरह सुन सके। तभी दीनू ने अपनी पत्नी को संकेत किया। वह पहले से ही तैयार बैठी थी। उसने चुनमुन और मुनमुन को जोर से नोंचा। दोनों बच्चे जोर-जोर से रोने लगे। तभी दीनू ने जोर से कहा, "चुनमुन की अम्मी ! बच्चों को क्यों रुला रही हो ?"

सियारनी ने इतने जोर से उत्तर दिया कि शेर अच्छी तरह सुन ले। वह बोली, "चन्दबदन ! शेर का बासी मांस बुहत रखा है। लेकिन चुनमुन और मुनमुन उसे नहीं खा रहे हैं... वे शेर का ताजा मांस खाने की जिद कर रहे हैं। अब तुम ही बताओ कि शेर का ताजा मांस रोज-रोज कहां से आए ?

जूबू ने सुना तो वह थोडा सा ठिठका। वह झाड़ी की ओट में हो गया। जूबू ने समझ लिया कि वह कोई बड़ी बला है। वह मन ही मन में डर गया।

दीनू ने जोर से कहा, "बस ! इतनी सी बात के लिए बच्चों को रुला रही हो . वह देखो...शेर आ रहा है...अभी मैं उसे मार कर लाता हूं। कितनी अच्छी बात है कि शेर स्वयं ही हमारे घर के पास आ गया।" कहकर दीनू सियार ने जोर से पूंछ फड़फड़ायी।

जूबू को अब पूरा विश्वास हो गया कि वह कोई मुझसे भी अधिक शक्तिशाली है यहां से भागना ही ठीक रहेगा। "जूबू" तुरन्त पीछे मुड़कर भाग खड़ा हुआ। वह इतना डर गया कि उसने पीछे मुड़कर ही नहीं देखा। भागते-भागते जूबू बेदम होकर एक झाड़ी के पास गिर पड़ा...थोड़ी देर बाद उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

जूबू के अन्त की खबर पूरे जंगल में आग की तरह फैल गई। सभी जानवर यह खबर सुनकर बहुत खुश हए। सब एकत्र होकर दीनू सियार के घर गए। सबने मिलकर दीनू को धन्यवाद दिया।

"रामू" खरगोश ने दीनू से हाथ मिलाते हुए कहा. "जो सबके घर उजाड़ता

है। सबको सताता है। उसका अन्त अवश्य होता है। चाहे वह कितना ही बलशाली क्यों न हो।... कई वर्ष पहले...'' मैंने भी एक दुष्ट शेर को अपनी बुद्धि से कुएं में गिराकर मार डाला था। आज तुमने ऐसे ही दुष्ट शेर को भय दिखाकर मार डाला। तुम वासतव में बुद्धिमान हो...तुमने अपनी बुद्धि का सही और सबकी भलाई के लिए प्रयोग किया है। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। कहकर "रामू'' खरगोश ने सभी जानवरों की ओर मुड़कर कहा, "जंगल की भलाई के लिए मैं यह प्रस्ताव रख रहा हूं कि आज से दीनू सियार को जंगल का मंत्री चुन लिया जाय।''

सभी जानवरों ने सर्वसम्मत से दीनू को जंगल का मंत्री चुन लिया। सभी जानवर पहले की तरह निश्चित होकर रहने लगे।

—डॉ. जगदीश व्योम
बी–4, केन्द्रीय विद्यालय परिसर
मथुरा कैण्ट (उ. प्र.)
पिन कोड़–281001

वृक्ष बाबा

नींव खोदते-खोदते सुक्खू जब थक कर चूर हो गया तो आराम करने के लिए चारपाई पर जा बैठा। अंगोछे से पसीना पोंछकर उसने एक लोटा पानी पिया और चारपाई पर निढ़ाल हो गया।

इस बार सुक्खू की कड़ी मेहनत और मौसम की मेहरबानी से उसके खेतों मे धान की फसल बहुत अच्छी हुई थी। घर में खाने के लिए भरपूर राशन रखने के बाद भी उसके पास बहुत सा अन्न बच गया था, जिसे बेचकर उसने पांच हजार रुपयों का मुनाफा कमाया था। उन रूपयों से वह अपना एक पक्का और मजबूत घर बनवाना चाहता था। इसीलिए वह नींव की खुदाई कर रहा था।

अपने कच्चे घर में सुक्खू अपनी पत्नी और बेटे पुत्तू के साथ मजे में रहता था। लेकिन बरसात के दिनों में जब छप्पर या छत चूने लगीं और दीवारें अत्यधिक भीग जाने के कारण दरकने लगतीं, तो उसे बड़ी परेशानी होती। इसलिए उसने पक्का घर बनवाने का फैसला किया था। जिससे रोज-रोज की परेशानियों से हमेशा के लिए निजात मिल जाए। दीवारों के लिए ईटें तो उसने पिछले साल ही मगवा ली थीं। बस उन्हें जोड़कर मकान बनवाना था।

पर जिस जगह वह बाहरी कमरा बनवाना चाहता थी, वहाँ पर एक पुराना नीम का पेड़ लगा हुआ था। उस पेड़ को उसके बाबा ने अपने बचपन में लगाया था, और अब तब वह एक विशाल वृक्ष का रूप ले चुका था। उसकी घनी व हरी डालों पर जब रंग-बिरंगे पक्षी आकर बैठते तो आस-पास का वातावरण गुंजारित हो जाता। गर्मी के तपते मौसम में भी उसके नीचे शीतलता बनी रहती और ठंडक के लिए सुक्खू के दरवाजे पर हमेशा लोंगों का जमघट सा लगा रहता। पर अब सुक्खू उसी पेड़ को काटने को तत्पर था। आखिर घर जो उसे बनाना था।

"पिताजी मैं कुल्हाड़ी ले आया।'' तभी उसके लड़के ने तन्द्रा भंग की।

"रख दो अभी थोड़ी देर आराम कर लूँ।'' सुक्खू ने लेटे-लेटे ही जवाब दिया।

"ठीक है, तब तक मैं भी खाना खा लेता हूं। फिर काटेंगे'' कहता हुआ पुत्तु वहाॅ से चला गया।

पेड के नीचे लेटे सुक्खू को ह्वा के ठंडे झोंकों में जल्दी ही नींद आ गयी और

वह स्वप्न में विचरने लगा।

अचानक उसे कुछ याद आया और वह कुल्हाड़ी लेकर पेड़ को काटने के लिए बढ़ा। जैसे ही उसने कुल्हाढ़ी चलाई, एक जोरदार चीख उसके कानों में गूंज गयी। चौंककर उसने देखा तो आश्चर्य– चकित रह गया। चीखनेवाला और कोई नहीं स्वंय वृक्ष था। उसके मोटे व बलिष्ठ तने में एक उदास मानवाकृति उभर आयी। हाथों के समान लम्बी हरी भरी डालें जोरों से कांपने लगीं। पैरों की तरह विशाल धरती में धंसी जड़ें लगा अब उखड़ी, तब उखड़ी । –और पर्ण वृन्तों के महीन छिद्रों से आंसू रूपी छोटी–छोटी बूंदें ढुलक पड़ीं।

इससे पहले कि सुक्खू कुछ बोलता, एक दूसरी आवाज उसके कानों में गूंजी।–"तुम जानते हो सुक्खू कि ये क्या करने जा रहे हो" ?

सुक्खू एक बार फिर चौंका। क्योंकि यह आवाज तो उसे जानी – पहचानी सी लग रही थी उसने इधर-उधर नजरें दौड़ाईं पर कोई नज़र न आया। कुछ देर तक वह खड़ा-खड़ा सोचता रहा, फिर उसे याद आया कि यह आवाज तो मेरे बाबा की तरह है। तभी फिर वही आवाज उसे सुनाई पड़ी, "मेरी बात का जवाब दो सुक्खू।"

"मैं–मैं, ये पेड़ काटने जा रहा हूँ।" सुक्खू ने सहमे स्वरों में जवाब दिया।

"क्यों ? पुन: आवाज कौंधी।

"क्योंकि मुझे यहां पर अपना मकान बनाना है और यह पेड़ बिना वजह ही इतनी जगह घेरे हुए है" सुक्खू बोला।

"मुझे अफसोस है सुक्खू कि तुम हए पेड़ का महत्व न समझ पाए। अरे, इस पेड़ को मैने, यानि तुम्हारे बाबा ने लगाया और हमेशा अपने भाई की तरह इसकी देखभाल की। उसी का फल है यह आज इतने विशाल रूप में तुम्हारे सामने मौजूद है। सैंकड़ों नन्हें जीव और पक्षी इसी पर आश्रय पाते हैं और अपनी सुमधुर आवाज से वातारण को गुंजारित करते हैं। गर्मी के तपते महीनों में यह स्वयं धूप सहकर तुम्हें शीतलता प्रदान करता है। इसके नीचे बैठकर तुम ही नहीं गाँव के तमाम लोग आनन्द का अनुभव करते हैं और हमेशा तुम्हारे दरवाजे पर चहल–पहल बनी रहती है"

सुक्खू बड़े ध्यान से सारी बातें सुन रहा था। आवाज अब भी जारी थी—"इसकी सूखी लकड़ियों से तुम्हारा खाना बनता है, दातून से दांतों को चमकाते हो, इसके फलों से तेल निकालकर बेचते हो और पत्तियों से अपने को बीसियों रोगों से बचाते हो।–फिर भी तुम इसी वृक्ष को काटने पर तुले हुए हो ! अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए सैकड़ो जीवों को कष्ट देने जा रहे हो। बोलो, क्या तुम इतना बड़ा पाप करके चैन से रह सकोगे ? बोलो रह सकोगे ?? रह सकोगे ???

प्रश्न के वार से अक्स्मात से सुक्खू उठ बैठा उसका स्वप्न भग हो चुका था

उसका हृदय व्याकुल हो गया और आखें सजल। भाग कर वह उसी नीम के पेड़ के पास पहुंचा और उससे लिपट कर बोला, "मुझसे बड़ा अनर्थ होनेवाला था बाबा। पर तुमने बचा लिया। मुझे माफ कर दो वृक्ष बाबा, माफ कर दो !"

सुक्खू की आखों से निकली आसुओं की तेज धार वृक्ष बाबा की लम्बी जड़ों में समाती जा रही थी। नीम की डालें हवा के दबाव से नीचे की ओर झुक रही थीं। ऐसा लगा रहा था जैसे वृक्ष बाबा अपने सुक्खू को गोद में उठाकर अपना ढ़ेर सारा प्यार उस पर निछावर कर देना चाहते हैं।

—जाकिर अली "रजनीश"
नौशद मंजिल, सुभाष नगर,
तेलीबाग बाजार, लखनऊ-226002

सपनों का राजा

"राजा, वो देख, कितनी सुन्दर चिड़िया है। जरा उस पर अपना निशाना तो लगाओ।" एक पेड़ की ऊंची डाल पर बैठी रंगीन चिड़िया की ओर इशारा करते हुए पवन ने कहा।

"अभी लगाता हूं।" कहते हुए राजा ने गुलेल में कंचा लगाकर चिड़िया पर गुलेल चला दी। देखते ही देखते यह चिड़िया जमीन पर आ गिरी। उसके सुन्दर-सुन्दर पंख टूट गये और शरीर से खून बहने लगा। अपनी सफलता को देखकर राजा मुस्कराया, 'दिखा पवन, ये है मेरा निशाना ?"

"वाकई, तुम्हारे निशाने का जवाब नहीं। बेचारा ढ़ेर हो गया।" पवन ने उसकी हां में हां मिलाई, "अच्छा अब घर चलते हैं, बहुत देर हो गयी है।"

"हां, चलो। अब तो पेट में चूहे भी कूदने लगे हैं।" राजा ने पवन का समर्थन किया और चिड़िया को तड़पते हुए वहीं पर छोड़कर दोनों आगे बढ़ गये।

राजा अपने माता-पिता का लाडला बेटा है। गुलेल से निशाना लगाना उसका प्रिय शौक है। हालांकि इसके लिए उसके माता-पिता डांटते हैं, पर वह उसे एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देता है। वे भी अधिक दुलार के कारण बेटे की छोटी-छोटी गल्तियां माफ कर देते हैं। इसी कारण राजा बहुत शैतान हो गया है।

घर पहुंचने पर राजा हैरान रह गया। सामने उसके बड़े भैया बैठे हुए थे। "भैया !" कहते हुए वह उनसे जाकर लिपट गया। तभी मां चाय लेकर आ गयी। और सभी लोग चाय की चुस्कियों में खो गये। तभी राजा ने चुप्पी तोड़ी, "भैया, आपने पत्र में लिखा था कि आपने एक ऐसा यंत्र बनाया है, जो हमें मनचाहा सपना दिखा सकता है।"

"हां", लिखा तो था; और उसका नाम रखा है। "सपनों का राजा !"

"फिर तो हमें भी दिखाइए न !" राजा ने चाय का कप खाली कर दिया।

"अच्छा अभी लो।" कहते हुए भैया ने सूटकेस खोला। उन्होंने उसमें से एक रेडियो जितना यंत्र निकाला, जिसके साथ एक हेडफोन भी जुडा हुआ था। उसे छूकर राजा बोला, "पर ये काम कैसे करता है ?"

"असल में व्यक्ति जो कुछ दिन भर देखता व सोचता है, वे बातें मन के एक

कोने मे अंकित होती जाती हैं और सोते समय सपने मे दिखाई पडती हैं भैया ने समझते हुए कहना शुरू किया, 'इस यंत्र को चालू करने पर इसमे से एक विशेष प्रकार की तरंगें निकलती हैं, जो मन में अंकित बातों के लिए एक उत्प्रेरक का कार्य करती हैं और उन्हें एक निश्चित दिशा प्रदान करती हैं। इसलिए इसे प्रयुक्त करनेवाला व्यक्ति मनचाहे सपने देख पाता है।''

"अरे वाह, तब तो बड़ी मजेदार मशीन बनाई है आपने।'' राजा बोल पडा, "अब तो मैं अभी-अभी मर्जी के सपने देखूंगा।''

"हर चीज का समय होता है राजा बेटे; और फिर मशीन कहीं भागी थोड़े ही जा रही है ?'' पिताजी बीच में बोल पड़ा, "रात में जितने चाहे सपने देख लेना।''

"हां, बेटे, और फिर भैया भी थक गये होंगे। इन्हें जरा आराम कर लेने दो।'' इस बार मां ने राजा को समझाया।

"ठीक है !'' कहता हुआ राजा बाहर चला गया; और फिर भैया ने भी नहाने-धोने के लिए बाथरूम का रास्ता पकड़ा।

राजा सीधे पवन के पास पहुंचा और उसे मशीन के बारे में बतलाया। उस अनोखी मशीन के बारे में सुनकर पवन अपने को रोक न पाया और वह उसे देखने के लिए दौड़ा आया। इसी प्रकार जिस किसी ने भी उस मशीन के बारे मे सुना, अपने को रोक न सका। देखते ही देखते राजा के घर एक अच्छी खासी भीड जमा हो गयी। राजा ने सभी को वह मशीन दिखाई, पर किसी को उसके पास फटकने तक न दिया। इस क्रम में दोपहर बीत गयी। अब राजा रात होने का इंतजार करने लगा। वह सोचता रहा कि जल्दी से रात हो और वह अपने मन-भावन सपने देखे ! सपनों में जब वह अपने मन-पसंद रोबोट, कम्प्यूटर और करामाती मशीनों के साथ खेलेगा, तो कितना मजा आएगा; और वह सोचने मात्र से ही रोमांचित हो उठा।

बड़े इन्तजार के बाद किसी तरह दिन ढला और अंधेरे का राज्य कायम हो गया। राजा, जो कि हमेशा नौ बजे के बाद ही खाना खाता था, उस दिन सात बजे ही खाना खा-पी कर बिस्तर पर जा पहुंचा। उसे देखकर सभी लोग हैरान थे। पिताजी आश्चर्यचकित होते हुए बोले, "राजा बेटे, तुम तो कभी दस बजे से पहले नहीं सोए, फिर आज... ?''

"हमारी टीचर जी ने बताया है कि हमें जल्दी सोना चाहिए, यह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है।'' राजा ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया, जिसे सुनकर सभी लोग मुस्करा पड़े। भैया ने मशीन निकाली, उसका हेडफोन राजा के सर मे लगाया और मशीन को चालू कर दिया।

देखते ही देखते राजा स्वप्न लोक जा पहुंचा। उसे लगा कि वह एक रेल के डिब्बे में बैठा है और चारों ओर घना अंधेरा छाया है तथा चारों ओर से अजीब-अजीब आवाजें आ रही हैं। कुछ क्षणों के पश्चात आवाजें आनी बन्द हो गयीं, और अंधेरा छंटने लगा। दो लम्हों बाद ही उसने अपने आप को एक शानदार बारामदे में बैठे हुए पाया। तभी किसी के पैरों की आहट हुई और सामने

एक रोबोट आ खडा हुआ उस आदमकद राबोट न सर झुकाकर राजा का अभिवादन किया और फिर बडे नम्र स्वरो मे बोला 'चलिए श्रीमान् बी० सी० सी० एस बाडी एण्ड करेक्टर कनवरटिग सुपर कम्प्यूटर यानि शरीर और गुण बदल देने वाला कम्प्यूटर तैयार हो गया है। कृपया आप चलकर देख ले

"क्या ?" राजा चौंका। फिर जैसे उसे कुछ याद आ गया। वह बोला, "ठीक है, चलो !"

अगले ही क्षण दोनों न जाने कैसे एक विशाल कम्प्यूटरीकृत कमरे में जा पहुचे। कमरे में चारों ओर बड़ी-बड़ी स्क्रीन, रोबोट और कम्प्यूटर अपने कार्य में व्यस्त थे। एक बड़ी सी स्क्रीन के परदे पर कुछ नम्बर उभर रहे थे। राजा उसी के सामने खड़ा हो गया और आंकणों को जांचने लगा। रोबोट चुपचाप पास ही खडा रहा।

"देखा रोबो, हमारी मेहनत्त सफल रही।" अन्तिम परिणाम देकर राजा खुशी से चहक पड़ा, "हमारा कम्प्यूटर सही ढंग से काम कर रहा है। हमने प्रकृति पर विजय पा ली है। अब हम इस कम्प्यूटर के द्वारा किसी भी पशु या पक्षी का रूप धारण कर सकते हैं।"

"बधाई हो श्रीमन्, यह आपकी वर्षों की मेहनत का परिणाम है। आपने एक बार पुन: सिद्ध कर दिखाया कि दुनिया में कोई कार्य असम्भव नहीं है" रोबोट भी अपने को रोक न सका, "...पर इसका परीक्षण आप किस पर... ?"

"स्वयं पर, और किस पर ?" राजा बीच में ही बोल पड़ा।

"लेकिन श्रीमन्... !"

"लेकिन क्या ? बोलो रोबो।"

"यदि श्रीमन् कहीं खुदा न खास्ता इसमें कोई गड़बड़ी हो गयी, तो इसमें आपके प्राण... ।" मुझे पूरा भरोसा है रोबो। मैं किसी खतरे से नहीं डरता और फिर भला मै किसी खतरे के भय से इस रोमांचक अनुभव से क्यों महरूम रहू ? जो होगा, देखा जाएगा।" कहते हुए राजा ने एक बार पुन: उस यंत्र का निरीक्षण किया और उसमें आवश्यक निर्देश भरने के बाद वह एक विशेष कक्ष मे चला गया।

कक्ष में चारों ओर से सुनहरी किरणें फूटने लगीं और वह राजा के शरीर मे समाती चली गयीं। धीरे-धीरे पूरा केबिन सुनहरा हो गया और विशेष चुम्बकीय प्रभाव से राजा का शरीर अणुओं-परमाणुओं में अपघटित होने लगा। थोड़ी देर मे वहा मात्र कुछ धूल के कण ही मौजूद नजर आए।

कुछ अन्तराल के पश्चात दीवारों से विशेष प्रकार की तरंगें उत्सर्जित होने लगीं और केबिन के मध्य में एकत्रित धूल के कण आपस में संघटित हो एक निश्चित आकार ग्रहण करने लगे। कुल पांच मिनट के अन्तराल के बाद राजा का रूप एक तोते में परिवर्तित होने लगा। पूर्ण आकार ग्रहण करने के बाद कक्ष का दरवाजा खुला और तोता बना राजा पख फड़फड़ाते हुए बाहर की ओर उड़ चला।

खुले आसमान में उड़ने पर राजा को बहुत आनन्द आया। लेकिन थोड़ी ही

देर में दूषित वायु के कारण उसका दम घुटने लगा और वह जगल की ओर उड चला। लगभग पंद्रह मिनट तक उड़ान भरने के बाद वह जगल मे जा पहुचा हरे-भरे पेड़-पौधों को देखकर राजा का मन प्रसन्नता से भर उठा। एक पेड़ पर बैठे हुए कुछ तोतों को देखकर राजा उनके पास जा पहुंचा और उन्हें अपना परिचय दिया किन्तु स्वभाव और आवाज़ दूसरों से भिन्न होने के कारण उन जंगली तोतों ने उसे अपने पास से भगा दिया। यह देखकर राजा को बहुत गुस्सा आया। लेकिन वह अकेला था, अतः दूसरी ओर बढ़ गया।

इतनी देर तक उड़ते रहने के कारण राजा थक भी गया था, सो वह एक पेड पर बैठ कर सुस्ताने लगा। भूख और प्यास भी सताने लगी थी। भोजन के रूप में वहा पर तो सिर्फ फल वगैरह ही मिल सकते थे। इसलिए वह इधर-उधर अपनी नजरें दौड़ाने लगा।

अचानक राजा की नजर एक पेड़ से लटक रहे लाल रंग के फल पर पडी। तुरन्त ही वह उस पर झपटा। तभी सनसनाता हुए एक तीर वहां आया और उसके पख को बेध गया। जिससे खून की फुहार छूट पड़ी और देखते ही देखते वह खून से लथपथ हो गया। तीर लगने के कारण उसके शरीर में बड़ी जोर की पीड़ा होने लगी। जब वह अपने को संभाल न सका, तो अनियंत्रित होकर डाली से नीचे लुढक पडा और भय मिश्रित चीख उसके मुंह से निकल गयी।

दर्द और चीख का एहसास इतना तगड़ा था कि राजा का स्वप्न टूट गया और वह व्याकुलता के कारण नींद से उठ बैठा। भैया और माता-पिता उसके पास ही बैठे थे और उसकी प्रतिक्रिया का अध्ययन कर रहे थे।

आंख खोलते ही राजा की नजर सामने दीवार पर लटक रहे एक कैलेण्डर पर पडी, जिसमें एक घायल पक्षी बना हुआ था। वह तुरन्त दर्द से चीख पड़ा और उसे वह पक्षी याद हो अया, जिसे उसने गुलेल चलाकर घायल किया था। एहसास के थपेड़ों से राजा बुरी तरह से आहत हो गया और अपने मन ही मन बड़बड़ाने लगा, "ओह, मैं कितना निर्दयी हूं। अपने हाथों से बिना वजह...।" राजा की आंखें भर आयीं और पश्चाताप के आंसू उसके गालों को तर करने लगे।

राजा की स्थिति को देखकर भैया ने उसे सहारा दिया, "सुबह का भूला शाम को वापस आ जाए, तो उसे भूला नहीं कहते।" और उन्होंने राजा को गले से लगा लिया। अनायास ही उसकी नजरें "सपनों का राजा" पर पड़ी, ओर वे मन ही मन मुस्करा पड़े। क्योंकि "सपनों का राजा" बनाने का उनका उद्देश्य पूरी तरह से सार्थक हो चुका था।

—ज़ाकिर अली "रजनीश"
नौशाद मंजिल, सुभाष नगर
तेलीबाग बाजार, लखनऊ-226002

आजादी का सुख

एक कार रुकी। कोई काली आकृति बाहर निकली। एक पल भी नहीं लगा और उसने अमित को अंदर खींच लिया। दरवाजा "फटाक" से बंद हो गया। कार मे काले शीशे चढ़े हुए थे। आस-पास कोई भी न था जो यह हादसा देख पाता। कार तेजी से भाग ली।

"कहां ले जा रहे हो...मुझे...छोड़ो...छोड़ो मुझे...।" अमित ने खुद को छुडाने का प्रयास किया। कार में दो लोग और थे। उनमें में एक ने झिड़का, "अबे कबूतर की दुम, सीधी तरह चुपचाप बैठा रह। वरना दूंगा एक कसके।"

दूसरे ने कुछ कहा नहीं। उसने जेब से पिस्तौल निकाल, उसे एक-दो बार डराबनी हंसी से देखा और वापस रख लिया। अमित के लिए इतना काफी था। जैसे साप सूंघ गया उसको। वह चुपचाप बैठा रहा। कार आधे से ज्यादा दूरी तय कर चुकी थी।

"बॉस खुश होंगे। कोई डेढ़-दो लाख तो देंगे ना" एक ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

"हां, इतना तो मिलेगा।" समर्थन में काला चोगा उतार चुके मोटे- आदमी ने मुह खोला।

ब्रेक लगे। कार रुक गई। शायद ठिकाना आ गया था। "उतर बे।" अमित को मोटे आदमी ने घूरा।

सब अंदर चल दिए। बड़ी आलीशान कोठी थी।

"बॉस, एक और मिल गया। अब दिक्कत नहीं होगी।"

"हम किसी दिक्कत-विक्कत को नहीं जानते। हम जो चाहते हैं, सो होता है।" एक रोबीली आवाज गूंजी।

"लड़का काबिल है ? कर पाएगा कुछ।"

"क्यों नहीं साब। हमारी मेहनत की कमाई का आटा इसके पेट में जायेगा तो तन और दिमाग, दोनों में जान आ जाएगी।"

सब हंस पड़े।

"आ...बे। तुझको काम समझा दूं।" अमित का हाथ पकड़कर सिगरेट वाला आदमी अंदर चल दिया।

'कितने निर्दयी हैं यह सब क्या काम कराएगे अमित का मन रो रहा था। वह अदर पहुचा। देखा यह एब लेब्रोटरी थी। ढेर सारे बच्चे वहा थे, बच्चो की आंखों से लग रहा था कि वे सब नशे में हैं।

यहां नकली दवाइयों के बनने का काम होता था। टेबलेट बनाने से पैंकिग और असल ठिकाने तक पहुंचाने का सारा काम बच्चों के नाम था। सोलह-सत्रह साल तक की उम्र के ही लड़के वहां थे। इन्हें हथियार के रूप में इस्तेमाल करना सभी के लिए फायदेमंद था। लड़कों पर कोई जल्दी शक भी नही कर सकता है।

"इसे कुछ खिला दें ?'' वहां बैठा एक दूसरा आदमी बोला, "कोई भूखा थोडे ही घूम रहा होगा ये। क्यों रे, कुछ खाना है तेरे को ?''

अमित की आंखें गीली हो रही थीं। उसने असहमति में सिर हिला दिया।

"इसे तू काम समझा।'' मोटे आदमी ने थोड़ा गुस्से में कहा। वहां बैठा आदमी अमित को एक हौज के पास ले गया। कहा, "इसे देख रहा है ना, यह हौज है। दवाईयों का घोल पकता है इसमें। तुझे इसको चलाते रहना है। समझा या दू कसके।''

अमित ने कुछ कहा नहीं ! वह उस घोल को चलाने लग गया।

"लड़का समझदार है। क्यों रे, किसका पुत्तर है तू''

"मेरे पिताली बैंक में प्रबंधक हैं।''

"मोटी मुर्गी का चूजा है।...खैर...तू अपना काम कर...।'' सब चले गये।

बेचारा अमित। राजसी ठाठ में रहनेवाला। राजाओं की तरह आदेश देकर काम करानेवाला। वह इन सबके हाथों की कठपुतली बन गया था। उसने तो कभी गुलामी के जीवन की कल्पना भी नहीं की थी। उसे आज पता चला था कि गुलामी कितनी बुरी होती है। कितना शोषण ? कितना अत्याचार ? दूसरे की भावनाओ का जरा भी सम्मान नहीं।

समय कब किसी का इंतजार करता है। दिन बीतते रहे। अमित–जो वे सब कहते, करता। झिड़कियां सुनता। कई बार उन लोगों ने मारा भी।

अमित ने वहां के लड़कों से पूछा, "तुम सबको यहां अच्छा लगता है ?''

"क्यों बुराई क्या है यहां ? आराम से रहते हैं। खाते-पीते हैं। कोई ज्यादा कठिन काम भी नहीं। ये सब मिलने पर और जीने को क्या चाहिए ?

"जब बाहर रहते थे न। कई-कई बार भूखे तक सोना पड़ जाता था। अरे .. कभी खाना नहीं तो कभी कपड़ा नहीं।''

"बाप शराबी था। रिक्शा चलाने से इतनी आमदनी नहीं होती थी कि घर चले। मां और मुझे मारता था...। मैं तो यहां आकर जैसे स्वर्ग में आ गया।''

सबकी बात सुनकर अमित को लगा कि यहां कुछ नया सोचनेवाला वह अकेला है। अमित जानता था कि ये सब असुविधाओं में पले गरीब-लड़के हैं। सुविधाओ के

अभाव मे इन्सान की दुनिया उसके सोचने की शक्ति-सभी कुछ छोटा हो जाता है अच्छे बुरे का निर्णय करने मे परिस्थितियो की भूमिका महत्वपूर्ण है

आज अमित से टेबलेट पावडर की एक पौलीथीन धोखे से फट गई। उसे खूब पीटा गया। झिड़कियां सुननी पड़ी, "आंखें फूट गई हैं क्या ? ऊटपटांग काम करता है।"

गलती किससे नहीं होती ? गलती पर क्षमा कर देने से भविष्य में सुधार भी हो जाता है। यह लोग यह बात क्यों नहीं समझते ? अमित को लगा कि वह अभी इन्हीं लोगों में से है। अपने राजसी दिनों में तो उसने भी यह बातें नहीं सोंचीं। क्या जमकर कुटम्मस की थी रामू को। रामू उसके घर नौकर था। रामू से पानी का गिलास छूटकर गिर गया और अमित की पैंट भीग गई थी। अमित ने उसे इतना पीटा कि बेचारा फ़िर कभी काम पर नहीं आया, नौकरी छोड़कर भाग गया।

अमित तो बिलकुल पराधीन था। वह तो भाग भी नहीं सकता था। संघर्षों का पानी सर के ऊपर से गुजर रहा था कई बार अमित के मन में आया--आत्महत्या कर ले। पर उसके अन्तर्मन ने उसे हमेश झकझोरा--ये कायरता है। जीवन एक यात्रा है, और यात्रा सदा सुखमय नहीं होती। सुख और दःख के उतार-चढ़ाव यात्रा मे होते हैं। जीवन के संघर्षों से जो हारे, उसे धिक्कार है। फिर दु:ख किसके जीवन में नहीं होते ? बड़ी बात है उनसे जूझना और जीना। आगे सुख है, इसी सुखद आशा से हम अपने वर्तमान के दु:खों की उपेक्षा कर सकते हैं।

अमित ने सोचा--आत्महत्या करने से इन गलत लोगों का काम तो नहीं बंद हो जायेगा। इन्हें फिर कोई अमित मिल जायेगा और ये उसे गुलामी के बंधन में जकड़ देंगे। फिर किसी हंसते गाते परिवार की रौनक छिनेगी और उसका दोषी कौन होगा--सिर्फ मैं।

मुझे हारना नहीं है। मैं संघर्ष करूंगा। मैं अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयास करूंगा। अमित ने जैसे प्रण कर लिया था।

नकली दवाएं बाहर भेजनी थीं। आज ये काम अमित को करना था। उसे नशे की एक गोली दी गई। किसी ने रिवाल्वर उसकी कनपटी पर रखकर समझाया--"ऊपर जाना हो तो कोई चालाकी करना।"

"चालाकी भी चालाकी से करनी है।" अमित समझ चुका था। उसने नशे की गोली मुंह में तो डाली मगर उसे पानी के साथ गटका नहीं। गोली को मुंह में एक ओर दबायें, वह पानी पी गया। गोली उसने नजर बचाकर थूक दी। सबके लिए वह नशे में था।

कार एक दूर के शहर के लिये चली। बाहर के आजादी पूर्ण गुमनाम माहौल ने अमित की आंखें भिगो दीं। कार कोई तीन घंटे बाद शहर पहुंची। अमित खुश हुआ क्योंकि इस शहर में उसके मामा रहते थे। दवाओं की एक दुकान से थोड़ा

दूर कार रुकी। अमित से कहा गया 'जा यह पेटी वहां जल्दी से देकर आ ध्यान रहे कोई गड़बड़ की तो...। और उसे रिवाल्वर दिखा दिया गया,

पेटी लिए अमित दूकान पर पहुंचा। कहते हैं अगर हिम्मत हो तो साथ देने वाले भी बहुत मिलते हैं। काउण्टर पर शशांक भी खड़ा था। शायद कोई दवा लेने आया था। शशांक अमित के ममेर भाई का दोस्त था। उसका, अमित की हालत पर चौकना स्वाभाविक था। वह कुछ कहता कि अमित के इशारे से चुप रह गया। अमित ने पेटी दी और कार की ओर बढ़ लिया। 'वेरी गुड ब्वाय'' कह कर कार में बैठे उन लोगों ने खुशी जाहिर की।

शशांक ने देर न की। उसने जल्दी से कार का नंबर नोट कर पास के पी सी ओ से पुलिस को सूचना दी–"5761 नंबर की कार में कुछ अपराधी अमित को लेकर जा रहे हैं।''

अच्छी व्यवस्था के कारण सारे शहर की पुलिस को सतर्क करने में सफलता मिली।

5761 नंबर की कार पर पुलिसवालों का लक्ष्य जम गया। अचानक बड़ी पुलिस चौकी के सामने से एक कार गुजरी। उस पर काले शीशे चढ़े थे, मगर नंबर था 4852। पुलिसवालों ने उसे जाने दिया। कार के निकल जाने पर अपराधियों की चालाकी और अपनी भूल का पुलिसवालों को अहसास हुआ। कार के आगे 4852 नबर की प्लेट और पीछे 5761 नम्बर की।

पुलिसवाले भी चतुर थे। उन्होंने कार का पीछा करना शुरू किया मगर पुलिस की जीप से नहीं। इससे अपराधी शक करते और होशियारी दिखा सकते थे। एक सामान्य कार का उपयोग करना पुलिसवालों के लिये लाभदायक रहा। कार के टायर बर्स्ट कर दिये गये। अपराधी पकड़े गये।

नकली दवाइयों की कम्पनी का भांडा फूट गया। गुलामी के जीवन से अमित को मुक्ति मिली। अमित की प्रसन्नता का ओर-छोर न था। उसके साथ-साथ सारे बच्चों को भी तो आज़ादी का सुख मिला था। जिन बच्चों का कोई नहीं था, उन्हें बाल सुधार गृह भेजने का निर्णय लिया गया।

अमित के मामा-मामी आ चुके थे। उसके मम्मी पापा को खबर बाद में हुई। हां, सबसे पहले शशांक उपस्थित हुआ था।

सब खुशी से पागल हो रहे थे– हमें पता नहीं किसने फोन पर सूचना दी कि अमित मिल गया है। आप लोग जल्दी आ जायें।

पुलिस इंसपेक्टर भी चकित था– "हमें भी किसी ने सूचना दी मगर अपना नाम नहीं बताया।''

आ चुके अमित के पापा भावुक हो चले थे–वह बहुत नेक इन्सान था। मैं तो उस देवता के कदमों में अपना सब कुछ रखने को तैयार हूँ।''

अमित युछ कहने को हुआ मगर शशाक के इशारे पर वह शान्त रहा

बाद मे अमित के कहने पर शशाक बोला मैंने यह काम नाम और इनाम के लिए नहीं, दोस्त और देश के लिए किया। अपने दोस्त, अपने देश के लिये जिन्होंने काम किया– क्या उन्होंने कुछ लिया ? मित्र और राष्ट्र के लिये लोग जीवन होम कर देते हैं। ऐसे त्यागी महापुरुषों के आगे मै तो कुछ भी नहीं हूँ। दोस्त, मुझे न तो नाम चाहिये, न इनाम। मुझे कुछ नहीं चाहिये। मूक-सेवा का आनन्द ही कुछ और है।''

शशांक का एक-एक शब्द अमित के मन में घर कर रहा था। अमित की आँखों में आँसू थे, शशांक के प्रति सम्मान के आँसू जो लगातार बहे जा रहे थे। वह सोच रहा था दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं है। बुराई पर सदा अच्छाई की विजय हुई है। अच्छे लोग हमेशा थे–हमेशा हैं, और रहेंगे। इनसे ही दुनियां चलानी है।

अच्छे लोग जिस दिन नहीं रहेंगे –दुनियां का रहना भी मुश्किल पड़ जायेगा उसकी सुरक्षा, उसका अस्तित्व सब कुछ खतरे में पड़ जायेगा। खत्म हो जायेगा।

–नागेश पांडेय 'संजय'

खुटार - **242405**, शाहजहांपुर (उ.प्र)

मन का डर

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ज्यादा से ज्यादा सीखने समझने और जानने को उत्सुक रहते हैं। जबकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें बस अपने काम से ही काम रहता है। उसी के बारे में सोचने, समझने और करने के सिवाय उन्हें और कुछ सूझता नहीं। उन दिनों मैं भी इन्हीं लोगों में से था। पक्का धुनी और तुनकमिजाजी।

उन दिनों मैं गांव में रहता था। पांचवीं कक्षा का छात्र था। आयु तेरह या चौदह के करीब थी। पहले तो पढ़ने लिखने में मन ही नहीं लगता था। मगर जब नाम कटा, मार पड़ी तो पक्का पढ़ाकू बन गया। पढ़ने में खूब मन रमता। किताबो से चिपका रहता। और हां, शाम को थोड़ी देर के लिए अपना प्रिय खेल कबड्डी खेलने लिकल जाता; और खेल अच्छे नहीं होते हों, ऐसी बात नहीं, लेकिन मुझे तो बस कबड्डी प्रिय लगती थी। पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है इससे। यही सोच कर कबड्डी खेलता था।

पढ़ाई और कबड्डी। बस यही मेरे काम थे। इनके अलावा और कोई बात मेरे दिमाग में भूलकर भी नहीं आती थी। ऐसी बात नहीं कि और कोई काम थे ही नहीं। थे, मगर जब मेरी रुचि ही नहीं तो क्या हो सकता था ?

मैं किसी नए काम को सीखने को उत्सुक ही नहीं रहता था। दादा जी की दुकान थी लेकिन मुझे ठीक ठाक तोलना या दादा जी की तरह जिल्दी से रुपये-पैसे गिन लेना, छटांक-पाव का दाम जोड़ लेना नहीं आता था। मैं सीखता, कोशिश करता तभी तो आता।

होने को तो गाय भी घर में थी लेकिन दूध दुहने के नाम पर मुझे पसीना आने लगता था। एक बार चुपके से दुहने की कोशिश भी की थी मगर उसने वो लात मारी थी कि मैंने फिर हाथ ही जोड़ लिए। हालत बिगड़ गई थी मेरी। वह तो मौके पर दादी जी आ गई थीं नहीं तो मैं यह बात छिपा ही ले जाता।

मेरे गाँव के पूरब में एक किलोमीटर दूर एक नदी थी। इतवार के दिन मुझे भी नदी में नहाने जाना था। ऐसा करके मैं कोई रिवाज पूरा नहीं करता था। बस, दादा, बापू, चाचा और बड़े भइया के साथ जाता था। वे लोग तो रोज ही टहलते-टहलते नदी तक जाकर वहां से नहाकर ही लौटते थे। मुझे स्कूल जाना

पड़ता था इसलिए कुएं से नहाकर चला जाता था।

मैं सोचता था कि कितना अच्छा हो कि कभी इतवार ही नहीं आए या फिर कभी स्कूल में छुट्टी हो ही नहीं। क्योंकि सच बताऊं मुझे नदी में नहाने से डर लगता था। मगर जबरदस्ती ले जाया जाता था। फिर भी मैं किनारे ही पर नहाता था। दादा बापू, चाचा और भइया तो तैरते हुए काफी गहरे में चले जाते थे। खूब डुबकियां मारते थे। वे तैर भी लेते थे। ऐसा मेरे चचेरे भाई और गांव के लडके भी कर लेते थे। बस मैं ही था जो एकदम डपोरशंख था।

मैं तैरने की सोचता तो लगता कि डूबा और मरा। डुबकी लगाने पर भी ऐसा ही लगता था। इसलिए मैंने बस किनारे खड़े होकर हाथ से पानी छप्प-छप्प कर अपने ऊपर फेंकने या फिर साथ में लाए हुए लोटे से नहा लेने की जुगत बना रखी थी।

मेरी यह जुगत सभी के लिए हंसी और ठहाकों का विषय थी। लेकिन फिलहाल मैं कर भी क्या सकता था ? बाहर भी हंसी घर में भी हंसी, सच पूछो तो जान आफत में थी फंसी।

इन दिनों जंगल से गाय भैंस चराकर लौटते हुए चरवाहों के हाथों में टेसू के फूलों को देखकर मेरा मन बल्लियों उछल रहा था। आम के पेड़ों पर आ रहे बौर, फूल रही सरसों, पक रही गेंहूँ की बालियों और कोयलिया की कुहू-कुहू ने मन में उमगों का सागर सा उड़ेल रखा था।

"फागुन है। जल्दी ही होली के बाद इम्तहान हो जाएंगे। फिर बोल दी जाएगी लम्बी छुट्टी। मैं तो छक्कन काका की बगिया में पड़ा-पड़ा खर्राटे भरा करूंगा। वहीं पढाई भी होगी और फिर शाम को...। शाम को हुआ करेगी धमाकेदार कबड्डी.....।

मैं बड़े उत्साह से आज यह सब मां से कह रहा था कि बीच में बड़े भइया बोल पडे,"और सुबह रोज ही नदी पर नहाने चला करोगे। यह भी तो कहो.....।"

बड़े भइया की बात सुनकर मुझ पर जैसे सांप लोट गया। 'देखो.. मां !" तुनकते हुए मैं चुपचाप मुंह औंधा कर खाट पर पड़ गया।

मैंने सोचा-'बड़े भइया कहते तो ठीक ही हैं। छुट्टियों में तो रोज ही जाना पडेगा नदी पर। रात भर मैं यह सोचकर परेशान होता रहा।

"बापू, मैं इस बार की छुट्टियां मामा के घर बिताऊंगा। देखो, ना मत कहना।" सुबह आँख खुलते ही मैंने अपने मन की बात कह दी।

मेरे शहर में रहते हैं। सब कुछ अनोखा है वहाँ। शाम को तिमंजिले पर खड़े होकर चारों ओर देखो तो जगमगाहट भरा शहर परीलोक सा लगता है और रात ग्यारह-बारह बजे देखो तो जलते बल्बों से लगता है जैसे आसमान धरती पर उतर आया हो। मैं यह सारी बातें सोचकर बहुत खुश हो रहा था।

छुट्टियों में बापू मुझे मामा के घर छोड़ आया मगर दिन मस्ती में नहीं बीत रहे थे। वहां कोई कष्ट मिलता हो, ऐसी बात भी नहीं। वह तो मेरा ही डरपोक स्वभाव

उन सबके लिए हसी का विषय बन जाता मै मन ही मन चिढता और तुनकता सोचता, क्या मै हमेशा ऐसा ही बना रहूँगा।

"कल रविवार है। तुम्हारे भइया नदी पर जायेंगे। तुम भी साथ चले जाना।''

मेरी हालत खराब। बहानेबाजी काम न आई। मामा-मामी फिर बोले,"चले जाना, वंहा तुम्हें अच्छा लगेगा।''

मुझे गुस्सा सा आ रहा था।–"यह भइया भी अजीब है। एम० ए० हैं। अच्छी नौकरी पर हैं। अच्छा घर है। फिर भी नदी पर जाते हैं।'' लेकिन अगले दिन मुझे खुद पर हंसी आयी। जानेंगे तो आपको भी आएगी। भइया नदी पर नहीं नदीपुर जा रहे थे। वह एक कस्बा था। तीन ओर नदी होने के कारण उसे नदीपुर कहा जाने लगा था।

मेरी जान में जान आई। भइया के पास मोपेड थी। उन्होंने स्टार्ट की। मैं पीछे बैठ गया। भइया मोपेड चला लेते हैं। उन्हें डर नहीं लगता। मैं तो साइकिल भी नहीं चला पाता। डर जो लगता है। एक बार चलाने की कोशिश भी की थी तो गिर पड़ा था। साथी खूब हंसे थे। तभी से दुबारा मैंने कोशिश ही नहीं की थी।

मोपेड तेज भाग रही थी। मैंने पिछला हिस्सा कसकर पकड़ लिया था। मुझे कहना ही पड़ा "भइया, धीरे चलाइए।''

भइया कोई उत्तर देते कि एक जोर की चीख सुनाई दी–"बचाओ.... ।''

भइया ने तेज ब्रेक के साथ मोपेड रोक दी। मोपेड पुल पर थी। मैंने देखा कोई डूब रहा था। भइया ने एक झटके में मोपेड खड़ी की। मैं तो बस उनका चेहरा ताक रहा था। वे पुल से ही कूद गये।

मेरा मुंह खुला सा रह गया। दिल की धड़कनें तेज हो गईं। भइया ने तैरते हुए जल्दी से उसे पकड़ कर पीठ पर लादा और किनारे आ गए। उसे पेट के बल लिटा कर पेट का पानी निकाला। कुछ ही देर में उसे होश आ गया।

मुझे बडा अजीब लग रहा था। भइया की जगह कहीं मैं होता तो... ? बस, आखे फाडे उसे डूबता देखता रहता। इसके सिवाय मैं कर भी क्या सकता था।''

जितना ज्यादा ज्ञान हो, हुनर हो। जितने तौर तरीके अपने पास हों, उतना ही अच्छा है। वक्त पर सब काम आते हैं।

मेरे मन का डर अब न जाने कहां गायब हो गया था। 'मैं सीखूंगा, करूंगा। वह सब करूंगा जिसकी सुविधाएं मुझे हैं।' मन ही मन मैने यह संकल्प कर लिया।

छुट्टियां बीतीं। एक नए जोश के साथ मैं गांव आ गया।

—नागेश पांडेय 'संजय'

खुटार – **242405**, शाहजहांपुर (उ.प्र)

चूर हुआ घमण्ड

लंबू लोमड़ बड़ा आलसी था। वह पढ़ाई में बहुत कमजोर था और अक्सर परीक्षा में फेल हो जाया करता था। अपनी मां से झूठ बोल कर वह पैसे ले लिया करता और मित्रों के साथ घूमता।

एक दिन लंबू लोमड़ शाम के समय घूमने निकला। उसने सोचा कि पहले किसी होटल में चलकर नाश्ता कर लिया जाए। वह एक होटल में घुसा। होटल से निकल कर उसकी इच्छा सिनेमा देखने की हुई।

तभी उसने देखा कि उसके जूते गंदे हैं। क्यों न उन पर पालिश करवा ली जाए, यह सोचकर वह सामने की ओर बढ़ गया। वहीं पीपल के पेड़ के नीचे बेचू बन्दर मोची का काम करता था। उस समय उसके पास कोई ग्राहक भी नहीं था। लम्बू लोमड़ ने अपना दाहिना पांव उसके सामने कर दिया बेचू बन्दर ने पालिश की डिबिया खोली और मन लगा कर पालिश करने में जुट गया।

तभी बेचू बन्दर का बेटा, मामूली वेशभूषा में वहां आया। उसके हाथ मे पुस्तकें और कापियां थी। वह कॉलिज से सीधा ही चला आ रहा था। आते ही उसने पुस्तकें एक किनारे रख दीं और बड़े प्रसन्न मन से बेचू बन्दर से बोला, "बापू, अब तुम उठो। दिन भर काम करते-करते तुम थक गए होंगे। जरा आराम कर लो। बाबूजी के जूते मैं चमका देता हूँ।"

अपने बेटे बीनू की बात सुनकर बेचू बन्दर गद्‌गद् हो गया। वह धीरे से उठा और घर की ओर चल दिया। यह सब देख कर तो लम्बू लोमड़ अचरज में पड गया। उसने पूछा—"क्यों भाई, क्या तुम कहीं नौकरी करते हो ? "जी नहीं, मैं पढता हूँ, बीनू बन्दर ने कहा।

"लेकिन उसके बाद भी तुम यह नींच काम करते हो, क्या तुम्हें शर्म नहीं आती। लम्बू लोमड़ ने पूछा।" काम करने में शर्म कैसी, बाबूजी। हमें भगवान ने हाथ-पांव इसीलिए तो दिए हैं कि इससे कुछ काम किया जाए। मेरे बापू यही काम करके मुझे पढ़ा लिखा रहे हैं। शाम को मैं उनकी मदद किया करता हूँ। बूढे हो गए हैं न, थक जाते हैं। उनकी हर तरह से मदद करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।" बीनू ने नम्रता से कहा।

"वह सब तो ठीक है, परन्तु जब तुम्हारा कोई सहपाठी या प्राध्यापक तुम्हें इस

तरह बुट पालिश करते हुए देख लेता होगा तब ? लम्बू ने फिर प्रश्न किया

मेरे काम का सब लोगो को पता है, बाबूजी, लोग चाहे जैसा भी सोचे परन्तु मैं यही मान कर चलता हूँ कि दुनिया में कोई काम छोटा नहीं होता दरअसल जो काम करता है, वही बड़ा है। मुझे दिखावटी शान शौकत से घृणा है। पढ़ लिखकर मैं चाहता हूँ कि अपने बापू के इसी काम को तरीके से आगे बढ़ाऊं। बीनू ने कहा।

लम्बू लोमड़ यह सुनकर जैसे आसमान से धरती पर आ गिरा। उसका सारा घमण्ड चूर चूर हो गया। आज उसे जीवन का सही सबक मिल गया था। रास्ते चलते-चलते उसने तय कर लिया कि वह घर जाकर अपनी मां से माफी मांगेगा।

—नारायण लाल परमार
पीटर कालोनी, टिकरापारा
धमतरी (म. प्र.) 493773

मैना ने लोमडी को सबक सिखाया

एक जंगल था, वहां के पशु-पक्षियों में भाईचारा होने के कारण वे सब शांति पूर्वक रह रहे थे।

लेकिन एक दिन अचानक उस जंगल में एक खूंखार लोमड़ी आ गई। उसने आते ही कई छोटे-छोटे खरगोशों का शिकार कर लिया। यह सोचकर कि यहा सरलतापूर्वक शिकार मिल जाता है उसने इसी जंगल में रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया। लेकिन उसकी इस हत्यारी आदत के कारण जंगल के पशु-पक्षियो मे हाहाकार मच गया।

इस हिंसक लोमड़ी से कैसे बचा जाए यह निश्चय करने के लिए पशु-पक्षियो की एक मीटिंग बुलाई गई। काफी बहस करने के बाद भी कोई निर्णय नहीं लिया जा सका। उनके चेहरों पर उदासी छा गई।

उसी समय एक मैना गाती हुई वहां पहुंची। मैना सुंदर थी, उसका कंठ सुरीला था। जब वह गीत गाती थी तब उसके मुंह से मन को मुग्ध करनेवाली एक सीटी भी सुनाई पड़ती थी। सबको उदास देखकर मैना ने उनकी चिन्ता का कारण पूछा। सभी पशु-पक्षियों ने उसे हत्यारी लोमड़ी के बारे में बताया। मैना ने कहा, आज तो नहीं, लेकिन मैं जल्दी ही तुम्हारी चिन्ता दूर करने का कोई न कोई उपाय जरूर ढूँढ निकालूंगी।

मैना उड़ते-उड़ते अभी थोड़ी ही दूर पहुँची थी कि उसे वह लोमड़ी दिखाई पड गई। वह उस पेड़ पर बैठ कर गाना गाने लगी। लोमड़ी को मैना का गाना बहुत अच्छा लगा। उसने मन ही मन कहा कि काश ! मैं भी इतना मीठा गा सकती और इस मैना को तो देखो, गाते समय कितनी मीठी सीटी बजाती है। लोमड़ी को सोचते देखकर वह मैना वहां से उड़ गई। उसके बाद वह लोमड़ी भी मैना के पीछे-पीछे दौड़ने लगी, उसे दौड़ते देखकर मैना बोली, तुम मेरे पीछे-पीछे क्यों दौड़ रही हो। मै तो एक छोटी सी चिडिया हूँ, मुझे मारकर खा जाओगी तो भी तुम्हारा पेट नहीं भरेगा, लोमड़ी बोली, मैं तुम्हें मारना नहीं चाहती, बल्कि मुझे तो तुमसे मीठी सीटी बजाना सीखना है, क्या तुम मुझे सीटी बजाना सिखा दोगी ?'' यह सूनकर मैना बोली, "सीटी बजाना सीखना तो एक मामूली बात है, लेकिन इसके लिए मुझे तुम्हारे नजदीक आना पड़ेगा, किन्तु तुम्हारा क्या भरोसा, अगर तुम मुझे मारकर

खा गई तो, लोमड़ी ने तब मीठे स्वर से कहा, "मैं तुम्हें वचन देती हूं कि मैं तुम्हें जरा सी भी खरोच तक नहीं पहुँचाऊंगी।'' अपने वचन से मुकर तो नहीं जाओगी ? ऐसा कहकर मैना पास के एक वृक्ष पर जा बैठी। लोमड़ी उस पेड़ के नीचे खड़ी रही, मैना कहने लगी, "सुनो मौसी, चूंकि मेरा मुँह छोटा है इसी कारण मै मीठी लगनेवाली सीटी बजा सकती हूं यदि तुम्हारा मुंह भी छोटा हो जाए तो तुम भी वैसी ही मीठी मीठी सीटी बजा सकती हो, इस पर लोमड़ी ने कहा, "लेकिन मेरा मुँह छोटा किस प्रकार हो सकता है ?'' मैना बोली, "इसके लिए तो तुम्हें अपना मुँह सिलवाना पडेगा।'' इस पर लोमड़ी बोली, "क्या तुम मेरा मुँह सिल सकती हो ?''

मैना ने कहा, "मैं सिल सकती हूं।'' तब लोमड़ी ने ,खुश होकर कहा, "तो जल्दी सिल दो।'' इसके बाद मैना ने लोमडी का मुँह सी दिया, सिर्फ एक छोटा सा छेद ही रहने दिया। मैना ने कहा, "मौसी, अब सीटी बजाकर देखो तो, लेकिन सीटी बजी नहीं, लोमड़ी मैना से कुछ कहना चाहती थी लेकिन मुँह सिला होने के कारण वह कुछ बोल नहीं पाई।'' तब मैना ने कहा, "इसके लिए तुमहे मेरी तरह खूब अभ्यास करना पड़ेगा।'' इतना कहकर मैना फुर्र से उड़ गई। लोमड़ी मैना को ढूंढने के बहाने वहां से चल पड़ी। रास्ते में उसे सुंदर खरगोश दिखे लेकिन वह उनका शिकार नहीं कर सकती थी, क्योंकि उसका मुँह सिला हुआ था।

थोड़ी देर में ही उन खरगोशों ने सारे जंगल में यह बात फैला दी कि लोमडी अब कोई शिकार नहीं कर पाएगी क्योंकि उसका मुँह सिला हुआ है।

अब लोमड़ी भूखों मरने लगी। इधर उधर भटककर उसने कई उपाय किये लेकिन उसके मुँह के टाँके नहीं टूटे। एक दिन खिसियाकर उसने अपने नुकीले पजो से अपने मुँह के कुछ टांके तोड़ डाले, उसके मुँह पर सूजन आ गई थी। कुछ दिनों तक तो वह कुछ भी खा पी नहीं सकी, जंगल के पशु-पक्षी अब कहीं उसका मजाक न उड़ाएं यही सोचकर एक दिन लोमडी उस जंगल से भाग गई। उस दिन मे किसी को भी उस लोमड़ी के दर्शन नही हुए।

—नारायण लाल परमार
पीटर कालोली, टिकरापारा
धमतरी (म. प्र.) 493773

मास्टर दीनदयाल

उनका नाम दीनदयाल था। लेकिन शायद ही कभी किसी ने उन्हें नाम से पुकारा हो। छोटे-बड़े सभी उन्हें मास्टर साहब कहते थे। मास्टर साहब पैंतालीस को पार कर चुके थे। सर के बालों से सफेदी झांकने लगी थी। सफेद कुर्ता धोती और गाँधी टोपी में वे विशुद्ध भारतीय लगते थे। उनमें बुद्धि और साहस का अद्‌भुत समन्वय था।

मास्टर साहब चौबीस वर्षों से प्राइमरी स्कूल में अध्यापन कर रहे थे। उनकी पत्नि सदैव बीमार रहती थी, बेटा अजय दस वर्ष का हो गया था और उन्हीं के स्कूल में कक्षा पाँच में पढ़ रहा था। मास्टर साहब की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। अत: घर में कभी-कभी कहा सुनी हो जाती थी। फिर भी वे दो-चार बच्चो की फीस अपने वेतन में से दे दिया करते थे।

मास्टर साहब अपने छात्रों को अत्यधिक प्यार करते थे और उनके छात्र भी अपने माता-पिता से अधिक उनका सम्मान करते थे।

एक दिन मास्टर साहब की पत्नी चल बसी। उन्हें जीवन में पहली बार आघात लगा और वे कुछ परेशान से रहने लगे।

अगले महीने मास्टर साहब जिला शिक्षा अधिकारी के पास पहुँचे और उनसे अपने ट्रांसफर के लिए अनुरोध किया।

जिला शिक्षा अधिकारी मासटर दीनदयाल से बहुत अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने एक सप्ताह में ही उनका ट्रांसफर एक ग्रामीण स्कूल में कर दिया। इसके साथ ही मास्टर साहब का प्रमोशन हो गया। अब वे प्रधानाध्यापक हो गये थे।

मास्टर साहब अपने बेटे अजय के साथ जब गाँव पहुँचे तो उन्हें बड़ा अच्छा लगा। शहर की भीड़भाड़ और शोर से दूर गाँव का वातावरण अत्यन्त लुभावना था। चारों तरफ हरे-भरे पेड़ दूर - दूर तक लहलहाते खेत और स्वच्छ सुन्दर वातावरण ने उनका मन मोह लिया।

मास्टर साहब को स्टेशन पर लेने कोई नहीं आया था। वे अठारह किलोमीटर का रास्ता... राहगीरों से पूछ-पूछ कर पैदल ही गाँव पहुँचे।

गाँव में सबसे पहले उनकी भेंट ठाकुर इन्द्रपाल सिंह से हुई। ठाकुर इन्द्रपाल सिंह पुराने जमींदार थे तथा गाँव में एकमात्र उन्हीं की पक्की हवेली थी। उन्होने

मास्टर साहब का बडी गर्मजोशी से स्वागत किया भोजन कराया तथा हवेली के ही एक कमरे में ठहरने की व्यवस्था कर दी।

मास्टर साहब देवता स्वरूप ठाकुर साहब से बहुत प्रभावित हुए। किन्तु दूसरे दिन ही बड़ी विचित्र बातें सुनने को मिलीं।

गॉव में स्कूल नाम की कोई चीज न थी। सभी अध्यापक ठाकुर साहब के ही आदमी थे तथा घर बैठे वेतन लेते थे। गाँव की अधिकांश जनता हरिजन तथा आदिवासी थी और उसे ठाकुर साहब ने अपना गुलाम बना रखा था।

मास्टर साहब को यह सब जानकर आश्चर्य भी हुआ और दु:ख भी। एक ओर जहाँ शासन ने दूर दराज के गाँवों मे शिक्षा के विकास के लिए स्कूल खोले थे, वहीं दूसरी ओर ठाकुर साहब जैसे लोग नही चाहते थे कि गाँव के हरिजन आदिवासी किसान पढ़ लिख कर योग्य बन सकें।

मास्टर साहब ने इस बुराई से लड़ने का बीड़ा उठाया और दूसरे दिन ही ठाकुर साहब की हवेली छोड़ दी।

वह सुबह से शाम तक हरिजनों के घर गये, आदिवासियों से मिले उन्हीं के घर खाया-पिया और उन्हें शिक्षा का महत्त्व समझाया। केवल इतना ही नहीं मास्टर साहब ने उन्हीं के बीच रहने का निश्चय किया।

ग्रामवासी पहले तो ठाकुर साहब के भय से अपने बच्चों को पढाने के लिए तैयार नही हुए। किन्तु मास्टर साहब के आकर्षक व्यक्तित्व और मधुर सम्भाषण ने उन्हें बहुत प्रभावित किया।

ग्रामवासियों ने शीघ्र ही श्रमदान द्वारा हरे भरे खेतों के निकट एक स्कूल तैयार कर दिया जिसके चारों तरफ वृक्ष और रंगबिरंगे खुशबूदार फूलों के पौधे थे। मास्टर साहब का स्कुल बिल्कुल ऋषियों के आश्रम जैसा लगता था।

उस पूरे कार्य में एक महीना लग गया। गाँव के इस सुन्दर स्कूल में दिन को बच्चे पढ़ते थे। और शाम को उनके माता-पिता स्लेट बत्ती लेकर आ जाते थे। इन्हे पढ़ाने का कार्य भी मास्टर साहब ही करते थे।

एक दिन मास्टर साहब ने स्कूल की पूरी रिपोर्ट तैयार की और लिफाफे मे बन्द कर अठारह किलोमीटर पैदल चलकर डाकखाने में डाल आये। डाकखाना रेल्वे स्टेशन के पास ही था।

इधर ठाकुर साहब के खेतों पर बेगार करनेवाले धीरे-धीरे कम होते जा रहे थे। उनकी फसलें तैयार थीं और कटाई के लिए आदमियों की आवश्यकता थी

ठाकुर साहब को मास्टर साहब के नए स्कूल की थोड़ी बहुत जानकारी थी। किन्तु जब उन्हें आदमियों ने बताया कि खेतों पर लोगों के न आने का कारण मास्टर साहब और उनका स्कूल ही है, तो वे बौखला गये।

उन्होंने तुरन्त अपनी बन्दूक उठायी और आठ-दस लठैतों के साथ स्कूल की

ओर चल पड़े। साथ में उनका बारह वर्षीय बालक लालसिंह भी था।

ठाकुर साहब ने स्कूल पहुँचते ही दो हवाई फायर किये।

शाम का समय था। आधे से अधिक ग्रामीण अक्षर ज्ञान प्राप्त कर रहे थे। अचानक धमाके की आवाज सुन कर सब बाहर आ गये। सबसे आगे मास्टर साहब थे।

"क्यों मास्टर, क्या हो रहा है ?'' ठाकुर साहब गरजे।

"आइये, आइये ठाकुर साहब, धन्यभाग जो आप पधारे।'' मास्टर साहब दोनो हाथ जोड़े हुए विनम्रता से बोले। उनका बेटा अजय सहमा हुआ उनके निकट ही खडा था।

"हम यहाँ तुम्हारा भाषण सुनने नहीं आये हैं मास्टर, तुम अपना स्कूल बन्द करो, हमारा गाँव छोड़ दो नहीं तो ....."ठाकुर साहब ने जानबूझ कर अपनी बात अधूरी छोड़ दो।

"पिताजी, अगर मास्टर साहब ने गाँव छोड़ दिया तो मैं भी गाँव छोड़ दूंगा। मास्टर साहब बहुत अच्छे हैं, उनका बेटा मेरा दोस्त हैं आप उन्हें गाँव से बाहर क्यों निकाल रहें हैं ?'' छोटा ठाकुर अकडता हुआ अपने पिता के सामने आ खडा हुआ।

"ठाकुर साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ।'' अरे लल्लू तुम्हें कैसे मालुम हुआ कि मास्टर बहुत अच्छा है ? और तू उसके बेटे का दोस्त कब से बन गया ?'' ठाकुर साहब अपनी बन्दूक एक साथी को पकड़ाते हुए बोले। वे प्यार से अपने बेटे को लल्लू कहते थे।

मैं प्रतिदिन उस स्कूल में पढ़ने आता हूँ। आपको मेरी जो बातें अच्छी लगती है वे सब मास्टर साहब ने सिखाई हैं। ये ही हमेशा सच बोलने, माता-पिता की सेवा करने, जीवों पर दया करने और सबसे प्यार करने की शिक्षा देते हैं और बहुत अच्छी-अच्छी कहानियाँ भी सुनाते हैं। इन्होंने हमें भक्त प्रहलाद, ध्रुव भगवान् और कृष्णन् की कहानियाँ सुनायी हैं। अगर आपने मास्टर साहब को गाँव से जाने के लिए कहा तो मैं.........''छोटा ठाकुर फफक कर रोने लगा और उसकी आवाज़ गले में फंस कर रह गयी।

ठाकुर साहब का गुस्सा न जाने कहाँ चला गया था। उन्होंने प्यार से बेटे के सिर पर हाथ फेरा लेकिन उसने हाथ झटक दिया और अजय के पास आ कर खडा हो गया।

ठाकुर साहब को अपने बेटे में बीस पच्चीस दिनों में आश्चर्य जनक परिवर्तन देखने को मिला था। उनका शैतान बेटा बड़ा शालीन हो गया था और बडी अच्छी-अच्छी बातें करने लगा था।

ठाकुर साहब को अब अपने किये पर बड़ा पश्चाताप हो रहा था। उन्होने

अपनी बन्दूक ली और लठैतों के साथ घर आ गये।

गाँव के सभी हरिजन और आदिवासी जो सहमे से एक ओर खड़े थे, इस करिश्मे को देख कर हैरान थे।

दूसरे दिन एक और करिश्मा हुआ।

सभी अध्यापक जिन्होंने हमेशा बिना पढ़ाये ही वेतन लिया था स्कूल आ गये। उनके सिर शर्म से झुके हुए थे।

मास्टर साहब ने उन्हें आदर से बैठाया और उन्हें उनका कार्यभार सौंप दिया।

शाम को हमेशा की तरह नीले आकाश के नीचे प्रौढ़ शिक्षा चल रही थी।

अचानक सबकी दृष्टि गाँव की सड़क की ओर गयी।

सबने देखा तो देखते ही रह गये।

ठाकुर साहब अपने लठैतों के साथ चले आ रहे थे। सभी के हाथों में स्लेट और बत्ती थीं।

—परशुराम शुक्ला
3, गोविन्द गंज
दतिया (म. प्र.) 475661

नसीहत

दाताराम के तीन बेटे थे—राजन, मदन और देव । तीनों भइयों की प्रकृति मे जमीन आसमान का अन्तर था।

बड़ा बेटा राजन स्वच्छ, साफ, शानदार स्थान पर रहना पसन्द करता था। उसकी इच्छा थी कि वह बडा होकर नगर में आलीशान बंगला बनवाये।

मझले बेटे मदन को अच्छी-अच्छी चीजों के संग्रह का शौक था। छात्र जीवन मे उसने अनेक बहुमूल्य वस्तुएं खरीद ली थीं। मदन की इच्छा थी कि वह जल्दी से जल्दी बड़ा होकर फ्रिज, टी.वी. कार आदि सुविधा की सभी चीजें प्राप्त कर ले।

सबसे छोटा देव मस्तमौला था। उसे न घर की चिन्ता थी न बहुमूल्य वस्तुओ के संग्रह का शौक। देव को चिन्ता थी तो बस पेट की। वह खूब तर माल खाता था और नियमित व्यायाम करता था। उसने अपने भविष्य के बारे में कुछ सोचा ही नहीं था।

दाताराम अपने तीनों बेटों के अलग-अलग स्वभाव के कारण बड़ा दुखी था। उसने उन्हें बहुत समझाया। लेकिन किसी ने वृद्ध पिता की बातों पर ध्यान नहीं दिया। अपने अन्तिम समय पर दाता राम ने तीनों बेटों को बुलाया और कहा, "मेरे बच्चो तुम तीनों बहुत अच्छे हो। तुम अलग-अलग उद्देश्योंवाले होते हुए भी सुखी रह सकते हो। बस एक बात का ध्यान रखना। हमेशा एक साथ मिल जुल कर रहना।"

तीनों बेटों ने हमेशा की तरह वृद्ध दाताराम की नसीहत पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उसकी मृत्यु के बाद अपने पैतृक मकान को बेच कर रुपयों का हिस्सा बांट लिया और अपने-अपने हिस्से की रकम ले कर शहर चले गये।

दैवयोग से उन्हें शहर में अच्छी नौकरी मिल गयी तथा वे अपने-अपने काम मे लग गये। अब उनके पास एक दूसरे से मिलने का समय नहीं था। तीनों भाइयो की रुचियां एक दूसरे से काफी भिन्न थीं अत: वे एक दूसरे से मिलने की आवश्यकता भी नहीं अनुभव करते थे।

धीरे-धीरे दस वर्ष हो गये। इस बीच तीनों की शादियां हो गयीं तथा वे परिवार वाले हो गये।

राजन का उद्देश्य एक शानदार बंगला था अत: उसने शहर आते ही जमीन

खरीद ली थी इसके बाद नौकरी से प्राप्तधन से उसने शानदार बगला बनवाया किन्तु इसमें उसका इतना धन लग गया कि वह अपनी आवश्यकता की कोई भी चीज नहीं खरीद सका था। इतना ही नहीं उसे घर चलाने के लिए भी परेशानी होने लगी। राजन की पत्नी तथा बच्चे टी.वी. देखने के लिए पड़ौसी के घर जाते थे। अपनी कार में बैठ कर घूमना उनके लिए स्वप्न जैसा था। अतः अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए राजन ने एक किरायेदार रख लिया।

दूसरा भाई मदन एक किराये के मकान में शान से रह रहा था। उसके पास फ्रिज, टी. वी., कार, स्टीरियो आदि सभी चीजें थी। उसकी पत्नी तथा बच्चे बहुत खुश थे। लेकिन कभी-कभी मदन परेशान हो जाता था। जिस मकान में वह रहता था वह इतना पुराना था कि बरसात में उसकी छतें टपकती थीं जिससे उसकी बहुमूल्य वस्तुएं खराब हो जाती थीं। एक बार तो इसी कारण से उसका टी. वी सैट भी खराब हो गया था। अब मदन सोचने लगा था कि काश उसके पास अपना मकान होता। किन्तु मकान तो दूर की बात मदन के लिए घर का खर्च चलाना भी एक समस्या थी। उसका सारा धन तो बहुमूल्य वस्तुओं की खरीदारी में ही समाप्त हो चुका था।

तीसरे भाई देव के पास न अपना घर था और न ही ऐशोआराम की बहुमूल्य वस्तुएं। किन्तु वह अपने दोनों बड़े भाईयों से अधिक सुखी और प्रसन्न था। उसका शरीर इतना स्वस्थ और शक्तिशाली था कि आस-पास के लोग भय खाते थे। शक्तिशाली होने के कारण देव दादागिरी भी करने लगा था। वह किसी से भी कुछ उधार लेता तो कभी न लौटाता। उसकी दादागीरी से डर कर लोग चुप रह जाते। यदि कोई कुछ बोलता तो देव उसे मार-पीट ठीक कर देता।

देव हमेशा दूकानदारों से उधार सामान लेता था। एक बार एक दूकानदार अपनी उधारी लेने उसके घर पहुंच गया।

देव को यह बड़ा अपमान जनक लगा। उसने हमेशा की तरह दूकानदार की पिटाई कर दी।

दूकानदार भी हृष्टपुष्ट था। वह देव से भिड़ गया।

चारों ओर भीड़ एकत्रित हो गयी।

देव दूकानदार से तगड़ा था। उसने उसे उठा कर पटक दिया और मुंह पर दो तीन घूसे जड़ दिये।

बेचारा दूकानदार खून से लथपथ हो गया।

इसी समय पुलिस आ गयी और देव को हवालात में बन्द कर दिया गया।

देव के हवालात में बन्द होते ही उसे नौकरी से निकाल दिया गया इसी मौके का फायदा उठा कर देव के मकान मालिक ने भी उसका सामान घर के बाहर कर दिया। उसने पिछले दो सालों से मकान का किराया नहीं दिया था।

देव ने कभी कुछ बचाया था नहीं अत उसके परिवारवालो की भूखो मरने की नौबत आ गयी। वे घर से बेघर हो गये।

अचानक देव को राजन और मदन की याद आयी। उसने अपनी पत्नी को बुलाया तथा मदद के लिए अपने बड़े भाइयों के पास भेजा।

राजन और मदन मन के बड़े अच्छे थे। उन्होंने देव की पत्नी और बच्चों को घर में आश्रय दिया तथा तुरन्त थाने जा कर देव की जमानत कराई। इतना ही नहीं मदन ने अपने एक परिचित थानेदार से मिल कर देव और दूकानदार का सुलहनामा भी करा दिया।

देव अब राजन के पास रहने लगा।

देव और उसकी पत्नी व बच्चे राजन के पास बहुत खुश थे। राजन का बंगला वास्तव में शानदार था। उसमें पन्द्रह बीस कमरे थे। देव के पत्नी बच्चे कभी-कभी मदन के पास भी चले जाते थे। मदन के पास कार में घूमते और रोज टी.वी. देखते। लेकिन मदन का घर अच्छा नहीं था।

देव सामान्य बुद्धि का था। लेकिन उसे बार-बार पिता की नसीहत याद आती "हमेशा मिलजुल कर साथ रहना।" वह सोचता, काश राजन और मदन एक साथ रहते तो सभी कितने सुखी हो जाते।

देव के कारण राजन और मदन का भी एक दूसरे के घर आना जाना आरम्भ हो गया।

जब तीनों भाई और उनके परिवार वाले एक साथ एकत्रित हो जाते तो ऐसा लगता मानों कोई त्यौहार हो। बच्चे तो विशेष रूप से काफी खुश थे।

धीरे-धीरे राजन और मदन को भी पिता की नसीहत याद आने लगी।

राजन सोचता कि काश मदन उसके पास ही आ जाता और मदन सोचता कि यदि वह राजन के साथ रहने लगे तो कितना अच्छा हो जाये।

दोनों भाई एक साथ रहना चाहते थे, किन्तु संकोच के कारण एक दूसरे से कहने में हिचक रहे थे।

तभी एक दुर्घटना हो गयी।

बरसात के दिन थे।

एक दिन तेज पानी बरसा। मदन का घर बहुत पुराना था। बारिश से उसके मकान का आधा भाग गिर गया। ऐसा लगता था मानो कभी भी पूरा घर धराशायी हो सकता है।

मदन का कीमती सामान पानी से भीगने लगा।

इसी समय राजन आ गया। उसने मदन के सामान की दुर्दशा देखी तो उससे रहा नहीं गया।

राजन बोल पड़ा, "मदन उठो, अपने घर चलो, सारा सामान ले कर। हम

तीनो भाई एक साथ रहेगे। तुम्हे याद है ? हमे पिताजी ने अन्तिम समय यही नसीहत दी थी। लेकिन हम लोग उनकी बात भूल गये। इसीलिए हमे इतने कष्ट उठाने पड़े।''

"हां भैया, चलो अभी चलते हैं। अब हम तीनों हमेशा एक साथ रहेंगे।'' कहते हुए मदन राजन से लिपट गया।

देव दूर खड़ा उनका मिलना देख रहा था।

—परशुराम शुक्ल
3, गोविन्द गंज
दतिया (म. प्र.) 475661

बुलाकी और बुढ़िया

रात का समय था। गहरा अंधकार छाया हुआ था। चारों ओर झींगुरों के स्वर गूज रहे थे। पक्षी अपने-अपने घोंसलों में दुबक गए थे...पर बुलाकी बंदर वृक्ष पर मुह लटकाए बैठा था। कारण था बुलाकी का आलसीपन, बुलाकी आलसीपन और कामचोरी की बुरी आदतों का शिकार था।

बुलाकी कोई भी काम समय पर नहीं करता था। बड़ी कठिनाई से कोई काम करने को तैयार होता भी तो उल्टा-सीधा करके रख देता।

तीन दिन से बंदरिया उसे पेड़ के नीचे पते बिछाने को कह रही थी। वह प्रतिदिन वचन देता कि रात तक पत्तों की तह बिछा देगा पर भूल जाता। बंदरिया, बच्चों को पेड़ों पर कूदना सिखाना चाहती थी। बच्चे बहुत छोटे थे। नीचे गिरने पर चोट लगने का डर था। बुलाकी के कारण इस काम में देर होती जा रही थी।

आज बुलाकी ने बहुत डांट खाई थी। आखिर उस ने कह दिया, "निश्चित रहो। मुंह-अंधेरे उठ कर यह काम कर ही दूंगा।"

अब बैठा वह यही सोच रहा था कि क्या पता। सबेरे जल्दी आंख खुले न खुले ? इससे अच्छा तो यह होगा कि रात ही में काम निपटा दिया जाए... उस ने बिना आवाज़ किए पत्ते तोड़-तोड़ कर नीचे गिराने आरंभ किए। जब पेड़ के चारो ओर पत्तों का ढेर लग गया तो उसे शांति मिली। उस ने आराम से लेट कर आखे बद कर लीं, और सोचने लगा। सबेरे निश्चित हो बंदरिया उस से समझौता कर लेगी।

पर हुआ इसका उल्टा ! उसकी नींद बंदरिया के चिल्लाने से खुली, 'तुम अभी तक सो रहे हो ! सूरज सिर पर आ गया। काम कब आरम्भ करोगे ?"

बुलाकी चकरा गया। नीचे देखा, एक भी पत्ता नहीं था। धरती स्वच्छ पडी थी। उस ने हकला कर बंदरिया से कहा, "रात में मैंने ढेरों पत्ते नीचे गिराए थे।"

"सपने में गिराए होंगे। चलो काम शुरु करो।" बंदरिया ने किचकिचा कर कहा।

'मैं सच कहता हूं, मैंने रात ही को पत्ते गिरा कर धरती पर मोटा गालीचा बना दिया था।"

"तो क्या पत्ते जादू से गायब हो गए ? रात को आंधी नहीं आई, हवा के झक्कड़ नहीं चले...तो पत्ते कहां गए ?''

"मेरी बात का विश्वास करो।'' बुलाकी ने विनति की.

"रात में कोष्ठ पत्ते तोड़ता है भला ? वृक्षों में भी प्राण होते हैं. चलो पत्ते तोडो''

बंदरिया ने आर्डर पास किया।

बुलाकी काम में जुट गया। धरती पर पत्तों की तह बिछ गई तो उसने चैन की सांस ली। बंदरिया ने भी उस की सहायता की थी। बीच-बीच में उसे जंगली फल लाकर खिलाए थे। मीठी - मीठी बातें करके उस का साहस बढ़ाया था।

दूसरी सुबह पत्ते फिर गायब थे। एक दिन, दो दिन....तीन दिन..... निरतर ऐसा होता रहा कि बुलाकी धरती पर पत्ते गिराता और सबेरे पत्ते गायब मिलते अतत: बुलाकी ने निश्चय किया कि चाहे रात भर जागरण करना पड़े पर वह पता लगाएगा कि पत्ते कौन चुन ले जाता है ?......वह दो रात देर तक जागता रहा पर हुआ यों कि सबेरे-सबेरे उस की आंख लग गई और पत्ते गायब हो गए।

एक दिन बुलाकी शाम ढलते ही सो गया....चार बजे तक उस की नींद पूरी हो गई तो वह उठ बैठा। सजग हो कर बैठ गया। उसे सफलता मिली। उस ने देखा कि सुबह के हल्के प्रकाश में एक बूढ़ी स्त्री कपड़ा फैला कर पत्ते उसमें बटोर रही है।

वह धम से नीचे कूद पड़ा।

बुढ़िया भयभीत होकर दूर हट गई। बुलाकी चिल्ला कर बोला, "तो तुम हो चोर !

तुम्हारे कारण मैं प्रतिदिन गालियां खाता हूँ''

"मैंने क्या चुराया है ? तुम प्रतिदिन इन्हें चुरा कर ले जाती हो।''

"पत्ते भी किसी के होते है ?'' बुढ़िया डर भूल कर अचरज से बोली। "पत्ते तो सूख कर अपने आप या हवा से नीचे गिरते हैं।''

"सूखने पर जो पत्ते गिरते हैं वह हवा से बिखर जाते हैं, गीले पत्ते नहीं बिखरते .... तुम ने कभी सोचा नहीं कि इसी एक पेड़ के नीचे इतने सारे पत्ते कहाँ से आ गए ?

दूसरे पेड़ों के नीचे तो इक्का-दुक्का पत्ते ही हैं।''

बुढ़िया आश्चर्य से मुँह खोले बुलाकी को देखती रही, फिर बोली, "हाँ, यह बात तो मैंने सोची ही नहीं। पत्ते दिखाई दिये और मैने चुन लिए।''

"तुम इन पत्तों का क्या करती हो ?'' बुलाकी को सरल-हृदया बुढ़िया पर दया आ गई।

"मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है। मैं पत्ते सुखा कर गोबर में मिलाती हूँ; और

उपले बनाती हूँ फिर बाजार मे बेचती हू जो कुछ मिलता है उस से अपना पेट पालती हूँ'' बुढ़िया ने कहा। कुछ रुक कर उस ने पूछा, "तुम ये पत्ते क्यों एकत्र करते हो ?''

बुलाकी ने उत्तर दिया, "हम बंदर जब अपने बच्चों को पेड़ों पर कूदना सिखाते हैं तो उन की रक्षा की दृष्टि से धरती पर पत्तों का गालीचा बिछा देते हैं। फिर वह नीचे गिरते भी हैं तो उन्हें चोट नहीं लगती। मेरी बंदरिया आज भी हमारे बच्चों को कूदना सिखा रही है।''

"मुझे क्षमा कर दो।'' बुढ़िया ने मृदुता से कहा। "अब मै ऐसा नहीं करूंगी।'' "नहीं नहीं। क्षमा की क्या बात है ? तुम पत्ते चुना करो, पर उस सामनेवाले पेड़ के। तुम्हारा कोई नहीं है ना ? मैं तुम्हारे लिए प्रतिदिन उस पेड के पत्ते गिरा दिया करूंगा।''

धीरे-धीरे सब ठीक हो गया। बंदरिया ने बुलाकी से नाराज़ होना छोड़ दिया। बुलाकी आलसी और कामचोर नहीं रहा। बुढ़िया भी बुलाकी को खूब आशीर्वाद देती है क्योंकि वह रोज उस के लिए पत्ते गिराता है। उसे जंगली फल लाकर खिलाता है। बदले में बुढ़िया उस के लिए हलुआ बनाकर लाती है। हलुआ ! जो बुलाकी को बहुत पसंद है।

—डा. बानो सरताज़
आकाशवाणी सिविल लाइन्स के पीछे
चन्द्रपुर – 442 401 (एम. एस)

बड़बोला खजूर

एक जंगल में बरगद और खजूर के वृक्ष पड़ोसी थे। एक दिन खजूर के मन में जाने क्या आयी कि लगा डींगें हांकने। बरगद से बोला, "बरगद रे बरगद ! तुम्हारी कौन सी कल सीधी है ? कितने मोटे और भद्दे हो तुम ! लोभी भी नंबर एक के हो। थोड़े से तुम्हारा पेट नहीं भरता और संतुष्टि नहीं होती। कितना स्थान घेर रखा है तुम ने ! जब जी चाहता है अपनी दाढ़ी से धरती में जड़ें पकड लेते हो। इधर-उधर से लटकती तुम्हारी दाढ़ी, यात्रियों का मार्ग अवरुद्ध करती है, इस का तुम्हें ख्याल है ? या फिर देखने ही के लिए इतने बड़े हो......फल भी तुम्हारे कडबे-कसैले....और कितने छोटे....आखि़र तुम किस मर्ज़ की दवा हो ?

बरगद ने शालीनता से कहा, "मेरे विषय में तुम ने जो कुछ कहा, उसके लिए धन्यवाद ! स्वयं अपने बारे में तुम्हारा क्या विचार है,"

"बहुत अच्छा विचार है मोटे !" खजूर के वृक्ष ने गर्वोक्ति की।.......

"क्या तुम्हारी आँखों से स्पष्ट दिखाई नहीं देता ? तुम्हारे सामने जन्म लिया है पर तुम से ऊँचा हो गया हूँ। फिर तुम जितने बेडौल और बेढंगे, मैं उतना ही सुडौल और सुंदर। मेरा तना देखो ! कितना सुंदर है ! मेरे पत्ते कला का उत्कृष्ट नमूना हैं। मेरे फलों का तो जवाब नहीं। कितने मीठे.....कितने स्वादिष्ट !"

समीप ही खड़ा नीम का पेड. यह बातें सुन रहा था। उस से सहन नहीं हुआ। बोला, "बरगद दादा ! चुप क्यों हो ? खजूर के बड़े-बोलों का जवाब क्यों नहीं देते,"

बरगद कुछ कहता उस से पहले खजूर का वृक्ष गरज कर बोला, "चुप रह कडवे ! जब भी बोलेगा कड़वा ही बोलेगा। तेरा मेरा क्या मेल ? तू कड़वा मैं मीठा ! मैं तुझ से बात करना पसंद नहीं करता। हमारे मध्य बोलने के लिए तुझे किस ने कहा ?

बरगद अब भी चुप था। खजूर ने उसे छेड़ा, "तुम्हें क्यों चुप लग गई बरगद मियां ?"

बरगद ने गंभीरता के कहा, "मैं अपने मुंह मियां मिट्ठू बनाना पसंद नहीं करता।" "तुम चाहे न बोलो दादा, पर मैं तो बोलूंगा।" नीम के पेड़ ने बरगद का पक्ष लेते हुए कहा "मूर्ख खजूर ! बरगद से सबक सीख ! अभिमान किसी के लिए उचित नहीं। तुम स्वयं को बरगद से श्रेष्ठ ठहरा रहे हो। बरगद से जंगल की

शोभा है पेडो का सरताज है यह बरगद जैसे घने पेडो के कारण ही जगल जगल कहलाता है . तुम्हारे जैसे छतनार पेड़ जगल मे होते कितने है ? एक या दो . तुम रेगिस्तान में किसी के काम आओ तो आओ। यहां किसी काम के नहीं हो।'' खजूर तुनक कर बोला, "तुम क्यों बदगद की वकालत कर रहे हो ? क्या उन्हे बोलना नहीं आता ?''

"मैं ! वास्तविकता प्रकट कर रहा हूं। किसी की वकालत नहीं कर रहा।'' नीम के पेड़ ने हंस कर कहा। "मैं ! कड़वा हूं इसलिए ही मेरी बात तुम्हें कडवी नहीं लग रही हैं बल्कि सच्ची बात सब को कड़वी लगती है। हां, तो मैं ! कह रहा था कि बरगद के फलों की तुलना में तुम्हारे फल भले ही अधिक मीठे हों पर क्या थके-हारे यात्रियों की भूख इन से मिट सकती है ? नहीं मिट सकती, क्योंकि तुम्हारे फल बहुत ऊंचाई पर लगते हैं। तुम्हारा तना सुडौल सही पर क्या पक्षी इस पर घोंसला बना सकते हैं ? तुम्हारे कलात्मक पत्ते यात्री को छाया प्रदान कर सकते हैं ? नहीं ना ? फिर किस काम की यह मिठास ! यह कलात्मकता ? यह सौंदर्य ?''

खजूर का पेड़ थोड़ा का झुक गया जैसे नीम के पेड़ की बाती से प्रभावित हो गया हो। नीम ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "हर पेड़ के अपने गुण अथवा कमियां होती हैं। बड़ों का अनादर करना, उन का उपहास करना, अपने आप को छोटा सिद्ध करना है।''

"बस भी करो नीम भाई।'' बरगद ने नीम के पेड़ को रोकते हुए कहा। "खजूर को अधिक कुछ न कहो। बच्चा है वह अभी।''

"तुम ने देखा खजूर।'' नीम ने कहा, "तुम ने बरगद दादा को इतनी बाते सुना दीं। फिर भी वह तुम से नाराज़ नहीं हैं। हम पेड़ों का काम है वातावरण मे फैली हुई विषैली गैस को सेख कर शुद्ध वायु उपलब्ध कराना। तुम्हारी कडवी कसैली बातें को बरगद दादा विषैली वायु की भांति सहन कर गए। इसे कहते हैं बड़प्पन ! समझे !''

खजूर ने अपनी गलती स्वीकार कर ली। उस ने नीम के पेड़ को धन्यवाद दिया क्योंकि नीम ने ही उस का मार्गदर्शन किया था। उसे सही रास्ता बताया था। उस ने बरगद दादा से भी क्षमा मांग ली तथा भविष्य में बड़े बोल न बोलने का वचन दिया।

—डॉ. बानो सरताज
आकाशवाणी सिविल लाईन के पीछे,
चंदनपुर-4420401 (एम. एस)

जिज्ञासा

बंटी अपने कमरे में एकाग्रचित होकर अंकगणित के प्रश्न हल कर रहा था। टीचर ने होमटॉस्क के लिए पन्द्रह सवाल दे रखे थे। बंटी अभी चौथे सवाल पर भिडा ही था कि पापा की आवाज सुनाई पड़ी, "बंटी बेटे, जरा इधर तो आना।"

बंटी मन-ही-मन जल-भुन गया। जब भी वह पढ़ रहा होता है, पापा अक्सर उसे बुला लेते हैं और कभी सिगरेट लाने के लिए बाहर भेज देते हैं, तो कभी पान लाने के लिए। पापा तो अपने मित्रों के साथ बगलवाले कमरे मैं चाय पीते हुए ठहाके लगा रहे होते हैं, पर उन्हें क्या पता कि उससे पढ़ाई में कितना खलल पडता है। कभी शोर-शराबा झेलो, तो कभी पान-सिगरेट लाने के लिए दौडो। आखिर पापा समझते क्यों नहीं कि मुझे कितनी बाधा पहुंचाती है पढ़ाई में और उस किसी एक दिन की बात नहीं है, बल्कि प्रायः रोज की ही दिनचर्या है।

जब पापा ने दोबारा आवाज लगाई, तो बंटी सवाल को जहां-का-तहां छोड खडा हुआ और बगल के ड्राइंग रूम में पहुंचा। आज भी चार दोस्त बातें करते हुए चाय की चुस्कियां ले रहे थे। बंटी ने हाथ जोड़कर सबको नमस्ते किया और फिर पापा की ओर मुखातिब हुआ।

पापा ने जेब में हाथ डालकर बीस का एक नोट निकाला और "कैप्स्टन फिल्टर" का एक पैकेट लाने को कहा।

नोट लेकर बंटी बाहर निकला और गली में होकर तेज कदमों से पान की गुमटी की ओर बढ़ा। मन-ही-मन वह सोच रहा था कि आखिर लोग सिगरेट पीते क्यों हैं ? उसने टोटे पर यह वैज्ञानिक चेतावनी भी तो पढ़ी थी कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। फिर भी, जान-बूझकर पैसे और स्वास्थ्य की बर्बादी क्या अच्छी बात है ? इन बड़ों की बातें भी बड़ी विचित्र हुआ करती हैं। हमें तो तमाम बुराइयों से दूर ही रहने की सलाह देंगे और स्वयं में लिप्त दिखेंगे। अजब विरोधाभास है यह !

बंटी मुस्कुराता हुआ पान की गुमटी के सामने जा पहुंचा और सिगरेट का पैकेट खरीदकर तुरंत वापिस लौटने लगा। गली में पहुंचते ही उसने सिगरेट के टोटे को सूंघा ! वाह ! कितनी अच्छी खुशबू है ! तभी तो, मम्मी ने जब एक दिन पापा के सिगरेट पीने पर नाराजगी जाहिर की थी तो उन्होंने कहा था, "डार्लिंग,

सिगरेट ही तो है, जो मन-मस्तिष्क में ताजगी-ही-ताजगी भर देती है !''

बंटी का दोस्त सोनू भी तो कभी-कभार सिगरेट पीता है। उसने तो एक रोज बंटी से भी कहा था, "यार ! कश तो लेकर देखो ! मजा आ जायेगा।''

"छि: ! यह भी कोई पीने की चीज है ! पिलाना ही है, तो लस्सी पिलाओ।'' बंटी ने जवाब दिया था।

मगर सोनू ने मुंह बनाया था, जैसे उसने कोई स्तरहीन बात कर दी हो।

आज बंटी की इच्छा हो रही थी कि कम-से-कम एक बार सिगरेट पीकर देखना चाहिए। आखिर कैसा महसूस होता है इसे पीने से ? क्या सचमुच ताजगी लाती है यह ?

कुछ सोचते हुए ठिठक-ठिठककर बंटी फिर गुमटी के पास लौटा और छुट्टे पैसे निकाल एक सिगरेट और ले ली। उसे पैन्ट की जेब में छिपाकर वह घर की ओर दौड़ा।

ड्राइंग रूम में कदम रखते ही बंटी के दिल की धड़कन तेज हो गयी। पापा ने यदि पैसे की बाबत पूछा, तब ? मगर जब उन्होंने बगैर गिने ही छुट्टे पैसे जेब में रख लिये, तो उसने राहत की सांस ली।

उन्होंने महज इतना पूछा, "इतनी देर कहां लगा दी ?''

"दूकान में बड़ी भीड़ थी, पापा।'' कहता हुआ बंटी अपने कमरे की ओर बढ़ा।

ज्योंही वह फिर सवाल हल करने बैठा, सबसे पहले उसका ध्यान जेब की ओर गया। सिगरेट को टटोलकर वह आश्वस्त हुआ। सवाल हल करने में अब उसका मन रमा नहीं। बार-बार गलतियां हो जाती थीं। अंततः उसने पढ़ाई का कार्य अब सुबह पर टाल दिया और चुपचाप खाट पर लेट गया। झपकी आते ही वह सपने के संसार में विचरने लगा। उसने सिगरेट पी है और बादलों की तरह हवा में तैर रहा है। हर काम वह कितनी तेजी के साथ करने लगा है। कैसा जादुई करिश्मा है सिगरेट का ! सचमुच मजा आ गया।

तभी मम्मी ने उसे झंकझोरकर जगा दिया और भोजन करने के लिए कहा। बंटी जमुहाई लेता हुआ उठ बैठा।

खाना खाने के बाद उसने चुपके के चिन से दियासलाई लेकर जेब में रखी और टहलने के बहाने गली में निकल गया। पापा भी तो भोजन करने के बाद सिगरेट पीते हैं। आखिर मैं भी तो जानूं कि क्यों लोग इसके पीछे इतने दीवाने हो जाते हैं ?

एकान्त पाते ही उसने गिरेट को मुंह से लगाकर सुलगाते हुए जोरदार कश लिया। मगर धुआं अन्दर जाते ही उसे जोरों की खांसी आयी और खांसते-खांसते उसका बुरा हाल होने लगा। आंखों में पानी भर आया। छाती सहलाते हुए जब

उसने कुछ राहत की सास ली, तो फिर दूसरा कश लिया। सिगरेट पीते हुए, छल्ले बनाकर नाक-मुंह से धुआं उगलते हुए कितना मजा आता है।

अचानक पड़ोस के चाचाजी को बगल से गुजरते हुए देखकर बंटी हक्का-बक्का रह गया। डर के मारे उसका बुरा हाल था। हड़बड़ी में सिगरेट को छिपाने की असफल कोशिश में उसके हाथ की दो उंगलियां जल गयीं। फिर उसने घबराकर जलती हुई सिगरेट ही जेब में रख ली।

मगर ज्योंही चाचाजी मुस्कराते हुए आगे बढ़े, उसके मुंह से एक चीत्कार गूजी। पैन्ट की जेब बुरी तरह जल गयी थी, साथ ही जांघ के ऊपर की चमड़ी भी। सिसकारी भरते हुए उसने सिगरेट को बाहर निकाला, उसे पैर से रगड़कर बुझाया।

जलन से बंटी की परेशनी काफी बढ़ गयी थी। मगर उससे भी अधिक परेशान था वह पड़ोस के चाचाजी को लेकर। उन्होंने पापा से जरूर सिगरेट पीने की बात कही होगी। फिर पापा की लाल-पीली आंखों का वह कैसे सामना कर सकेगा ? पैन्ट जलने के सम्बन्ध में जब मम्मी पूछेंगी, तो वह क्या जवाब देगा ? अभी घर जाने पर मुंह से आती सिगरेट पीने की गंध को वह किस प्रकार छिपा सकेगा ?

बंटी ने भयाक्रान्त होकर मन-ही-मन सिसकते हुए घर में प्रवेश किया। अपने कमरे में जाकर वह चादर ओढ़ चुपचाप लेट गया। थोड़ी देर के बाद मम्मी आईं और उसे सोया जान, बिस्तर ठीक-ठाक कर अपने कमरे में चली गयीं। मगर बटी को तो काफी देर तक नींद ही नहीं आई। वह तो आनेवाली सुबह के प्रति चिन्तित था। पता नहीं, क्या बीते ? मार पड़ने के साथ ही कितनी बदनामी होगी उसकी ! सबकी नजरों में गिर जायेगा है। अब तक वह पढ़ाई में सदा प्रथम स्थान लाने वाला सीधा-सादा होनहार लड़का माना जाता था। मगर कल से सिगरेट पीनेवाले बुरे लड़कों में उसकी गिनती होगी। क्या वह बर्दाशत कर पायेगा ? अगले दिन सुबह बीती, शाम बीती, मगर किसी ने उस संबंध में कोई चर्चा नहीं की। पर उगलियों और जांघ के फफोले उसे उस बुरी लत की बुराई से आगाह कर रहे थे। लगता है, चाचाजी ने पापा को कुछ भी नहीं बताया। हो सकता है, चाचाजी ने भी उसके सिगरेट पीने पर गौर न किया हो। अगर उन्होंने कुछ कहा होता, तो पापा अब तक चुप थोड़े ही बैठे रहते ! पापा के गुस्सैल स्वभाव से भला कौन अपरिचित है।

आज पापा के दोस्त भी नहीं आये। बंटी होमटॉस्क बनाने में व्यस्त हो गया।

तभी पापा ने उसके कमरे में प्रवेश किया, "क्यों बटी, क्या हो रहा है ?"

"होमटॉस्क बना रहा हूं, पापा।" बंटी ने जवाब दिया।

पापा कुर्सी खींचकर बैठ गए। फिर स्कूल की पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछताछ करने लगे।

बटी जरा मेरी जेब से सिगरेट का पैकेट और माचिस लाना तो। पापा ने कहा।

बंटी ने दौड़कर उनके आदेश का पालन किया।

उन्होंने दो सिगरेटें बाहर निकाली और सुलगा कर एक स्वयं पीते हुए दूसरी बटी की ओर बढ़ा दी।

"यह क्या पापा ?'' बंटी को काटो तो खून नहीं !

'बेटे, अब तो तुम कुछ बड़े हो गए हो न ? बेटा जब बड़ा हो जाता है तो उसके साथ छोटे भाई के समान बर्ताव करना चाहिए,'' फिर उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'जब तुमने सिगरेट पीनी शुरू कर दी है, तो फिर लुकाव-छिपाव क्यों ? हम दोनों बाप-बेटे साथ-साथ बैठकर पिएंगे।''

"नहीं पापा, ऐसा न कहें। कल रात सिगरेट के प्रति मेरी जिज्ञासा ने मुझे गलत काम करने के लिए प्रेरित कर दिया था। मगर उंगली और जांघ की चमडी की जलन ने मुझे सबक दे दिया कि बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।'' बटी की आंखों में टप-टप आंसू टपक पड़े, "पापा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जीवन में फिर दोबारा सिगरेट पीने की बात मैं सोच भी नहीं सकता।''

"इसके लिए मूलत: मैं जिम्मेदार हूं, बेटे ! मैंने ही तुमसे बार-बार सिगरेट मगाकर इस नशे के प्रति तुम्हारे मन में जिज्ञासा पैदा की। मगर आज से मैं भी तुम्हारे साथ सिगरेट को कभी हाथ न लगाने की शपथ लेता हूं। अभिभावक की बुरी लत का असर तो बच्चों पर होगा ही।'' कहते हुए पापा ने सिगरेट को फर्श पर पैरों से मसल दिया।

"तो, मुझे आपने माफ कर दिया न, पापा ?''

बंटी उनके पैरों की ओर झुकने जा ही रहा था कि उन्होंने बांहों में भर लिया और पीठ थपथपाकर मुसकान बिखेरते हुए सिर हिलाने लगे।

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

द्वारा, महाप्रबन्धक, दूरसंचार जिला

पोस्ट बॉक्स 115, पटना-800001 (बिहार)

फिसलन

दिनेश के रहन-सहन, चाल-ढाल में अचानक हो रहे परिवर्तन से विद्यालय के सभी लोग दंग हैं। हॉस्टल के लड़के आजकल उसकी तरफ घूर-घूरकर देखने लगे हैं। सचमुच, तब और अब के दिनेश में कोई तुलना ही नहीं है।

निपट देहात से प्राइमरी स्कूल की शिक्षा लेकर दिनेश छठी कक्षा में प्रवेश के लिए इस शहर में आया था। उसके लटियाए धूल-धूसरित बालों, लंबी चुटिया और देहाती कपड़ों को देखकर स्कूल के नए सहपाठी उसे चिढ़ा-चिढ़ाकर मजा लेने लगे थे। मगर पता नहीं, वह शख्स किस मिट्टी का बना था कि लाख चिढ़ाने पर भी वह मंद-मंद मुस्काता रहता था। पहले कुछ दिनों तक सहमा-सहमा सा दिखा था जरूर, मगर जल्दी ही वह सबसे घुल-मिलकर बतियाने लगा था। उसके रहन-सहन में भी कोई खास बदलाव नहीं आया। आखिरकार संगी-साथी भी उसे अब उसी रूप में देखने के आदी हो गए।

विद्यालय की छमाही परीक्षा में जब देहाती-से दिखने वाले दिनेश ने तमाम विषयों में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए, तब सबकी आँखें फटी की फटी रह गईं। फिर तो अध्यापक, सहपाठी-सबकी आँखों का तारा बन गया वह।

छठी से नौंवी कक्षा तक दिनेश ने देहाती रहन-सहन, वेशभूषा और कक्षा में अव्वल आने का रिकार्ड कायम रखा। हॉस्टल से स्कूल और स्कूल से हॉस्टल-यही उसकी दिनचर्या थी। सभी घंटों को मनोयोग से अटेंड करना, नोट्स तैयार करना और रात में जमकर पढ़ाई करना ही उसकी ड्यूटी थी।

दसवीं कक्षा में पहुँचते ही दिनेश में एकाएक बदलाव नज़राने लगा। विद्यालय मे एक नई अध्यापिका की नियुक्ति हुई थी और वह दसवीं कक्षा में हिन्दी पढ़ाने आने लगी थीं। पूरे विद्यालय में मैडम इकलौती महिला थीं। पहले दिन आकर उन्होंने सभी छात्रों से एक-एक कर परिचय पूछा। जब दिनेश की बारी आई, तो उसकी अजीबोगरीब हुलिया देखकर वह अपने को रोक न सकी थीं और खिलखिलाकर हंस पड़ी थीं। दिनेश ने उस दिन पहली बार स्वयं को अपमानित महसूस किया था।

छुट्टी की घंटी बजते ही दिनेश सीधे सैलून में चला गया था और उसने चुटिया कटवाकर बेतरतीब बालों को व्यवस्थित करवाया था।

अगले माह जब घर से मनीआर्डर आया तो दिनेश ने अपने लिए नए कपडे बनवाए थे। अब वह दातून के बजाय टूथब्रश से दात साफ करने लगा था। साथियो की देखा-देखी उसने बाजार से शैंपू और टैलकम पाउडर भी खरीद लिया था। सभी लोग अब दिनेश की ओर अचरज से देखते। उसे खुद भी अपने इस बदलाव पर आश्चर्य हो रहा था।

सनी मैडम को इस बात की अब बखूबी जानकारी मिल चुकी थी कि दिनेश अपनी कक्षा का सबसे होनहार और मेधावी छात्र है। उसकी भोली-भाली सूरत भी उन्हे बड़ी प्यारी लगती। जब दिनेश कक्षा में पिछली सीट पर बैठा हुआ होता तो मैडम उसे आगे की बेंच पर बुला लेतीं। कक्षा में पूछे गए प्रश्नों का जब वह सतोषजनक उत्तर देता, तो वह उसे शाबासी देतीं। कभी पीठ थपथपा देतीं, तो कभी माथा सहला देतीं। दिनेश उस वक्त कुछ अजीब अनुभूति से भर उठता था।

सिर्फ वेशभूषा और रहन-सहन में ही नहीं, बल्कि और भी कई तरह के बदलाव दिनेश में आने लगे। अब वह पढ़ाई की अपेक्षा सनी मैडम में ही अधिक रुचि लेने लगा। कभी उसे सनी मैडम स्वर्ग की किसी अप्सरा-सी लगतीं, तो कभी किसी राजकुमारी-सी। उसका शर्मीलापन न जाने कहाँ उड़नछू हो गया था गाहे-बगाहे सनी मैडम की तरफ वह गौर से देखा करता । इस बात पर मैडम ने भी गौर किया था, पर मुक्त स्वभाव की होने के कारण वह हंस कर टालती रही थीं।

दिनेश मैडम के घर का पता भी जान चुका था। एक रोज वह शाम को जब रिक्शे से घर जाने लगीं, तो उसने पीछे से एक रिक्शे से उनका पीछा किया था और घर के पास पहुँचकर ही दम लिया था। फिर तो, जब भी उसके पास खाली समय होता, वह फटाफट मैडम के घर की ओर ही भागता और गली के पासवाली उनके कमरे की खिड़की से झांककर उन्हें देखा करता। कभी मैडम अपने कमरे मे पैर में पैर हिलाते हुए कोई किताब पढ़ रही होतीं, तो कभी नहा-धोकर बाल सुखा रही होतीं। अलग-अलग समय में वह मैडम को अलग-अलग रूपों मे पाता था।

अब विद्यालय में चपरासियों, टीचरों या सहपाठियों के बीच जहां भी मैडम की चर्चा हो रही होती, दिनेश तत्काल वहाँ जा पहुँचता और कान खड़े कर सब कुछ सुनने लगता। उसे यह जानकारी भी बखूबी मिल चुकी थी कि शादी के कुछ साल बाद मैडम ने अपने पति को तलाक दे दिया था और अब माँ-बाप के यहाँ ही रह रही थीं। दिनेश बार-बार चिंतातुर होकर सोचता कि मैडम ने फिर दूसरी शादी क्यों नहीं की ? आखिर क्यों छोड़ दिया उन्होंने अपने पति को ?

छमाही परीक्षा में जब दिनेश को बहुत ही कम अंक प्राप्त हुए, तो सभी अवाक्

रह गए। होनहार दिनेश से किसी को भी ऐसी आशा न थी।

सनी मैडम ने भी अंदाजा लगाया कि जिस बात को वह बहुत ही हल्के रूप मे ले रही थीं, वह तो अब गंभीर रूप धारण कर चुकी है। मन-ही-मन उन्होंने कुछ निश्चय किया और अगले रविवार की छुट्टी का दिन दिनेश के साथ ही गुजारने के लिए उसे अपने घर बुलाया।

उस रोज रात में दिनेश को नींद नहीं आई। पूरी रात वह मैडम के बारे मे ही सोचता रहा। उनकी खूबसूरती, उनकी मुस्कराहट, उनकी भाव-भंगिमाएँ बार-बार उसकी आँखों के सामने आती रहीं और वह उन्हीं में खोया रहा। फिर उसने मन-ही मन एक अंतिम फैसला भी कर लिया। अपनी कक्षा मे पढाई के मामले में लगातार पिछड़ते जाने का उसे जरा भी अफसोस नहीं हुआ।

अगले दिन सज-धजकर वह समय से पहले ही मैडम के घर जा पहुँचा। सनी मैडम ने उसे बड़े प्यार से अपने कमरे में बिठाया।

मैडम अभी कुछ कहने ही वालीं थीं कि दिनेश अधीरता से बोला, "मैडम, मैने अंतिम फैसला कर लिया है। घर-परिवार की मुझे जरा भी परवाह नहीं है। मुझे तो बस आपकी इजाजत चाहिए।"

"मेरी इजाजत ? कैसा फैसला ?" मैडम ने अचरज से पूछा

"मैं आपसे शादी करना चाहता हूँ, दिनेश ने कहा।

मैडम ने ठहाका लगाते हुए कहा, "जानते हो, मेरा बेटा तुमसे कहीं ढाई-तीन साल बड़ा ही होगा। मेरी उम्र तुम्हारी उम्र की दुगुनी से भी अधिक होगी। तुम्हें देखकर मैं यही सोचा करती थी कि मेरा बेटा भी अब इतना बड़ा हो गया होगा। मैं तो तुम्हें अपने पुत्र की तरह ही प्यार करती हूँ; और कोई बेटा अपनी माँ से शादी करने की बात कभी सोचता है ?

दिनेश को काटो तो खून नहीं। यह क्या किया उसने ? छि: माँ के साथ शादी का प्रस्ताव !

हाथ जोड़ते हुए उसने बस इतना कहा, "मैडम, मैंने आपको पहचानने में भूल की। मैं बहुत ही शर्मिंदा हूँ। क्षमा करो, माँ ! वाकई भटक गया था मैं।"

"यह उम्र ही भटकाव की है, बेटे !" सनी मैडम ने समझाया, "अभी तुम्हारी उम्र न तो शादी की है और न ही उस विषय में ऊल-जलूल सोचने की। अभी तो तुम्हारा एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए—कड़ी मेहनत से अधिक-से-अधिक अंक प्राप्त करने का और उत्तरोत्तर अपनी प्रतिभा को विकसित करने का। आत्मनिर्भर बन जाओ, तब सोचना शादी की बात। समझे ?"

दिनेश को मैडम से आज बहुत बड़ी सीख मिल गई थी। जब वह हॉस्टिल वापस लौटने की इजाजत लेकर आंगन से होकर गुजरने लगा तो हड़बड़ी में नल

के पास फिसलते-फिसलते बचा सनी मैडम ने पास आकर समझाया, देखो बेटे, जीवन में कदम-कदम पर फिसलन-ही-फिसलन है। इसलिए हर व्यक्ति को संभल-संभलकर कदम बढ़ाना चाहिए।''

दिनेश को लगा, सनी मैडम ने आज उसे जीवन की बहुत बड़ी फिसलन से उबार लिया, वरना वह फिसलते-फिसलते न जाने कहां से कहां चला जाता।

—भगवती प्रसाद द्विवेदी
द्वारा, महाप्रबन्धक, दूरसंचार जिला,
पोस्ट बॉक्स 115,
पटना-800001 (बिहार)

उड़नखटोले पर बौना

सोनल गढ़ रियासत में राजा गुलाब दास राज्य करते थे। वह प्रजा के सुख दुख का बहुत ध्यान रखते थे। प्रजा भी उन्हें बहुत प्यार करती थी।

राजा के दो पुत्र थे। बड़े राजकुमार का नाम श्याम था। छोटे राजकुमार का नाम राम था। दोनों शक्ल सूरत में एक से थे। स्वभाव दोनों के अलग-अलग थे। श्याम बहुत खर्चीला था। राम बड़ा तेज और कम से कम खर्च करने वाला था।

श्याम प्रतिदिन राज कोष से सौ मोहरें लेता था। उन्हें यार दोस्तों को खिला देता या कोई चीज अपने लिए खरीद लाता। यही उसका रोज का नियम था।

राजा काफी समय तक उसका यह काम देखते रहे। उसे हर प्रकार से समझाया पर उस पर कोई असर नहीं पड़ा। राजा उसका इस आदत से हर समय चिंतित रहते थे।

एकदिन महामंत्री ने राजा से उदासी का कारण पूछा। उन्होंने बताया कि वह श्याम की बात से बहुत परेशान है। उसकी इस आदत से एक दिन राजकोष खाली हो जाएगा। हमें क्या हक है कि राजकोष का पैसा प्रजा पर खर्च न करके अपने शौक पर खर्च करें। राजा का बेटा सौ मोहरें कैसे खर्च कर सकता है।

महामंत्री ने कहा, "महाराज इसमें चिंता करने की क्या बात है ? आप कोषाध्यक्ष को मना कर दें। वह राजकुमार श्याम को पैसा न दे।''

राजा ने महामंत्री की सलाह से काम किया। सलाह से घर में खूब कोहराम मचा। श्याम ने खाना पीना त्याग दिया। तंग आकर राजा ने कोषाध्यक्ष से राजकुमार को फिर मोहरें दिलवानी शुरू कर दीं।

कुछ दिनों तक सोच विचार के बाद राजा ने महामंत्री का बुलाया। उनसे कहा, "राजकुमार श्याम को सौ मोहरें दे देना और हमारी तरफ से कह देना कि वह अब घर न आएं। उन्हें देश निकाला दे दिया गया है। यह जहां चाहे चले जाएं।''

अगले दिन सुबह महामंत्री ने श्याम को सौ मोहरें दे दीं। राजा का फरमान भी सुना दिया। राजकुमार अपना घोड़ा लेकर चला गया। उसमें विश्वास था, चलो

और कहीं भाग्य आजमाएगे।

श्याम जंगल में पहुंचा। एक साधु अपनी कुटिया में बैठे हुए थे। श्याम ने उन्हे प्रणाम किया। अपनी सारी कहानी सुनाई। साधु महाराज ने कहा, 'मेरे पास और तो कुछ है नहीं। यह छोटासा बक्सा है चाहे तो यह ले लो।'' श्याम ने बक्सा ले लिया और आगे चल दिया। थोड़ी दूर चलने पर श्याम ने सोचा। इसे खोल कर देखू, इसमें क्या है। बेकार बोझा क्यों ढोता फिरूं ?

श्याम घोड़े से उतरा। उसने वह बक्सा खोला। देखा रूई की तह पर एक बालिश्त का आदमी लेटा है। उसने उसे बाहर निकाला। बाहर की हवा लगते ही वह बोना बन गया। उसे वहीं छोड़ कर श्याम घोड़े की ओर बढ़ा।

बौने ने कहा, "राजकुमार मुझे आपने निकाला है। अब मैं आपके साथ ही चलूंगा। शायद आपके कुछ काम आ सकूं।''

श्याम ने कहा, "भले आदमी, मैं तो खुद ही बेघर हूं। न रहने का ठिकाना है, न खाने का।'' बौना नहीं माना श्याम के मजबूर होकर उसे अपने साथ घोड़े पर बिठा लिया।

दोपहर हो गई थी। श्याम को भूख और प्यास सता रही थी। उसने बौने से कहा, "भाई मुझे तो बहुत भूख और प्यास लगी है। यहां खाने की तो बात ही क्या, पानी भी कहीं दिखाई नहीं देता।''

बौने ने बताया कि थोड़ी दूर पर मीठे पानी का चश्मा है। फलों से लदे पेड हैं। जल्दी चलो भूख व प्यास वहीं शांत हो जाएगी।

राजकुमार श्याम ने घोड़ा दौड़ाया। कुछ मिनटों में ही वे उस जगह पहुच गए। पानी और फलों के साथ-साथ घोड़े के लिए हरी हरी घास भी थी। राजकुमार ने घोड़े को घास चरने के लिए छोड़ दिया। बौने ने और राजकुमार ने पेट भर कर फल खाए और पानी पिया। एक पेड़ की छाया में राजकुमार लेट गया। कुछ देर बाद ठंडी हवा चल पड़ी हवा लगते ही राजकुमार को नींद आ गई।

राजकुमार सो कर उठा। देखा, बौना बैठा है। घोड़ा भी पेट भरने के बाद आराम कर रहा है। राजकुमार ने चश्मे पर जाकर हाथ मुंह धोया और पानी पीकर लौट आया।

बौने ने कहा, "राजकुमार पूर्व दिशा को चलो। जल्दी ही जंगल पार हो जाए। रात को यहां जंगली जानवरों का डर है। कोई नगर मिलते ही उसमें डेरा डाल देगे।''

राजकुमार ने घोड़े का तेज दौड़ा था। दो-तीन घंटे में उन्होंने जंगल पार कर लिया। एक नगर आया। लोगों से नगर का नाम पूछा। पता चला कि हम चन्दन नगर में पहुंच गए हैं। यहां राजा चन्द्रसेन राज्य करते हैं। वह लोगों से पूछताछ करके एक धर्मशाला में गए। वहां एक कमरा ले लिया। राजकुमार ने बौने को एक

मोहर दी उसे दोनो के लिए भाजन और घोडे के लिए घास दाना लाने के लिए भेज दिया। वह सामान लेकर आया तो अधेरा होनेवाला था।

राजकुमार ने पूछा, "रोशनी के लिए कुछ लाए हो ?" उसने बताया पैसे ही खतम हो गए।"

राजकुमार ने एक मोहर और दी। बौने से कहा मोमबत्ती ले आओ, अगर मोमबत्ती न मिले तो सरसों का तेल और दिया, रूई ले आना।"

वह सारे बाजार में घूम आया, पर कहीं मोमबत्ती और सरसों का तेल नहीं मिला। एक दुकानदार से तेल व मोमबत्ती न मिलने का कारण पूछा। उसने बताया, "यहां बत्ती जलाई जाती। अभी चन्दा राजकुमारी महल की छत पर आएगी तो उनके मणि मुक्ता से सारे शहर में रोशनी हो जाएगी। तभी सारा शहर खाना बनाएगा और खाएगा। वह लौट आया और राजकुमार को सारी बात बता दी।

राजकुमार सोचता रहा। ऐसी कैसी राजकुमारी है। जिससे सारे नगर मे रोशनी हो जाती है। वह सोच ही रहा था कि सारे नगर में रोशनी हो गई। राजकुमार और बौने ने भोजन किया। वह छत पर जाकर देखने लगा। राजकुमारी को देख राजकुमार उस पर मुग्ध हो गया। अब उससे मिलने का उपाय सोचने लगा। उसने बौने से कहा, "मैं राजकुमारी से मिलना चाहता हूं। तुम बता सकते हो कैसे मिला जाए।

बौने ने कहा, "राजकुमार जब उसकी दासियां सो जाएंगी तब मैं उससे मिलवा दूगा।"

आधी रात के समय सारा नगर सोया हुआ था। राजकुमारी की दासियां भी सो गई थीं। तब बौने ने कहा, "चलो राजकुमार मैं तुम्हें राजकुमारी से मिलवा दूं।" वह बौने के साथ चल दिया।

बौने ने कहा, "तुम मेरे कंधे पर बैठ जाओ।"

राजकुमार बैठ गया। बौना धीरे-धीरे लम्बा होने लगा। राजकुमार डर गया और बेहोश हो गया। बौना उसे धर्मशाला में ले आया। पानी छिड़ककर उसे होश मे लाया। अगले रोज उसने कहा, "चलो, राजकुमार चंदा राजकुमारी से मिला लाऊं। राजकुमार कल से डरा हुआ था। इसलिए मना कर दिया।

बौने ने राजकुमार से कहा, "तुम्हें डरना नहीं चाहिए। फिर भी जब डर लगे तो मुझे आवाज लगा देना।"

राजकुमार ने कहा, "मुझे तुम्हारा नाम भी पता नहीं है।"

बौने ने कहा, "मेरी सरकार मेरा नाम खड़बड़ शाह है।"

राजकुमार चंदा राजकुमारी के पास जाने को खड़बड़शाह के कन्धों पर बैठ गया। राजकुमार को जब-जब डर लगा तो उसने धीरे से बौने का नाम बोला।

खिलौने

सुनील शुरू से ही नटखट है। वह हर चीज को तोड़-फो
तब वह एक साल का था। हम उसे बिठाकर ढेर सारे खिलौ
थे। वह किसी चिड़िया की टांग तोड़ देता। किसी की चोंच गायब
की नाक खा जाता और उसी की आंखों को नाखूनों से फोड़ देत
और बबुआ को अलग कर देता। झुनझुने को जमीन पर दे
ककड़ी निकलतीं। वह उन्हें अपने मुंह के हवाले कर देता और
मुह को चलाने लगता।

कोई खिलौना हो, भले ही वह कितना ही अच्छा हो, मजबू
हो, चाहे लकड़ी का हो या प्लास्टिक का, सुनील उससे
तक खेलता रहता, तभी तक वह खिलौना सही सलामत दिख
शक्ल कई टुकडों में बदली दिखाई देती। यदि कोई खिलौना
रह भी जाता तो वह उससे फिर नहीं खेलता।

एक दिन सुनील के पापा उसके लिए चार पांच खिलौने ला
मे पैकेट देकर बोले 'देखो, बेटे, मै तुम्हारे लिए कितने अच्छे
हू। सुनील बहुत खुश हुआ।

सुनील के पापा जी ने पैकेट सुनील के हाथ से ले लिया।
पहले चाबी का बबुआ निकाला उसमें चाबी भरकर छोड़ दिया।
यह बबुआ तुम्हारी तरह चलता है।'' सुनील ने उसे चलते
हुआ। उसने झुंझला कर बबुआ पकड़ लिया। फिर उसका टोपा
लगा। मैंने उसे बहला फुसला कर बबुए की जान बचाई।

उससे कहा, "देखो बेटा, यह दूसरा खिलौना है। इसे खं
टीन की है।'' उसे बजाकर दिखाया, "इसे देख, यह झुनझुना
सितार है। यह गेंद है।'' इन सब में सुनील को खंजरी बहुत
दिन खंजरी से खेलता रहा। थक कर, दूध पीकर सो गया तो
सलामंत है। मैंने उसे उठाकर कील पर टांग दिया।

दूसरे दिन सुनील को खंजरी दी तो उसने उसे उठा कर
पी सब्र नहीं आया तो उसे उठा लिया उसे ाडना शुरू कर

आइएगा। अच्छा फिर मिलेंगे। यह कहकर बौना चला गया।

राजा श्याम और रानी चंदा सबसे विदा लेकर चंदनगढ़ चले गए। श्याम ने पूरी तरह राजा की बागडोर संभाल ली। एक दिन श्याम ने अपने दोस्त बौने को याद किया। एक बाल जलाया। देखा, कुछ ही देर में बौना उड़नखटोले पर उड़ा चला आ रहा है।

—श्रीमतति रतन शर्मा
द्वारा श्री रत्नलाल शर्मा
डी–201, पुंडरीक बिहार, पीतम पुरा
दिल्ली – 110034

ने चीख पुकार मचानी शुरू की मैंने उसको बहुत समझाया कि अभी तुम्हारे पापा आ जाएगे तो हम तुम्हे बाजार से दूसरा गुब्बारा ला देंगे। यह महाशय कहां सुनने वाले थे। वह तो बराबर अपना बिगुल बजा रहे थे। इसी बीच उसके पापा आ गए। उन्होंने रोने का कारण पूछा, उसको समझाया, गोद में उठाया, पर उसने एक न सुनी। वह उसे लेकर उसी समय बाजार गए। एक गुब्बारा लेकर दिया। तभी सुनील महाराज खुश हुए।

इनके खिलौने तोड़ने से हम लोग तंग आ गए। सोचने लगे, क्या करें। हमनें सुनील को दो चार फोल्डिंग खिलौना दिये। बच्चे उन्हें खोल लेते है और फिर अपने आप उन्हें जोड़ देते हैं। सो हमनें वैसा ही किया। बस फिर क्या था, सुनील पूरी तरह प्रसन्न था। सारा दिन अपने आप उन्हें खोलता रहता था। खुद जोड़ता रहता था। दो दिन तो सिरदर्दी अवश्य रही, उन खिलौनों को समझाने में। फिर सब दिन की मुसीबत टल गई और उसकी बढ़ती हुई जिद से छुटकारा मिल गया।

अब मैं भी उसे रोकती टोकती नहीं। जब मैं उसे तोड़ फोड़ से हटाना चाहती हूं तो उसे बहला फुसला कर दूसरे खेल में लगा देती हूं। उसे कागज के खिलौने बना-बना कर भी देती हूं। अब वह खुश रहता है। खुद भी खिलौनी जैसी कोई चीज बना लेता है।

—श्रीमती रतन शर्मा
डी-201, पुंडरीक बिहार, पीतम पुरा,
दिल्ली – 110034

परिश्रम का फल

गांव में ईमानदारी और कठिन परिश्रम के लिए सोमदत्त की ख्याति अच्छी थी। वह बहुत तड़के जाग जाता और सारे घर के कार्यों से निपट कर अपने दिन के काम पर चला जाता। पत्नी उसके लिए खाना तैयार करती। कुछ उसे कलेवा कराकर शेष पोटली बांध कर दिन के लिए रख देती। पोटली उसके हाथ में थमा कर मुस्करा कर उसे विदा करती।

सोमदत्त के दो बच्चे थे। दूध के लिए घर पर भैंस बंधी थी। पत्नी घर के ही कार्य में थक जाती थी, पति को विदा करने के बाद वह बच्चों को स्कूल को भेजती, तब खुद भोजन कर पाती थी, यही क्रम नित्य चलता रहता था।

वह घर से सुबह ही निकल जाता और देर रात को ही घर लौट पाता था। वह दिन भर मेहनत मजदूरी करके शाम को अच्छी रकम बना लाता था। जब वह शाम को लौट कर कमाई का हिसाब लगाता तब पत्नी बहुत खुश होती थी। घर पर थोड़ी बहुत खेती का कार्य भी होता था किन्तु उससे उनके परिवार का गुजारा नहीं हो पाता था। इसी लिए उसे कमाई के लिए घर से बाहर भागना पड़ता था। वह अपनी पत्नी तथा बच्चों से कहा करता था कि खूब मेहनत करो, अच्छा पहनो और अच्छा खाओ। उसके दोनों बेटे बहुत होशियार थे। अब वे भी काफी बड़े हो गए थे। वे पिता की मेहनत को देखते हुए खुद भी खूब मेहनत करते थे।

सोमदत्त अपनी कमाई के बल पर ही परिवार के खाने और पहनने पर कोई कसर नहीं छोड़ता था। पत्नी चाहती थी कि खाने, पीने, पहनने पर कम ही खर्च किया जाए तो अच्छा है; और अधिक से अधिक पैसा भविष्य के लिए बचाया जाए। इसी बात पर कभी-कभी दोनों मियां-बीबी में कहा सुनी हो जाया करती थी। पत्नी धीरे-धीरे पत्नी से नाराज रहने लगी। वह पत्नी से कहा करता था कि जब हम अच्छा खायेंगे तभी स्वस्थ रहेगे और तभी अधिक परिश्रम से पैसा भी कमाएंगे।

सोमदत्त स्वयं भी तगड़ी खुराक खाता था। वह एक समय में बड़ी कटोरी भर कर सब्जी और सोलह बड़ी-बड़ी मोटी रोटियां सामान्य खुराक के तौर पर लिया करता था। रोटियां घी में सनी हुई रहती थीं। साथ में ही या मट्ठा मक्खन भी नित्य लिया करता था। पत्नी व दोनों पुत्रों को भी ऐसा ही खाने को कहता तथा दिया करता था, परन्तु जितनी खुराक वह एक समय में लिया करता था उतनी खुराक

तीनों मा बेटो की दो तीन दिन की हुआ करती थी। परन्तु पत्नी की नाराजगी कि वह तनिक भी परवाह नहीं करता था क्योंकि उसे पता था कि वह स्वयं कठिन परिश्रम से कमाता है, खुद भी खाता है और अपने परिवार का भरण पोषण भी करता है।

उसके दोनों बेटे देखते हैं कि उनके पिता बहुत मेहनत करते हैं। सुबह से शाम तक कोल्हू के बैल जैसे जुटे रहते हैं और इस सबके बावजूद वह हमेशा खुश रहते हैं। उन्हें अपने पिता पर गर्व था। वे भी खूब परिश्रमी थे किन्तु अधिक समय पढाई लिखाई में व्यतीत होने के कारण वे पिता के कठिन परिश्रम में हाथ नहीं बटा पाते थे।

वह अब धीरे-धीरे वृद्ध हो चला था। अब पहले जैसा कठिन परिश्रम नहीं कर पाता था। लेकिन उसकी खुराक अब भी तनिक भी कम नहीं हुई इसलिए उसकी पत्नी अब और अधिक परेशान थी। उसे सोलह रोटियों और एवं बड़ी कटोरी सब्जी का खर्चा खलने लगा।

एक बार वह बहुत बीमार पड़ गया। बच्चों ने यद्यपि बहुत दवा दारू की लेकिन वे उसे बचा नहीं पाये। उसके मरने पर पत्नी को यद्यपि काफी दु.ख हुआ लेकिन उसकी तगड़ी खुराक पर होनेवाले खर्चे से परेशानी के कारण वह खुश भी थी कि चलो जितनी खुराक बुड्ढा खाता था वह तो बच गयी। लेकिन दोनों बेटो को बहुत दु:ख हुआ। वे खूब रोए पिता के मरने पर। दोनों बेटों ने खाना पीना तक छोड़ दिया तब उनकी मां उनसे बोली, 'बेटा तुम्हारे पिता को तो मरना ही था। कोई बात नहीं। दो साल बाद नहीं मरे आज मर गए। हां सोलह रोटियां तथा बडी कटोरी का बहुत खर्चा था ही। सो यह तो बच गया।

अब धीरे-धीरे दिन बीतने लगे। कुछ दिनों तक तो काम ठीक ही चला क्योकि सोमदत्त कमा कर रख ही गया था। अब धीरे-धीरे घर में राशन के लाले पडने लगे। रखी कमाई कब तक चलती। अब मां अपने बेटों से कहने लगी, "बेटो! तुम अब स्कूल में पढने मत जाओ। मेहनत मजदूरी कर जैसे-तैसे शाम का खाना जुटाओ...।" तब उसके दोनों बेटों ने कहा, "मां! तुम तो कहती थी कि सोलह रोटियां ये बच गई और भर कटोरी सब्जी..। अब तो एक शाम को खाना तक मयस्सर नहीं हो पाता है।" अब पता चला उनकी मां को सोलह रोटियों तथा एक बडी कटोरी सब्जी का राग।

—रतन सिंह किरमोलिया

ग्राम./पो. अणा (अलमोड़ा), पिन 263641

गलती का प्रायश्चित

कूर्मांचल देश में क्षिप्ती नामक एक राज्य था। प्रजा की सुख शाति के लिए यह राज्य प्रसिद्ध था। वहां वीर भद्र नामक राजा राज्य करता था। राजा वीरभद्र अपने न्याय एवं परोपकार के लिए काफी ख्याति अर्जित कर चुके थे। प्रजा का दु.ख दर्द सुनने के लिए वह स्वयं छद्म वेश में राज्य का भ्रमण किया करता था।

सुखानन्द राजा वीर भद्र का प्रधान आमात्य नियुक्त था। राजा जब भी राज्य भ्रमण पर निकलता था सुखानन्द को सदा साथ लिए चलता था और मुख्य सलाहकार के रूप में राजा उससे परामर्श लिया करता था। सुखानन्द लोभी तथा ईर्ष्यालु किस्म का व्यक्ति था। लेकिन राजा के सम्मुख शान्त बना रहता था।

जब सुखानन्द राजा के साथ भ्रमण पर जाता था तो सुख एवं ऐश्वर्य भोग रहे लोगों से वह बहुत चिढ़ा करता था। एक बार की बात हैं। राजा राज्य के भ्रमण पर निकला। सुखानन्द साथ में था। राजा को सबसे पहले लक्खू लोहार मिला वह अपनी झोपड़ी के पास बैठा पंखा चला रहा था और हुक्का गुड-गुड़ा रहा था और पास में लोहे के तरह-तरह के औजार बने बिखरे पड़े थे। झोंपड़ी के अन्दर अनाज के बोरे भरे पड़े थे। राजा ने लक्खू से उसके हाल पूछे तो लक्खू हंसते हुए बोला, "सरकार आपकी दुआ है। पूरे परिवार सहित मेहनत करता हूं। दो रोटी का गुजारा हो जाता है।" बीच में ही सुखानन्द ने लक्खू से पूछा, "क्यों भई ! लगता है, अच्छी कमाई कर लेते हो।" इस पर लक्खू ने कहा, "छोटे सरकार ! सुबह से सायं तक आग और गरम लोहे से खेलता हूं। पसीना बहाता हूं, बस कड़ी मेहनत मे ही आनन्द आता है। कमाई भी आप सरकार की दुआ से अच्छी हो जाती है। साल भर का खर्चा भी निकल जाता है जो बचता है उसे बेच कर भविष्य के लिए भी जोड़ लेता हूं। बस खुश हूं। आप दोनों की दया से।" लक्खू की इस बात को सुनकर सुखानन्द ने राजा के कान में कुछ कहा और राजा को लेकर आगे बढ गया।

सुखानन्द को लोहार के ये ठाठ-बाट फूटी आंख भी नहीं सुहाते थे क्योंकि लक्खू लोहार उसे नज़राने के तौर पर कुछ भी नहीं देता था। वह मौके की तलाश मे तो था ही और आज मौका मिल ही गया उसे।

आगे रास्ते में चलते-चलते राजा भीखू चमार की झोंपड़ी में पहुंचा। भीखू से

उसके हाल चाल पूछे राजा ने तो भीखू बोला, 'माई बाप दिन भर मर मिट कर आप की दया से परिवार पाल लेता हूं।'' इस पर सुखानन्द बोला, "लगता है बहुत अच्छी कमाई कर लेते हो भीखू।'' भीखू बोला, "भाई बस सब आपका आशीर्वाद है। खा पीकर थोड़ा बहुत भविष्य के लिए भी बचाना ही पड़ता है। फिर क्या था सुखानन्द ने राजा के कान में कुछ कहा और दोनों आगे बढ़ गए।

सुखानन्द को आज मौका मिला। उसने राजा को अपनी करवट में ले ही लिया और उसे ऐसी पट्टी पढ़ाई कि राजा मंत्र-मुग्ध सा हो गया। बस क्या था अगले ही दिन लक्खू लौहार और भीखू चमार पर कर लगा दिया गया।

कर की बात सुनकर लक्खू और भीखू राजा के पास महल में पहुंचे। सुखानन्द ने उन दोनों को राजा से मिलने ही नहीं दिया। द्वारपालों को ऐसी पट्टी पढ़ा दी कि बेचारा लक्खू और भीखू अपना छोटा मुंह लेकर वापस लौटने को मजबूर हुए। कई दिनों तक न लक्खू लोहर की भट्टी जली न भीखू चमार की कठौती गीली हुई जितनी रही सही कमाई थी राजा के दूत कर के रूप में वसूल कर ले गये। अब दोनों के लिए भूखे मरने की नौबत आ गई राजा के दूतों के डर से लोगों ने लक्खू और भीखू के पास जाना तक छोड दिया।

अन्त में सब तरह से थक हार कर लक्खू और भीखू ने निश्चय किया कि ग्राम देवता के मन्दिर में अपनी पुकार कही जाए क्योंकि ग्राम देवता भी राजा की तरह न्याय के लिए प्रसिद्ध था। अगली सुबह दोनों नहा धोकर मन्दिर गए और खूब रो-रो कर दोनों ने अपनी विपदा ग्राम देवता से कह डाली।

कुछ ही महिने बीते थे कि राजा बीमार पड़ गया काफी दवा दारु करने के बाद जब राजा की तबीयत कुछ ठीक हो गई तो एक रात की बात है राजा जैसे ही सोया था राजा की पलकें लगते ही सपना आया—कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवता साधु वेश में उसके पास आकर खड़े हो गए। राजा वीरभद्र तीनों देवों के दर्शन पाकर अपने को धन्य समझने लगता है और उनके चरण छूने को जैसे ही ब्रह्मा की ओर झुकता है। इतने में ब्रह्मा उसे रोक कर कहते हैं—"राजन तुमने एक महान् गलती की है। उस भ्रष्ट आचरणवाले मंत्री की बातों में आकर तुमने महेनतकश लक्खू और भीखू पर असहाय कर लगा दिया और वे राज्य छोड़ने को तैयार हैं। बोलो तुम्हें क्या सजा दी जाए ?''

इस पर राजा रोने लगा और उनके चरणों में गिर गया और कहने लगा, 'हे देव मुझे क्षमा कर दें। मुझे यह पता नहीं है कि स्थिति इतनी विकट हो चुकी है। मुझसे तो आमात्य ने हल्का फुल्का कर लगानेवाली बात कही थी। वे दोनों राज्य छोड़ने को मजबूर हो गए हैं। ऐसा तो मुझे पता ही नहीं है।'' इस पर ब्रह्मा बोले, "उन्हें तो तुम तक पहुंचने ही नहीं दिया गया। जब वे सब तरफ से थकहार गए तब वे अपने ग्राम देवता से अपनी फरियाद करने गए।'' इस पर राजा गिडगिडाया

'हे देव। मैं उनका सारा कर का पैसा वापस करा देता हूं और राजकोष से क्षतिपूर्ति भी देता हूँ। उस भ्रष्ट आमात्य को उसके पद से हटा देता हूं जिसने मुझे धोखे में रखा। आप मुझे क्षमा कर दें।''

राजा की बात सुनकर ब्रह्मा बोले, "राजन ! गलती की सजा तो मिलनी ही है। हा अपनी मृत्यु के बाद तुम इस मृत्युलोक में उल्लू बनकर आओगे क्योंकि अपनी स्वस्थ आंखों के बाद भी अपने मामले को देखा तक नहीं।'' इस पर राजा जोर-जोर से रोने लगा। हे देव उल्लू तो आंख से कतई देखता ही नहीं फिर आप ऐसा जन्म मुझे क्यों देते हैं। नींद मे राजा जोर-जोर से रोने लगता है। राजा के चीखने-चिल्लाने से रानियां जाग उठीं। राजा को झकझोर कर उठाया तो राजा की आखों से आंसू निकल रहे थे। वह बुरी तरह कांप रहा था। महारानी ने पूछा, "राजन ! बताओ क्या बात है ? आप ऐसे क्यों रो रहे हैं और क्यों कांप रहे हैं'' काफी देर बाद राजा भली-भांति होश में आया तब उसने सपने की बात रानी को बताई। इस पर रानी ने राजा को खूब डांट पिलाई और सुझाव दिया कि तुरन्त लक्खू और भीखू पर लगाए कर के आदेश वापस कर उनकी भरपाई करें। उस प्रधान आमात्य को जेल में बन्द करें और राज्य का दायित्व बड़े राजकुमार को सौप कर आप तपस्या के लिए चल दें ताकि अगले जनम में उल्लू बनने के शाप से मुक्त हो जाओ।

राजा ने महारानी की बात मान ली और तुरन्त लक्खू और भीखू का कर ससम्मान वापस कर दिया और उनसे क्षमा मांगी। सुखानन्द आमात्य को आजन्म कारावास की सजा सुनादी। बड़े राजकुमार को राज्य का कार्य दायित्व सौंप कर स्वयं साधु वेश धारणकर राजा रातों रात वन को निकल गया।

घनघोर वन प्रान्त में राजा ने घोर तपस्या शुरू कर दी। इस तरह तपस्या करते-करते राजा को कई वर्ष व्यतीत हो गए। इस बीच कई बार राजा अपनी तपस्या से विचलित भी होते-होते बचे।

अन्त में एक दिन जब राजा घनघोर तपस्या में लीन थे तब ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवजी तीनों देवता सामने प्रकट हो गए। सबसे पहले ब्रह्मा बोले, "राजन ! हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हैं। कहो क्या वरदान दें आपको ?'' इस पर राजा ने कहा, 'हे प्रभू ! मैंने अपनी गलती का प्रायश्चित कर लिया है; और उल्लू बनने का जो श्राप आपने दिया था उसे वापस ले लिया जाए।'' इस पर ब्रह्मा बोले, "राजन ! शाप तो शाप है उसे वापस तो नहीं लिया जा सकता हां उसमें कुछ सुधार किया जा सकता है।'' राजा ने ब्रह्मा के पांव पकड़ लिए। ब्रह्मा बोले, "राजन ! उल्लू तो आपको बनना ही पड़ेगा हां उल्लू तो एक दम अंधा होता है परन्तु आप जब उल्लू बनेंगे तो आप रात में देख सकेंगे।'' इतना कहकर ब्रह्मा स्वतः दूर हट गए। राजा के पास अब विष्णु रह गए। उसने विष्णु के पांव पकड़ लिए। राजा पर

द्रवित होकर विष्णु बोले, "राजन . शाप मे उल्लू तो आप को बनना ही है परन्तु मैं इतना कर सकता हूं कि मेरी पत्नी लक्ष्मी जी आपको अपना वाहन स्वीकार कर लेंगी जिससे उनका सानिध्य आपको बराबर मिल सकेगा।" इतना कह कर विष्णु भी दूर हट गए। राजा के पास शिव जी रह गए। राजा ने शिवजी के चरण पकड़ लिए। राजा पर द्रवित होकर शिवजी बोले, हे राजन ! जो शाप और वरदान तुम्हें दे दिया गया है वह तो तुम्हें भोगना ही पड़ेगा। यही सत्य है। हां मैं तुम्हें वरदान देता हूं कि उल्लू बनने के बाद जब तुम मृत्यु को प्राप्त होंगे तो पुनर्जन्म के बाद तुम प्रधानमंत्री बनोगे और मृत्युलोक में छाए रहोगे।" इतना कहते ही तीनो देव अन्तर्ध्यान हो गए।

—रतन सिंह किरमोलिया
ग्राम/पो. अणां
जिला : अल्मोड़ा
पिन 263641

हवा से बात

एक था श्यामसिंह। उस के पास एक घोड़ा था। वह घोड़ा उसके बहुत काम का था। वह उसे बहुत प्यार करता था। एक दिन एक चोर आया और घोड़ा चुरा कर ले गया। श्यामसिंह बहुत दुखी हुआ। उस ने चारों ओर दूर-दूर तक खोजबीन की । घोड़ा नहीं मिला।

श्यामसिंह उदास रहने लगा। उस के काम का नुकसान हो रहा था। उसने तय किया, चलो दूसरा घोड़ा खरीद लेते हैं। तभी पता चला कि पास में ही चंचलपुर शहर में पशु मेला लगा है। उसके मन में आया—चलो श्याम सिंह मेले में और वहा से घोड़ा लाएं।

सो, वह पशु मेले में पहुंच गया। कई जगह घोड़े गधे बिक रहे थे। उस ने घूम फिर कर मेला देखा। घोड़े की कीमत पूछी। कहीं घोड़ा पसंद नहीं आया और कहीं घोडे की कीमत ज्यादा थी। आखिर मे, वह एक व्यापारी के पास जा पहुंचा। उस के पास अच्छी नसल के बहुत से घोड़े थे।

वह घोड़ों को देखने लगा। वह यह देख कर हैरान रह गया कि वहां उसका घोडा भी है। उसने एक बार फिर अपने घोड़े को गौर से देखा। इस बार घोडे ने उसे देख लिया और पहचान लिया। तभी वह हिनहिनाया। दोनों ने इशारे इशारे मे कह दिया, "मेरे लिए तुम और तुम्हारे लिए मैं।"

श्यामसिंह ने व्यापारी से कहा, "यह घोडा तो मेरा है। तुम अभी इसे दे दो मुझ को।"

व्यापारी ने जोर दे कर कहा, "नहीं-नहीं, यह मेरा घोड़ा है। तुम ने कुछ धोखा खाया है। लगता है, वह घोड़ा इसके जैसा ही होगा।"

श्यामसिंह ने विश्वास के साथ कहा, "जी नहीं, मैं धोखा नहीं खा सकता। यही मेरा घोड़ा है।"

अब तक वहां काफी भीड़ जमा हो चुकी थी। लोग तमाशा देख रहे थे। उन्हे मजा आ रहा था। उन में से कुछ लोग ऐसे भी थे जो वह जानने की कोशिश कर रहे थे कि सच्चाई क्या है।

तभी व्यापारी ने श्यामसिंह से पूछा, "अच्छा, मुझ को यही बात दो। कहां गया वह तेरा घोड़ा ? कब से तेरे पास नहीं है ?"

'मेरा घोड़ा दो महीने पहले चोरी हो गया था। तब से ही मैं ढूढ़ रहा हू श्यामसिंह ने बताया।

व्यापारी मन ही मन मुस्काया। उस ने पैंतरा बदलकर कहा, "बस, इतनी सी बात है। अरे भाई, यह घोड़ा तो मेरे पास दो साल से है। तुम्हें ज़रूर गलतफहमी हो गई है।"

श्यामसिंह की समझ में कुछ नही आ रहा था। वह कुछ सोचने लगा। तभी व्यापारी को मौका मिल गया। उसने भीड़ से कहा, 'देखा-देखा, तुम सब लोगों ने। यह घोड़ा तो मेरा ही है। यह तो एकदम चुप हो गया।"

तब तक श्यामसिंह को एक तरकीब सूझ गई। उसने भीड़ का ध्यान अपनी ओर खींचा और घोड़े की आंखें बंद कर दीं। सब को ऐसा लगा मानों कोई जादू दिखाया जा रहा हो। अब श्यामसिंह ने व्यापारी से पूछा, "अच्छा भाई तुम्हीं बताओ, तुम्हारे घोडे को किस आंख से दिखाई नहीं देता ?"

"दाईं आंख से" व्यापारी फौरन बोला।

"गलत। बिलकुल गलत" श्यामसिंह ने उछलते हुए कहा।

"हां, मैं बिलकुल ठीक कह रहा हूं। मेरे घोड़े को बाईं आंख से दिखाई नहीं देता।" व्यापारी ने चतुराई दिखाई।

इस पर भीड़ अट्टहास करने लगी। श्यामसिंह ने व्यापारी का मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "वाह ! यह भी खूब रही। अगर घोड़े की तीसरी आंख होती तो तुम उसके लिए भी यही कह सकते थे।"

एक बार फिर भीड़ में अट्टहास गूंज गया। श्यामसिंह ने बताया, "मेरे घोड़े को दोनों आंखों से दिखाई देता है। आप सब चाहें तो आगे आकर देख लें।"

यह कह कर श्यामसिंह ने घोड़े की आंखों पर से पट्टी हटा दी। लोग आगे बढकर और अपनी-अपनी जगह से उचक कर देखने लगे। तभी श्यामसिंह ने कहा, "देखा भाइयो, यह कहता है कि यह घोड़ा इसके पास दो साल से है। यह सच नहीं है। इसे यह भी पता नहीं कि इसकी आंखें ठीक हैं या नहीं। अब तो आप सब को यकीन हो गया कि यह घोड़ा इस व्यापारी का नहीं है, बल्कि मेरा है। इसलिए इसे मुझे दिला दिया जाए।"

भीड़ 'शर्म-शर्म' चिल्लाने लगी और व्यापारी के ऊपर घड़ों पानी गिर गया। व्यापारी ने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं। उसने नया पैंतरा बदला, "मान लो, यह घोड़ा मेरा नहीं है तो यह तुम्हारा भी नहीं है। क्या तुम यह सिद्ध कर सकते हो कि यह घोड़ा तुम्हारा ही है ?"

श्यामसिंह ने धीरज से काम लिया और कहा, "मेरे घोड़े का नाम हवाबाज है। जब यह दौड़ लगता है तो हवा से बातें करता है।"

व्यापारी ने फिर चतुराई से काम लिया-"सवाल यह नही है कि इसका नाम

हवाबाज है या कलाबाज। इसका पता कैसे चलेगा''

श्यामसिंह ने खुश होकर कहा, "हवाबाज मेरी आवाज़ को पहचानता है। मेरे हाथ से सहलाने को भी जानता है।''

इसके बाद उसने हवाबाज को उसके नाम से पुकारा और हाथ से उस के बदन को सहलाया। बस, फिर क्या था, घोड़ा हिनहिनाने लगा और श्यामसिंह को चाटने लगा।

सभी लोग कह रहे थे, "भई, मान गए, यह घोड़ा तो इसी आदमी का है, व्यापारी का नहीं।''

इस पर व्यापारी को गुस्सा आया – "वाह जी वाह, यह भी कोई बात हुई। लगता है, आप सब इसके साथ मिल गए हैं। यह तो मैं भी कर सकता हूँ।''

तब उसने बड़ी अकड़ से घोड़े की पीठ पर ज़ोर से हाथ मारा और कहा, – "ऐ घोड़े, सब को बता दे, तू मेरा ही घोड़ा है।''

घोड़े ने कुछ उछलकूद की और अपना गुस्सा दिखाया। वह लात चलाने लगा। इस पर व्यापारी एक बार फिर शर्मिंदा हुआ। सारे लोग एक बार फिर खिलखिलाए।

व्यापारी ने फिर चतुराई दिखाई–"अच्छा, भैया, यह कैसे सिद्ध करोगे कि यह घोडा हवा से बातें करता है ? हां, मैं साफ-साफ बताए देता हूं, मेरा घोड़ा हवा से बाते नहीं करता।''

यह कह कर व्यापारी उछल कर घोड़े की पीठ पर जा बैठा। इस बीच घोडा जोर से हिनहिनाया और अपनी जगह पर ही उछल कूद करने लगा। बस, फिर क्या था, वह व्यापारी धूल चाटने लगा। सारी भीड़ में कहकहे गूंजने लगे। व्यापारी की हालत खस्ता हो गई।

इसी बीच श्याम सिंह ने मौके का फायदा उठाया। वह घोड़े के पास गया। उसे पुचकारा और सहलाया। हवाबाज कह कर पुकारा। तब वह धीरे से उस के ऊपर चढ कर बैठ गया। बस, उस ने एड लगाई और सचमुच घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

घोड़ा श्याम सिंह का था। वह ले गया। व्यापारी पुलिस के डर से हाथ मलता गया।

–डा. रत्नलाल शर्मा

डी–**201**, पुंडरीक विहार, पीतम पुरा,

दिल्ली – **110034**

जयमाला किसके गले में

नीलम देश में एक राजा राज करता था। उस का नाम था विक्रम देव। राजा की एक ही संतान थी और वह थी राजकुमारी नीलम। जब राजकुमारी नीलम बडी हुई तो विक्रम देव को उस की शादी की चिंता हुई। नीलम बहुत सुंदर और बुद्धिमती थी। राजा ने राजकुमारी की राय जानने की कोशिश की।

राजकुमारी ने बताया, "मैं ऐसे युवक से शादी करूंगी जो सबसे अमीर हो और सबसे गरीब।''

यह सुनकर विक्रम देव बहुत हैरान हुए। उन्होंने कहा, 'बेटी, ऐसा युवक कहा मिलेगा ?'' तुम अपना विचार बदल दो। मैं बढ़िया से बढ़िया राजकुमार के साथ तुम्हारा विवाह कर दूंगा।''

नीलम अपनी बात पर अटल थी। उस पर विक्रम देव के समझाने'बुझाने का असर नहीं हुआ राजा ने हार कर अपने राज्य में इस तरह का ऐलान कर दिया और स्वयंवर का दिन तय कर दिया। उसने दूसरे राज्य में भी खबर भिजवा दी। आखिर स्वयंवर का दिन आ गया। दूर-दूर से अनेक युवक आ पहुँचे। उनमें बडा उत्साह था और हर युवक सोचता था, राजकुमारी मेरे गले में जयमाला डालेगी। वे लोग बड़ी सजधज के साथ आए थे और उन के गुणों के किस्से राजधानी मे लोगों की जबान पर थे। राज्य की प्रजा यह जानने के लिए उत्सुक थी कि राजकुमारी की पंसद का युवक उन में से कौन सा है।

एक विशाल मैदान में सभा जुड़ी उसमें केवल भाग लेनेवाले ही नहीं थे, बल्कि तमाशा देखनेवाले अनेक लोग भी थे। सभा का काम शुरू हुआ। रजकुमारी जिस युवक की ओर आँख उठा कर देखती, वही अपने बारे में जानकारी देने लगता। इसके बाद राजकुमारी दूसरी तरफ मुँह मोड लेती।

एक युवक ने कहा, "मैं सपन देश का राजकुमार हूँ। मेरे पास बहुत बड़ी सेना है जिसके बल पर मैं अनेक देशों पर विजय पा सकता हूँ।''

राजकुमारी ने क़हा, "आप सपने अच्छे देख लेते हैं। अच्छा यह बताइए कि सेना आप के पास कंहा से आई ? क्या आप ने बनाया है ?''

युवक ने कहा,"नहीं, मेरे पिता राजा है। उन्होंने ही यह सेना मुझे दी है।''

राजकुमारी का अगला प्रश्न था "फिर आप सबसे गरीब कैसे हैं ?''

युवक ने उत्तर दिया, "जब तक आप के दिल पर विजय नहीं मिलेगी, मैं यही समझूंगा कि मैं सबसे गरीब हूं।"

राजकुमारी चुप हो गई। उसने दूसरे युवक की ओर देखा। उसने बताया, "मैं कुबेर देश के सबसे धनी व्यापारी का बेटा हूं। हमारे पास इतना सारा धन है कि उस की गिनती नहीं की जा सकती। उसे कई पीढ़ियों तक खाते रहें तो भी खत्म न हो।"

राजकुमारी ने पूछा, "तो आप क्या करते हैं और आगे क्या करेंगे ?"

युवक यह सवाल सुनकर हंस पड़ा। फिर उसने जवाब दिया, "राजकुमारी जी, आप भी कैसी बात करती हैं। आदमी धन कमाने के लिए ही कुछ न कुछ करता है। मुझे किस बात की कमी है ? मैं क्यों काम करूं ?"

राजकुमारी ने अगला प्रश्न किया, "फिर आप सबसे गरीब कैसे हैं ?"

युवक ने उत्तर दिया, "आप जो मेरे पास नहीं हैं ?"

राजकुमारी ने अपनी नज़र वहां से हटा ली और अगले युवक की ओर देखा। फिर ऐसे ही सवाल जवाब शुरू हुए और यह सिलसिला चलता रहा। युवको ने महसूस किया कि हमें राजा ने अपमान करने के लिए बुलाया है। हम इस का बदला लेगें। कोई बोला मैं इस देश पर हमला कर दूंगा। दूसरा बोला, मैं अभी राजा को खरी खोटी सुनाता हूं।

एक युवक ने उन्हे समझाया, "इससे कोई फायदा नहीं है। मेरे पास एक तरकीब है और राजकुमारी से बदला लिया जा सकता है।"

वह वहां से उठकर गया और कुछ देर बाद एक युवक को पकड़ लाया। उसे नहला धुला कर अच्छे कपड़े पहना दिए।

जब उसे राजकुमारी के सामने पेश किया गया तो उसने पूछा, "आप कौन है ?"

उसने कहा, "जी, मैं भिखारी हूं। मैं दुनिया का सबसे गरीब आदमी हूं।"

यह सुनते ही सभा मंडल में हंसी के फव्वारे छूटने लगे। राजकुमारों ने हंसना शुरू किया तो रुकने का नाम ही नहीं लेते थे। तमाशा देखनेवाले भी उस मे शामिल हो गए। राजा का बुरा हाल था। उनका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। फिर भी वह कुछ नहीं बोले।

राजकुमारी का भी बुरा हाल था। उसने धीरज नहीं छोड़ा और अगला सवाल किया, "अच्छा, आप की गरीबी तो मालूम हो गई, आप की दौलत क्या है ?'

भिखारी ने जवाब दिया, "मुझे दौलत की क्या जरूरत है ? आप के साथ शादी हो जाएगी तो आप की सारी दौलत मेरी हो जाएगी।"

इस बार फिर हंसी फूट पडी और सारी सभा में कहकहे गूंजने लगे। इस सारे तमाशे में सारा दिन बीत गया। शाम हो गई। राजा को लग रहा था कि स्वयवर

बेकार हो गया और उसे अपमान का घूट पीना पड़ा . यह सब राजकुमारी की ज़िद के कारण हुआ। राजा ने कहा, "और कोई युवक हो तो आगे आए। नहीं तो हम स्वयंवर की कार्रवाई यहीं खत्म करते हैं।"

इस पर एक युवक आगे आया। राजकुमारी ने कहा, "आप अपना परिचय दीजिए।"

वह बोला, "मैं मामूली आदमी हूं। बहुत गरीब हूं। मैंने ऊंची से ऊंची शिक्षा पाई है। यह शिक्षा ही मेरी दौलत है। यह दौलत मुझे अपने पिता से नहीं मिली, मैंने खुद कमाई है। मैं नदी पर बांध-बांध सकता हू। बंधे हुए पानी में से बिजली पैदा कर सकता हूं। इस सारे काम में कितने ही लोग लगेंगे। इससे अनेक लोगों को फायदा होगा। अनेक लोगों को रोज़गार मिलेगा।"

उसने कुछ रुककर कहा, "मुझे किसी की धन दौलत नहीं चाहिए। मैं अपने दोनों हाथों से खूब दौलत कमा सकता हूं। मैं समझता हूं, दूसरों का भला हो जाए, वही मेरी दौलत है। बस मुझे दो हाथ मिल जाएं। चार हाथ मिलकर देश का नक्शा बदल देंगे।

राजकुमारी ने उस युवक के गले में जयमाला डाल दी।

—डॉ. रत्नलाल शर्मा

डी–201, पुंडरीक विहार, पीतम पुरा,

दिली–110034

बूढ़ा ऊंट

जयगढ़ राज्य में लच्छूमल नाम का एक छोटा व्यापारी था। वह गुड़ का व्यापार करता था। उसके पास एक ऊंट था। वह उसी ऊंट की पीठ पर गुड़ो के गट्ठर लादकर पूरे राज्य में घूम-घूम कर उसे बेचा करता था। धीरे-धीरे उसके गुडो की मांग बढ़ने लगी। एक दिन वह छोटे से बड़ा व्यापारी बन गया। अब वह घर बैठे ही गुड़ो का व्यापार करने लगा। उसके पास एक से कई ऊंट हो गये। वह उन्हीं ऊंटों पर माल लदवाकर नौकरों के द्वारा ग्राहकों तक भेजने लगा।

समय के गुजरते पहलेवाला पुराना ऊंट काफी बूढ़ा हो गया। बूढ़े होने के कारण बोझा लादकर चलना उसके लिए कठिन होने लगा जब व्यापारी ने देखा पुराने ऊट से बोझा नहीं ढोया जा रहा है तो वह सोच में पड़ गया कि उसका क्या करें। कई दिनों तक सोच विचार करने के बाद उसने उसे किसी अन्य के हाथो बेचने का फैसला किया।

उसी बीच एक शाम व्यापारी के घर चमनलाल नाम का एक आदमी आया। वह व्यापारी से बोला "मैं आपके सबसे बड़े ग्राहक सूरजमल का जिगरी दोस्त हूं। मुझे जयगढ़ कुछ विशेष काम से जाना है। शाम हो चुकी है और आगे का रास्ता भी अन्जाना व खतरे से भरा है। यदि आप आज रात मुझे अपने घर ठहरने की अनुमति दे दें तो बड़ी कृपा होगी। सुबह होते ही मैं चला जाऊंगा। "लच्छूमल उस मुसाफिर की बातों पर यकीन करके बोला, "भई, आप हमारे पुराने बड़े ग्राहक के दोस्त हैं, मैं भला कैसे आपको मना कर सकता हूं। मुझे आप पर पूरा विश्वास है। आप चिंता मुक्त होकर हमारे यहां रात भर आराम से रहिये आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी।" "बहुत अच्छा भाई लच्छूमल" चमनलाल खुश होकर लच्छूमल की बात पर बोला। लच्छूराम ने उसके रहने-खाने का अच्छी तरह बन्दोबस्त कर दिया। वह खा-पीकर आराम से अपनी थकान मिटाने के लिये सो गया।

मध्यरात्रि के समय उसकी नींद खुली, उसने देखा सभी नौकर व लच्छूराम चैन सो रहे हैं। उन्हें सोता देखकर उसने अपनी सोची समझी चाल चलने का फैसला किया। लच्छूमल के पास से उतने तिजोरी की चाची चुपके से निकाली। फिर तिजोरी के निकट जाकर उसको खोला और उसमें रखा सारा धन बाहर

निकालकर एक थैले मे भरा थैला लेकर वह दब पाव अपने कमरे मे आया अपना सारा सामान साथ लेकर वह घर से बाहर निकला। वह जैसे ही वहा से चलने को हुआ कि बाहर पेड़ के नीचे सो रहा बूढा ऊंट अचानक उसके पैरों की आहट पाकर जाग गया। चमनलाल को सारा सामान व धन लेकर जाते देख वह खडा हो गया और जोर-जोर बिलबिलाने लगा। उसे बिलबिलाता देख चमनलाल घबड़ा गया। उसने वहां फौरन भाग जाने का निश्चय किया। वह जैसे ही तेजी से चलने को हुआ कि बूढ़ा ऊंट उसका रास्ता रोकर कर खड़ा हो गया और जोर-जोर से बिलबिलाने लगा।

जब चमनलाल ने देखा कि ऊंट रास्ते से नहीं हट रहा है तो उसने उसको मारने का निर्णय किया। म्यान में रखी तलवार उसने निकाली और ऊंट की गर्दन काटने का उसने इरादा किया। ऊंट अपने मालिक को जगाने के लिए लगातार बिलबिलाए जा रहा था। चमनलाल ने अपने निर्णय के अनुसार चमचमाती तेज धारवाली तलवार बूढे ऊंट की गर्दन की ओर बढाई। तलवार गर्दन के निकट पहुचने ही वाली थी कि अचानक उसका बढ़ा हाथ रुक गया। हाथ के अपनी जगह सकते ही एक जोरदार आवाज गूंजी। कमीने, मैंने तुझ पर विश्वास करके अपने घर में ठहराया और तुमने मुझे इसके बदले में धोखा दिया। मेरी जिंदगी भर की खून-पसीने की कमाई को चुरा कर मुझे कंगाल बनाने की चाल चली। लेकिन अब मै तेरी असलियत से परिचत हो गया हू। तू झूठा और धोखेबाज इंसान है। मैं तुझे तेरी करनी की ऐसी सजा दिलवाऊंगा कि तू जिंदगी में दोबारा कभी भूलकर कर भी ऐसी गलती दोहराने की बात नहीं सोचेगा।'' चमनलाल के पीछे उसकी मजबूती से कलाई पकड़े खड़ा लच्छूमल गुस्से से बोला। अपने पकड़े जाने पर चमनलाल थरथर कांपने लगा। लच्छूराम गिड़गिड़ाता हुआ हाथ जोड़कर बोला 'सेठ जी, मै। आपका गुनहगार हूं। मैंने आपके साथ छल किया है। मुझे माफ कर दीजिए। मैं आपसे वादा करता हूं कि अब कभी चोरी नहीं करूंगा।''

लच्छूमल उस अपने लगे रोता गिड़गिड़ाता देख कर बोला, ''नहीं, मैं तुझ जैसे चालाक, धोखेबाज, लोगों को कभी मांफ नहीं करूंगा।। तुझे राजा के दरबार मे चोरी के जुर्म में पेश कर कड़ी से कड़ी सजा दिलवाऊंगा। चोर चमनलाल लच्छूमल की चेतावनी सुनकर घड़ियाल की तरह आंसू बहाता हुआ बोला, "सेठ जी, मुझे सजा हो जायेगी तो मेरी बीमार पत्नी और दो छोटे बच्चे भूखों मर जायेंगे। मुझे माफ कर दो, मैं कभी किसी को धोखा देकर चोरी नहीं करूंगा।'' तुम्हें ईश्वर की सौगन्ध खाकर मुझे बचन देना होगा। "मैं ईश्वर की सौगन्ध खाने को तैयार हूं।'' चमनलाल हाथ जोड़कर बोला उसकी बात पर लच्छूराम बोला, "तुम्हें मुझसे कुछ वादा और करना होगा।'' चमनलाल अपने आंसुओं की पोंछता हुआ बोला 'मैं आपके सारे वादे पूरे करने को तैयार हूं। आप हुक्म करें।'' चमनलाल की बात

पर लच्छूमल बोला 'तुम कभी किसी से झूठ नहीं बोलोगे दूसरी बात चोरी की जगह मेहनत मज़दूरी करके अपनी बीमार पत्नी का उपचार व बच्चो की देखभाल करोगे। उन्हें अच्छी तालीम देकर नेक इंसान बनाओगे।'' मुझे आपकी सभी शर्ते मजूर हैं। चमनलाल लच्छूमल के आगे हाथ जोड़कर बोला। लच्छूमल ने उसे अपनी भूल की अनुभूति होते देखा और मांफ कर दिया। चमनलाल चुराया हुआ सारा धन लच्छूमल को सौंपकर उसकी शर्तों का पालन करने की बात स्वीकार कर मेहनत मजदूरी की तलाश में वहां से चल पड़ा।

चमनलाल के चले जाने के बाद लच्छूमल की दृष्टि पास खड़े बूढ़े ऊँट पर पडी। जो उसके नज़दीक गया। बूढ़ा ऊँट स्नेह भरी दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था। लच्छूमल ने ऊँट की गर्दन को पकड़कर अपने सीने से लगा लिया। बूढ़े ऊँट की गर्दन से लिपट कर वह बोला "मुझे माफ कर दो दोस्त, तुम्हारे साथ मैं बहुत बडी गलती करने जा रहा था। तुमने मेरा बुरे समय से लेकर अच्छे समय तक साथ निभाया है और एक मैं था कि तुम्हारी दोस्ती को भूल बैठा था। अब अगर मै तुम्हें किसी के हाथों बेचकर अपने से अलग कर दिये होता तो शायद कहीं का न रहता। तुमने मेरी ज़िन्दगी भर की कमाई की चोरी होने से बचा लिया। मैं तुम्हारा ज़िन्दगी भर का ऋणी हो गया हूँ। अब मैं कभी भूलकर भी तुम्हें अपने से अलग करने की बात नहीं सोचूँगा। हमे आज इस मुकाम पर पहुँचाने में तुम्हारा योगदान मेरी मेहनत से कम नहीं है। अब मै तुमहें मरते दम तक अपने साथ रखूँगा। चाहे तुम काम कर सको या नहीं।''

बूढ़े ऊँट ने अपने मालिक की आँखो से बह रहे आँसुओं को देख तो अपना मुँह उसकी ओर करके उसके हाथों को चाटने लगा। उसे ऐसा करते देखकर लच्छूमल को एहसास हो उठा कि उसने उसे माफ कर दिया है। उसने खुश होकर मुस्कुराते हुये अपने बूढ़े ऊँट का सिर पकड़कर उसके माथे को प्यार से चूम लिया।

—रमाशंकर

48, वाल्मीकि मार्ग, लालबाग,
लखनऊ - **226001** (उ.प्र.)

और वह पकड़ा गया

"अरे ! कितनी देर से तू प्लेटें धो रहा है, अभी तक धो नहीं पाया। ला जल्दी से धोकर नहीं तो दूँगा एक हाथ।" मंगा होटल का मालिक मंगाराम प्लेटें धो रहे एक लड़के से ऊपर गुस्से से बरसता हुआ बोला। लड़का मंगाराम प्लेटों को देने के लिए तेजी से उसकी ओर चल पड़ा।

वह प्लेटों को संभालता हुआ अभी चार-पाँच कदम ही चला था कि अचानक सामने से आ रहे एक आदमी से टकरा गया। उसके हाथों में पकड़ी प्लेटें छूट कर फर्श पर आवाज करती हुई इधर उधर जा गिरीं। वह यह देख कर सन्न रह गया। उसी समय एक जोरदार तमाचा "चटाक" की आवाज करता हुआ उसके गाल पर जा पड़ा। उसका पूरा बदन थर-थर कांपने लगा। बड़ी-बड़ी आंखों से उसकी ओर गुस्से से घूरता हुआ मंगाराम बोला, "नालायक, देखकर नहीं चलता। सारी की सारी प्लेटे तोड़ दीं। अंधा कहीं का, तू रोज कोई न कोई नुक्सान कर देता है। समझ ले, मैं सारे नुकसान के पैसे तेरी तनख्वाह से काट लूंगा, हां।"

लड़का चुपचाप आंसू बहाता हुआ उसकी बातें सुन रहा था। उसे गुमसुम बना देखकर मंगाराम फिर उस पर गुस्सा उतारता हुआ बोला, "अब खड़े-खड़े मेरा मुह क्या तक रहा है, जल्दी से टूटी प्लेटें कूड़े की टोकरी में डाल और सामने बैठे बाबू लोगों की मेजों को जाकर जल्दी से साफ कर, और ध्यान रख आगे से ऐसी गलती हुई तो खाल उधेड़ कर रख दूंगा, समझा।"

मालिक की मार व डांट खाकर टूटी प्लेंटों को जल्दी-जल्दी बटोरने लगा। उसी समय होटल पर कमल नामक एक लड़का मिठाइयाँ लेने आया था। वह अपनी ऑखों के सामने यह घटना घटते देख रहा था। वह होटल के पास ही वहीं रहता था। घर आये मेहमान के लिए वह मिठाइयाँ लेने होटल पर आया था। लड़के के ऊपर होटल मालिक का यह अत्याचार देखकर वह बहुत दु:खी हुआ।

मिठाई लेकर वह घर आया। माँ को मिठाई देने के बाद वह दोस्तों के साथ खेलने मुहल्ले के पार्क में चला गया।

उसके सभी दोस्त पार्क में क्रिकेट खेल रहे थे। वह भी उनके साथ क्रिकेट खेलने लगा। किन्तु आज उसका मन खेलने में ठीक से ने लगा। वह पार्क के एक ओर बैठ कर चुपचाप उस होटल वाले लड़के के विषय मे सोचने लगा। उसे होटल

के मालिक के ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा था उसका जी चाह रहा था कि वह भी जाकर उसकी उसी तरह पिटाई करें जिस तरह उसने लड़के की उस समय की थी। वह काफी देर तक लड़के के बारे में सोचता रहा। फिर अचानक उसकी नजर कलाई पर बंधी घड़ी पर पड़ी। घड़ी में छः बज चुके थे। उसे ट्यूशन पढ़ने जाना था। वह पार्क से घर की ओर तेजी से चल पड़ा।

शाम का समय था। आठ बज चुके थे। ठंड जोरों की पड़ रही थी। कमल ट्यूशन पढ़कर पैदल घर की ओर आ रहा था। अचानक उसकी नजर गंगा होटल की ओर गयी। उसने देखा, बन्द होटल के बाहर फर्श पर वही लड़का केवल एक पतली मैली चादर ओढ़े थर-थर कांपता हुआ सो रहा है। यह देख कर वह तुरन्त उसके पास गया। उसने एक गर्म शाल ओढ़ रखी थी। उसने तुरन्त उसको उतार कर ओढ़ा दिया। अचानक कमल के चादर ओढ़ाते ही लड़का झट से डर कर उठ कर बैठ गया। उसे घबड़ाया हुआ देख कर कमल बोला "डरो नहीं, मुझे अपना दोस्त ही समझो। मेरा नाम कमल है। मैं यहीं पास में ही रहता हूँ। तुम्हारा क्या नाम है ? कमल के पूछने पर लड़का कुछ न बोला। वह एकटक उसकी ओर देखता रहा।

कमल ने उससे दूसरी बार पूछा। लड़का कमल के पूछने पर बोला, "गौरव, लेकिन यहां मुझे कोई छोटू कहता है तो कोई छोकरा, तो कोई कुछ।" उसकी बात सुनकर कमल बोला, "कोई बात नहीं, मैं तुम्हें गौरव कहकर ही बुलाऊंगा। कितना अच्छा नाम है तुम्हारा...गौरव। तुम कहां से आये हो ?"

गौरव मन्द स्वर में आंखें झुकाये हुए बोला "लखनऊ से।" कमल यह जानकर मुस्कराता हुआ उससे बोला "अरे ! वहां तो मेरे मामा जी रहते हैं। तुम यहा दिल्ली कैसे पहुंचे ?"

कमल के पूछने पर गौरव कुछ न बोला। उसे चुप दुख कर कमल ने कहा "देखो गौरव इस शहर में तुम्हें अभी बहुत कठिनाई उठानी पड़ेगी। यहां तुम्हे जल्दी से कोई सुख-दुख बांटनेवाला नहीं मिलेगा। इसलिए मुझे अपना मित्र समझकर सब कुछ बता दो, हो सकता है मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकू।"

कमल के पूछने पर गौरव बोला, "मित्र, मैं अपने घर से भाग कर आया हू। "लेकिन क्यों ?" कमल ने उससे प्रश्न किया। गौरव बोला, "मोहल्ले व स्कूल के कुछ गन्दे लडकों की संगत में पड़कर मैंने लाटरी खेलनी शुरू कर दी थी। एक दिन पहली तारीख को मिली पापा की तन्ख्वाह के पैसे चुराकर मैंने लाटरी खरीद ली थी। पापा को इसका पता चल गया। उन्होंने मुझे खूब डांटा। मैं उनकी डाट खाकर घर से बिना बताये यहां भाग आया। जेब में कुछ पैसे थे। जब वे खर्च हो गये तो मैं बहुत परेशान हुआ। भूख भी सताने लगी थी। मैं इधर-उधर भूख मिटाने के लिए भटक रहा था। अचानक इस होटल के मालिक से मेरी मुलाकात

हो गयी और इसने मुझे अपने पास रख लिया मुझे वहा 15 दिन होने को आये है इसकी डाट व फटकार मुझे रोज खानी पड़ती है।

गौरव की सारी बातें सुनकर व सामने खडी उसकी समस्या को देखकर कमल ने उसे कुछ दिनों तक और होटल में काम करने के लिए कहा; और शीघ्र ही उसको इस समस्या के घेरे से बाहर निकालने का आश्वासन दिया। वह गौरव को आश्वासन देकर वहां से घर की ओर चल पड़ा।

एक सप्ताह बीत गया था। कमल उस दिन के बाद से गौरव से मिलने नहीं आया था। गौरव को बड़ी चिन्ता हो रही थी। वह हर रोज उसकी राह देखता था। खासकर शाम को।

आज रात उसे अपने घर की बड़ी याद आ रही थी। मम्मी-पापा दोनों ही उसे बहुत याद आ रहे थे। वह उनके पास जाने के लिए बेचैन हो रहा था। साथ ही अपनी गन्दी आदतों और घर से भाग कर आने पर बहुत पछता रहा था। उसकी इच्छा घर जाकर मम्मी-पापा से माफ़ी मांगने की बार-बार हो रही थी। पूरी रात उसने जाग व रोकर काट दी।

दूसरे दिन सुबह जब वह सोकर उठा तो उसका पूरा बदन बहुत जल रहा था। होटल का एक भी काम करने की उसकी इच्छा जरा भी नहीं हो रही थी। किन्तु होटलमालिक के डर के कारण किसी तरह वह काम कर रहा था।

उसे आज तेजी से कोई काम न करते देखकर होटल के मालिक को उस पर बडा गुस्सा आ रहा था। वह कई बार उसे अब तक जल्दी काम करने को लेकर डाट चुका था। वह मन ही मन उस पर बहुत खीझ रहा था तभी होटल में चार ग्राहक आये और उन्होंने तुरन्त चाय व समोसे लाने का आर्डर दिया। होटल के मालिक ने गौरव से चार कप व प्लेटें जल्दी धोकर लाने के लिए कहा। गौरव कप धो चुका था और प्लेटें धो रहा था तभी होटल मालिक ने फिर उससे कप व प्लेटे जल्दी लाने को कहा।

होटल मालिक के आदेश पर गौरव जल्दी-जल्दी प्लेटें धोने लगा। होटल मालिक ने देर होते देखा तो गुस्सा हो गया। वह उठकर उसके पास आया और उसे पीटने लगा। गौरव मार खाते हुए "अब कभी देर नहीं करूंगा.. अब कभी देर नहीं करूंगा।" कहता हुआ रोने व चीखने लगा। होटल के अन्दर बैठे सभी ग्राहक यह तमाशा देख रहे थे। होटल का मालिक गौरव को बड़ी बेरहमी से पीट रहा था। वह जोर-जोर से रो रहा था। अचानक उसी समय एक आवाज होटल में गूजी "पकड लो इस आदमी को और लगा दो इसके हाथों में हथकड़ी"। यह आवाज इन्सपेक्टर धरम की थी। वह अपने सिपाहियों के साथ होटल के बाहर कमल के साथ खड़े थे।

इन्सपेक्टर का आदेश पाते ही सिपाहियों ने होटल मालिक के हाथें में तुरन्त

हथकड़ी पहना दी। होटल के मालिक की समझ मे कुछ नहीं आया। वह इन्सपेक्टर से बोला, "इन्सपेक्टर साहब, मैंने क्या गुनाह किया है ? आप क्यों मुझे हथकड़ी पहना रहे हैं ?" उसकी बात पर इन्सपैक्टर धरम उसका गिरेबान पकड कर बोले , "तूने बाल शोषण किया है।" "बाल शोषण" होटल मालिक गंगाराम सोच में पड़ कर बोला। उसकी बात पर इन्सपेक्टर बोला" हाँ बाल शोषण, तूने उस मासूम बच्चे से होटल का काम करवाकर किया है। तुम्हें पता नहीं, सरकार ने बाल श्रम रोकने के लिए कितना कड़ा कदम उठा रखा है। हर रोज पत्र, पत्रिकाओं रेडियो व टेलीवीजन पर बाल श्रम रोकने की बात बतायी जाती है। फिर भी तुम बच्चे से काम कराकर जुर्म कर रहे हो। तुम्हें इसकी कड़ी सजा दी जायेगी।"

इन्सपेक्टर धरम ने कमल को होटल मालिक को बाल शोषण करते पकड़वाने पर शाबासी दी। वह होटल मालिक को लेकर वहाँ से पुलिस स्टेशन चल पड़े। उनके जाते ही कमल गौरव को अपने साथ लेकर घर आया। उसने उसे अपनी माँ से मिलवाया और उनके हाथ के बने स्वादिष्ट व्यंजन खिलवाये। रात में उसने गौरव को बताया कि उसके पापा श्रम मन्त्रालय में काम करते हैं। उसने उनसे उसकी समस्या बतायी थी। उन्होने ही उसको पुलिस के पास फोन करके भेजा था। जिससे वह होटल मालिक के चंगुल से उसे निकाल सका।

दूसरे दिन सुबह होते ही कमल गौरव को अच्छे कपड़े पहना कर अपनी मम्मी व पापा के साथ लखनऊ जानेवाली ट्रेन पकड़ने घर से निकला पड़ा। उसे अपने मामा के लडके के जन्मदिन पर पहुंचना था और गौरव को उसके मम्मी पापा के पास पहुँचाना था।

—रमाशंकर

48, वाल्मीकि मार्ग लालबाग,

लखनऊ – 226001 (उ. प्र)

लाख टके का काम

अजयगढ़ के राजा का नाम धर्मसिंह था। राजा के दरबार में अनेक गुण संपन्न दरबारी थे। राजा गुणवान व्यक्तियों को बहुत महत्व देता था।

एक बार राजा के दरबार में एक युवक प्रस्तुत हुआ। राजा ने उससे उसके गुण की जानकारी जाननी चाही तब उस युवक ने कहा महाराज जो कार्य आपके दरबार में, राज्य में कोई नहीं कर पाएगा उस कार्य को मैं करूंगा, यदि मैं इसमे असफल रहूं तो जो दंड आप देना चाहे मैं सहर्ष स्वीकार करूंगा। युवक के आत्म-विश्वास से कहे शब्दों से राज बहुत प्रभावित हुआ। राजा ने पारखी दृष्टि से उस युवक को परख भी लिया। उस युवक को राजा ने दरबार में ही एक स्थान दे दिया। दरबार में नियुक्ति के समय युवक ने मेहनताने के रूप में राजा से एक लाख टके प्रतिदिन की मांग की जिसे दुर्लभ कार्य कराने के एवज में राजा ने भी सहर्ष स्वीकार लिया।

राजा के महल मे ही एक अत्यंत सुन्दर बगीचा था। जिसमें एक सुन्दर सगमरमर की सीढ़ियों से सज्जित बावड़ी बनी थी। बावड़ी के चारों तरफ बगीचे मे गुलाब, राजरानी, चमेली, चम्पा के पेड़ तथा बेलायें लगी थीं। जिनकी खुशबू से बगीचे के आसपास काफी दूर तक का क्षेत्र भी रात्रि में महकता रहता था।

राजा की एक पुत्री थी राजकुमारी मनीषा। राजकुमारी अत्यन्त रूपवती और राजा की लाड़ली थी। प्रतिदिन प्रात: राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ बगीचे की बावड़ी में जल क्रीड़ा के लिए जाती थी। एक दिन प्रात: जब राजकुमारी बावड़ी के पास पहुंची तो वहां सीढ़ी पर उसे एक रत्नजड़ित जूती मिली। जो बहुत ही सुन्दर थी। उसमे हीरे, मोती जड़े थे। राजकुमारी ने जब उसे पहनकर देखा तो वह जूती उसके एक पैर में आ गयी। महल मे आने पर राजकुमारी ने अपने पिता राजा धर्मसिंह को वह जूती दिखाई और उसका जोड़ा तलाश कराने हेतु अपने पिता से कहा। राजा ने अपनी पुत्री को एक सप्ताह में जूती का जोडा तलाश करवाकर उसे सौप देने का आश्वासन दिया।

दूसरे दिन दरबार में राजा ने अपने दरबरियों के सामने वह रत्नजड़ित जूती रखी और एक सप्ताह मे उसका जोड़ा तलाशने हेतु आदेश दिया। अनेक बड़-बोले दरबारियों ने तो दो दिन में ही जूती का जोडा तलाशने का दावा भी किया किन्तु

चार दिन व्यतीत हो जाने पर भी जूती का जोडा नहीं मिला तो राजा चिन्तित हुआ तभी राजा को लाख टके रोज लेने वालेयुवक का ख्याल आया, तुरंत युवक को बुलाया गया और राजा ने जूती उसे दिखाकर पूर्ण घटना बताई। युवक ने तीन दिवस के भीतर जूती का जोड़ा लाकर देने का राजा को विश्वास दिलाया तथा रात्रि मे बगीचे में तथा महल की बावडी के पास रहने की राजा से अनुमति मांग ली।

उसी रात्रि में युवक महल के बगीचे में पहुंचा और बावड़ी के पास एक पेड के पीछे बैठ गया। परन्तु खुशबूदार हवा के झोंको से उसे नींद आ गयी और प्रात: हो गयी। दूसरे दिन भी उसके साथ जब यही हुआ तो तीसरी रात्रि उस युवक ने अपनी कटार से उंगली काट ली और उसमें थोड़ा सा नमक भी लगा दिया जलन से उसकी नींद उड़ गयी और वह वृक्ष के पीछे से बावडी पर आंखें केन्द्रित कर बैठ गया।

रात्रि के अंतिम पहर में आहट होने पर युवक ने देखा बावड़ी के निकट तीन परियां आकाश से उतरीं और उन्होंने अपने-अपने पर बावड़ी की सीढ़ियों पर रख जल में क्रीड़ा करने उतर गयीं। युवक धीमें से सीढ़ियों के निकट आया और एक परी के पर उठाकर पुन: पेड़ के पीछे छिप गया। जल क्रीड़ा कर जब परियां वापस आई तो वह परी जिसके पर वहां नहीं थे। बहुत चिन्तित हुई उसकी साथी दोनो परियां उड़ गयीं। परी की नजर जब युवक के हाथ में रखे परों पर गयी तो वह युवक के पास आकर अपने पर वापस करने की प्रार्थना उस युवक से करने लगी। युवक ने परी से कहा आप मुझे इस जूती का जोड़ा दे दें तो मैं आपके पर लौटा दूगा। उसने वह एक जूती परी को दिखाई जो वह राजा से जोड़ा तलाशने हेतु माग कर अपने साथ ले आया था। परी ने कहा यह जोड़ा अभी मैं तुम्हें दे देती हू। किन्तु तुम मेरे पर वापस कर दो। तभी परी ने अपने हाथ की छड़ी को घुमाया, और जूती का जोड़ा परी के दूसरे हाथ में आ गया उसने वह जोड़ा युवक को दे दिया। युवक ने जूती से उसे मिलाया दोनों एक जैसी थीं। परी ने जब पर वापिस मागे तो युवक ने उससे कहा कि एक शर्त और है। जब मैं राजा को वह किस्सा बताऊंगा जूती के जोड़े मिलने का तो विश्वास नहीं करेंगे। तब आपको मेरी बात की सच्चाई प्रमाणित करने एक बार आना पड़ेगा। यह सुनकर परी ने अपने सिर के थोड़े से बाल युवक को दिये और कहा जब मुझे बुलाना हो तो इन्हें आग पर रख देना मैं आ जाऊंगी। युवक ने परी के पर वापिस कर दिये और जूती का जोडा देने पर बहुत धन्यवाद भी दिया। परी को पर मिलने पर वह उड़ गयी और युवक जूती का जोड़ा ले कर राजा को देने चल दिया।

दूसरे दिन प्रात: महल में जाकर जब उस युवक ने राजा को दोनों रत्न जड़ित जूती सौंप दीं तब राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ। तुरन्त ही राजकुमारी मनीषा को बुलाकर राजा ने दोनों जूतियां दिखाई तब राजकुमारी भी अत्यन्त प्रसन्न हुई।

राजा ने युवक से जूती के बारे में पूछा – कि तुम्हे दूसरी जूती कहां से मिली ? तक युवक ने राजा को परीवाली बात बता दी।

युवक की बात सुनकर राजा और राजकुमारी को अनायास विश्वास नहीं हुआ तब युवक ने आग जलाकर जब परी के बाल उसमें डाले तो परी प्रकट हो गयी और उसने राजा को युवक को बात पर विश्वास करने को कहा। परी को देखकर राजा गदगद हो उठा और राजकुमारी भी बहुत ही खुश हो उठी। परी उनसे अनुमति ले वापिस चली गयी।

राजा ने तब युवक को और अधिक पुरस्कार देने चाहे तो युवक ने अत्यन्त विनम्रता से मना कर दिया और कहा महाराज जब मैं आपसे प्रतिदिन लाख टके लेता हूं तो अतिरिक्त पुरस्कार देकर मुझे शर्मिन्दा न करें। यदि इससे भी दुर्लभ कोई कार्य हो तो मुझे अवश्य ही बतायें मैं करूंगा। युवक की बातें सुनकर राजा को प्रसन्नता हुई। तब से वह युवक एक लाख टके रुपये रोज राजा से ले रहा है और इस बात का रास्ता भी देख रहा है कि राजा उसे ऐसा दुर्लभ कार्य दे जिसे कोई दूसरा करने में असमर्थ हो।

–राकेशकुमार जैन
गांधी नगर, बालाजी मंदिर रोड
इटारसी (म. प्र.)

मित्रद्रोह का परिणाम

एक नगर था राजपुर। उसमें दो मित्र रहते थे। एक का नाम सुपत था दूसरा का विपत। दोनों ही सुनार का कार्य किया करते थे। सुपत अत्यंत विनम्र, दयालु, परोपकारी था। किन्तु विपत अत्यंत महत्वाकांक्षी, लालची और स्वार्थी था। दोनो ही एक दूसरे के पड़ोस में बचपन से रहते थे। इसलिए दोनों में ही अभिन्न मित्रता थी। विपत के स्वभाव को देखकर कई बार सुपत ने उसे समझाने की कोशिश की किन्तु वह नहीं माना।

एक वर्ष राज्य में अतिवृष्टि हुई, सारी फसलें नष्ट हो गईं। राजपुर भी बाढ की चपेट में आ गया। सारा नगर तथा आसपास का क्षेत्र अतिवृष्टि से बुरी तरह प्रभावित हुआ, सुपत और विपत का भी धंधा चौपट हो गया। मौसम बदला किन्तु पनिया अकाल होने से उनको खाने के लाले पड़ने लगे। तब सुपत ने विपत को दूसरे राज्य में जाकर धंधा करने की सलाह दी। विपत भी सहर्ष तैयार हो गया। दोनों के ही परिवारजनों ने एक-दूसरे का पूरा ख्याल रखने तथा शीघ्र वापस आने को कहकर उनको जाने की अनुमति दे दी।

सुपत तथा विपत जब चलते-चलते दूसरे राज्य की सीमा में पहुंचे तब सीमा के पूर्व उन्हें एक जंगल मिला। जंगल में पगडंडी पर चलते-चलते विपत जब थक गया तो उसने एक पेड़ के नीचे सुपत से आराम करने की इच्छा प्रकट की। दोनो ही मित्र पेड़ के नीचे सो गए। कुछ समय के पश्चात् सुपत को सरसराने की आवाज सुनाई दी तो उसकी आंख खुल गई। उसने एक सर्प को देखा वो विपत को डस झाड़ियों में चला गया। विपत मूर्छित हो गया। बाद में उसकी मृत्यु हो गई।

अपने मित्र के मृत शरीर को देखकर सुपत विलाप करने लगा। अपना सर भी पेड से पटकने लगा। तभी सामने की पगडंडी से एक साधु उसे आते दिखाई दिए। श्वेत दाढ़ी, श्वेत केश, चौड़ा ललाट चेहरे पर तेज, अत्यंत ही चमत्कारी व्यक्तित्व उन साधु का प्रतीत हो रहा था। साधु सुपत के पास आए और पूछा पुत्र तू क्यो विलाप कर रहा है। तब सुपत ने सारी घटना उन्हें बताई। तब साधु बोले देख पुत्र इसकी आयु पूर्ण हो चुकी है। इसलिए इसकी मृत्यु हो गई। फिर भी तुम्हारे दु:ख को देखकर में इसे जीवित कर सकता हूं। किन्तु एक कार्य तुम्हें करना होगा जिसके लिए शायद ही इस जगत में कोई तैयार हो। साधु की बात सुनकर सुपत ने कहा

महाराज मुझे कुछ भी करना पड़े मैं अपने मित्र को जीवित करने के लिए सब कुछ करने को तैयार हूं। साधु बोले-तो सुनो, तुम्हारी आयु के अभी चालीस वर्ष बाकी हैं यदि तुम अपनी आयु के बीस वर्ष इसे दे दो तो यह जीवित हो जाएगा। सुपत ने पूछा मैं तैयार हूं बाबा, मुझे क्या करना होगा। साधु ने अपने कमंडल से थोडा पानी सुपत के हाथों में दिया और कहा तुम संकल्प लेकर कहो कि तुमने अपनी आधी उमर इसे दी और पानी इसके ऊपर डाल दो। एक बात और कभी मौका आए या यह तुम्हें धोखा दे तो यदि यह पानी हाथ में लेकर वह कहे कि जो चीज मैने तुमसे ली थी वह वापस करो तो तुम्हारी उम्र तुम्हें वापस मिल जाएगी और इसकी फिर मृत्यु हो जाएगी। सुपत ने हाथ का पानी विपत के ऊपर इस संकल्प के साथ छोड दिया कि आधी उम्र उसने विपत को दी। जल के छींटे पड़ते ही विपत जीवित हो उठा। उम्र की बात छोड़कर साधु ने विपत को जब घटना सुनाई तो वह सुपत को बहुत धन्यवाद देने लगा। दोनों मित्रों को छोड़कर साधु चले गए। सुपत और विपत भी पगडंडी के रास्ते चल पड़े।

दूसरे नगर में आकर सुपत और विपत का सुनारी का कार्य चल पड़ा। दोनो सोने, चांदी के आभूषण बनाते, साफ करते और मेहनताना भी कम से कम लेते। इससे दिनोंदिन उनके व्यवसाय में तरक्की होती चली गई। दोनों के पास बहुत सारा धन भी एकत्रित हो गया। एक वर्ष व्यतीत हो गया था। सुपत ने विपत से अपने नगर राजपुर चलने को कहा तब दोनों ने अपनी कमाई के धन की एक-एक पोटली बांध अपने पास रख ली और अपने नगर को चल दिये जब चलते चलते राजपुर कुछ दूरी पर रह गया तो विपत के मन में खोट आ गया उसने सोचा कि यदि सुपति की पोटली भी उसे मिल जाए तो उसका धन दुगुना हो जाएगा। रास्ते मे ही एक कुएं के पास विपत ने सुपत से पानी पीने की इच्छा प्रकट की और जब सुपत उसके लिए डोरी तथा लोटे से पानी खींच रहा था तो उसे धक्का देकर कुए मे गिरा दिया और उसकी पोटली लेकर चलता बना। अपने नगर पहुंचकर विपत ने सुपत के परिवारवालों को कह दिया कि वह कुछ दिन बाद आएगा।

इधर सुपत को जैसे ही कुएं में धक्का देकर विपत ने गिराया तो गिरते समय कुए में ही उगे एक वृक्ष की डाल उसके हाथ में आ गई और वह उस डल को पकड़कर लटक गया। बाद में अन्य राहगीरों को पानी खींचते समय उसने आवाज दी और उसे कुएं से बाहर उनके द्वारा निकाल लिया गया। सुपत को अपने मित्र के धोखे पर अत्यंत क्रोध आया। फिर भी उसने सोचा कि वह विपत को माफ कर देगा। दुष्ट के साथ सज्जन अपनी सज्जनता नहीं छोड़ते। वह भी अपने नगर वापस आ गया।

नगर में परिवारजनों से मिलने के पश्चात् वह विपत के घर गया और उससे वर्ष भर के कमाए धन की पोटली लौटाने को कहा तो विपत साफ बदल गया।

उसने कहा कि उसके पास कोई पोटली नहीं है। सुपत ने उसे [illegible] [illegible]
किन्तु वह नहीं माना तो नगर पंचायत के समक्ष सच्चाई के लिए उसने अपील की। नगर पंचायत प्रमुख के सम्मुख जब सुनवाई हुई तब भी विपत साफ मुकर गया। तब सुपत ने उसे और उसके परिवारवालों को बहुत समझाया और पोटली लौटाने को कहा किन्तु विपत मानने को तैयार नहीं हुआ।

विपत के इस धोखे से सुपत अत्यंत ही दु:खित हुआ। आखिरी बार उसने फिर विपत से कहा-मित्र इस तरह अपने मित्र से धोखा करना उचित नहीं है। इससे तुम्हारा बहुत ही अनिष्ट हो सकता है किन्तु उसकी समझाइश का विपत पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, तब सुपत को साधुवाली बात ध्यान आई।

तब सुपत ने विपत से कहा अच्छा मैं अपनी पोटली भी तुम्हें दे दूंगा। तुम सिर्फ थोड़ा सा पानी हाथ मे लेकर यह कहते हुए पानी मेरे हाथ में दे दो कि जो चीज मैंने तुमसे ली वह आज वापिस करता हूं। विपत ने सोचा कि इसमें मेरा क्या बिगडेगा। सुपत का धन भी मेरा हो जाएगा। तुरंत ही हाथ में पानी लेकर उसने पानी सुपत के हाथ में यह कह कर छोड़ दिया, जो चीज मैंने तुमसे ली थी उसे आज मैं तुम्हें वापिस करता हूं। विपत ने इतना कहा ही था कि वह गिर पड़ा और उसके प्राण पखेरू उड गए। नगर पंचायत प्रमुख और विपत के परिवारवालों को तब सुपत ने उम्र देनेवाली घटना बताई। सभी कहने लगे लालच आदमी को अंधा कर देता है।

इस तरह सच्चे मित्र के साथ धोखा करके मित्रद्रोह का परिणाम विपत को अपने प्राण गवाकर मिला। सच कहते हैं मित्र का साथ सच्चे मन से निभाना चाहिए और कभी भी अपने मित्र के साथ धोखा नहीं करना चाहिए।

—राकेश कुमार जैन
गांधीनगर, बालाजी मंदिर रोड
इटारसी (म. प्र.)

लड़ाई का मुद्दा

एक गांव था। वहां एक मां-बेटी रहती थी। घर में, वे दोनों ही थी। उनके कोई और नहीं था।

मां-बेटी का स्वभाव बड़ा तीखा था। [illegible] = किसी से लड़ना उनकी आदत थी। लड़ने का कोई कारण हो, न हो, वे कोई कारण ढूंढ लिया करती थीं। जैसे वे चौबीसों घंटे लड़ने के लिए कमर कस कर तैयार हों।

लड़ते समय जैसे उनके मुंह से तोप के गोले फूटा करते थे।

मां-बेटी से गांववालों को नाक में दम था। लोग दोनों से घबड़ाते थे।

एक दिन गांववालों ने तय किया कि कोई भी उनसे बात न करेगा। न बात होगी, न बाता-बाती होगी। पूर्ण असहयोग।

अगले दिन माँ-बेटी से कोई न बोला। माँ-बेटी बात करने के लिए तरसती रहीं। पर कोई उन्हें सुननेवाला न था। इससे माँ-बेटी परेशान हो गयीं। उनका पेट फूलने लगा। सेहत खराब होने लगी।

वे भगवान से प्रार्थना करने लगीं 'भगवान ! कोई तो मुद्दा दे। हम तुम्हें सवा रुपये का प्रसाद चढ़ा देंगी। ऐसे तो हम बिना लड़े, मर ही जायेंगी।

एक दिन बेटी ने कहा, माँ, तू घर बैठ। मैं मामाला ढूंढती हूँ। यह कहकर वह कुएँ पर जा पहुँची। वहाँ पाँच छः औरतें पानी भर रही थीं। पर, उसे देख सबने मुँह फेर लिया।

बेटी ने स्थिति का जायजा लिया और पासा फेंका। वह बड़बड़ाने लगी। 'आज मैं घर पर खिचड़ी बनाऊँगी। घर पर हम दोनों तो हैं। माँ और बेटी बस। एक पाव चावल काफी होगा। फिर उसमें दो पाव दाल डालूंगी। इतना कह उसने तिरछी नजरों से कुएँ पर खड़ी सभी औरतों को देखा। पर, कोई कुछ न बोला। सभी चुप थीं।

तब बेटी 'आगे बोली', उसमें मैं तीन पाव नमक डालूंगी। इसे सुनकर भी कोई कुछ न बोला।

तब बेटी, जोर से, आगे बोली, 'और उसमें मै चार पाव लाल मिर्च डालूंगी।'

यह सुनते ही एक औरत से रहा नहीं गया। वह बोल ही पड़ी, 'अरे, यह कैसी खिचड़ी बनेगी।'

ये सुनना था कि बेटी का मुरझाया चहेरा खिल उठा। उसने जोर जोर से मा को पुकारा, "मां रे मां ! दौड़, जल्दी दौड़। मुद्दा मिल गया।"

मां तो तैयार बैठी ही थी। तुरंत आ धमकी। बेटी बोली, "हमारी खिचड़ी ! अमृत हो या जहर ! अच्छी हो या बुरी। हम खायेंगे। तू कौन होती है टोकने वाली।

और मां-बेटी कुएं पर जुटी औरतों से लड़ने लगीं। हफ्तों से मन में जमीं गुबार निकालने लगीं। लड़ती रहीं, लड़ती रहीं। उन्हें मुद्दा जो मिल गया था ! !

—रामवचन सिंह आनन्द

थानारोड, चक्रधर पुर-**833102**

जि.-सिंहभूमि पश्चिमी (बिहार)

मम्मी से पूछकर !

पांचवां वर्ग। वर्ग में 25 छात्र एवं 15 छात्राएं उपस्थित। पहली घंटी का समय। इतिहास विषय।

गुरुजी वर्ग में पहुचे और बोले। बच्चो ! आज तुम लोगों को मैं जापान देश का प्रसग सुना रहा हूं। जानते हो, जापान कहां हैं ?

गुरुजी ने दिवाल पर नक्शा टांगा। उसे बच्चों को दिखाया और कहा – यह रहा एशिया महादेश और इसके उत्तरी-पूर्वी कोने पर यह रहा छोटा-सा द्वीप--जिसे कहते हैं जापान। चारों ओर प्रशान्त महासागर का पानी की पानी।

तो आगे सुनो, गुरुजी ने बताना जारी रखा। सन् 1945 की बात है। द्वितीय विश्व युद्ध जोरों पर था। छोटे से जापान ने अमेरिका जैसे बडे देश की नाकों दम कर रखा था। सो उसे घुटने टेकवाने के लिए अमेरिका ने उस पर दो एटमबम गिरा दिये। भला एटमबम के प्रहार को कौन झेल सकता है। इससे जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नामक नगर लगभग मिट्टी में मिल गये। हजारों लोग मारे गये। हजारों अपाहिज हो गये। जानते हो बच्चो ! जापान पहला देश है जो एटमबम का शिकार बना। उसके बाद, आज तक किसी देश को एटमबम का वार झेलना नहीं पड़ा है। उसी जापन का यह प्रसंग है। गौर से सुनो–

गुरुजी आगे बोले, वहां के एक पांचवे वर्ग में एक जापानी टीचर पढ़ाने पहुचे। वर्ग में जापानी छात्र-छात्राएं थीं। जापानी टीचर छात्रों को भगवान बुद्ध के बार मे बताने लगे। वे बोले भगवान बुद्ध का जन्म भारतवर्ष में हुआ था। भगवान बुद्ध ने सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेश दिया था। जिससे संसार का कल्याण हो सके। उनके संदेश का पालन कर मनुष्य सुख और शान्ति पाता है। हम जापानी उनके भक्त हैं। हम बौद्ध हैं। भगवान बुद्ध के हम पर बड़े उपकार हैं। उनके कारण ही हमारा जीवन सुखी और शान्तिमय है। हम उनके ऋण को चुका नहीं सकते।

इतना बताने के बाद जापानी टीचर ने अपने भोले-भाले जापानी छात्र। छात्राओं से कहा, अच्छा बच्चो ! एक बात सोचकर बताओ। अगर भगवान बुद्ध बन्दूक लेकर जापान देश पर चढ़ाई कर देते हैं तो तुम लोग क्या करोगे ? हां, हा, बोलो, बोलो।

फौरन एक नन्हा छात्र उठ खडा हुआ। उसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा

था। वह गरजते हुए, बोला में इन्हें गोली मार दूगा।

गुरुजी ने कहा, बच्चो ! जापानी टीचर का पाठ यहीं खत्म हुआ। फिर उन्होंने कहा, अब तुम लोग बोलो। भारत के नौनिहालो ! देश के कर्णधारों ! हम तो भगवान के भक्त हैं। हम उनकी पूजा करते हैं। मान लो, भगवान तीर-धनुष लेकर हमारी मातृभूमि भारतवर्ष पर चढ़ायी कर देते हैं तो तुम क्या करोगे ? बोलो बच्चो, बोलो, बोलो।

इस पर चारों ओर सन्नाटा छा गया। बच्चे एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

तब गुरुजी ने एक बच्चे की ओर इशारा करते हुए कहा, हां, हां ! तुम बोलो ! तुम, बोलो तुम क्या करोगे ?

पहले तो बच्चा सोच मे पड़ गया फिर हिचकचाते हुए बोला, 'मम्मी से पूछ कर बताऊंगा।

—राम वचन सिंह 'आनन्द'
थाना रोड
चक्रधर पुर-833102
जि. : सिंहभूमि पश्चिमी (बिहार)

अपूर्व बलिदान

इतिहास प्रसिद्ध अनेक वीरों को जन्म देनेवाली राजस्थान की धरती की त्याग, दान, बलिदान और अनुपम शौर्य की गौरव गाथाओं ने भारत का सिर ऊंचा किया है। सैकड़ों वर्ष पूर्व अपूर्व बलिदान की एक ऐसी ही घटना चित्तौड़ में घटी थी। जिसे कभी भी भुलाया न जा सकेगा।

उस समय चित्तैड़ के योग्य शासक थे राणा संग्राम सिंह। उनकी वीरता, कुसलता और सज्जनता के कारण सरदार और प्रजाजन, सभी उनका बहुत सम्मान करते थे। सभी सब प्रकार से प्रसन्न और सुखी थे, किन्तु समय सदा एक जैसा नहीं रहता। चारों ओर प्रकाश फैलानेवाला सूर्य पश्चिम दिशा में ओझल हो जाता है। अँधेरे की काली चादर सब कुछ ढकने लगती है। रात के अंधियारे मे हाथ को हाथ नहीं दिखायी देता। राणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद चित्तौड़ की दशा भी बहुत कुछ ऐसी ही हो गयी थी।

राणा संग्राम सिंह की मृत्यु के पूर्व ही उनकी रानी का भी देहान्त हो चुका था। राणा के न रहने से राजमहल में दु:ख की काली छाया फैल गयी थी। राणा के दो पुत्र थे--विक्रमादित्य और उदय सिंह। तीसरा बनवीर एक दासी की कोख से जन्मा था।

विक्रमादित्य बड़ा था इसलिए उसको ही सिंहासन पर बैठाया गया, किन्तु वह केवल नाम का ही विक्रमादित्य था। राजा में शौर्य राजनीति, काम लेने का कौशल, सहृदयता, धैर्य, दूरदर्शिता, तत्काल निर्णय लेने की सहज बुद्धि और प्रजा के हित मे नये-नये कार्य करने की योग्यता होना आवश्यक होता है। इन सभी गुणों का उसमें अभाव था। उसे केवल मौज-मस्ती से प्रेम था। परिणाम यह हुआ कि वह शासक के रूप में सफल न हुआ। सरदारों और राज-हितैषियों को इतनी निराशा हुई कि चित्तौड के गौरव की रक्षा करने के लिए उन्होंने कुछ ही समय के पश्चात विक्रम को राजगद्दी से उतरने को विवश कर दिया।

राजकुमार उदय सिंह केवल छ: वर्ष का होने के कारण सिंहासन पर बैठाया नहीं जा सकता था। राजमाता भी नहीं थी, जो संरक्षिका के रूप में शासन चलातीं। बनवीर युवा था। उसकी अवस्था सिंहासन पर बैठने के योग्य थी। दासी-पुत्र होने पर भी उसमें राणा स ाम सिंह का रक्त थ । अतएव. सरदारों और स्वर्गीय राणा

के मन्त्रियो ने निश्चय किया कि जब तक राजकुवर उदय सिह की अवस्था सिहासन के याग्य हो, तब तक बनवीर ही सही। उनका विचार था कि राजकार्य चलाने का उत्तरदायित्व तो बनवीर को सौंपा ही जा सकता है।

बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा था। बनवीर सपने में भी न सोच सकता था कि वह कभी चित्तौड़ की गद्दी पर बैठेगा। भाग्य ने परिस्थितियों को उसके अनुकूल मोड दे दिया था। वह स्वभाव से ही दुष्ट और क्रूर था। अवसर पाते ही उसके मन मे बसा शैतान उठकर बैठ गया। उसे यह योजना अच्छी न लगी कि कुछ वर्षों के राज-सुख के बाद उसे राजगद्दी से उतार दिया जाय। वह सोचने लगा-'गद्दी से उतार दिये जाने के बाद उस की स्थिति क्या होगी। उसका प्रभुत्व समाप्त हो जायेगा.....कोई भी उसकी बात नहीं मानेगा.....नहीं..नहीं वह ऐसा दिन कभी भी नहीं आने देगा। वह ऐसा मूर्ख नहीं कि चार दिन सवादिष्ट भोजन पाकर अपने भाग्य को सराहे....सन्तुष्ट हो जाये और भविष्य के सम्बन्ध में आँखें बन्द करके बैठा रह जाय।.....सन्तुष्ट हो जानेवाला राजा नष्ट हो जाता है....शतरंज सिखाती है मात देना ...चुभने वाले काँटो को वह उखाड़ फेंकेगा..... फूल बनने से पहले ही वह कली को मसल डालेगा'...।

बनवीर ने समय नहीं खोया। वह उठकर खड़ा हो गया। नंगी तलवार लिए वह विक्रमादित्य के भवन की ओर झपट चला। किसी में इतना साहस न था कि उसकी राह रोक सके। सब असावधान थे। महल में सफाई करनेवाली एक दासी थी चम्पा। बनवीर की दुष्ट प्रकृति से वह अच्छी तरह परिचित थी। नये राजा के उग्र रूप को देखते ही उसे यह समझते में देर न लगी कि क्या होनेवाला है। उधर बनवीर ने विश्राम कर रहे बडे राजकुमार के सिर को तलवार के एक ही वार मे धड से अलग किया, उधर दौड़ती-हाँफती स्वामीभक्त चम्पा ने उदय सिंह के भवन मे प्रवेश किया। एक ही सॉस में उसने कुँवर की संरक्षिका पन्ना धाय को बतला दिया कि बनवीर नंगी तलवार लिये हुए आ रहा है और उनके के प्राण पर सकट हैं।

पलक झपकते ही पन्ना ने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। विद्युत जैसी गति से उसने सोते हुए उदय को एक टोकरे में लिटाकर उसे एक मैले-कुचैले वस्त्र से ढका और वस्त्र के ऊपर पत्ते, कागज, कूड़ा करकट आदि भी डाल दिया। फिर वह चम्पा से बोली, "उदय को तुम गुप्त मार्ग से शीघ्र ले जाकर वीरा नदिया के तट पर मेरी प्रतिक्षा करो।"

चम्पा के जाते ही धाय से अपनी कोख से उत्पन्न प्राण-प्यारे बेटे चन्दन को उसके बिस्तर से उठाकर पल-भर के लिए अपनी छाती से लगा लिया। उसे उदय की शय्या पर लिटाकर मणियों-मोतियों की झालरवाले ओढावन से ढक कर वह पीछे हटी ही थी कि हत्यारा बनवीर वहाँ आ पहुँचा। आते ही तलवार चमकाते हुए

लाल लाल आखो से उसने पन्ना को घूरा और प्रश्न कर दिया 'कहा है उदय' ?

पन्ना ने सोये हुए चन्दन की ओर अँगुली से संकेत कर दिया। कंस जैसे क्रूर राजा ने निर्दोष-अबोध चन्दन के शरीर को चीर डाला, जो लगभग उदय जितना ही बड़ा था। चन्दन चीखा, तड़पा और मूर्ति बनी माँ के देखते-देखते उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

"हः हः हा हा हा"—अट्टहास करता, ठहाका लगाता हुआ और झूमता हुआ बनवीर वहाँ से ऐसा चला गया जैसे बड़ी भारी विजय प्राप्त करके गया हो।

और पन्ना धाय ? वह दीवार पर टंगे रानी के चित्र को दृष्टि बाँधे एकटक देख रही थी। उसके दोनों हाथ जुडे हुए थे और ओठ ऐसे हिल रहे जैसे धीमे स्वर मे बुदबुदा रही हो—"रानी माँ ! मैंने आपका नमक खाया है .....आपका दिया हुआ अन्न खाया है। मेरा रोयां-रोयां आपका ऋणी है......प्राण छोड़ते समय आपने कुँवर का हाथ मेरे हाथ में देते हुए कहा था 'मैं.....चलती हूँ, पन्ना ....अब तुम ही इसकी माँ हो......इसकी रक्षा......मैंने आपको वचन दिया था कि मैं अपने प्राण देकर भी उदय की रक्षा करूंगी....आपने देखा कि उसकी रक्षा के लिए अपने कलेजे के टुकडे चन्दन का मोह मैंने नहीं किया.... लेकिन अभी मेरा काम पूरा नहीं हुआ.....इतने से ही नमक चुकता नहीं हुआ.....अभी तो पहली परीक्षा दी है मैंने....मेरा समस्त जीवन उदय के लिए ही हैं.......वही मेरा बेटा है। बनवीर को जब महल के सेवको से पता चलेगा कि उसने जिस बालक के प्राण लिए वह उदय नहीं, चन्दन था तो वह बौखला जायेगा। ...कुँवर को मुझे बनवीर की पहुँच के बाहर पहुँचाना है।"

पन्ना ने रानी के चित्र के सामने सिर झुका दिया। अश्रु से छलछलाये नेत्रों की अन्तिम दृष्टि चन्दन के शव पर डाली। पुत्र के लिए दुखी होने या स्नेह का अन्तिम स्पर्श देने का समय भी उसके पास न था। वीरा के तट पर शीघ्र पहुँचने के लिए वह गुप्त मार्ग की ओर चल दी।

—डॉ० रामस्वरूप दुबे
द्वारा-मोहन सस
48/154, पचकूचा जनरल गज
कानपुर-208001

अंजनि-सुत प्रसन्न हो गए

बहुत ही सन्दर स्थान था। हरे-भरे वृक्षों की छाया थी। निकट ही गंगा की धारा का निर्मल जल कल-कल छल-छल करता बहता रहता था। वहीं तीन मन्दिर थे। पहला हनुमान जी का, दूसरा भगवान सीताराम जी का और तीसरा औढर-दानी महादेव गौरी शंकर का। स्थान इतना साफ-सुथरा, रमणीक और पवित्र था कि जो कोई भी वहाँ एक बार पहुँच जाता, उसे अनोखा सुख अनुभव होने लगता था। वह वहाँ बार-बार जाने लगता था।

भक्तगण वहाँ के मन्दिरों के दर्शन के लिए पहुँचते ही रहते थे। फिर भी सब मन्दिरों में प्रतिदिन एक जैसी भीड़ नहीं होती थी। शंकर जी के भक्त सोमवार को अधिक दिखायी देते तो हनुमान जी के मंगलवार और शनिवार को । हाँ, सीताराम जी के मन्दिर के लिए सभी दिन लगभग एक समान थे। श्री सीताराम जी की मुस्कुराती हुई विशाल मूर्तियां भक्तों को सहज ही आकर्षित करती थीं।

तीनों मन्दिरों के पुजारी अलग-अलग थे। उस दिन गुरुवार था। दोपहर का समय हो गया था। सीताराम जी के मन्दिर में तो भक्त आ-जा रहे थे, किन्तु हनुमान जी के मन्दिर में सन्नाटा था। घोर सन्नाटा। ऐसा सन्नाटा तो पहिले कभी नहीं देखा था। प्रतीक्षा करते-करते पुजारी जी की आंखें पथरा गयी थीं। टागे बैठे-बैठे दुखने लगी थीं। वे बार-बार सोच रहे थे, स्मरण करने का प्रयत्न कर रहे थे कि सवेरे-सवेरे किस मनहूस का मुंह देखा था। दो बज गया होगा। इतनी देर हो जाने पर बोहनी तक नहीं हुई। भक्तों द्वारा यह उपेक्षा वे सहन नहीं कर पा रहे थे। नहीं रहा गया तो वे उठे और बार-बार घंटा बजाने लगे। फिर भी कोई आकर्षित नहीं हुआ, कोई भी आता हुआ दिखायी नहीं दिया। वे फिर बैठ गये। धैर्य उनका साथ छोड चुका था। सभी प्रयत्न बेकार साबित हुए थे। अपने ही सिर के बाल नोचने का मन होने लगा था।

शंकर जी के मन्दिर के पुजारी जी पर्दा गिराकार सरियों से बना कपाट बन्द कर के जा चुके थे। सीताराम जी के मन्दिर की घन्टियां रह-रहकर तब भी बज उठती थी। हनुमान जी के पुजारी फिर अधीर हो उठे। हनुमान जी के नेत्रों को

एकटक देखते देखते उनके अपने नेत्रो को अश्रुधार बहने लगी मन ही मन वे हनुमान जी से प्रार्थना करने लगे, हे श्री सीताराम नी के परम भक्त, हे सकट मोचन अंजनि-सुत अपने भक्त की यह कैसी कठोर परीक्षा, ले रहे हो ! आज प्रात:काल से अब तक एक बताशा भी नहीं मिला। भूख के मारे पेट कुलबुला रहा है। आप तो अपने आराध्य देव को प्रसाद चढ़ते देखकर मगन है। क्या आपका भक्त आज आपका प्रसाद पाये बिना ही रह जायगा .. ।''

पुजारी जी ने अचानक ही हनुमान जी के मुखमण्डल की ओर देखा। संकट मोचन उन्हें मुस्कराते हुए दिखाई दिये। उनका खुला हुआ हाथ भी धैर्य बंधाता प्रतीत हो रहा था। मन्दिर की ओर आती हुई सूनी पगडडी पर जैसे ही उनकी दृष्टि पड़ी, हाथों में टोकरी थामे हुए एक सेठ जी आते हुए दिखायी दिये। मन भक्ति और हर्ष से भर गया। दोनों हाथ जुड़ गये और वे मन ही मन कहने लगे, "आपने अपने भक्त की पुकार सुन ली, आप प्रसन्न हो गये है अजनि के सुत।

सेठ जी निकट आने पर जैसे ही सीताराम जी के मन्दिर की ओर मुड़ते हुए प्रतीत हुए, पुजारी जी अपने आप को रोक नहीं पाये। ऊंचे स्वर वे पुकार उठे, "सेठ जी, हनुमान जी आपको बुला रहे हैं।''

सेठ जी पुजारी जी के पास आ गये। कुछ क्षण तक वे प्रश्न सूचक दृष्टि से पुजारी जी को देखते रहे। पुजारी जी को मुस्कराते हुए देखकर वे आश्चर्य और प्रसन्नता से भर गये। फिर बोले, "महाबली की कलियुग में कृपा। मुझ जैसे साधारण मनुष्य को बुला रहे हैं श्री रामदूत ?''

"यहां आप किस देवी-देवता की शरण मे आये हैं ? क्या कष्ट है आपको ? क्या कुछ खो गया है ?'' पुजारी जी ने पूछा।

सेठजी जी ने कहा, "मैं दया के सागर भगवान श्री सीताराम को प्रसन्न करने के लिए पांच किलो मिठाई लेकर आया हूं। मेरी धर्मपत्नी पांच दिन हुए कहीं चली गयी है, उसका कोई पता नहीं चला।''

पुजारी जी की प्रसन्नता बढ़ती चली जा रही थी। सेठ जी को ढाढस बंधाते हुए वे बोले, "भगवान सब करने में समर्थ हैं। आप ठीक स्थान पर आ गये। श्रीराम की धर्मपत्नी सीता माता का पता अंजलि-सुत हनुमान जी ने लगाया था, यह बात तो सभी लोग जानते हैं। आपकी धर्मपत्नी भी आपको इन्हीं महावीर की कृपा से मिल जायेंगी, जिनके हृदय में श्री सीताराम विराजते हैं।''

सेठ जी का मुखमण्डल ऐसे खिल गया जैसे शतदल कमल की पंखुड़िया। उन्होंने शीघ्रता से टोकारी संकट मोचन के चरणों में रख दी। साष्टांग दण्डवत करके बार-बार चरण-स्पर्श किये। फिर पुजारी जी के चरणों में भी अपना सिर रख दिया। पुजारी जी ने उनके सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखा। फिर

उन्होंने भोग लगाया, सेठ जी के मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगाया और प्रसाद दिया।

सेठ जी प्रसाद लेकर चले तो अति प्रसन्नता के कारण उनके पैर जैसे धरती पर नहीं पड़ रहे थे।

पुजारी जी ने भाव विभोर होकर अपने इष्टदेव के चरण-स्पर्श किये, हाथ जोड़े, मन्दिर के कपाट बन्द किये और टोकरी लेकर अपने घर की ओर चल दिये।

—डॉ. रामस्वरूप दुबे
द्वारा-मोहन संस, 48/154 पंचकूचा, जनरलगंज,
कानपुर-208001, उत्तर प्रदेश

अभियान

तपन प्राय: ही पैदल स्कूल जाता। उसके घर से स्कूल लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर था। लेकिन जब से उसने पढा कि पैदल चलना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है, तब से उसने निर्णय कर लिया कि वह पैदल ही स्कूल आया-जाया करेगा। वह ठीक समय से स्कूल जाने के लिए घर से निकलता और स्कूल से छूटकर सीधे घर आता। पढ़ने में वह इतना होशियार था कि स्कूल मे उसे कक्षा का मानीटर बना दिया गया। स्कूल के मास्टरों को वह इसीलिए प्रिय था और उसके साथी भी उसे बहुत चाहते थे।

वह सदैव साफ-सुथरे कपड़े पहनकर ही स्कूल जाता था। हालांकि उसके पास दो ही जोड़ी कपड़े थे, लेकिन वह जब एक जोड़ी पहने होता तब दूसरी जोडी कपडो को साफ करके रख लिया करता था।

उस दिन भी तपन स्कूल जाने के लिए ठीक समय पर घर से निकला। उसने सदैव की तरह एकदम साफ क्रीज किए हुए कपड़े पहन रखे थे। वह जब मोहल्ले के एक मोड़ से गुजर रहा था, उसने कूडे से भरी टोकरी थामे झुम्मन चाचा को देखा। झुम्मन चाचा का घर उसके घर से कुछ ही दूरी पर था। वह अभी चार कदम ही आगे बढ़ पाया था कि उसने देखा, "झुम्मन चाचा ने टोकरी का कूडा सडक के किनारे फेंक दिया है। कूड़े में अंगीठी की राख भी थी, जो फेंकते ही उड़कर तपन के चेहरे और कपड़ों पर आ गिरी। राख के कुछ कण उसकी आखों में भी चले गये। वह खड़ा होकर आंखें मलने लगा। फिर रूमाल से आंखें पोंछकर उसने चेहरे पर की राख साफ की और अपने कपडों को भी झाडा। उसने इधर-उधर नजर घुमाकर देखा। झुम्मन चाचा उसे कुछ दूरी पर ही खडे दिखाई पड गये। वह किसी से बातें कर रहे थे।

तपन लपककर उनके पास पहुंचा और अत्यन्त नम्रतापूर्वक बोला, "चाचा जी, आप सड़क के किनारे कूड़ा क्यों फेंकते हैं, जब कि नगर निगम का कूड़ाघर बहुत पास में है ?"

तपन की बात सुनकर झुम्मन चाचा को गुस्सा आ गया। नाक भौं सिकोडते हुए वह बोले, "क्या मैं ही अकेला सडक के किनारे कूड़ा फेंकता हूँ ? मोहल्ले के अधिकांश लोग फेंकते हैं।" फिर साथवाले आदमी की ओर घूमकर तपन का उपहास-सा उडाते हुए वह बोले, "देखा साहब आपने, कल के छोकरे चले हैं मुझे

सीख देने   हा हा हा   ।

झुम्मन चाचा की बात का बिना बुरा माने ही तपन ने पुन. विनम्रतापूर्वक कहा, "चाचा जी, आपकी तरह ही और लोग भी सोचते होंगे। लेकिन इस प्रकार इधर-उधर कूड़ा फेंकने से मोहल्ले में गन्दगी फैलती है, जिससे अनेक प्रकार की बीमारियां फैल सकती हैं"

"तपन, छोटे मुंह बड़ी बातें अच्छी नहीं लगतीं। उपदेश बाद में देना। पहले पढने जाओ।" क्रोध में उफनते हुए झुम्मन चाचा ने कहा।

तपन ने समझ लिया कि उनसे अधिक कुछ कहना व्यर्थ है। स्कूल के लिए भी देर हो रही थी, अत: वह चुपचाप स्कूल चला गया। आज उसने पहली बार इस बात की ओर ध्यान दिया कि सड़क के इधर-उधर कूड़ा फेंकनेवालों में केवल झुम्मन चाचा ही नहीं हैं, और भी लोग हैं; जो आलस्यवश नगर निगम के कूड़ाघर तक न जाकर अपने-अपने घरों से थोड़ी दूर पर सडक के किनारे कूड़ा फेंक देते हैं। स्कूल में वह सारे समय इसी विषय पर सोचता रहा कि लोगों को कैसे समझाया जाय। लेकिन उसके दिमाग में कोई भी उपाय नहीं सूझा; जब भी वह झुम्मन चाचा की बातों को याद करता, निराश हो जाता।

वह कई दिनों तक इस विषय पर बिचार करता रहा। एक दिन वह इसी विषय में सोचता हुआ स्कूल जा रहा था कि उसने झुम्मन चाचा के लड़के करीम को डॉक्टर के यहां से आता हुआ देखा। करीम अकेला ही दवा की शीशी थामे लडखड़ाते कदमों से घर की ओर जा रहा था। तपन तेजी से चलकर उसके पास पहुचा और उससे पूछा, "करीम, क्या तबीयत ठीक नहीं है ?"

"हां, तपन। डॉक्टर के यहां से दवा लेकर आ रहा हूं। मलेरिया हो गया है।"

तपन ने उसका शरीर छूकर देखा। ज्वर की तीव्रता के कारण वह तप रहा था। स्कूल पहुंचने में देर हो जाने की चिन्ता त्याग कर तपन करीम को सहारा देकर उसके घर तक ले गया। दरवाजे पर उसने झुम्मन चाचा को खड़ा देखा। उनके निकट पहुचकर वह बोला, "चाचा जी, करीम को बहुत तेज बुखार है। आप इसे अन्दर ले जाइये।"

झुम्मन चाचा ने उसकी बात का कुछ जवाब दिया या नहीं, इस ओर ध्यान दिए बिना ही वह तेजी से स्कूल के लिए चल पड़ा; और जब वह स्कूल पहुंचा, मोहल्लेवालों को समझाने का एक उपाय उसके दिमाग में आ गया था। दिनभर पढने के बाद शाम को जब छुट्टी हुई तब उसने स्कूल में पढने आनेवाले मोहल्ले के सभी लड़कों को स्कूल के मैदान में इकट्ठा होने के लिए कहा। मोहल्ले के पन्द्रह लडके वहां पढ़ने जाते थे। जब पूरे पन्द्रह लड़के इकट्ठे हो गये तब तपन ने बीच मे खड़े होकर मोहल्ले की सड़कों के चारों ओर फेंकी जानेवाली गन्दगी की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया और कहा, "साथियो, दो दिन बाद रविवार है।

रविवार को हममे से कोई भी आराम नहीं करेगा हम सभी नाश्ता लेने के बाद अपने-अपने घरों से टोकरी और फावड़ा-बेलचा, जिसके यहां जो कुछ भी हो, लेकर सड़कों के किनारे लोगों द्वारा फेंके गये कूड़े को इकट्ठा करके नगर निगम के कूड़ाघर में फेंकेंगे। गन्दगी के कारण मोहल्ले में मलेरिया फैलने की आशंका है। आज ही मैंने झुम्मन चाचा के लड़के करीम को मलेरिया से बीमार देखा है।''

लडके वैसे भी तपन का सम्मान करते थे। उसकी बात सुनकर सभी तैयार हो गये, और रविवार की सुबह-सुबह ही पन्द्रह लडको का दल मोहल्ले की सड़को के आस-पास इकट्ठे कूड़े के ढेरों की सफाई में जुट गया। तपन सबसे आगे बड़ी तेजी से काम कर रहा था। उसने एक डण्डे में एक तख्ती बांधकर उसे सड़क के एक ओर गाड़ दिया था। तख्ती पर लिखा था, "मोहल्ले को साफ रखना हमारा परम कर्तव्य है। सफाई स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होती है।''

पन्द्रह लड़कों का वह दल पूर्ण मनोयोग से टोकरों में कूड़ा भरकर नगर निगम के कूड़ाघर में फेंकने में व्यस्त था। उस समय उन सबमें एक ही धुन लगी थी—सफाई.. सफाई...मोहल्ले की सफाई।

लगभग एक घंटा बाद तपन ने झुम्मन चाचा को कन्धे पर फावड़ा और टोकरा लिये आता देखा। पहले तो वह कुछ समझ नहीं पाया, लेकिन क्षणभर मे ही जब वह उसके निकट आकर प्यार से उससे बोले, "बेटा तपन, तुम छोटे होते हुए भी मुझसे अक्ल में बड़े हो। सच, यह गन्दगी हम लोगों के लिए हानिकारक हो सकती है, मैंने कभी नहीं सोचा था। डॉक्टर ने बताया है कि करीम को मलेरिया गन्दगी के कारण ही हुआ है।''

तपन कोई उत्तर देता, इससे पहले ही झुम्मन चाचा उसके साथ ही सफाई अभियान में जुट गये। थोड़ी देर में ही तपन ने देखा कि झुम्मन चाचा को लडको के साथ सफाई करता देखकर मोहल्ले के कुछ और लोग भी धीरे-धीरे आकर काम में जुट गये; और दोपहर तक उन सबने मिलकर मोहल्ले में जहां कहीं भी कूडे का ढेर देखा, उसे टोकरों में भरकर कूड़ाघर में फेंक दिया। दोपहर तक मोहल्ले की सभी सड़कें एकदम साफ-साथुरी हो गयीं।

तपन के इस सफाई अभियान का मोहल्लेवालों पर यह असर हुआ कि उस दिन के बाद सभी लोग सड़क के किनारे कूड़ा फेंकने के बजाय कूड़ाघर में ही कूड़ा फेकने लगे। उस दिन के बाद कभी मोहल्ले की सड़कों को गन्दा नहीं देखा गया।

—रूप सिंह चन्देल
10 ए/22 शक्ति नगर,
दिल्ली **110007**

अपना घर

एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। दिनभर वह भोजन के लिए जंगल मे इधर-उधर घूमती रहती और रात में किसी झाड़ी के नीचे पड़कर सो जाती। एक दिन वह भोजन की तलाश में जंगल में घूम रही थी। उस समय धूप बहुत तेज थी। धूप से परेशान होकर वह एक पेड़ की छाया में बैठकर आराम करने लगी। थोडी देर बाद एक सियार वहां आया और पेड के तने से पीठ टेककर आराम करने लगा।

कुछ देर तक दोनों एक-दूसरे से कुछ नहीं बोले। लेकिन बातूनी लोमडी अपने को अधिक देर तक रोक नहीं पायी और बातों का सिलसिला शुरू करते हुए उसने सियार से पूछा—"तुम्हारा घर कहां है, भाई ?"

"नदी के किनारे एक टीले पर, बहन। तुम्हारा घर कहाँ है ?" सियार ने पूछ लिया।

लोमड़ी कुछ देर तक सियार की ओर देखती रही, फिर बोली, "भाई, मैंने घर बनाया ही नहीं और रात में किसी झाड़ी के नीचे पड़कर सो जाती हूँ।"

लोमड़ी का उत्तर सुनकर सियार को आश्चर्य हुआ कि बिना घर के भी कोई अपना गुजारा कर सकता है। लेकिन वह बोला कुछ नहीं। दोनों काफी देर तक बाते करते रहे। जब धूप कुछ हल्की हुई, तब लोमडी जंगल के अन्दर चली गयी और सियार अपने घर की ओर चला गया।

उस दिन के बाद जंगल में घूमते हुए प्राय:। सियार से लोमड़ी की मुलाकात हो जाया करती। दोनों एक-दूसरे से कुछ-क्षण बातें करके अपने-अपने काम से चले जाया करते।

थोड़े दिनों बाद जाड़े का मौसम शुरू हुआ। अब दिन तो लोमड़ी का बिना किसी परेशानी के कट जाता, किन्तु रात में ठण्ड उसे सताने लगी थी। रातभर उसे नींद नहीं आती थी। वह प्रत्येक रात को सोचती कि सुबह होते ही घर बनाना शुरू कर देगी, लेकिन सवेरा होने पर धूप की गर्मी पाकर वह घर बनाने का विचार अपने दिमाग से निकाल देती।

एक दिन खूब तेज हवाएं चलीं, जिससे रात में कड़ाके की ठण्ड पड़ी। लोमडी ठण्ड से कांपने लगी और रोती हुई जंगल में इधर से उधर घूमने लगी। घूमती हुई

वह सियार के घर के पास से गुजरी। सियार ने उसकी आवाज पहचान ली। तुरन्त घर से बाहर निकलकर उसने लोमड़ी से पूछा, "लोमड़ी बहन, क्यों रो रही हो ?"

"भाई, बहुत जोरों से ठण्ड लग रही है।"

"मेरे घर में आ जाओ। आज की रात यहीं काट लो।"

लोमड़ी उसके साथ घर के अन्दर चली गयी। घर में सियार की पत्नी तथा उसके दो बच्चे भी थे। सियार ने लोमड़ी के सोने के लिए थोडी सी जगह खाली कर दी और उससे बोला, "अब तुम भी अपना घर बना लो; नहीं तो ठण्ड में जीना मुश्किल हो जायेगा।"

"कल से ही बनाना शुरू कर दूंगी, भाई।" लोमड़ी बोली। सियार का घर चारों ओर से बन्द होने के कारण गर्म था। इसलिए लोमडी को अच्छी नींद आयी। वह रातभर खूब जमकर सोयी। सुबह होने पर उसने सोचा–'घर बनाने की क्या जरूरत है। रोजाना सियार के घर आकर सो जाया करूंगी। सियार सीधा-सादा है। कभी मना नहीं करेगा।"

उस दिन वह सारा दिन जंगल में घूमती रही और रात होते ही सियार के घर सोने के लिए जा पहुँची। सियार ने उस दिन भी उसका स्वागत किया और पूछा, "आज घर बनाने का काम शुरू कर दिया न !"

"आज तो फुर्सत नहीं मिली, भाई। कल से शुरू करूंगी। कुछ दिन तो लग ही जायेंगे।" लोमड़ी ने उत्तर अदया।

सियार चुप रहा। उसकी चुप्पी से लोमडी का साहस बढ़ गया। अब वह प्रनिदिन रात में सियार के घर सोने के लिए आने लगी। लोमडी के आने से घर मे जगह की कमी के कारण सियार को काफी परेशानी उठानी पड़ती थी। उसके बच्चे रातभर ठीक से सो नहीं पाते थे। इस तरह कई दिन और बीत गये, लेकिन सकोचवश सियार लोमड़ी से कुछ कह नहीं पाया।

एक दिन सुबह लोमड़ी के जगल में जाने के बाद सियार को समाचार मिला कि उसके ससुर की तबीयत बहुत खराब है। अपने पिता की बीमारी का समाचार सुनकर सियार की पत्नी रोने-चीखने लगी। सियार घबरा उठा। उसने पत्नी को समझाया और तुरन्त ससुराल जाने की तैयारी में जुट गया। उसी दिन दोपहर बाद पत्नी और बच्चों को साथ लेकर वह ससुराल के लिए रवाना हो गया।

शाम को जब लोमड़ी सियार के घर पहुँची तब दरवाजा बन्द पाकर वह परेशान हुई लेकिन यह सोचकर कि शायद सियार थोड़ी देर में आ जायेगा, वह दरवाजे के पास बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। प्रतीक्षा करते हुए जब बहुत देर हो गयी और सियार नहीं आया तब उसे कुछ सन्देह हुआ। जैसे-जैसे समय बीतता गया ठण्ड भी बढ़ती गयी फिर भी उसने आधी रात तक सियार की प्रतीक्षा की

जब सियार नहीं आया तब वह निराश होकर पास ही एक झाड़ी के नीचे जाकर लेट गयी। लेकिन कडाके की सर्दी के कारण उसे रात भर नींद नहीं आयी। वह रात भर जागती रही और सुबह होते ही घर बनाने का कार्य शुरू करने के संकल्प को दोहराती रही। उसने आज पहली बार अनुभव किया कि दूसरे की चीज़ दूसरे की ही होती है। उस पर अपना अधिकार समझना मूर्खता है।

अगले दिन सुबह होते ही उसने घर बनाने को काम शुरू कर दिया कठोर परिश्रम करके एक सप्ताह के अन्दर उसने घर बनाकर तैयार कर लिया; और रात में जब वह अपने घर में सोने लगी तब उस समय वह सोच रही थी कि वास्तव में जो आराम अपने घर में मिलता है, वह दूसरे के घर में कभी नहीं मिल सकता। अपना घर तो अपना ही घर होता है।

—रूप सिंह चन्देल
10ए/22 शक्ति नगर
दिल्ली - 110007

जादू और परी

रजनीश और अवनीश को अपने पिता की कड़ी याद आती थी। मोहल्ले के सारे बच्चे रंग बिरंगे कपडों में सजकर जब घूमने जाते और खिलौने तथा मिठाई लाते। तब भी उनका मन कचोट कर रह जाता। वे अपनी माँ से पूछते–"माँ जी, कब आएंगे पिताजी ?" बेचारी माँ कहती, "जब उन्हें काम से छुट्टी मिलेगी, तभी आएगे।"

दरअसल रामशरण घर–गृहस्थी चलाने तथा बाल बच्चों के भरण पोषण के लिए वह अपने घर से हजारों मील दूर बंगाल और आसाम की खाक छानता फिर रहा था। हर महीने रामशरण का मनीआर्डर घर आ जाता था। रजनीश और अवनीश की माता जी अकेले ही सारे घर को सम्हालती हैं। रजनीश और अवनीश की दो छोटी बहिनें नीता और मीता भी थी। चारों बच्चे सकूल में पढते थे।

बच्चे अपने पिता जी से मिलने को परेशान रहते थे। अक्सर मां उन्हें समझाती, "तुम्हारे पिता जी जरूर आएंगे। बंगाल और आसाम का जादू सीखकर आएंगे। तुम्हें तरह–तरह के खेल दिखाएंगे। मेले–तमाशे में घुमाएंगे। खिलौने और मिठाई दिलाएंगे"। आखिर बच्चों के इन्तजार की घड़ियाँ खत्म हुई और उनके पिताजी घर आ पहुँचे। सारे घर मे खुशी की लहर फैल गयी।

अगले दिन चारों बच्चे अपने माता–पिता के साथ अच्छे मूड में बैठे थे। रजनीश ने पूछा–" माता जी आप तो कहती थी कि पिता जी आएंगे तो जादू के खेल दिखाएंगे।"

अवनीश ने भी हामी भरी। नीता और मीता भी ठुमकते हुए जादू का खेल देखने को तैयार थीं। रजनीश की मां ने कहा, "क्यों जी, बंगाल और आसाम का कौन सा जादू सीखकर आऐ हैं, आप। सुना है जादूगर लोग वहाँ आदमी को जानवर बना देते हैं"

रामशरण ने कहा, "आसाम का जादू तो पुराने समय से प्रसिद्ध रहा है। हमारे साथ काम करनेवाला एक आदमी तो पक्का जादूगर था। उसके साथ रहते हुए थोडे बहुत जादू मैं भी सीख गया।"

अवनीश ने जिद पकडी–तो पिता जी कोई अच्छा सा जादू दिखाइए न

[illegible] ने बच्चो के साथ साथ अपनी पत्नी की उत्सुकता भी देखी तो वह जादू दिखाने को तैयार हो गया।

रामशरण बोला, "अच्छा मैं आदमी से जानवर बनाने का जादू दिखाता हूँ। बन्दर आदमी का पूर्वज माना जाता है न ! मैं तुम्हें बन्दर बनकर दिखाता हूँ।"

बच्चे बहुत खुश हो गए। पर उनकी माँ चिन्तित होते हुए बोली- "आप बन्दर तो बन जाएंगे, पर बन्दर से फिर आदमी कैसे बनेंगे ?"

रामशरण बोला, "तुम चिन्ता मत करो ! एक थाली में पानी ले आओ। मै उसमें मंत्र पढ दूंगा। जब तुम लोग बन्दर का तमाशा देख लो, तब थाली का पानी मेरे ऊपर डाल देना। मैं फिर से आदमी बन जाऊंगा।"

बच्चे एक थाली में पानी लाए। रामशरण ने मंत्र पढ़कर उसमें फूंक मारी। फिर, न जाने क्या हुआ कि पलक झपकते ही रामशरण बन्दर में बदल गया।

वह कूद कर छत पर चढ़ गया। उछलने कूदने और नाचने लगा। फिर वह बन्दर कूदकर रजनीश-अवनीश और नीता-मीता के बीच आ गया। नीता और मीता बन्दर से डरकर जो पीछे हटीं तो उनका पैर थाली में लग गया। थाली उलट गयी और सारा पानी फैल गया। बच्चों की माँ घबड़ा उठीं। अब वह पानी तो फैल चुका था बन्दर भी घँटे दो घँटे उछल कूद करके पुन: आदमी बनने को तडपने लगा। दूसरा कोई जादू मंत्र जानता नहीं था। बेचारा बन्दर अपने घर की छत पर बैठा रहता। कभी-कभी वह पेड़ों पर छलांग लगा आता था। दूसरे घरो मे भी उछल कूद मचा आता था। उसे अपने बाल बच्चों के साथ-साथ सभी पर क्रोध आ रहा था कि कोई उसे बन्दर से आदमी क्यों नहीं बनाता। गुस्से में आकर वह कभी किसी को काट लेता. . कभी किसी को नोच लेता। लोग उसे मारने दौडते पर वह कूदकर ऊपर चढ़ जाता।

रजनीश, अवनीश, नीता मीता और उनकी माँ को यह खेल बहुत महंगा पड़ा। जरा सी असावधीनी से जादू का पानी भी फैल गया था। बच्चे बहुत परेशान रहने लगे थे। सपने में भी उन्हें अपने पिता का ध्यान आता रहता था। कभी-कभी तो बच्चे सपने में भी रो उठते थे।

एक रात रजनीश सपने में रो रहा था। तभी उसने देखा कि एक बड़ी सी चमकीली परी उडती हुयी उसके पास आयी। उसने पूछा- "बेटा क्यों रो रहे हो ?"

रजनीश ने सारी बात परी को बताई। परी का मन रजनीश के दु:ख से भर उठा। उसे दया आ गयी। उसने रजनीश को गोद में उठा लिया। परी ने बताया- "मैं जादू की परी हूँ। मै तुम्हारे पिता को बन्दर से आदमी बना सकती हूँ। पर देखो आगे से कभी अपने पिता से ऐसे भयंकर जादू के लिए हठ मत करना।"

रजनीश गिड़गिड़ाया- "जादू की परी, तुम मेरे पिता को जल्दी ही बन्दर से

आदमी बना दो। हमारी सहायता करो।''

जादू परी खिलखिलाकर हँस पड़ी और बोली, " देखो सुबह नहा धोकर तुम उस बन्दर को छू लेना। उसके चारों ओर चक्कर लगाना और मन में बुदबुदाना–''जादू की परी, जादू की परी, बन्दर को आदमी करो।''

उसी समय मैं वहाँ आ जाऊंगी और जादू की छड़ी घुमाकर तुम्हारे पिता को बन्दर से आदमी बना दूँगी। पर मैं किसी को दिखाई नहीं दूँगी। हाँ एक बात और है..'वह क्या ?'–रजनीश ने पूछा !

परी ने बताया–''पर ध्यान रहे, यह बात किसी से न कहना। यदि बता दोगे तो मेरा जादू भी काम न करेगा।''

रजनीश ने किसी को न बताने का विश्वास दिलाया तब परी बोली, ''जैसा मैंने बताया है, वैसा ही करना, तुम्हारे पिता जी बन्दर से आदमी बन जाएंगे।''

यह कह कर परी उड़ गयी। रजनीश की आँख खुल गयीं। सुबह हो रही थी। सुबह का सपना अक्सर सच होता है। ऐसा बहुत से लोग मानते हैं।

रजनीश चुपचाप उठ गया। वह नहाधोकर तैयार हो गया। तब तक घर के सभी लोग सोकर उठ चुके थे। रजनीश छत पर चढ़ गया। उसने बन्दर को छुआ और परी द्वारा बताए गए मत्र को मन ही मन बुदबुदाते हुए बन्दर के चारों ओर चक्कर लगाना आरम्भ कर दिया।

देखते ही देखते रजलीश के पिता बन्दर से आदमी बन गए। वह अपने पहले रूप में आ गए। सारे घर में पहले की तरह फिर से खुशियां छा गई। चारो बच्चे अपने पिता से लिपटकर खुश होने लगे। उनकी माँ सबके लिए नाश्ता ले आई।

–डा. रोहिताश्व अस्थाना

निकट बावन चुंगी

हरदोई–241001 (उ.प्र)

दावत महंगी पड़ी

बहुत पुरानी बात है, जब आदमी हा नहीं, जीव जन्तुओं में भी आपस में प्रेम भाव रहता था। बकरी और सिंह एक ही घाट पर पानी पीते थे। उन दिनों चूहे और बिल्ली भी मेल-जोल से एक दूसरे के घर आया जाया करते थे।

एक बार चूहे राजा के महल में राजकुमार मूषक का जन्म हुआ। खुशियाँ मनाई जा रही थीं। बहुत से जीव जन्तु बधाई देने आ रहे थे। चूहे राजा की ओर से एक विशाल दावत का प्रबन्ध था। उन्होने सभी जीव जंतुओं को बुलाया। निमंत्रण पत्र बाँटे जा चुके थे। ठीक समय पर मेहमानों का आना शुरू हो गया। हलवाई लगे हुए थे। देशी घी में बने हुए शकरकन्द के हलवे की महक आ रही थी। मूंगफली के दानों की खीर बनाई गयी थी। चाट पकौड़ी की तो शान ही निराली थी। सभी जानवरों के मुँह में पानी आ रहा था।

इसी बीच चुहिया रानी, राजकुमार मूषक को गोद में लिए पंडाल में बने मच पर आयीं। वह रंग बिरगी चमकदार साड़ी पहने हुए थीं। एक-एक कर सारे जानवर राजकुमार को आर्शीवाद देने के लिए मंच की ओर बढ़े।

खरगोश ने राजकुमार को आर्शीवाद देते हुए कहा कि मैं इसे अपनी ही तरह दौड़ना सिखाऊंगा।

लोमड़ी ने आकर कहा, 'मै राजकुमार को अपनी ही तरह चालाकी और सूझबूझ सिखाऊंगी।''

इसी प्रकार सभी जीव जन्तुओं ने राजकुमार मूषक को आशीर्वाद देते हुए कहा 'उसकी आयु लम्बी हो''

अब दावत की बारी थी। बिल्ली मौसी को मुख्य अतिथि बनाया गया था। मिट्टी की तश्तरियों में खाने की चीज़ें सजाकर रखी गयी थीं। मिट्टी के छोटे-छोटे घडो मे गरम जलेबी-दूध भर रहा था। तरह-तरह के पकवानों की खुशबू सब का मन मोह रही थी सभी जानवरों ने तश्तरी हाथ में ली, अपने मन चाहे पकवान परोसे और खाना शुरू कर दिया।

चूहे राजा के का रिन्दे सबकी सेवा में लग गए। देशी घी के हलवे और मूगफली की खीर से बिल्ली मौसी का मुँह बहुत मीठा हो गया था। वे चाट पकौडो की ओर बढीं। मिठास दूर करने के चक्कर में वे अपनी चाट मे अधिक मिर्च डाल

बैठीं। खटाई का तो मजा ही निराला था। बिल्ली मौसी ने डटकर चाट खाई। अधिक मिर्च के कारण उनके पेट तथा जीभ में जलन पड़ने लगी। मिर्च की जलन से उनका बुरा हाल था। सामने ही गरम दूध जलेबी के छोटे - छोटे घडे रखे थे। बिल्ली मौसी ने जल्दी से एक घडे में अपना मुँह डाल दिया। दूध काफी गरम था। इसलिए उनकी जीभ और मुँह दोनों ही जल गए। उन्होंने हड़बड़ाहट में मुँह घड़े से बाहर निकालना चाहा तो उनकी गरदन घड़े में फंस गयी। अब तो बिल्ली मौसी मुसीबत में पड़ गयीं।

खाने-पीने की भीड़ में किसी का ध्यान उधर न गया। बेचारी बिल्ली मौसी का मुँह गरम दूध के घड़े में फँस गया। इसलिए जलन के साथ उन्हें कुछ दिखाई भी न पड़ रहा था। बिल्ली मौसी घड़े में अपना मुँह फंसाए हुए इधर से उधर गिरती-पड़ती अपने घर आयीं। कई बार कमरे की दिवारों से घडे को टकराया। घड़ा टूटा तो सारा दूध जलेबी उनकी देह पर फैल गया। घड़े का वजनदार मुँह उनकी गरदन में पड़ा रहा। बिल्ली मौसी की सारी देह दूध जलेबी से चिपचिपा रही थी। जाड़े मे कई बार उन्हें नहाना पड़ा। उन्हें ठण्ड लग गयी। घड़े के वजनदार मुँह से उन्हें चलने-फिरने में बड़ी दिक्कत हो रही थी।

बिल्ली मौसी को यह दावत मंहगी पड़ी। उन्हें चूहे राजा पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। धीरे-धीरे उनका यह गुस्सा दुश्मनी में बदल गया।

फिर क्या था ? बिल्ली मौसी चूहों का सफाया करने में जुट गयीं। बस तभी से बिल्ली और चूहों की दुश्मनी चल निकलीं जो आज भी जारी है।

—डॉ. रोकिताश्व अस्थाना
निकट वावन चुंगी
हरदोई - 241001
(उ.प्र)

दोस्त का कर्तव्य

अंकुर ने इंटर पास किया तो पिताजी ने उसका नाम इलाहाबाद के एक महाविद्यालय में लिखा दिया। उसे इस शहर में पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की तैयारी कराना था। वहाँ वह एक किराए का कमरा लेकर रहता था। उसके पिताजी हर महीने उसे मनीआर्डर द्वारा रुपया भेज देते थे। परन्तु इस बार अभी उसे इंजीनियरिंग का फार्म भरना था। वह सोच रहा था कि घर में ऐसी क्या बात हो गई जिससे अभी तक मनीआर्डर नहीं आया।

एक दिन वह पुस्तकालय में समाचार-पत्र पढ रहा था तो उसकी नजर एक खबर पर पड़ गई। उसे वह ध्यान से पढ़ने लगा। उससे पता चला कि उसके गृह जनपद में एक सप्ताह से कर्फ्यू लगा है। उसने सोचा कि शायद कर्फ्यू के कारण ही घर से मनीआर्डर नहीं आया होगा। अब पता नहीं कब कर्फ्यू हटेगा। यह सोचकर वह परेशान था। उसका मन पढ़ने में भी नहीं लग रहा था।

उसे परेशान देखकर उसके दोस्त पिन्टू ने एक दिन उससे पूछा, "आजकल तुम कुछ परेशान लग रहे हो। क्या बात है ?"

"कुछ नहीं।" अंकुर ने बात को टालते हुए कहा। उसी समय मुकेश और सुरेश के वहाँ आ जाने से बात रुक गई। दूसरे दिन कक्षा में प्राध्यापक ने दो-तीन लड़को से पूछने के बाद अंकुर से ब्लैकबोर्ड पर लिखे फार्मूले का अर्थ पूछा तो वह नहीं बता सका।

इस पर उन्होंने डांटते हुए कहा, "अभी-अभी मैंने बताया है परन्तु पता नही तुम लोगों का मन कहां रहता है ? मैं जो कुछ पढ़ाता हूँ, उसे ध्यान से सुना करो।"

अंकुर के फार्मूले का अर्थ न बताने पर पिन्टू आश्चर्य में पड़ गया। उसने सोचा कि अंकुर तो हमेशा मन लगाकर पढ़ता है, आज वह कैसे फार्मूले का अर्थ भूल गया।। पीरिएड समाप्त होने पर उसने अंकुर से पूछा,"आजकल तुम्हारा मन पढने में नहीं लग रहा है। बताओ क्या बात है ?"

"अरे कुछ नहीं। मुझे कोई परेशानी नहीं है।" अंकुर ने कहा। परन्तु उसके कहने के अंदाज से पिन्टू समझ गया कि वह कुछ छुपा रहा है। उसने नाराज होते हुए अकुर से कहा, "तुम झूठ बोल रहे हो। मगर मुझे सही-सही नहीं बताओगे तो मै तुमसे बात नहीं करूंगा।" इतना कहकर वह चल दिया।

उसे जाते देखकर अंकुर लपक कर उसके पास पहुँचा और बोला, "तुम नाराज मत हो, तुम्हारा कहना सही है। मैं आजकल बहुत परेशान हूँ। परन्तु अपनी

परेशानी बताकर तुम्हे परेशान नहीं करन चाहता था

उसकी बात सुनकर पिन्टू बोला, "क्या तुम मुझे अपना दोस्त नहीं समझते, जो नहीं बता रहे थे।"

अब अकुर ने कर्फ्यू के कारण मनीआर्डर न आने की संभावना व्यक्त करते हुए कहा, "मुझे इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा का फार्म भरना है, लेकिन रुपया न होने के कारण मैं अभी तक फार्म नहीं भर सका, जबकि फार्म जमा करने की अंतिम तिथि मे अब केवल एक सपताह बाकी है। यही सोचकर परेशान हूँ कि अगर कल तक फार्म नही भेजूँगा तो वह समय से इंजीनियरिंग कालेज नहीं पंहुच सकेगा। इससे मेरा एक साल बेकार चला जाएगा। मैं इसी इंजीनियरिंग में प्रवेश के लिए यहां आया हूँ।"

"अरे बस ! इतनी सी बात के लिए परेशान हो। मुझे पहले क्यों नहीं बताया। अब तुम परेशान मत हो मैं कल तुम्हें डेढ़ सौ रुपया दे दूँगा, उससे अपना काम चला लेना।" पिन्टू ने हँसते हुए कहा। पिन्टू की बात सुनकर अंकुर उसका मुँह ताकने लगा। फिर उसने पूछा, "परन्तु तुम इतना रुपया कहाँ से पाओगे ?"

"तुम इसकी चिन्ता छोड़ दो।" इस बारे में मैं कल तुम्हें बताऊंगा।" इतना कहकर पिन्टू चला गया। घर जाकर उसने अपना बैग देखा तो उसमें सौ रुपये थे। दूसरे दिन सुबह उसने पिताजी से पचास रुपये मांगे। उन्होंने कारण पूछा तो उसने कहा, "कुछ जरूरी काम है। शाम को कालेज से आकर बताऊँगा।"

कालेज में उसने अंकुर को रुपया दे दिये। अंकुर रुपया लेकर तुरन्त बैंक गया और बैंक ड्राफ्ट बनवाया। इसके बाद पोस्ट ऑफिस जाकर फार्म को पोस्ट कर दिया। वहाँ से लौटते समय वह बहुत खुश था। दूसरे दिन उसने पिन्टू से कहा 'तुम्हारे कारण मेरी बहुत बड़ी समस्या हल हो गई। लोग दस-बारह बीस रुपया देने मे बहाना बनाते हैं, परन्तु तुमने बिना हिचक डेढ़ सौ रुपये मुझे दे दिये, इसके लिए मैं तुम्हारा एक सानमंद रहूँगा। मैं आज ही पिताजी को फिर पत्र लिखूंगा और जैसे ही मनीआर्डर आएगा तुम्हें रुपया दे दूंगा।"

"इसमें एहसान की क्या बात हैं। यह सब तो दोस्ती में चलता रहता है।" पिन्टू बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा, "कर्फ्यू लगने से लोगों को बहुत परेशानी होती है। तुमने उसकी मदद करके बहुत अच्छा काम किया। दोस्तों को आपस मे एक-दूसरे के प्रति ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए।"

पिताजी की बात सुनकर पिन्टू बहुत खुश हुआ। कुछ दिन बाद अंकुर ने घर से मनीआर्डर आने पर पिन्टू का आभार व्यक्त करते हुए हुए रुपए दे दिए।

—विनय कुमार मालवीय

605, मालवीय नगर, इलाहाबाद - **211003**

पश्चाताप

अनुराग के गॉव में दसवीं कक्षा तक का विद्यालय था। उसने जब दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की तो आगे पढ़ने के लिए पिताजी ने उसका नाम शहर के एक कालेज मे लिखा दिया। वह वहाँ किराये पर एक कमरा लेकर रहने लगा और मन लगाकर पढने लगा। कभी-कभी वह गाँव जाकर अपने माता-पिता से मिल आता था।

मकान मालिक का लड़का मुकेश नवीं कक्षा में पढ़ता था। उसका मन पढने मे नहीं लगता था। उसके पिताजी उससे हमेशा पढ़ने के लिए कहा करते थे, परन्तु उस पर कोई असर नहीं पढ़ता था। इससे पिताजी उससे नाराज रहते थे। वे प्राय मुकेश से कहा करते थे, 'देखो, अनुराग स्वयं ही पढ़ता रहता है। एक तुम हो, कहने पर भी नहीं सुनते।''

पिताजी की बातों को सुनकर मुकेश मन में अनुराग से नाराज रहने लगा। वह समझता कि अनुराग के कारण ही उसे डॉट सुननी पड़ती है। इसलिए उसने एक दिन अपने पिताजी से कहा, अनुराग रात में देर तक बिजली जलाये रहता है, इससे बिजली का बिल अधिक आयेगा।''

उसकी बात सुनकर मकान मालिक ने अनुराग से कहा, ''तुम रात में देर तक बिजली जलाये रहते हो, यह ठीक नहीं है।''

''रात में पढ़नें के लिए मैं बिजली जलाता हूँ और पढ़ने के बाद बंद कर देता हूँ।'' अनुराग ने कारण बताते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर मकान मालिक चुप हो गया। उसकी समझ में यह बात आ गई। मुकेश ने जब देखा कि उसकी यह चाल सफल नहीं हुई तो अनुराग को परेशान करने के लिए वह कोई दूसरा उपाय सोचने लगा।

कुछ दिन बाद जब बिजली का अधिक बिल आया तो मुकेश ने पिताजी से कहा, ''मैंने पहले ही कहा था कि अनुराग रात में देर तक बिजली जलाता है और सबेरे भी जल्दी उठकर बिजली जला देता है। उसके कारण ही इस बार बिजली का बिल अधिक आया है।''

उस पर मकान मालिक ने अनुराग से कहा, ''तुम रात में बहुत देर तक बिजली जलाने के साथ हीं सुबह भी जल्दी बिजली जला देते हो। तुम्हारे कारण बिजली का अधिक बिल आया है। यह अच्छी बात नहीं है।'' —

अनुराग ने कहा, "चाचा जी, मेरी परीक्षा निकट आ गई है। इसलिए रात में देर तक पढ़ता हूँ। मै अनावश्यक बिजली नहीं जलाता।''

कुछ दिन बाद अनुराग जब अपने घर गया तो पिताजी को इस बारे में बताया। इस पर पिताजी ने उसे समझाते हुए कहा, "तुम एक लालटेन खरीद लो। अगर मकान मालिक अधिक परेशान करे तो कभी-कभी लालटेन जलाकर पढ़ लिया करो। वहाँ लडाई- झगडा मत करना। जब वहीं रहना है तो जैसा मकान मालिक कहे वैसा ही करना चाहिए। इससे शान्ति मिलेगी। वरना तुम्हारा मन अशान्त रहेगा और तुम मन लगाकर नहीं पढ सकोगे।''

अनुराग जब शहर गया तो वहाँ एक लालटेन खरीद ली। अब वह कभी-कभी लालटेन भी जला कर पढ़ाई करने लगा। यद्यपि इससे उसे परेशानी होती थी परन्तु मकान मालिक के वाद-विवाद से बचने के लिए वह कष्ट सहता रहा।

एक दिन अनुराग को लालटेन जलाकर पढ़ते देखकर मकान मालिक ने मुकेश से कहा, "देखो अनुराग लालटेन जलाकर कितनी तल्लीनता से पढ़ रहा है। वह अपनी पढ़ाई के लिए कितना जागरूक है। तुम्हारी परीक्षा भी जल्दी शुरू होनेवाली है। अब तुम भी मन लगाकर पढ़ा करो।''

उस समय तो मुकेश ने "अच्छा'' कह दिया परन्तु बाद में उसने सोचा कि अगर फेल हो जाऊँगा तो अनुराग के सामने बहुत डाँट पड़ेगी। इसलिए अब वह भी कुछ देर बैठकर पढने लगा।

एक रात जब मुकेश पढ़ रहा था तो बिजली चली गई। मुकेश रोशनी करने के लिए शीशे का लैम्प खोजने लगा तो उसका हाथ लैम्प से टकरा गया। इससे लैम्प का शीशा टूट गया और काँच के कुछ टुकड़े उसके दाहिने हाथ में चुभ गये। वह दर्द से कराह उठा। उसके मुँह से चीख निकल गई। उसकी चीख सुनकर अनुराग लालटेन लेकर जल्दी से मुकेश के कमरे में गया। मुकेश के हाथ से खून बहते देखकर वह आश्चर्य में पड गया। एक पल तो उसकी कुछ समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। फिर वह मुकेश को लेकर एक डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने मुकेश के हाथ से काँच निकालकर मरहम-पट्टी कर दी। उस समय मुकेश के माता-पिता घर में नहीं थे। वे लोग एक परिचित के यहाँ कुछ काम से गये थे। कुछ देर बाद जब वे लोग घर आये तो मुकेश के हाथ में पट्टी बंधी देखकर आश्चर्य में पड़ गये।

उन्होंने मुकेश से पूछा तो उसने पूरी बात बतायी। उसकी बात सुनकर मकान मालिक को अनुराग के प्रति किये गये अपने व्यवहार पर बड़ी शर्मिन्दगी महसूस हुई। उन्होंने अनुराग को बुलाया और कहा, "आज तुमने मुकेश की जो सहायता की, उसके लिए हम लोग तुम्हारे आभारी हैं। अगर तुम उसे लेकर डाक्टर के यहाँ नहीं जाते तो न जाने क्या होता ?''

इस पर अनुराग ने कहा 'चाचा जी आप ऐसा कहकर मुझ शर्मिंदा न करें मुकेश तो मेरा छोटा भाई है। उसकी मदद करके मैंने एहसान नहीं किया है।

उसकी प्यार भरी बातें सुनकर मकान मालिक ने कहा, "बेटा बिजली जलाने के लिए मैं तुम्हें अक्सर डाँटता रहता हूँ। इससे तुम्हे दु:ख होता होगा। फिर भी तुमने मेरी इन बातों पर ध्यान न देकर आज अनुराग की मदद की। अब तुम जब चाहो तब बिजली जलाकर पढ़ सकते हो। मुझे कोई शिकायत नहीं होगी।''

उधर अनुराग द्वारा अपने प्रति किये गये व्यवहार को देखकर मुकेश को भी पश्चाताप होने लगा। उसने मन में निश्चय किया कि अब कभी वह अनुराग के प्रति दुर्व्यवहार नहीं करेगा।

—विनय कुमार मालवीय
605, मालवीय नगर,
इलाहाबाद – 211003

पीला गुलाब

कुसुम और नीरज़ भाई बहन थे। नीरज छठी कक्षा में पढ़ता था और कुसुम पांचवीं में। दोनों को ही फूलों से बड़ा प्यार था, कुसुम तो लगभग दीवानी ही थी फूलों की। उसे बाजारों में घूमना, खरीदारी करना, अच्छा न लगता, वह तो बाग बगीचों में घूमना पसन्द करती और वहां खिले एक - एक फूल को बड़े गौर से ललचाई नज़रों से देखती। मन ही मन सोचती—काश उसका भी एक बगीचा होता। कुसुम को गुलाब विशेष रूप से प्रिय था खासकर पीला गुलाब। पीला गुलाब देखते ही उछल पड़ती—'देखो ! मम्मी, कितना खूबसूरत गुलाब है, पीला गुलाब।

"तुम क्यों नहीं लगवा लेतीं ?"

"कहाँ लगवाऊँ बेटी ? तू अच्छी तरह जानती है, हमारे पास एक कमरे का सेट है, वह भी किराए का। न बरांडा न कहीं कच्ची जगह। गमले मंगवाए थे....." पर वह धोखे बाज़ पौधे बेचनेवाला कितने खराब पौधे लगा गया, "कुसुम ने दुःखी स्वर में कहा।

"पीले गुलाब का तो पौधा था ही नहीं उस पर।"

"जो पौधे लगा गया है उनमें से दो पौधों पर तो फूल ही नहीं आते, कहीं दीख जाए वह बुढ्ढा खूंसट।" 'क्रोध में कुसुम के नथुने फूल जाते।

आजकल पग-पग पर धोखे बाजी है, ऐसा वह अम्मी से सुनती रहती थी पर फूलों के पौधों में भी धोखे बाजी होगी यह उसकी कल्पना के परे था, उसके नन्हे दिल पर इस बात से धक्का लगा था।

काफी दिनों बाद कुसुम के लाल गुलाब के पौधे पर पहला फूल खिला तो उसकी खुशी का ठिकाना न था 'देखो मम्मी, देखो भैया, हमारे गुलाब पर पहला फूल खिला है।"

"कैसी नाच रही है ? खुशी से " नीरज उसे चिढ़ाने लगा।

"खुशी तो तुम्हें भी हो रही होगी यह बात दूसरी है कि तुम बताओ न।

वास्तव में कुसुम के चेहरे की खुशी देखने लायक थी।

रंग बिरंगे फूलों की खूबसूरत मोहक छटा चार वर्ष की उम्र से ही कुसुम को अपने में बांधती रही थी किसी के मकान या कोठी में फूलों भरा बगीचा देखकर उसका मन रह रहके मचल जाता घर आते ही मम्मी से कह बैठती,

'जब हम अपना मकान बनवाएंगे तो उसमे 'लान जरूर रखेंगे मम्मी उन अबोध आंखो मे भविष्य के सपने देखती रह जाती और मन ही मन भगवान से उन्हें पूरा करने की प्रार्थना करतीं।

कुसुम के पिता दिल्ली से बाहर सर्विस करते थे। उसकी मम्मी दिल्ली के एक स्कूल में पढ़ाती थी। बच्चों की पढ़ाई के कारण वह दिल्ली छोड़ना नहीं चाहती थीं। अतः प्रत्येक शनीवार की शाम को वापस आते और सोमवार की सुबह तड़के ही चले जाते। उसके पापा के पास समय भी कम रहता और उन्हें फूलों से लगाव भी न था, अतः अपने फूल भरे गमलों की चाह कुसुम के मन में ही रह जाती। कुसुम के मकान में तीन किराएदार और भी रहते थे, उनके शैतान बच्चों से अपने चारों गमलों की रखवाली कुसुम मुश्किल से करती। एक दिन किसी बच्चे ने उसके गमले में खिले दोनों फूल तोड़ दिए। उस बच्चे की माँ ने कुसुम को ही डॉट दिया तो बड़ी देर तक टूटे फूल की पंखुड़िया हाथ में दबाए रोती रही कुसुम।

कुसुम के मकान से दो मकान छोड़कर अविनाश रहता था, शानदार लान के साथ बनी आलीशान कोठी में। अविनाश के पिता का बड़ा व्यापार था। उसका बड़ा भाई बम्बई में किसी अच्छी सर्विस पर था।

अविनाश अपने भाई से बारह वर्ष छोटा था और नीरज के साथ पढ़ता था। अविनाश का व्यवहार नीरज के साथ अच्छा था।

अविनाश के बगीचे की खसियत पीला गुलाब - था। पिछने वर्ष की पुष्प प्रर्दशनी में उनके बगीचे के पीले गुलाब को द्वितीय पुरस्कार भी मिला था। नीरज अविनाश से उसके बगीचे के अच्छे रखरखाव की हमेशा तारीफ करता। दोनों ही रोज शाम को पार्क में बैट-बाल खेलते थे। सामान्य ज्ञान की पुस्तकों का आदान प्रदान आपस में होता रहता था। किन्तु उन्हीं के ब्लाक में रहनेवाले रजत को अविनाश व नीरज का साथ खेलना, उठना-बैठना अच्छा न लगता था। यद्यपि रजत भी नीरज की क्लास में ही पढ़ता था ? पर उसकी कोशिश हमेशा नीरज को नीचा दिखाने की रहती। वह नीरज की होशियारी से जलता था। हाल ही में स्कूल मे ड्राइंग व राइटिंग कॉमपिटिशन हुआ था। रजत ने स्कूल में सबसे कह रखा था कि वह नीरज से जीतकर दिखाएगा। किन्तु दोनों ही कॉमपिटीशन में नीरज क्रमशः प्रथम व द्वितीय आ गया, और रजत तृतीय स्थान भी न पासका। तब से रजत नीरज से और भी कुढ़ गया।

एक दिन स्कूल से आकर कुसुम ने झटपट खाना खाया और अपना चार्ट बनाने बैठक गई। चार्ट पर वह एक गमले में गुलाब के फूल बना रही थी शीर्षक दिया था "पीला गुलाब"। पैन्सिल से फूल बना चुकने के बाद कुसुम नीरज से बोली, "भैया मुझे कल ही यह चार्ट देना है अभी रंग भरने बाकी हैं। अगर पीले गुलाब का एक फूल मिल जाता तो रंग भरने में वास्तविकता आ जाती।" 'ये कौन

बड़ी बात है, मैं अविनाश के लान से एक फूल तोड़कर ला देता हूँ।''

"लेकिल अविनाश को फूल तोडना पसन्द नहीं है।''

तो उससे पूछकर ले आएंगे।''

नीरज दौड़कर अविनाश की कोठी में गया तो पता चला अविनाश अपनी मम्मी के साथ कहीं गया है। रात को आएगा। अविनाश का नौकर रसोई में व्यस्त था। नीरज ने एक फूल तोड़ा और अपने घर आ गया। फूल को हाथ में लेकर उसने ऑखों और माथे से लगाया। एक छोटे शीशे के गिलास में पानी भर लाई, उसमे फूल को रखा और देख देखकर अपने चार्ट के फूल रंगने लगी।

अगले दिन सुबह कुसुम ने फूल को अपनी एक पुस्तक में रख लिया। दोनो भाई बहन स्कूल चले गए। नीरज ने क्लास में अविनाश से बोलने की कोशिश की तो उसका मूड उखड़ा हुआ था। क्या बात हो सकती है'' नीरज की समझ में न आया। इन्टरवैल होते ही नीरज ने अविनाश से पूछा, "क्या बात है अविनाश। उखड़े हुए क्यों हो ?''

"फूलों की चोरी कब से शुरू कर दी ? अविनाश ने सीधे यही पूछा।

"क्या कह रहे हो यार ?'' नीरज आश्चर्य चकित था।

तभी बराबर से रजत मुस्कुराता हुआ निकल गया।

"बनो मत ! मुझे सब पता लग गया है।''

"हाँ, मैंने एक फूल जरूर लिया था, कुसुम को चार्ट में रंग भरने थे तुमसे पूछने आया था तुम घर नहीं मिले।''

"दस फूल तोड़े और एक बता रहे हो। बहुत खूब..

नीरज मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद न थी।''

"यह झूठ है अविनाश। मैंने केवल एक फूल लिया था।

"रजत ने तुम्हें मेरे गेट से निकलते देखा।''

"ओह, तो रजत ने तुमसे कहा है, वह कॉमपिटिशन की हार का बदला मुझसे इस तरह ले रहा है।'' उस दिन से नीरज व अविनाश में बोलचाल बन्द हो गई। रजत ने पूरे क्लास को यह बात बता दी। सब आपस में खुसर-फुसर करने लगे। नीरज किस-किस को समझाता।

अपने भाई पर फूलों की चोरी का इल्जाम लगा जानकर कुसुम को भी अफसोस हुआ वह अपने फूलों के शौक को कोसने लगी।

वार्षिक परीक्षाएं समाप्त होने के बाद गर्मी पड़ने लगी थी। अतः दोपहर को गलियों में सन्नाटा होने लगा था। तभी एक दोपहर को सन्नाटे का फायदा उठाकर रजत ने धीरे से अविनाश की कोठी का गेट खोला इधर-उधर देखा और दो गाये को हांककर गेट के अन्दर कर दिया। नीरज व कुसुम ने उसे देख लिया। दोनें दौडे। नीरज को देखते ही रजत भागा नीरज उसके पीछे भागा। कुसुम दौडकर

अविनाश के लान में गई। उसने जोर से अविनाश को आवाज़ दी और गायों को भगाया। गाय तब तक तीन चार गमले खराब कर चुकी थी। यद्यपि कुसुम गायो से डरती थी, पर फूलों की सुरक्षा हेतु सब करने को तैयार थी। जब तक अविनाश व नौकर आए कुसुम गायों को भगा चुकी थी। भागदौड में गेट से टकराकर कुसुम के माथे में चोट भी लग गई। कुसुम ने अविनाश को सारी बातें बता दीं। नीरज भी रजत को पकडकर ले आया, रजत के साथ गुत्थम गुत्था में नीरज की कमीज भी फट गई, आस-पास के लोग भी इकट्ठा हो गए, सभी ने रजत को बुरा कहा। रजत ने स्वीकार किया कि आज भी बगीचे को नुकसान पहुँचा कर वह नीरज का नाम लगा देता। उस दिन भी फूल उसी ने तोड़े थे वह उस तरह नीरज को नीचा दिखाना चाहता था। रजत ने नीरज से माफी मांगी, नीरज ने उसे माफ कर दिया। अविनाश ने भी नीरज से झूठा इल्जाम लगाने की माफी मांगी। दोनों ने प्रेम से हाथ मिलाए। नीरज व अविनाश में पुन: दोस्ती हुई देख कुसुम भी खुश हो गई। रजत ने इस तरह की हरकतें भविष्य में न करने की शपथ ली।

पन्द्रह दिन बाद कुसुम की वर्षगॉठ आई खुशी-खुशी कुसुम अपनी सहेलियों से उपहार ले रही थी, तभी अविनाश आया और कुसुम को बधाई देता हुआ बोला, 'कुसुम, आज मैं तुम्हारे लिए नये किस्म का उपहार लाया हूँ।

"अविनाश भैया। तुम बहुत पैसे बरबाद करते हो
यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती।''

"आज तो बिना दाम के लाया हूँ।'' इतना कहकर अविनाश ने दरवाज़े की ओट में खड़े अपने नौकर को आवाज़ दी।"पीले गुलाब'' का गमला लिए नौकर हाज़िर हो गया।

"कुसुम। यह है मेरी आज की भेंट।'' कह कर अविनाश ने गमला कमरे की खिडकी पर रख दिया।

"पीला गुलाब। मेरे लिए। ओह, अविनाश भैया।
तुम कितने अच्छे हो।'' कह कर कुसुम ने पीले गुलाब का चूम लिया। इस बेशकीमती तोहफे के सामने कुसुम सारे तोहफे भूल गई। उस समय के खुशमाहौल मे कुसुम के खिले चेहरे पर एक अद्भूत् चमक थी। उसकी मम्मी की आँखें खुशी से नम हो गई।

—श्रीमती विमला रस्तोगी
'आयाम'
127, गगन विहार
दिल्ली - 110051
दूरभाष - 2228307

उपहार की कीमत

अनुराग दिल्ली के एक पब्लिक स्कूल में पढ़ता था। होस्टल में रहता था। उसके डैडी इंजीनियर थे। उनका तबादला होता रहता था। अत: उन्होंने कक्षा दो से ही अपने बेटे अनुराग को होस्टल भेज दिया था। अब अनुराग आठवीं कक्षा मे आ गया था।

अनुराग के डैडी पिछले एक साल से नरौरा में कार्यरत थे। वहां रहने के लिए उन्हें खासी बडी कोठी मिली थी। पीछे बड़ा बागीचा था जिसमें तरह तरह के फलो के पेड़ और सब्जियां लगी थीं। सामने लान में सुन्दर रंग-बिरंगे फूलों के पौधे लगे थे। अनुराग की कोठी से थोड़ी दूर पर जूनियर इंजीनियर का मकान था। उनका बेटा प्रफुल्ल भी अनुराग के साथ उसी होस्टल में पढ़ता था। दोनों साथ ही दिल्ली आते-जाते थे। अनुराग की कोठी से कुछ ही दूर पर जूनियर इंजीनियर का मकान था। उनका बेटा प्रफुल्ल भी अनुराग के साथ उसी होस्टल में था। दोनों साथ ही दिल्ली जाते-ताते थे। अनुराग की काठी से कुछ ही दूरी पर मास्टर शर्मा जी का मकान था। उनकी बेटी शिप्रा वहीं के स्कूल की सातवीं कक्षा की छात्रा थी उसे ड्राइग व क्राफ्ट में अत्यंत रुचि थी।

अनुराग की एक छोटी बहन थी मानसी, जो अनुराग से छ: वर्ष छोटी थी। अभी वहीं के स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन मानसी खरगोश के पीछे दौड़ती सडक तक आ गई, सामने से आती कार पर उसने ध्यान न दिया। मानसी सड़क पार करने के लिए जैसे ही बढ़ी शिप्रा ने लपक कर उसे खींच लिया, कार घर्राती हुई निकल गई दुर्घटना टल गई। शिप्रा स्वयं मानसी को उसकी कोठी तक छोडने गई। तभी मानसी की मम्मी से उसकी मुलाकात हुई। मम्मी ने शिप्रा को अदर बुलाकर बैठाया। वह शिप्रा की सूझबूझ से बहुत प्रभावित हुई। बातों ही बातो मे उन्होंने शिप्रा के शौक भी जान लिए। ड्राइंग और क्राफ्ट में शिप्रा की रुचि जानकर उन्हें अच्छा लगा। अगले दिन शिप्रा ने उन्हें अपनी बनाई कई वस्तुएं दिखाई। मम्मी ने तारीफ की। शिप्रा को प्रोत्साहन मिला।

उस दिन से शिप्रा रोज ही मानसी के पास आने लगी। मानसी के पास चाबी से चलनेवाले अच्छे-अच्छे खिलौने थे। दोनों मिलकर खेलतीं। शिप्रा की अनुराग और प्रफुल्ल से भी जानपहचान हो गई। शिप्रा ने अनुराग को अपनी बनाई

पेंटिंग्स दिखाई, अनुराग ने अनमने भाव से देखा और कुछ भी नहीं कहा। उसी समय कोई और बात चल निकली इसीलिए शिप्रा ने इस बात का बुरा नहीं माना।

दीपावली पर अनुराग पुन: घर आया। शिप्रा ने अपने हाथ से बनाया 'दीपावली कार्ड' उसकी मम्मी को दिया। मम्मी पापा दोनों को कार्ड पसन्द आया लेकिन अनुराग को नहीं। उसे तो आरचीन के महंगे कार्ड की पसंद आते थे। वह बनाने वाले भी मेहनत नहीं कीमत देखता था। दीपावली बीत जाने पर अनुराग होस्टल चला गया। फुरसत मिलने पर शिप्रा मानसी के पास आ जाती थी। कभी-कभी मानसी भी उसके पास चली जाती थी।

बड़े दिन की छुट्टियों में अनुराग फिर घर आया। सब दोस्तों से मिला। शिप्रा से भी मिला। 31 दिसम्बर को अनुराग को जन्मदिन की तैयारियां होने लगीं। जन्म दिन धूमधाम से मनाया गया। बड़े-बड़े उपहार लेकर लोग आए। अनुराग के दो दोस्त अपनी गाड़ी से दिल्ली से आए थे। सभी दोस्तों में जनमदिन पर अनुराग को उपहार दिए। शिप्रा ने अपने हाथ से बनाए हुए कागज व कपड़े के रगबिरंगे फूलों का गुलदस्ता उपहार में दिया था। सब दोस्तों ने डांस किया। हंसते गाते पार्टी समाप्त हो गई।

अगले दिन शाम को प्रफुल्ल अनुराग के पास आया और पूछा, "कह यार ! उपहार कैसे लगे ?"

"सब उपहार अच्छे थे बस शिप्रा ने ही बेगार टाल दी।" "तुम ठीक कहते हो यार ! हर किसी को गिफ्ट में उसने एक 'माडल' बनाकर दिया था।" प्रफुल्ल ने कहा।

"उसे ड्राइंग या क्राफ्ट क्या आ गया सब पर लादती फिरती है। यह भी कोई बात हुई ? हूं !" कहते ही अनुराग ने शिप्रा के दिए फुलों का गुलदस्ता उठाकर बराडे में फेंक दिया, जो सामने से आ रही शिप्रा के पैरों में गिरा। शिप्रा ठगी सी रह गई। उससे झुककर फूलों को उठाया भी नहीं गया। उसकी आंखों में आंसू आ गए।

लॉन में खड़े डैडी ने सब देख लिया था। वह लपक कर आए और कागज के फूलों के गलदस्ते को उठाकर बोले, "तुम गलत समझ रही हो शिप्रा, अनुराग प्रफुल्ल को यह दिखा रहा था कि किसी वस्तु को वह कितनी दूर फेंक सकता है, यह उसकी गलती है कि दूरी नापने के लिए उसने फूलों के गुच्छे को चुना। देखो, गुलदस्ते से एक भी फूल नहीं निकला। कागज और कपड़े से बने यह सुंदर फूल ताजा फूलों से अच्छे हैं। यह कभी मुरझाते नहीं हैं। सदा तरोताजा रहते हैं तुम बच्चों की तरह" कहकर डैडी ने फूलों का गुलदस्ता अनुराग को पकड़ा दिया। अनुराग ने चुपचाप उसे फूलदान में लगा दिया।

"अनुराग, तुम्हें पता है 'आर्ट कॉमपीटिशन' में शिप्रा को प्रथम पुरस्कार मिला

है। तुम्हारी मम्मी ने मुझे बताया था।' डैडी ने कहा।

"अच्छा, बधाई हो शिप्रा ! तुमने बताया नहीं'' अनुराग ने जैसे-तैसे कहा।

"क्या बताती ? तुम विश्वास न करते'' शिप्रा ने कहा।

अनुराग को जवाब देते न बना डैडी ही बोले, 'ये दोनों इधर-उधर की बातों में समय खराब करते रहते हैं। काम की बात इन्हें याद नही रहती। अब तुम सब जाओ रसोई में। चदू ने नाश्ता बना दिया होगा। मेज पर लगाओ। मैं और तुम्हारी मम्मी अभी आते हैं।''

तीनों ने मिलकर नाश्ता मेज पर लगाया। मम्मी डैडी मानसी के साथ आ गए। सबने एक साथ नाश्ता किया। शिप्रा और प्रफुल्ल अपने-अपने घर चले गए।

शाम को मम्मी डैडी लॉन में बैठे थे। अनुराग भी वहीं था, मम्मी ने कहा, "अनुराग, किसी के लिए उपहार की कीमत मत अंको, उपहार देनेवाले की भावना का देखो। आज अगर डैडी बात न संभालते तो शिप्रा को कितना दुख होता।'' "सॉरी मम्मी'' अनुराग ने अपनी गलती महसूस की।

उस दिन के बाद से अनुराग ने किसी के उपहार का मज़ाक नहीं बनाया। उसने प्रफुल को भी यही बात समझाई कि उपहार देनेवाले की मेहनत और भावना को देखते हैं। उपहार की वस्तु की कीमत नहीं।

—विमल रस्तोगी

'आयाम'

127, गगन विहार,

दिल्ली – 110051

फोन : 2228307

लेट लतीफ

नीरज और गगन पड़ौसी थे। दोनों एक ही क्लास में पड़ते थे। साथ स्कूल जाते। साथ ही खेलते, उठते-बैठते थे। दोनों में अच्छी मित्रता थी। बस एक ही बात को लेकर उनमें खटपट हो जती। नीरज हर काम समय से करता और गगन के शब्दकोष में समय की पाबन्दी जैसा कोई शब्द न था। गगन के कारण नीरज को भी स्कूल पहुंचने में अक्सर देर हो जाती। मास्टर जी उसे भी डांटते। सजा देने की धमकी देते। तब नीरज को गगन पर बड़ा क्रोध आता। वह सोचता अबसे वह अलग स्कूल जायेगा।

अगल दिन गगन उसकी खुशामद करता। कहता भविष्य में वह समय से चलेगा। दोस्ती के नाते नीरज उसकी बात मान लेता। दो-एक दिन सब ठीक रहता । लेकिन आदत से लाचार गगन फिर देर करता। कभी ड्रेस की टाई नहीं मिलती। कभी जूते, मोज़े खो जाते। कभी होमवर्क की कापी ढूंढने में देर हो जाती। नीरज समझा-समझा कर हार गया। रात को स्कूल का बस्ता और ड्रैस एक जगह रख लो। जिससे सवेरे तैयार होने में देर ने हो। मगर गगन पर उसका कोई असर न होता।

एक दिन स्कूल से लौटते समय नीरज बोला—ऐ अगले सोमवार को मेरे जन्मदिन की पार्टी है। मैं अपने कुछ और दोस्तों को भी बुला रहा हूँ। तुम जरा जल्दी आ जाना। कमरा सजवाने में थोड़ी मदद कर देना।

"हां-हां, यह कोई कहने की बात है। मै समय से आ जाऊंगा।" गगन बोला।

"वैसे नहीं जैसे रोज़ स्कूल चलते हो।" कह नीरज खिलखिला कर हंस पडा। गगन काँप गया। बोला "यार, तेरी तरह में घड़ी के काँटे मिलाकर नहीं चल सकता। तू तो साढ़े छः का घंटा सुनते ही अधूरा खेल छोड़ पार्क से भाग जाता है। भले ही मैच चौपट हो जाये। ऐसे समय के बन्धन में तेरा दम नहीं घुटता।"

"गगन, मेरे पापा कहते हैं जो समय का पालन नहीं करते। वे अपनी ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा गंवा देते हैं। खोया समय कभी वापस नहीं आता। समय भी उन्हीं का साथ देता है, जो समय का मूल्य पहचानते हैं।"

"चल हट ! मैं नहीं मानता यह सब फिजूल की बातें। अपना तो इण्डियन स्टैंडर्ड टाइम ही भला।"

"अभी तुम्हें यह फिजूल बातें लग रही हैं। कभी धोखा खाओगे तब मालूम

होगा। मैं सही हूं या तुम।'' कह कर नीरज अपने घर की तरफ मुड़ गया।

गगन को उसकी बातें अच्छी नहीं लगीं। सोचा मुझे नसीहत दे रहा है। देखे बच्चू कौन सा तीर मारते हैं। ऐसा क्या है, जो मैं नहीं कर पाऊंगा। बात आई-गई हो गई। रात को खाने की मेज पर गगन ने दीदी को बताया। अगले हफ्ते नीरज के जन्मदिन की पार्टी है। सुनते ही मेघा ने पूछा, "तुम नीरज को उपहार में क्या दोगे''

"बस दीदी, पापा जितने रुपये देंगे। उसमें कोई अच्छी सी चीज़ खरीद लूंगा।''

"कोई बढ़िया सी सीनरी बनाकर क्यों नहीं देते ? तुम्हारी पेंन्टिंग तो बहुत अच्छी है। जड़ी हुई सीनरी जब तक नीरज के पास रहेगी। तुम्हारी याद दिलाती रहेगी।'' मेघा ने कहा।

"वाह दीदी ! सचमुच आईडिया तो तुम्हारा बहुत अच्छा है। कल ही मैं कागज वगैरा खरीद लाऊंगा। अभी तो पूरी छः दिन हैं आराम से बन जायेगी।'' कह गगन खाना खाने लगा।

दो-तीन दिन बाद मेघा ने पूछा, "गगन, देखूं तुम्हारी सीनरी कितनी बनी है''

"बस अभी तो उसकी रेखाएं खींची हैं।''

"तब तो बन चुकी तुम्हारी सीनरी।'' मेघा बोली।

आजकल मेरे टैस्ट हो रहे हैं। तुम्ही बताओ पढ़ूं या सीनरी बनाऊं ? परसों के बाद मेरे पास समय की कमी थोड़ी रहेगी। दो दिन में आराम से बन जायेगी।

"और फ्रेम करनेवाला मिनटों में जड़ देगा। है न'' मेघा ने चुटकी ली।

"बस दीदी, तुम्हारी यही बात मुझे पसन्द नहीं है। हर बात में तुम्हें मजाक सूझता हैं।'' गगन ने चिड़ कर कहा।

मेघा बोली, "भाई मेरे ! मैं मज़ाक कर नहीं रही। सही बात कह रही हू। सोमवार को तुम्हें नीरज के घर जल्दी भी तो पहुंचना है। उस दिन को तो गिनो ही नहीं।''

"ठीक है दीदी। परसों स्कूल से लौटते ही मैं सीनरी का काम शुरू कर दूंगा। अब तो खुश।''

"यह हुई न अच्छे बच्चोंवाली बात।'' कह कर मेघा किताब उठा दूसरे कमरे मे चली गई। गगन टेस्ट की तैयारी करने लगा।

जिस दनि टेस्ट समाप्त हुए। गगन ने घर लौट कर खाना खाया और अपने दोस्तों के साथ खलने चला गया। उस दिन खूब जम कर खेल हुआ। नीरज शाम होते ही घर चला गया। मगर गगन खेलता रहा। छोटा तो बुरी तरह से थका था। उल्टा-सीधा खाना खाकर बिस्तर पर जा लेटा तो किसी बात का होश न रहा।

अगले दिन देर से सोकर उठा। तैयार हो रहा था, तभी नीरज आ गया। देखते ही बोला, "तू बैठ ! बस दस मिनट में चलते हैं।''

न बाबा मैं तो चला। तुम्हारी वजह से आये दिन डाट पड़ती है सजा मिलती है। मुझे बडी शर्म आती है।'' वह नीरज बस्ता उठा चला गया। गगन को बडा बुरा लगा। दोस्त मानता है। कुछ देर उसका इंतजार नहीं कर सकता था।

जब स्कूल पहुंचा तो देर हो चुकी थी। मास्टर जी हाजरी ले चुके थे। उसे देखते ही बोले, "यह स्कूल है गगन ! खालाजी का घर नहीं। जब मर्जी हुई चले आये। आज स्कूल की छुट्टी के बाद तुम दो घंटे रुकोगे। यही तुम्हारी सज़ा है; और हा, सब बच्चे ध्यान से सुन लें। परीक्षा में जो छात्र देर से आयेंगे। उन्हें इम्तहान नहीं देने दिया जायेगा।'' कहकर मास्टर जी अंग्रेजी पढ़ाने लगे।

छुट्टी होने पर सारे बच्चे घर चले गए। गगन को रुकना पड़ा। मास्टर जी कापियां जांचते रहे। उसे वहीं खड़ा कर लिया। वह रोने-रोने को आया। मगर करता क्या ? मास्टर जी बड़े सख्त मिजाज हैं। माफी मांगो तो चिढ़ जाते हैं। कहते हैं गलत काम करने के बाद माफी कैसी ?

शाम को जब घर पहुंचा तो मां-पापा सभी परेशान थे। पूछने पर बताया कि मास्टर जी ने सजा दी थी। सुनकर मां बोली, "तुमसे कितनी बार कहा है। वक्त से तैयार हो। स्कूल देर से पहुंचोगे तो सजा तो मिलेगी ही। तुम्हारे सारे अच्छे गुण इस एक ऐब के कारण दब गए हैं। मगर तुम्हें तो हम सब की बात जंचती नहीं। चाहे इसकी वजह से कितनी बेइज्जती सही।''

गगन वैसे ही दुःखी था। माँ की नाराज़गी से उसका मन और उखड़ गया। कहां सोच रहा था कि सीनरी बनायेगा। मगर उसका सारा उत्साह ठंडा पड गया। वह हॉकी उठा खेलने चला गया।

दूसरे दिन इतवार था। टेलीविजन पर अच्छे कार्यक्रम आ रहे थे। उन्हें बैठ कर देखता रहा। नहा धोकर खाना खाया। फिर सीनरी बनाने बैठा। दो घंटे मे मुश्किल से आधी सीनरी बनी। तभी अखिल आ गया। बोला, "आज खेलने नहीं चलोगे ?''

"नहीं अखिल। आज मुझे यह सीनरी पूरी करनी है। नहीं तो कल नीरज को उपहार क्या दूंगा ?''

"चलो भी गगन ! बस थोड़ी देर खेल कर तुम लौट आना। हम तुम्हें रोकेंगे नहीं।'' कहकर अखिल ने उसे हाथ पकड़ उठा लिया। उस दिन पार्क में बच्चो ने मैच खेलने का प्रोग्राम बनाया था। गगन मना ही करता रहा। मगर अहमद, शोमू, गोविन्दा ने जबरदस्ती उसे अपनी टीम का कप्तान बना लिया। अब गगन चाह कर भी बीच में घर न लौट सका। मैच खत्म होने में काफी देर लग गई। लौट कर उसने मेघा से कहा, "दीदी, एक प्याला चाय बना दो। पीकर मैं सीनरी पूरी कर लूं।''

'मेरी मानो तो इस वक्त रहने दो। थके हुए हो। चाह कर भी अच्छी नहीं बना पाओगे इससे सवेरे जल्दी उठ कर बना लेना।

"अच्छी बात है दीदी ! तुम सवेरे मुझे जल्दी उठा देना।'' कहकर गगन कपडे

बदलने चला गया

सुबह माँ पापा, मेघा सभी ने एक एक कर गगन को जगाया मगर हर बार वह "उठता हूँ" कहकर करवट बदल कर फिर सो जाता। पापा को यह देख बडी झुंझलाहट हुई। वे बोले, " सोने दो इसे। यह कभी नहीं सुधरेगा। जब इच्छा हो उठे। जगाने की ज़रूरत नहीं।"

गगन की जब आंख खुली तो साढे दस बजे थे। पापा ऑफिस, दीदी स्कूल जा चुके थे। घर में मां के अलावा और कोई न था। बिना नहाये, बिना नाश्ता किए, वह जल्दी से ड्रेस पहन स्कूल भागा। उस दिन गेट पर चपरासी ने रोक लिया। बोला, 'प्रिंसिपल साहब का हुक्म है। जो बच्चा देर से आये। उसे सीधे मेरे ऑफिस भेजो।"

सुनकर गगन की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। डरते हुए प्रिंसिपल साहब के पास पहुँचा। देखते ही उन्होंने पूछा, 'देर से क्यों आये ?"

गगन चुप ! क्या जवाब दे। उन्होंने फिर पूछा, "तुम्ही से पूछ रहा हूँ। देर से आने की वजह क्या है,"

"सर, गलती हो गई। आइन्दा समय से आऊँगा।"

"गलती करनेवाला हर बच्चा यही कहता है। आज से जो छात्र देर से आयेगा। उसे कक्षा में बैठने नहीं दिया जायेगा। साथ ही पांच रुपये फाईन देना पड़ेगा। यह चिट्ठी अपने पिता को देना। दस्तख़त करवा कर फाइन के साथ कल वापस लाना। अब तुम घर जा सकते हो" कह प्रिंसिपल साहब ने फाइल सामने खिसका दी।

गगन को असमय पर आया देखर मा ने पूछा। पर वह कुछ बोला नहीं। चुपचाप कमरे में जाकर बैठ गया। तभी उसे याद आया। आज नीरज का जन्मदिन है। उसने फट सीनरी उठाई और उसे पूरा करने बैठ गया। जल्दी पूरा करने के चक्कर में उसने ध्यान नहीं दिया। सुबह पैन में स्याही भरी थी। जल्दी में खुली दवात मेज पर छोड़ गया था। उसने दूसरा ब्रुश उठाने को जैसे ही हाथ बढ़ाया। स्याही की दावात लुढ़कर कर पूरी सीनरी पर फैल गई। उसके तो होश उड़ गए। अब क्या होगा ? वह बैठ कर रोने लगा।

मेघा स्कूल से लौटी। गगन को रोता देख भौंचक्का रह गई। पूछने पर उसने आज का पूरा हाल बताया। सुनकर वह बोली, "गगन, तुम्हें आये दिन स्कूल देर से पहुंचने पर डांट पड़ती है। आज प्रिंसिपल साहब के यहां पेशी हुई। जुर्माना अलग देना होगा। भला यह अच्छे बच्चों के लक्षण हैं। पापा सुनेंगे तो उन्हें कितना दु ख होगा।"

"दीदी, फाईन के अलावा, अब मुझे नीरज को उपहार के लिए भी तो रुपये चाहिये। वह मेरा पक्का दोस्त है। बिना कुछ लिए किस मुंह से उसकी पार्टी मे जाऊंगा।" गगन ने रुआंसे होकर कहा।

"पापा को आने दो। मैं उनसे रुपये दिलवा दूंगी।"

"पापा तो शाम तक आयेंगे। उसने मु : जल्दी बुलाया था।"

देखो गगन मा तो तुम्हे रुपये देने स ग्हीं अगर रुपये चाहिए तो पापा का इतजार तो करना ही पड़ेगा। तब तक तुम तैयार हो जाओ। उनके आते ही बाजार से उपहार लेते हुए चले आना।'' मेघा ने कहा।

पापा आये तो मेघा ने उन्हें सारा हाल बताया। पहले तो गगन को खूब डाट पडी। फिर पापा ने ऊंच-नीच समझाया। उसके बाद मेघा की सिफारिश पर बीस रुपये उपहार के लिए दिये। गगन अच्छा लड़का बनने का वायदा कर बाजार भागा। उसे जो चीज पसन्द आती। उसके दाम आसमान छू रहे होते। उसकी समझ में नहीं आ रहा था क्या खरीदे ? झुंझला कर दुकानदार ने पूछा, "जेब मे कितने रुपये हैं ? उसी हिसाब से चीज़ दिखाऊं''

बीस रुपये सुन उसने कुछ किताबें सामने रख दीं।। बोला, "इतने में बस यही मिल सकती हैं।''

एक किताब पसन्द करके उसने रंगीन कागज में बंधवाई। कार्ड पर अपना नाम लिखा; और लम्बे-लम्बे डग मारता नीरज के घर चल दिया। जब वह पहुचा पार्टी खत्म हो चुकी थी। उसकी मम्मी और दीदी बचा हुआ खाने का सामान उठा कर अन्दर ले जा रही थीं। नीरज ने उसे देखते ही कहा, "वाह जनाब ! दोपहर को काम करने बुलाया था। आप अब चले आ रहे हैं। जब पार्टी भी खत्म हो गई।''

नीलू दीदी हंस कर बोलीं, "भई, गगन के लिए समय का कोई बन्धन नहीं है। वह तो हमेशा से लेट-लतीफ रहा है। अगर आज देर से आया तो कौन सी खास बात है।''

मम्मी बोली, "नीरज, गगन आया है। उसे कुछ खिला तो दो।''

नीरज ने दो-तीन चीजें प्लेट में रख कर दीं। बोला, "माफ करना दोस्त ! केक और रसगुल्ले ख़त्म हो गए। क्या करता आनेवालों ने दो-दो, तीन-तीन खा लिये। दोनों चीजें बहुत अच्छी बनी थीं।

गगन को आज अपने ऊपर बेहद गुस्सा आ रहा था। काश, उसने समय का मूल्य समझा होता। उसे क्यों इतनी शर्मिन्दगी उठानी पड़ती। उसने मन ही मन निश्चय किया। अब से चाहे कुछ भी हो जाय हर काम वह समय से करेगा। घर-बाहर हर जगह उसे लेट-लतीफ होने की वजह से डांट पडती है। सजा मिलती है। शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। अब वह सबको दिखा देगा कि उसे भी समय की पाबन्दी का मूल्य पता है।

—शकुन्तला वर्मा
कोठी इमाम बक्श
मशकगंज
लखनऊ-226018

सेर को सवा सेर

दादार जी का पापा के नाम पत्र आया–"फतेह मामा के लड़के की शादी है। मुझे छुट्टी नहीं मिल रही हैं। तुम्हारी अम्मा इतवार को पहुंच रही हैं। तुम उन्हे स्टेशन जाकर ले आना।"

दादी ने आने की खबर सुनकर पापा, मम्मी के साथ ही सुकृति और अंजलि बड़े ही प्रसन्न हुए। इतवार को दोनों भाई बहिन पापा के साथ उन्हें लेने स्टेशन पहुंचे। घर आते ही दादी ने अपने साथ लाए पकवान के छोटे-छोटे कनस्तर खोल कर लड्डू, मठरी, खस्ता सुकृति और अंजली को दिए। देशी घी के बने पकवान का स्वाद ही अलग था। प्रकृति का मन न भरा। अपने हिस्से का खाकर बोला, "दादी मुझे दो लड्डू और एक खस्ता और दीजिए। जितना आपने दिया, वह तो मेरी दाढ़ में ही चिपककर रह गया।"

सुनते ही दादी बोली, "अरे सुक्कू, नाश्ता कोई पेट भर थोड़े ही खाया जाता है। यह पकवान तेरे पापा को पसन्द है। इसीलिए ज्यादा बनाकर लाई हूं। फिर शादी के घर में मैं सबके हांथ का झूठा-सच्चा थोड़े ही खाऊंगी। थोड़ा पकवान अपने साथ बांधकर ले जाऊंगी। अब शाम को खाना समझे।" कहकर दादी ने कनस्तरों में ताले डालकर रख दिए और कपड़े निकाल नहाने धोने की तैयारी करने लगीं। सुकृति का मन कुढ़ गया। ढेर सारा पकवान लाई हैं, पर खाने को नहीं दे रहीं। इसको मजा न चखाया तो मेरा नाम भी सुकृति नहीं है।

अगले दिन सुकृति नहा धोकर स्कूल जाने को तैयार हुआ। नाश्ता करने के लिए वाशबेसिन पर हाथ धोने गया तो देखा साबुनदानी में एक जोड़ी नकली दांतो का सैट रखा है। एक सेकंड तो वह उन्हें देखता रहा। फिर अचानक ख्याल आया कि अगर अब चूके तो बदला न ले सकेंगे। उसने झट दांत उठाकर नेकर की जेब में रखे और पापा के दफ्तरवाले कमरे में पहुंचा। कमरा खाली देख उसने दांतों का सैट चुपके से किताबों के पीछे अलमारी में डाल दिया और उलटे पैरों खाने की मेज पर आकर बैठ गया।

सुकृति और अंजलि अभी नाश्ता कर ही रहे थे कि दादी नहाकर आईं। उन्होंने धुले कपड़े तार पर डाले और वाशबेसिन पर दांतों का सैट लेने पहुची, मगर वहा साबुनदानी में केवल साबुन रखा था। उन्होंने वहीं से आवाज लगाई, "बहू ! तुमने

मेरे दात कहा रख दिए

मम्मी गैस पर पराठा डाल दौड़ी आई। बोलीं, 'मा जी, मैने दात नहीं उठाए हैं। आप याद करिए आपने कहां रखे थे।''

बस इसके बाद से पापा, मम्मी, सुकृति, अंजलि और रामू सब दादी के दांतों का सेट ढूंढने लगे। घर का कोना-कोना छान मारा। मगर दांतों को न मिलना था, न मिले। सुकृति ने धीरे से कहा, "कहीं चूहे तो बिल में नहीं घसीट ले गए। घर मे कितने मोटे-मोटे चूहे हो गए हैं।''

मम्मी परेशान, बिना दांतों के मां जी खाएंगी कैसे ?''

पापा ने कहा, "अम्मा के दांत जो ढूंढकर देगा, उसे पांच रुपये इनाम मे मिलेगे।''

इनाम के लालज में रामू ने फिर से सारा घर ढूंढा, मगर उसकी सारी मेहनत बेकार गई। मम्मी ने दादी के लिए सूजी की खीर बनाई। दोपहर में पतली-पतली बीमारों जैसी खिचड़ी पकाई। अच्छी भली दादी दांतों के बिना खाने-पीने को मोहताज हो गयीं।

सुकृति और अंजलि ने स्कूल से लौटते ही पूछा कि दादी के दांत मिले ? मम्मी ने निराशा में सिर हिला दिया। पापा परेशान कि अगले दिन अम्मा शादी में कैसे जाएगी ? कोई भी डॉक्टर एक दिन में दांतों का सेट बनाकर कैसे दे सकता था। हारकर दादी घर पर ही रुक गयीं। बोली, "खाने पीने की तो छोड़ो, पोपले मुह से कैसे सबसे बोलूंगी। मुझे शर्म नहीं आएगी। लक्ष्मण ! तुम बहू और बच्चों को लेकर शादी में शरीक हो आओ, वरना वह लोग बुरा मानेंगे। रामू घर पर है। मै उसके सहारे रह लूंगी।''

सबको बुरा तो बहुत लगा, मगर मजबूरी थी। दादी शादी में नहीं गई। लौटकर सबने शादी के हाल चाल सुनाए। बताया--सब आपकी कमी बहुत अनुभव कर रहे थे। खाना बहुत ही बढ़िया था। सुनकर दादी यह कहकर चुप रह गई। हमारे नसीब में शादी में जाना नहीं लिखा था। नहीं तो चहां आकर भी क्यो न जा पाती।

इस बीच सबने दादी के लाए पकवान खूब मजे ले-लेकर खाए। दादी बेचारी सबको निकाल कर देती रहीं। दो दिन बाद अंजलि अपना होवर्क कर रही थी। उसने मम्मी से एक शब्द का अर्थ पूछा। मम्मी बोली, "तुम पापा की अलमारी से शब्द कोष उठा लाओ। उसे देखना सीख लो। एक शब्द के कई अर्थ मालूम हो जाएंगे।''

अंजलि ने जैसे ही शब्दकोष उठाया, उसके पीछे दांतों का सेट देख वह चौंक पडी। फिर उन्हें उठाकर चिल्लाती हुई भागी आई--"मम्मी मिल गए। मम्मी, देखो यह मिल गए।''

मम्मी ने देखा तो हैरत मे रह गई अजलि के हाथो मे मा जी के दातो का ?ट था, दादी तो बडी प्रसन्न हुई। उन्होने अजलि को पाच रुपए इनाम के दिए, लेकिन सारा घर हैरान था कि यह काम किसका है ? खैर बात आई-गई हो गई। दादी कुछ दिन रहकर दादा जी के पास लौट गई।

एक दिन सुकृति खेलकर लौटा। उसने सुना, मम्मी रामू को डांट रही थी–"तुमने सब्जीवाले से पैसे देखकर क्यों नहीं लिए ? यह देखो खोटा सिक्का पकड़ा गया है। वैसे ही सब्जियों के दाम आसमान छू रहे हैं। ऊपर से यह नुक्सान अलग से।"

सुनते ही सुकृति बोला–"मम्मी वह सिक्का आप मुझे दे दीजिए।"

"नहीं सुकृति। सब्जीवाले ने हमें ठगा। इसका मतलब यह नहीं है कि हम किसी गरीब की मेहनत पर पानी फेरें।"

'नहीं मम्मी, मैं यह सिक्का चलाऊंगा थोड़े ही, बस खेलने के लिए मुझे चाहिए।'

सुकृति ने भोला सा मुंह बनाकर कहा। मम्मी ने सिक्का उसे दे दिया।

अगले दिन इंटरवल में सुकृति अपने दोस्त अमित, मोहनीश और जफर के साथ अमरूदवाले के पास गया। उससे चार अमरूद खरीदे। कटवाकर नमक लगवाया और खोटा सिक्का उसके टोकरे में डाल गेट के अन्दर हो गया। अमरूदवाला पुकारता ही रहा गया, "भैया, अरे ओ भैयाजी, यह खोटा सिक्का है। दूसरा रुपया दो। काहे को मुझ गरीब के पेट पर लात मारते हो।"

मगर चारों दोस्त हंसते-बातें करते, वहां से ऐसे नदारत हो गए जैसे उन्होंने अमरूदवाले की आवाज सुनी ही न हो। अमरूद वाला खिसियाकर अपना टोकरा उठाकर वहां से चला गया। दूसरे दिन से उसने वहां आना छोड़ दिया, जबकि, उसकी यहां अच्छी बिक्री होती थी।

सुकृति ऐसी हरकतें कर हमेशा खुश होता। अपने दोस्तों से खूब बढ़ा चढ़ाकर अपनी करामातों की डींगें हांकता। उसके दोस्त भी सोचते सुकृति उनकी कक्षा का सबसे हंसमुख, मजाकिया और खुश मिजाज लड़का है।

रामू की एक दिन तबीयत खराब हो गई। मम्मी ने सुकृति को दो रुपए दिए। कहा, 'बेटा, बाजार से दही ले आओ। दूध रखा है, जमा दूंगी।"

सुकृति ने रुपए लिए और बाजार चल दिया। रास्ते में उसके दोस्त अमित और जफर मिल गए। बातें करते वह लोग हलवाई की दूकान पर जैसे ही पहुंचे, जफर की नजर सामने नाई की दुकान पर पड़ी। बड़ा सा बोर्ड लगा था–"हाशिम भाई का सैलून।" वह बड़ी तन्मयता से ग्राहक के बाल काटने में व्यस्त था। जफर ने एक बार उसे देखा, फिर सुकृति को। फिर कुछ सोचता हुआ सुकृति से बोला–'यार तुम बातें तो बहुत बनाते हो, अगर हाशिम भाई को बेवकूफ बना लो तो जानूं ?'

सुकृति ने उसके कहने से सामने देखा। हाशिम भाई अपने काम मे तब भी मशगूल थे। वह हंसकर बोला-बस इतनी सी बात है ? शर्त लगा दो तो अभी बेवकूफ बनाकर दिखा दूं।''

"हां एक-एक आइसक्रीम की शर्त लगी। आज पैसे नहीं हैं। कल स्कूल मे खिलाने की शर्त रही।'' अमित बोला।

"अच्छी बात है। मैं अभी जाता हूं। तुम लोग देखते रहो। उससे ऐसी तफरीह लूगा कि वह भी याद रखेंगे कि कभी किसी से उनका पाला पड़ा था।''

उन दोनों को वहीं खड़ा छोड़ वह दूकान में घुस गया। जाते ही पूछा, "हाशिम भाई, आप मेरी दाढ़ी बना देंगे ?''

हाशिम भाई ने एक नजर सुकृति को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर मुस्कराकर बोले, "हुजूर, आप बैठें। बंदा आप सबकी खिदमत के लिए ही है। हाथ का काम निपटाकर फिर आपका ही का करूंगा।''

उसने ग्राहक के बाल कांटे। उससे पैसे ले वह सुकृति की ओर मुड़ा। कपडा झाडकर उसके गले के चारों तरफ लपेटा। गाढ़ा-गाढ़ा साबुन का फेना बना उसके चेहरे पर अच्छी तरह लगाया और दूसरे ग्राहक की दाढ़ी बनाने लगा।

सुकृति थोड़ी देर तक तो खामोश बैठा रहा, मगर साबुन के सूखने से चेहरे की त्वचा खिंचने लगी। वह झल्लाकर बोला "यह क्या मजाक है ? मैं पहले से बैठा हू और आप दूसरे ग्राहकों के साथ उलझे हुए हैं।''

हाशिम भाई ने पास आ, उसका मुंह इधर उधर घुमाकर देखा। फिर धैर्य से जवाब दिया, "छोटे मियां, आप अभी थोड़ी देर और इंतजार करें। अभी आपकी दाढत्री में सिर्फ एक बाल निकला है। जैसे ही आपकी बाकी दाढ़ी में बाल आ जाएंगे, मैं फौरन हजामत बना दूंगा।''

हाशिम भाई के उत्तर से सुकृति एक दम खिसिया गया। नाराज होकर बोला, "ठीक है आप इंतजार करते रहिए, दाढ़ी निकलने का, मैं तो चला।''

हाशिम भाई बोले, "जनाब छोटे मियां, पांच रुपये देते जाइए। फिर मन हो रुकिए, मन हो जाइए।''

"अरे वाह, आपने मेरी हजामत बनाई नहीं, फिर पैसे कैसे ?''

"आपको कुर्सी पर बैठाया, कपड़ा बांधा, साबुन लगाया, फिर डेढ़ घंटे से दाढी निकलने का इंतजार कर रहा हूं। आपकी दाढ़ी न उगे तो मेरा क्या कसूर ? पैसे तो मैं पूरे लेकर रहूंगा।''

इतना सुनना था कि सुकृति गले में लिपटा कपड़ा फेंक-फांककर भागने को हुआ। हाशिम भाई ने लपककर उसे पकड़ लिया। बोले-पांच रुपए निकालो। तब जाने दूंगा।''

"मेरे पास सिर्फ दो रुपए हैं, लेना हो तो लो, वरना।''

"वरना मैं तुम्हारी कमीज भी उतरवा लूंगा।" कहकर हाशिम भाई ने सुकृति की कमीज जबरदस्ती उतार ली। दोनों के लड़ाई झगड़े में भीड़ इकट्ठी हो गई। तभी अमित और जफ़र की नजर उधर पड़ी। वे भागकर बीच-बचाव करने जा पहुंचे। सुकृति को नेकर-बनियान में खड़ा देख वे हैरत में रह गए। सुकृति का शर्म से बुरा हाल हो गया।

हाशिम भाई अभी तक अपनी जिद पर अड़े थे। बिना पूरे पांच रुपए लिए वह सुकृति को जाने न देंगे। जफर और अमित ने अपनी जेब से तीन रुपए निकाले। दो रुपए सुकृति ने दिए। तब जाकर हाशिम भाई ने कमीज वापस दी। सुकृति की जितनी बेइज्जती सबके सामने आज हुई, इतनी उससे पहले कभी नहीं हुई थी। उसे क्या पता था कि हाशिम भाई सेर का सवा सेर निकलेगा। उसने मन ही मन कसम खाई कि अब कभी वह न तो शरारत करेगा और न किसी को इस तरह बेवकूफ बनाएगा।

—शकुंतला वर्मा
कोठी राजा इमाम बख्श
मशकगंज, लखनऊ-226018

अनोखा उपहार

मिलन की छुट्टियां समाप्त हुई। वह छुट्टियों में कहीं घूमने जाने का प्रोग्राम बनाने लगी कि अचानक विचार आया क्यों न छुट्टियां नानी के घर बितायी जायें। वहा अधिक दिनों से पहुंची भी नहीं हूं। जब अपने मन की बात अपनी मम्मी को बताई तो वह तुरन्त ही तैयार हो गई और उसे अगले ही दिन नानी के घर भिजवाने का प्रबन्ध कर दिया।

मिलन अपने भाई के साथ रेल का सफर तय करती हुई खेतों, नदियों, नहरों, पेडों आदि का आनन्द लेती हुई ननिहाल पहुंची। काफी दिनों के बाद मिलन को अपने घर आया देखकर उसकी नानी झूम उठीं और खुशी से गले लगाते हुए कहा, "आ गई बिटिया, काफी दिनों से देखने की लालसा थी। तुझे तो अपनी पढ़ाई से समय ही नहीं मिलता आदि ढेरों प्यारी-प्यारी बातें एक ही सांस में कह डालीं।"

चाय नाश्ता कर चुकने एवं हाल चाल पूछने के बाद प्रारम्भ हुआ नानी के साथ मिलन का प्यार भरी बातों का सिलसिला। मिलन की छुट्टियों के बारे में नानी ने पूछते हुए कहा, "कहो, बेटी कितने दिन की छुट्टी है कब तक रहोगी।"

"पूरे एक महीने की छुट्टियां बिताने आयी हूं। आपसे ढेरों कहानियां सुनूंगी। खूब बातें करूंगी।" मिलन ने कहा। "अच्छा, मेरी प्यारी बिटिया मेरे लिए क्या लायी है ?" नानी ने पुनः पूछते हुए कहा।

"कुछ नहीं, हां। मैंने सोचा है कि क्यों न इन छुट्टियों के बाद आपको कोई एक सुन्दर सा उपहार देकर जाऊं।" मिलन ने नानी के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

तो फिर उस उपहार को बता तो दो। आखिर क्या है वह अनोखा उपहार।

"नहीं, अभी नहीं, नानी ऐसा दूंगी कि आप खुशी से झूम उठेंगी।" मिनी बोली।

नानी के उत्साह और अपनी लगन से मिलन से खाली समय में कुछ पैसों से एक कागज की एलबम तरह-तरह के पेन्सिल रंगों से भकर तैयार करने लगी। जिसमें उसने भांति-भांति के सुन्दर पेड़ों, चिड़ियों, फूल पत्तियों आदि के चित्र बनाये। थोड़ी सी भी जगह बच जाने पर वहां कोई न कोई अच्छी सीख भरी बात लिख देती। सदा सच बोलो, सुबह जल्दी उठो, बडों का आदि करो। निर्बलों को

न सताओ, आस-पास स्वच्छता रखो, सभी से भाई चारा रखो आदि सुन्दर कथनों से उसने एलबम को सजा दिया।

बहुरंगी चित्रों, अनेक सुन्दर वाक्यों से सजी संवरी एलबम को जब मिलन ने नानी को उपहार में दिया तो वह खुशी से झूम उठीं। ढेरों आशीर्वाद उन्होंने एक ही सांस में दे डाले।

छुट्टियां समाप्त होने पर जब मिलन घर जाने को तैयार हुई तब नानी ने उसको नयी कक्षा की किताबें व कपड़े देते हुए कहा, 'बेटी, यह लो अपना पुरस्कार, घर जाकर खूब मेहनत से पढ़ाई करना और अगले वर्ष अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर छुट्टियां बिताने मेरे पास आवश्य आना। मैं इन्तजार करूंगी, टा....टा....।

—शशांक मिश्र भारती
हिन्दी, सदन, बड़ा गांव
शाहजहां पुर, 242401 (उ. प्र.)

मिलन ने छुट्टियां ऐसे बिताईं

मिलन की छुट्टियां समाप्त हुईं। तो वह स्कूल गई। नई कक्षा में उसे बहुत से दोस्त मिले। कुछ नये तो कुछ पुराने। नयी-नयी कक्षा में बड़ा आनन्द आ रहा था। सभी अपनी-अपनी गर्मियों की छुट्टियों के बारे में बता रहे थे। कोई छुट्टियो में अपनी नानी के घर गया था तो कोई बुआ, दादी और मौसी के घर।

सभी अपने कार्य बढ़ा चढ़ाकर बता रहे थे। ऐसी बातें मिलन को अच्छी न लगती थीं। वह उठकर अलग बैठ गई तो उसके सभी मित्र चौंके, सोचा क्या बात हो गई। कहीं हम सबसे नाराज तो नहीं हो गई। क्यों न हम सब जाकर उससे उसकी गर्मियों की छुट्टियों के सम्बन्ध में पूछें कि छुट्टियां कैसे बिताईं।

सभी मिलकर मिलन के समीप गए और एक साथ पूछते हुए कहा, "मिलन उठकर क्यों चली आई। क्या हम सबका साथ अच्छा नहीं लगा। अच्छा बताओ, तुमने गर्मी की छुट्टियां कहां बिताईं। छुट्टियों में क्या करती रहीं ?''

"कुछ नहीं, ऐसे ही बीत गईं।'' उदास मन से मिलन बोली।

ऐसे कैसे बीत गईं। हम भी तो जाने क्या कुछ किया।

तो सुनो, मैंने छुट्टियां अपनी नानी के घर बिताईं लेकिन खाली समय घूम-फिर कर कथा, कहानी सुनकर नहीं। वहा रहकर पूरे एक महीने में मैंने अपनी अनपढ़ नानी को पढना-लिखना सिखा दिया। खूब मेहनत की, उन्हें पढाने में; और जानते हो – उसके बदले में उन्होंने मुझे क्या दिया। बताओ, बताओ ? सभी एक साथ बोल पड़े।

नयी कक्षा की किताबें और ढेर सारे कपड़े तथा जब मैं घर आने के लिए तैयार हुई तो मालूम है नानी ने क्या कहा–कि अगले वर्ष छुट्टियां बिताने भी यहीं आना। इस बार हम दोनों मिलकर गांव के अन्य लोगों को भी पढ़ायेंगे।

मिलन की बात सुनकर सभी प्रसन्न हो गए। प्रत्येक ने मन में यह निश्चय कर लिया, कि हम भी अगले वर्ष मिलन की भांति कम से कम एक व्यक्ति को लिखना-पढ़ना अवश्य सिखायेंगे।

–शशांक मिश्र भारती
हिन्दी सदन, बड़ागांव,
शाहजहां पुर-242401 (उ. प्र.)

धवरी की वापसी

आज खूंटे पर बंधी गाय को देखकर नन्हे गोपाल जी की खुशी का ठिकाना न रहा। उसकी जिद पर उसके बाबा हरिनाथ को गाय खरीदनी ही पड़ी।

गाय डीलडौल में बेहद अच्छी थी। दूध-जैसा सफेद उसका रंग, दो छोटी-छोटी घुमावदार सींगें और लम्बी घनी पूंछ-सब कुछ बड़ा आकर्षक था। उसका बदन इतना स्वस्थ और चिकना था कि मक्खी भी बैठे तो फिसल जाए। देखनेवाले तारीफ करते नहीं अघाते थे।

परिवार काफी दिनों से दूध के लिए तरस गया था। जब इस गाय का आगमन हुआ तो सभी तन-मन से उसकी सेवा में जुट गए। गोपाल जी के पिता कृष्ण कुमार तो पूरा समय देते ही थे। परिवार के अन्य लोग भी उसकी देखभाल में सदा तत्पर रहते थे। गोपाल जी अलग ही घर में से आटा-गुड़ आदि लाकर गाय की नाद में डाल देता था।

धवल रंग था उसका। गोपाल जी धवरी कहकर उसे पुकारने लगा। बस, उसका नाम ही 'धवरी' पड़ गया। तीन-तीन पीढ़ी उसकी सेवा में लगी थीं। धवरी खुश थी। सीधी तो वह इतनी थी कि 'गाय' का नाम सार्थक करती थी।

धवरी बच्चा देनेवाली थी। उसे देखने से लगता था आज ब्याई, कल ब्याई। पर वह बयायेगी तो अपने समय पर ही। इस बीच गोपाल जी के लिए वह अति प्रिय बन गई। गोपाल जी के लिए वह भी उत्सुकता से ताकती रहती थी। मानों दोनों में गहरी दोस्ती हो गई हो। उसे नहलाने के लिए तालाब पर ले जाना पडता था। आगे-आगे गोपाल जी और पीछे-पीछे बाबा हरिनाथ हो लेते थे।

गोपाल जी जब कहीं से द्वार पर आता तो सबसे पहले धवरी के पास पहुंच जाता। उसका माथा सहलाता, उसके कानों में कुछ कहता और चिकने बदन पर हाथ फेरता। बदन सहलाते-सहलाते जब वह अपना हाथ थन के पास पहुंचा देता तो धवरी प्यार से उसे चाटने लगती थी। वात्सल्य में वह अपनी पूंछ कुछ-कुछ उठा लेती थी। दस बारह दिनों में ही दोनों में बहुत घनिष्टता हो गई।

धवरी की सेवा के साथ-साथ उसके ब्याने की उत्सुकता से प्रतीक्षा हो रही थी। एक दिन हरिनाथ ने खूंटे से छुड़कार उसे अंदर कर दिया। किन्तु सबकी खुशियां पर उस समय तुषारापात हो गया तब धवरी ने बडी मुश्किल से एक मरे हुए बछडे

को जन्म दिया। धवरी भी बहुत कोशिशो के बाद ही जिंदा बच सकी। हरिनाथ मृत बछड़े को फेंक आये। धवरी निरुपाय देखती रह गई। उसकी विवश आंखों से आसू छल आए। गोपाल जी को यह सब कुछ तब मालूम हुआ जब वह स्कूल से लौटकर आया। गोपाल जी को दूर से ही देखकर धवरी बोल उठी। बा .।

बछड़ा तो मर ही गया। धवरी दूध देगी भी या नहीं, इस आशंका से सबका दु ख दूना हो गया। अभी उसके थन से फेनुस (पहला दूध) निचोड़ लेने की विकट समस्या थी। वह अपने पास किसी को फटकने ही नहीं देती थी। एक से एक लोग हार गये। किसी को सफलता नहीं मिली। गोपाल जी डबडबाई आंखों से यह सब देख रहा था।

गोपाल जी डरता हुआ धवरी के पास गया। कहीं उसे भी सींग न मार दे। कृष्ण कुमार के मना करने पर भी वह नहीं माना। धवरी शान्त खड़ी रही। उसने धवरी का माथा सहलाया। सींगों पर हाथ फेरा। उसके कानों में कुछ बुढ़बुढ़ाया, "धवरी ! मैं भी दुःखी हूं। क्या तुम इसी तरह रहोगी ? और पीठ सहलाते हुए प्रतिदिन की भांति हाथ थन की ओर ले गया। धवरी चुपचाप खड़ी रह गई। कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। उछल-कूद भी नहीं की। बल्कि गोपाल जी को चाटने लगी। तभी कृष्ण कुमार ने बगल में बैठकर सारा फेनुस निचोड़ लिया।

धवरी को दुहने के लिए रोजाना का यही क्रम बन गया। गोपाल जी उसे पेन्हाते थे और बगल में बैठकर कृष्ण कुमार दुहते थे।

गोपाल जी के घर पर न रहने से वही उछल-कूद और सींग मारना शुरू हो जाता था। गोपाल जी तथा धवरी के बीच के वात्सल्य-भाव को शायद ही कोई दूसरा समझ पाए। दोनों में इतना लगाव हो गया था कि गोपाल जी थन में मुह लगाकर पीने की कोशिश करें तो वह तुरन्त पेन्हा जाती थीं।

और गर्मी की छुट्टियों में जब गोपाल जी ननिहाल चला गया था तो धवरी कई वक्त बिना दुहवाए रह गई। उसे दुहने के लिए कोई पास जाता तो वह एकदम खूखार बन जाती। गोपाल जी को शीघ्र वापस बुलवाना पड़ा। रोज सुबह-शाम गोपाल जी का घर छोड़ना मुश्किल हो गया।

हरिनाथ ने ऐसे चौपट गाय को बेच देने का मन बना लिया। कृष्ण कुमार भी यही चाहते थे। गाय से सभी ऊब गये थे।

एक दिन जब गोपाल जी स्कूल गया हुआ था, हरिनाथ ने घाटा सहकर धवरी को सुखदेव के हाथों बेच दिया। सुखदेव ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, "हरिनाथ भैया ! एक से एक विगड़ैल गायों को ठीक किया है। यह किस खेत की मूली है।"

सायंकाल स्कूल से वापस लौटने पर गोपाल जी बहुत रोया। उसके बाबा, पापा तथा दादी-अम्मां सभी ने बहुत समझाया, परन्तु उसने किसी की एक भी नहीं

सुनी। उसने सिसकिया भरते हुए कहा, 'हमारी धवरी ला दीजिए। कोई दूसरी गाय नहीं चाहिए।''

उधर सुखदेव के यहां जाकर धवरी ने जो ऊधम मचाया कि सबने पनाह माम ली। दूध देना तो दूर रहा उसने चारा खाना भी छोड़ दिया। सुखदेव ने उसे बहुत मारा-पीटा भी, कोई युक्ति नहीं छोड़ी परन्तु सफलता नहीं मिली। धवरी बहुत दु खी थी। उसके आंखों से आंसू झरते थे।

हार मानकर सुखदेव ने आकर कहा, "हरिनाथ भैया ! हमारे रुपये लौटा दीजिए, ऐसी गाय से बाज आए।''

हरिनाथ ने तपाक से कहा, "सुखदेव ! सौदा के समय गाय वापस लौटाने की बात तो नही हुई थी। तुम अपनी मर्जी से ले गये थे। रुपये नहीं लौटाऊंगा।''

नन्हां गोपाल जी ये बातें सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने बाबा से धवरी को वापस लाने की बहुत ज़िद की। उसका बाल-हठ तथा रोना-बिलखना देख हरिनाथ को अपना निश्चय बदलना पड़ा। उन्होंने गोपाल जी की बात मान ली।

गोपाल जी को साथ लेकर हरिनाथ धवरी को वापस लाने सुखदेव के गाव पहुचे। दूर से ही आते हुए गोपाल जी को देख धवरी हुंकार उठी। जैसे लगा, रस्सी तुड़ा लेगी। डरी, सहमी हुई दु.खों की मारी धवरी कातर दृष्टि से गोपाल जी को एक टक देखती रह गई। मानो सुखदेव द्वारा दी गई यातना को मूक भाषा में कह देना चाहती हो। अपने निकट गोपाल जी के पहुंचते ही वह चुपचाप खड़ी हो गई और उसे चाटने लगी।

बालक ने उसे खूंटे से अलग कर रस्सी पकड़ ली। आगे-आगे गोपाल जी, पीछे-पीछे लाठी लिए हुए हरिनाथ और बीच में आतुर धवरी अपने घर वापस लौट आई। धवरी आश्वस्त थी कि अब कोई सुखदेव उसे यातना नहीं पहुंचाएगा।

अब धवरी पूर्ववत खाने-पीने लगी। पहले की ही भांति दूध भी देने लगी। दोनों परस्पर बहुत प्रसन्न थे। दोनों के बीच इस प्रकार का अधिक लगाव जानकर परिवार के अन्य लोग भी प्रसन्न थें। धवरी की ऊधम मचानेवाली आदत तब खत्म हुई, जब अगली बार उसने एक बछडे को जन्म दे लिया।

—डॉ. सोभनाथ लाल
राजकमल लाज
जगदीश पुर,
बलिया-277001 (उ. प्र.)

चोरी गया जन्मदिन

सुनीता को जब कभी उसकी सहेलियों के जन्मदिन का आमंत्रण मिलता तो उसकी मां पार्वती देवी के सामने एक समस्या खड़ी हो जाती थी। आमंत्रण का मतलब—कोई न कोई उपहार तो ले जाना चाहिए न। ऐसे अवसरों पर सुनीता बहुत खुश होती थी कि चलो उसे एक और जन्मदिन पार्टी में शमिल होने का अवसर मिलेगा। किन्तु पार्वती देवी एक नयी उधेड़-बुन में परेशान हो जाती थी।। उनका दिल कोसने लगता कि महीने में बार-बार निमंत्रण-पत्र क्यों पहुंचते ही रहते हैं। सुनीता की समझ में यह बात नहीं घुसती थी। वह हर बार यही सोंचती कि मुझे भी एक अच्छा उपहार ले जाना चाहिए। मेरा उपहार दूसरों से कम कैसे रहे।

जूली के घर से जब जन्मदिन का आमत्रण आया तो सुनीत फूली नहीं समायी। उसने जिद करके जूली के वास्ते एक सुन्दर-सा सूट खरीदवाया। लेकिन जूली के घर पार्टी में जाने के लिए सुनीता के पास कोई अच्छे कपड़े भी तो नहीं थे। इसलिए एक वैसा ही बढ़िया सूट अपने लिये भी खरीदवा लिया। मां को बेटी के आग्रह के सामने झुकना ही पड़ा। दुकान पर बेटी के सामने अपनी मजबूरिया रखना पार्वती ने उचित नहीं समझा। काफी रुपये इन दो सूटों में ही खर्च हो गये। महीने का सारा खर्च आगे धरा पड़ा है, सोचकर पार्वती देवी ने सिर थाम लिया।

सुनीता के पिताजी का दफ्तर से घर लौटते समय एक सड़क-दुर्घटना में कुछ वर्षों पूर्व देहान्त हो गया था। उनकी पेंशन ही परिवार के भरण-पोषण का एकमात्र सहारा थी। इसी सीमित आय में पार्वती देवी घर का सारा खर्च चलाती थीं। सुनीता की पढ़ाई और आये दिन उसकी फर्माइशों पर होनेवाले खर्च से वह तंग आ गयी थीं। क्योंकि पति के देहान्त के बाद सारी जिम्मेदारियों का बोझ उनके ही सिर था। इसलिए खर्च के मामले में वह फूंक-फूंक कर कदम रखती थीं। परन्तु इस बार के बेतहाशा खर्च ने उन्हें कुछ ज्यादा ही उलझन में डाल दिया।

जूली की जन्मदिन-पार्टी में सुनीता अपनी मां को भी लिवा गयी। वह दिखाना चाहती थी—मेरी सहलियों के जन्मदिन कितने शानदार ढंग से मनाये जाते हैं। सुनीता ने अपनी मां को जूली के माता-पिता से मिलाया। लेकिन उन लोगो ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। शायद पार्वती देवी का स्तर उन लोगों-जैसा नहीं

था। वह महसूस कर पार्वती देवी को बड़ा क्षोभ हुआ। परन्तु सुनीता जूली से मिलकर और वहां की चकाचौंधपूर्ण सजावट देखकर बहुत प्रसन्न थी। उसे मां की भावनाओं का कुछ पता नहीं था।

पार्टी से वापस लौटने के बाद पार्वती देवी को यह बात बहुत खल रही थी कि आखिर मैं वहां गयी ही क्यों ? परन्तु यह बात उन्होंने बेटी से प्रकट नहीं की। इतनी अच्छी पार्टी में शामिल होने से सुनीता बहुत खुश थी।

"मां, मेरी सहेलियों के जन्मदिन कितने अच्छे ढंग से मनाये जाते हैं। क्या मेरा जन्मदिन तुम नहीं माना सकतीं ? मैं भी अपने जन्मदिन पर जूली, रोजी, सुषमा, बॉबी आदि को बुलाती। कितना अच्छा रहता मां !"

सुनीता ने मां के सामने यह प्रस्ताव रखते हुए न जाने और किन-किन सहेलियों के नाम गिना डाले। पार्वती के चेहरे पर इस प्रस्ताव से कोई खुशी नहीं दिखी। उलटे वह और भी सोच में डूब गयीं। मां को उदास देख सुनीता दौड़कर उसके गले से लिपट गयी।

'बेटी ! भगवान ने हमें ऐसा कहां रहने दिया ? तुम्हारे पापा की पेंशन ही हम लोगों के जीवन और रोजी-रोटी का सहारा है। जरूरी खर्चे देखूं या तुम्हारा जन्मदिन ? जन्मदिन की पार्टियां बड़े लोगों की बातें हैं बेटी। न हम वैसी पार्टी दे सकते हैं और न ही वे लोग तुम्हारे जन्मदिन पर आना उचित समझेंगी।"

"नहीं मां, वे लोग भी आएंगे। तुम ऐसा क्यों सोचती हो ? एक बार करके तो देखो।" निहोरा करते हुए सुनीता ने मां से बहुत जिद की

"तुम हर बात में जिद क्यो ठान बैठती हो ? इस माह तो जरूरी बातों के भी लाले पड़ गये। सारा पैसा तुमने दो सूटों में ही खर्च करवा दिया। अच्छा, अगली बार जब तुम्हारा जन्मदिन आएगा तो देखूंगी।" पार्वती देवी ने इतना कहकर तत्काल सुनीता की बात टाल दी। सुनीता भी खुश हो गयी। वह मां की ओर कृतज्ञतापूर्वक देखती हुई पढ़ने चली गई।

पार्वती देवी ने सुनीता को स्पष्ट तो नहीं बताया किन्तु महीने के जरूरी खर्चों में से भी कटौती कर-करके बेटी के जन्मदिन हेतु वह रुपये बनाने लगीं।

प्रायः इस माह बाद सुनीता का जन्मदिन आ पहुंचा। ये दस महीने के दिन बीतने में सुनीता के लिए भारी बोझ हो गये थे। किन्तु मां को लगा कि पलक झपकते ही दस माह बीत गये। सुनीता बहुत खुश थी। मौहल्ले की हमजोलियों तथा कक्षा की सहेलियों को बताते हुए वह बड़े गर्व का अनुभव करती थी।

पार्वती देवी दो दिन पहले से ही तैयारी में जुट गयीं। बिजली की झालरें, तरह-तरह के खिलौने, रंग-बिरंगी झण्डी-पताके, नये-नये कपड़ों की खरीददारी की योजना बन गयी। नाश्ता-भोजन के प्रबन्ध हेतु उन्होंने पड़ोसियों को सहेज दिया। एक दिन और शेष रह गया था। सुनीता के घर में चहल-पहल बढ़ गयी

थी मौहल्ले के बच्चे आ जाकर तैयारियो का लेखा जोख लेने लगे सामने से गुजरनेवालों को लगने लगा कि पार्वती देवी के घर में कोई विशेष आयोजन है। कुछ लोग पहली बार इस घर में होनेवाले ऐसे आयोजन से हैरान थे तो कुछ लोगो मे जानने की उत्सुकता भी कम न थी।

बगल के मौहल्ले का रहनेवाला दीपू भी उधर से गुजरा। उसी समय सुनीता की मां ढेर-सारा सामान लिये रिक्शे से उत्तर कर घर चली गयीं। पीछे-पीछे रिक्शावाला सारा सामान घर में रख आया। दीपू उसी रिक्शे से घर लौट पडा। उसने रिक्शेवाले से सारा भेद जान लिया कि पार्वती के घर कैसा आयोजन है और क्या-क्या खरीददारी हुई है।

दीपू भला आदमी नहीं था। उसे ऐसे हंसी-खुशी के मौके पर ही हाथ साफ करने की सूझती थी। वह घर पहुंचकर चोरी की योजना बनाने लगा। रात में जब सभी लोग गाढ़ी नींद में सो रहे थे, दीपू पार्वती देवी के घर की ओर चल पडा। सर्दी के दिन थे। सड़क बिल्कुल सूनी पड़ी हुई थी। दीपू की आहट पा जब कहीं कोई कुत्ता भौंकने लगता तो उसके दिल की धड़कन बढ़ जाती थी जैसे चोर की दाढी में तिनका। पार्वती के बरामदे में पहुँचकर वह एक दीवार के सहारे सटकर आहट लेने लगा। फिर उसने कढ़ी होशियारी से ड्राइंगरूम की एक खिडकी तोड दी। इकट्ठा सारा सामान देखकर उसकी बांछें खिल गयी। उसने सारा सामान एक बडे थैले में समेंट लिया। खरीददारी से बचे रुपयोंवाला पर्स भी उसके हाथ लग गया। देखते ही देखते वह सारे सामान सहित नौ दो ग्यारह हो गया। सुरक्षित घर वापस पहुँचने पर ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

दीपू मन ही मन बड़ा प्रसन्न था। वह अपनी खुशियों के संसार में विचरता हुआ चारपाई पर लेट गया। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गयी।

गाढ़ी नींद में दीपू ने एक स्वप्न देखा। खिड़की के रास्ते एक फरिश्ता कमरे मे आया। उसने थैले से निकालकर सारे सामानों पर एक नजर डाली। फिर उसने दीपू को संबोधित करते हुए कहा, "दीपू ! तूमने यह ठीक काम नहीं किया। कल सुनिता बिटिया का जन्मदिन है। प्रातःकाल जब उसकी माँ को इस चोरी का पता लगेगा तो उसके दिल पर क्या बीतेगी ? बिटिया की सारी खुशियों पर पानी फिर जाएगा। पार्टी में आनवाले अतिथियों के सामने पार्वती भाला क्या मुँह दिखाएगी ? सोचो, यदि सुनीता तुम्हारी बेटी होती तो तुम पर क्या बीतती ?" यह कहकर फरिश्ता जिस रास्ते आया था वापस चला गया।

दीपू की नींद खुल गयी। वह एकाएक उठ बैठा। उसने दरवाजा खोलकर इधर-उधर झांका। कोई दिखाई नहीं दिया। कौन था यह आदमी जो मुझसे ये बाते कह गया ? वह विचार करने लगा। उसके मन में यह बात बार-बार कौंधती रही, "सोचो, यदि सुनीता तुम्हारी बेटी होती तो तुम पर क्या बीतती ?"

वह उठकर कभी कमरे मे टहलता कभी सोने का प्रयास करता परन्तु उसकी आँखो से नींद उड़ गयी थी। उसने हार कर मन ही मन अपना अपराध स्वीकार कर लिया। तब तक सड़क पर प्रात:काल की चहल-पहल शुरू हो गयी थी। वह बड़े असमंजस कुछ समझ नहीं पा रहा था।

प्रात:काल पार्वती देवी की आँखें खुलीं। मन में बड़ी उमंग थी। पहले कमरो की सफ़ाई पर ही भिड़ गयी। झाडू लगाने के लिए जैसे ही ड्राइंगरूम में पहुँची, टूटी हुई खिड़की देख उनका दिल धक् कर रह गया। हे भगवान, यह क्या हुआ ? वह सिर थामकर बैठ गयीं। सुनीता को पुकारा। पास-पडोस में चोरी की खबर फैलते देर नहीं लगी। सभी ने बड़ा अफसोस ज़ाहिर किया। सुनीता की खुशियों पर तुषारापात हो गया। मन्नों, कुनकुन, प्रेमा, रीता, रंजन, सिंटू, रिंकू, गुड्डु और गौरव आदि बच्चे भी पड़ोस से आ गये। उन्होंने ढाढ़स बँधाया, "सुनीता ! तुम उदास मत हो। सामान चोरी चला गया तो क्या हुआ ? जन्मदिन तो चोरी नहीं गया। हम लोग तुम्हारा जन्मदिन मनाएंगे।"

"सामानों के साथ मेरा जन्मदिन भी चोरी चला ही गया। अब क्या जन्मदिन मनाना है। "सुनीता ने डबडबाई आँखों से अपने भाव प्रकट किये।

बातों की कशमकश में किसी प्रकार दिन बीता। सायंकाल ठीक समय पर सभी बच्चे जुट आए। रंजन ने एक पैकेट मोमबत्ती, रीता ने बड़ा सा केक, प्रेमा ने बिजली की झालरें, गुड्डु ने ताज़े फूलों के हार, गौरव ने रंग-बिरंगी झण्डियाँ, मन्नो ने मिष्ठान, तथा कुनकुन ने कागज की प्लेटें आदि सामान अपने-अपने झोले से निकाल कर रख दिये।

नन्हीं गीतिका, सपना और अर्चना ने पार्वती के गले लिपट कर कहा, "आण्टी जी ! अब उठिए भी। हम लोग दीदी का जन्मदिन मना लें।"

फिर तो पार्वती देवी ने सुनीता को जूली के जन्मदिनवाला सूट पहना दिया। आनन-फानन में जन्मदिन का उल्लास लौट आया। नौ मामबत्तियाँ जला दी गयीं। सुनीता ने एक-एक कर सबको मुँह से फूँक कर बुझाया। बच्चों ने फिर सुनीता से केक कटवाए। सादगी से जनमदिन का उत्सव सम्पन्न हुआ। लोग खा-पीकर हसी-खुशी अपने घर वापस गये। परन्तु जूली, रोजी, सुषमा, संगीता और बॉबी का इस अवसर पर न आना सुनीता को बहुत खला।

"बेटी ! दूर के ढोल सुहावने होते हैं। हमें ऊँचे-ऊँचे स्वप्न नहीं बुनने चाहिए। "सुनीता की माँ ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा।

दूसरे दिन प्रात:काल पार्वती देवी ने दूध लेने के लिए दरवाज़ा खोला। तडके दरवाज़े पर चोरी गया सारा सामान धरा देखकर वह दंग रह गयीं। सभी सामानो के साथ एक पत्र और उसमें नत्थी एक सौ एक रुपये के नोट भी थे। पत्र में लिखा था –

बहन

मैने आपका बड़ा अपमान किया है। ऐसे अनेक अपराध मैंने पहले भी किये हैं। किन्तु इस चोरी से मैं ग्लानि के मारे मरा जा रहा हूँ। चोरी से आपको बहुत कष्ट हुआ। बिटिया का जन्मदिन उल्लास से नहीं मनाया जा सका। इसका दोषी मैं हूँ। ईश्वर इस अपराध का दण्ड मुझे देंगे ही। इन एक सौ एक रूपयों में से पचास रुपये में आप खिड़की की मरम्मत करवा लेंगी। शेष इक्यावन रुपये मेरी ओर से बिटिया के जन्मदिन पर उपहार के है।

मैं सौगंध खाता हूँ, आज से कभी कोई चोरी नहीं करूंगा। क्या आप मुझे क्षमा नही कर देंगी ?

आप का -

अपराधी भाई

पार्वती देवी को जितनी खुशी सारा सामान वापस पाकर नही हुई, उससे अधिक यह पत्र पढ़कर हुई।

सारा घटनाक्रम सुनीता के मस्तिष्क में चलचित्र की भांति घुम रहा था। उसने माँ से लिपटकर कहा, "माँ" ! मेरी ज़िद के कारण तुम्हें इतनी मुसीबत झेलनी पड़ी। अब मैं कभी जन्मदिन नहीं मनाऊँगी।"

—डा. शोभनाथ लाला

राजकमल लॉज

जगदीशपुर,

बलिया - 277001 (उ.प्र)

सच्चे पडोसी

झील के किनारे नीम को एक पेड़ था। पेड़ पर नन्हीं गिलहरी एवं हरियल नाम का एक तोता रहता था। दोनों में गहरी मित्रता थी। तोता बाग से जब भी कोई फल लाता तो नन्हीं गिलहरी को भी देता। नन्हीं तोते के दिये हुए फल को बडे चाव से खाती और अपनी छोटी-छोटी आँखें मटका कर उसकी तारीफ करती। वह अपने पीछे के दोनों पंजों के बल बैठकर आगे के पंजों से फल पकड कर कुतरती तो तोते को बहुत अच्छा लगता।

उसी पेड़ पर एक दुष्ट काला कौआ रहता था। उससे नन्हीं गिलहरी और हरियल तोते की देस्ती नहीं देखी गई। वह उन्हें परेशान करता रहता। किन्तु हरियल एवं नन्हीं उसकी हर हरकत को हँसकर सह लेते।

एक दिन धूप बहुत तेज थी। मानो आसमान से आग बरस रही हो। धूल भरी तेज आँधी चल रही थी। दोपहर का समय था, नन्हीं गिलहरी और हरियल तोता अपनी -अपनी कोटरों में आराम कर रहे थे। हरियल तोते ने अभी झपकी ली ही थी कि काला कौआ उसकी कोटर के पास आकर जोर-जोर से कांव-कांव चिल्लाने लगा। कांव-कांव की कर्कश आवाज सुनकर हरियल तोता जाग गया। उसे कौवे की इस हरकत पर बहुत गुस्सा आया। उसने कोटर से झांक कर कहा, "क्या बात है कौवे भाई ? क्यों इतनी जोर-जोर से कांव-कांव चिल्ला रहे हो।"

कौआ अपने मुख पर विषैली मुसकान लाकर बोला, "तोते भाई आपको कोई तकलीफ है ?" कौवे के ऐसे रूखे व्यवहार से हरियल तोते को बहुत दुःख हुआ। कौआ फिर कहने लगा—"तोते भाई, मैंने कोयल से गाना गाने की तालीम लेनी शुरु कर दी है।" इतना कहकर कौआ कांव-कांव करने लगा।

कौआ और तोते की बातें सुनकर नन्हीं गिलहरी भी अपने कोटर से बाहर निकल आई। नन्हीं ने कौवे को समझाते हुए कहा, "कौवे भाई! दोपहर का समय है तेज लपट चल रही है, तुम भी अपने घोंसले में जाकर आराम करो।" गिलहरी की बातें सुनकर कौआ ताव में आकर बोला, "जाओ-जाओ बड़ी आई उपदेश देने वाली। मैं आराम हराम समझता हूँ। मैं तुम लोगों की तरह आलसी और निकम्मा नहीं हूँ।" इतना कहकर कौआ फिर कांव-कांव करने लगा।

तेज धूप एवं लपट से व्याकुल होकर एक राहगीर उसी पेड़ के नीचे आराम

करने के लिये लेट गया। घनी छाया और ठण्डी हवा के झोको से उसे नींद आ गई। लेटे हुए राहगीर को देखकर कौवे को शरारत सूझी; और वह सोये हुए राहगीर के ठीक ऊपर वालीडाल पर जा बैठा; और उसने वहीं से उसके मुँह पर बीट कर दी। अपने मुँह पर बींट गिरते ही राहगीर उठ बैठा। उसे पेड़ के ऊपर बैठे कौवे की इस दुष्टता पर बहुत गुस्सा आया। उसने पास में पड़े हुए एक पत्थर को उठाकर कौवे के मारा। पत्थर के लगते ही कौआ जोर-जोर से कांव-काव चिल्लाता हुआ नीचे आ गिरा। राहगीर उठकर चल दिया।

जोर-जोर से कांव-कांव की आवाज सुनकर नन्हीं गिलहरी और हरियल तोते ने अपनी कोटरों से झांका। नीचे कौवे को छटपटाता देख दोनों को दया आ गई। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और तेजी से कौवे के पास जा पहुँचे। कौआ अचेत पडा हुआ छटपटा रहा था। तोते ने उसके पंखो कों हटाकर देखा-"और घाव तो बहुत बड़ा है। खून भी बह रहा है।" कहता हुआ हरियल तोता झील की ओर उड गया। थोड़ी देर में तोता अपनी चोंच में पानी भर लाया। तोता अपनी चोंच मे पानी भर कर लाता और घाव पर डाल देता। नन्हीं गिलहरी अपनी मुलायम, रोयेदार रुईनुमा पूँछ से घाव को साफ कर रही थी।

घाव साफ होने पर खून बहना बन्द हो गया। कौवे को होश आया तो उसने सामने हरियल तोता और नन्हीं गिलहरी को देखा। तोता बोला,"अब कैसी तबियत है कौवे भाई।" कौवे की आँखों में आंसू छलक आये। वह फफक कर रो पडा-"तोते भाई मुझे माफ कर दो।"

नन्हीं गिलहरी अपनी आँखें मटकाती हुई बोली, "कौवे भाई इसमें माफ करने की क्या बात है ? सुख-दुःख तो सभी की जिन्दगी में आते हैं।" तोते ने भी नन्हीं गिलहरी की बात का समर्थन करते हुए अपना सिर हिला दिया। और कहा, "हाँ सही तो कह रही है गिलहरी बहन। सच्चे पड़ोसी का यही धर्म है कि वह अपने पडोसी के सुख दुःख में काम आये।"

कौआ अपने आंसू बहाता हुआ बोला, "हां तोते भाई, तुम ठीक कह रहे हो। लेकिन मैं ऐसा दुष्ट पड़ोसी हूँ कि हरदम तुम लोंगों को सताता रहता हूँ। अब मै कभी भी किसी को नहीं सताऊँगा और ना ही किसी के साथ दुर्व्यवहार करूंगा।"

नन्हीं गिलहरी एवं हरियल दोनो बहुत प्रसन्न थे। उन्हें एक और मित्र मिल गया था।

-श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
रावगंज, कालपी - **285204**,
जालौन (उ. प्र)

कपटी मित्र

चम्बल घाटी के जंगल में चीकू नाम का एक प्यारा खरगोश रहता था। उसका बदन दूध जैसा उजला और मखमल की तरह कोमल था। उसकी लाला दोनों आँखें बहुत सुन्दर थीं। वह जंगल में हरी मुलायम घास पर उछलता कूदता कभी चौकड़ी भरता और कभी कुलाचें भरता रहता।

जंगल के सभी जानवरों को उसका उछल-कूद करके खेलना बहुत अच्छा लगता था। सभी उसे प्यार करते थे। वह था भी बहुत प्यारा। चीकू सभी से अपनी गोल-मटोल आँखें मटकाकर मीठी-मीठी बातें किया करता था।

उसी जंगल में जग्गू नाम का एक भेड़िया रहता था। वह जब भी चीकू को उछलते-कुदते हुए देखता, उसके मुँह में पानी आ जाता। खरगोश के नर्म-मुलायम स्वादिष्ट मांस को खने के लिए उसका मन ललचा उठता। उसने एक युक्ति सोची और अधिक से अधिक खरगोश के नज़दीक पहुंचने की फिराक में रहने लगा।

एक दिन भेड़िया नाटकीय अंदाज में प्यारी - प्यारी बातें करने लगा। वह चीकू से बोला, "चीकू भाई तुम कितने सुन्दर हो, तुम्हारा शरीर जितना उजला है तुम मन से भी उतने ही उजले हो।" अपनी तारीफ सुनकर चीकू अपने दोनों कान खड़े करके उछलने लगा। उसे भेड़िया की प्यारी-प्यारी मीठी-मीठी बातें बहुत अच्छी लगीं।

एक दिन मौका पाकर जग्गू ने चीकू से कहा, "चीकू भाई, तुम्हारी चंचलता और निर्मलता को देखकर तुम्हें अपना मित्र बनाने को मन करता है। क्या तुम मुझे अपना मित्र बनाओगे।"

"हां-हां क्यों नहीं। तपाक से चीकू ने कहा और धीरे-धीरे दोनों में गहरी मित्रता हो गई।

एक दिन आसमान में काले बादल छाये हुए थे। ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। शाम बहुत ही सुहानी थी। जग्गू ने चीकू से कहा, "यार चीकू भाई आज मौसम कितना अच्छा है।" चीकू ने सहमति में अपनी गर्दन हिला दी।

जग्गू फिर कहने लगा--"ऐसा सुहाना मौसम कभी-कभी आता है। चलो नदी किनारे सैर करने चलते हैं।" भोला-भाला चीकू भेड़िये की चाल को न समझ सका और उछलता कूदता हुआ जग्गु के साथ नदी की ओर चल दिया।

नदी के किनारे पहुँचते-पहुँचते अंधेरा घिरने लगा। काली घटाएँ घिरी होने के कारण अंधेरा कुछ गहरा हो गया था। तेज हवाएँ चल रही थीं। नदी का किनारा एकदम सुनसान था। मौके को अपने अनुकुल पाकर दुष्ट जग्गू अपनी बड़ी - बड़ी क्रूर आँखों से चीकू को घूरने लगा। भेड़िया की इस हरकत से चीकू भयभीत होने लगा; और वह बोला, "जग्गू भाई, रात गहराने लगी है चलो घर लौट चलें।"

"चले जायेंगे घर, ऐसी क्या जल्दी पड़ी है। बहुत दिनों के बाद तो आज मौका हाथ लगा है तुम्हारे स्वादिष्ट मांस को खाने का।" इतना कहकर वह दुष्ट भेड़िया चीकू पर टूट पड़ा।

इसके बाद कभी भी किसी ने हरी घास पर चीकू को उछलते-कूदते हुए नहीं देखा।

—श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
रावगंज, कालपी - 285204
जालौन, (उ. प्र.)

गाड़ी देर से आई

'डाक्टर साहब, पिताजी की तबियत कैसी है ? ठीक हो जायेंगे न ?'

'मैं कोशिश तो पूरी कर रहा हूँ। जरूर ठीक हो जाना चाहिए।'

'डाक्टर साहब....'मैं आगे कुछ नहीं कह सका। फफक कर रो पड़ा।

'रोओ मत बेटे, तुम्हारे पिताजी जरूर ठीक हो जायेंगे। उनका इलाज कायदे से चल रहा है।' डाक्टर साहब ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा और अस्पताल के दूसरे वार्ड में चले गए।

किसी डाक्टर का इतनी देर रुकना और इतनी आत्मीयता से किसी बच्चे को समझाना। मत बात नहीं है उनके स्वभाव से जाहिर था कि वे मरीजों का बड़े कायदे से इलाज करते हैं और मरीजों के प्रति उनकी बड़ी सहानुभूति है। पर जिस कमरे में पिताजी को रखा गया था, उस कमरे में मुझे नहीं जाने दिया गया। मां को भी नहीं। केवल नर्से और डाक्टर ही पिताजी की देखभाल कर रहे थे। मैं और मां पिताजी को लेकर आए और अस्पताल में भरती कर दिया। इमरजेंसी मामला था। तुरंत भरती किया गया और इलाज शुरू हो गया। मुझे और मां को बाहर ही रहने को कहा गया।

डाक्टर ने इतना जरूर कहा, "यदि मरीज को दो ढाई घंटा और पहले ले आए होते तो अच्छा होता। खून काफी निकल चुका है। मरीज को खून चढ़ाया जा रहा है।

पर दो ढाई घण्टा पहले मैं आ कैसे जाता। लेकिन जहाँ घटना घटी थी, वहाँ से गाड़ी आगरा तक आने में कुल आधा घण्टा लेती, लेकिन उसको लगे दो-ढाई घण्टे हो गये थे। इसी में पिताजी की हालत और गंभीर हो गई।

जूँन की गरमी की छुट्टी शुरू होने के पहले मैंने पिताजी से कहा था—"पिताजी, इस साल हम लोग दीदी के यहां भी चलेंगे और फूफाजी के यहाँ भी। दीदी जयपुर में हैं और फूफाजी अजमेर में।" जरूर चलेंगे। पिताजी ने बड़ी खुशी से कहा था।

यात्रा के कार्यक्रम के अनुसार हमलोग अर्थात् पिताजी, मैं और माँ तीनो आदमी घर को चल पड़े। तूफान गाड़ी पकड़ी। बड़े भैया दो दिन पहले ही चले गए थे।

जब गाडी टूंडला के आसपास आई तो कुछ युवक गाडी में सवार हुए। जिस स्टेशन पर गाड़ी रुकी, वह उसके रुकने का स्टेशन नहीं था। फिर भी गाड़ी रुक

गई। शायद वहाँ किसी ने जंजीर खींची थी या होस पाइप काटी थी, या जो भी कारण हो। पर युवक गाड़ी में आए। दो एक की आंखें लाल-लाल थीं। लगता था, नशा किए हुए हैं। दो तीन के पास हाकियां थी।

जैसे ही वे गाडी में चढ़े, यात्री भय का अनुभव करने लगे। वे कुछ हरकतें ही इस तरह की कर रहे थे। एक गाना गा रहा था, दूसरा भद्दी गालियां दे रहा था। एक कह रहा था, "तुम लोग बहुत बदमाश हो, यात्रियों को तंग करते हो।" पर वह खुद ही यात्रियों को तंग कर रहा था। उसी ने एक आदमी को ढकेल कर खिसका दिया और जगह न होते हुए भी जबरदस्ती बैठ गया। वह आदमी बेचारा खड़ा हो गया। इस पर उसके साथी बोले, "मान लिया गुप्ता, तुम वीर हो। अब तुम खडे हो जाओ और उस छोकरे को बैठ जाने दो। वास्तव में जो यात्री हटा था, वह छोकरा नहीं, उन्हीं की उम्र का था, पर सीधा था।

जब कुछ युवक इस प्रकार का ऊधम कर रहे थे, तभी एक ने हाकी से डिब्बे का बल्ब फोड़ दिया। उसकी परई चूर चूर होकर गिर गई। सभी लोग चुपचाप डरे हुए बैठे थे। कोई विरोध नहीं कर रहा था।

डिब्बे में संयोग से ज्यादा भीड़ न थी। पर इन युवकों के आ जाने से जैसे तूफान आ गया था। लगता था, भारी शोर हो रहा है। मैं, पिताजी और मां भी डरे हुए थे। मां के ही पास सटकर लाल बुशशर्ट पहने हुए और पान खाए हुए एक युवक बैठा था। पान की लार मुंह के बाहर निकल रही थी। देखने में अत्यंत फूहड़ और गंदा लग रहा था। पर हम लोग कर क्या सकते थे। उसको हटने को कहते तो सब झगड़ पड़ते।

जब डिब्बे में शोर और उपद्रव हो रहा था, तभी एक युवक ने छुरा निकाला और पिताजी से कहा, "घड़ी उतारो।"

पिताजी ने डरकर घड़ी उतार दी।

वास्तव में अब सभी युवक हमलोगों के पास इकट्ठे हो गए थे और हमलोग ही उनके शिकार थे। पिताजी की घडी उतरवाकर उन्होंने माँ की जंजीर मांगी। मां ने जंजीर दे दी। हम लोग ही ऐसे लोग थे, जिनके पास सामान था; और लोगों के पास ऐसा सामान नहीं लग रहा था कि वे छीनते। यह भी हो सकता था कि पिताजी का सीधापन उनके लिये लाभकारी सिद्ध हो रहा था और वे केवल हमलोगों को ही परेशान कर रहे थे।

दो चीजें छीनने के बाद अब उनकी नजर हमारे बक्स पर गई। उन्होंने बक्स उठाने की कोशिश की। यह देखकर पिताजी एकाएक उठे और उस युवक को जो बक्स उठा रहा था, कसकर धक्का मारा। युवक मुँह के बल गिरा। पर तभी पिताजी को दूसरे युवक ने छुरा मार दिया। पिताजी बेहोश होकर अपनी ही सीट पर बैठे रह गए।

मां जोरजोर से रोने लगीं। डिब्बे में सन्नाटा सा छाया था। उसी समय एक युवक ने जंजीर खींच दी और जैसे ही गाड़ी की चाल धीमी हुई, सभी झटपट उतर गए। उन लोगों ने बक्स नहीं उठाया। बक्स मे सिर्फ कपड़े थे, रुपये पिताजी के पास ही थे।

जब सभी लोग चले गए तो लोगों का डर खतम हुआ। दो आदमियों ने पिताजी को सम्हाला। दो सिपाही भी उस समय न जाने कहाँ से आ गए। कहने लगे–''बदमाशों'' ने बाबूजी पर बहुत गहरा वार किया है। पिताजी को चोट लगने से वे बड़े दु:खी हो रहे थे।

लोगों ने राय दी – गाड़ी आगरा चल रही है। आगरा आ जाय तो इनको असपताल में ले जाना चाहिए। घाव पर लोंगों ने कसकर कपड़ा बांध दिया था।

विपत्ति भी अकेले नहीं आती। जब हम लोग और दूसरे लोग भी यह चाह रहे थे कि गाडी जल्दी आगरा पहुँचे कि किसी ने जंजीर खींच दी। कोई गाँव आया था। लोग उतरकर चले गए। अब गाड़ी चली।

अभी जरा सी ही गाड़ी चली थी कि फिर गाड़ी की चाल धीमी हुई और रुक गई। देखा, कुछ स्कूली लड़के किताबें लिए उतर रहे हैं। जिन लड़को को नियम और कायदा सीखने हैं और जो पढ़ते हैं, वे ही ऐसा करें तो सभी को आश्चर्य होगा। वह लोग कह उठे–'ये हमारे देश के विद्यार्थी हैं। इन्हें कौन समझाए। किसी ने कहा, "बाबूजी की हालत खराब हो रही है और इधर लोग जंजीर खींच-खींचकर गाड़ी को लेट कर रहे हैं। एक तीसरे आदमी ने कहा, "न जाने कौन किस हालत में गाड़ी में होगा, हो सकता है, और डिब्बे में भी कोई बीमार या घायल आदमी हो और अपने ठिकाने पर जल्दी पहुँचना चाहता हो, पर जंजीर खींचनेवाले लोग पहुँचने दें, तब तो।''

राम-राम करके आगरा आया। दो आदमी हमलोगों के साथ उतरे और रिक्शा लाए। पिताजी और माँ को एक रिक्शे पर बैठाया। एक पर मै और दो आदमी सामान लेकर बैठे। अस्पताल तक लोग गए और पिताजी को भरती कराया, और तब इलाज शुरू हुआ। दो आदमीयों में से एक आदमी चला गया और एक हमारी मदद के लिए रुक गया। रात भर रहने के बाद, सुबह वह भी डाक्टर से बात करके चला गया। शायद डाक्टर ने उसे बता दिया था कि हालत सम्हल गयी है।

हालत सुबह तक सचमुच सम्हल गयी थी। डाक्टर साहब ने भी कहा, "अब तुम्हारे पिताजी को हमने बिलकुल सम्हाल लिया। जल्द ही वे ठीक हो जायेंगे। फिर डाक्टर साहब बोले, "यदि लोग जंजीर खींच कर गाड़ी को न रोकते और गाडी समय से आई होती तो मरीज को इतना समय न लगता। गाड़ी देर से आई। देर हो जाने से शरीर से काफी खून निकल गया पर खुशी है कि मेरी मेहनत सफल हो गई

जंजीर खींचकर या हौज पाइप काटकर गाड़ी रोकने से किसी की जान भी जा सकती है। पर न कोई इस बात को सोचता है और न अनुभव करता है। दो ढाई घण्टे की देर – जिस हालत में पिताजी थे, बहुत होती है। डाक्टर ने ही सचमुच पिताजी को नया जीवन दिया।

पिताजी की पूरी छुट्टी इलाज में ही बीती। जो लोग लूटपाट करते हैं। वे बहुत बुरे हैं और जो गाड़ियों को समय से नहीं चलने देते, वे भी बहुत बुरे हैं। पिताजी तो ठीक हो गए, पर मैं डाक्टर साहब का वह वाक्य कभी नहीं भूल पाता–गाड़ी देर से आई। इस वाक्य के याद आते ही सारी घटना आँखों के सामने आ जाती है और मन में भय जैसा छा जाता है।

—डा. श्रीप्रसाद

एन 9/87 डी–77

जानकी नगर पो. बजरडीहा

वाराणसी – 221109 (उ. प्र)

बैसाखी

सुवृत सकूल से घर तब तो ठीक से आ जाता है, पर सीढ़ी चढ़ने में उसे दिक्कत होती है। उसका स्कूल ज्यादा दूर है भी नहीं, यही कोई दो फर्लांग है। दो फर्लांग की दूरी सुवृत वैशाखी से हंसेते-खेलते पार कर लेता है।

फिर अगर वह अकेले आता तो शायद उसे यह दूरी खल सकती थी। पर वह अकेला नहीं आता। उसके साथ रहते हैं जयंत, शेषधर, आंजनेय और दानिश। चारों हंसते बोलते साथ-साथ घर तक आते हैं। पूरा रास्ता इतने मजे से बीतता है कि कुछ कहना नहीं। इनके सबके व्यवहार से सुवृत यह मन में ला ही नहीं पाता कि उसका एक पैर घुटने से कट गया है और इसके कारण वह वैशाखी से चलता है। सिर्फ एक बार अपने स्कूल में उसने एक लडके के मुँह से सुना था—अच्छा लगड़, मत बताओ। पर इसकी सजा लड़के को इतनी अधिक भुगतनी पड़ी कि फिर उसकी जबान से या किसी अन्य लड़के की जबान से उसके लिए कभी कोई ऐसा शब्द निकला ही नहीं कि उसे लंगड़े होने का अनुभव होता या पीड़ा होती।

स्कूल में सुवृत को लंगड़ कहने की उस घटना से जैसे तहलका मच गया था। बात यह भी कि स्कूल में वार्षिक परीक्षाएं चल रही थीं और सुवृत के आगे बैठे लडके ने सुवृत से धीरे से कहा था—पांचवें प्रश्न का उत्तर क्या होगा ? प्रश्न गणित का था। सुवृत गणित में तेज ही नहीं इतना तेज है कि कभी-कभी अपने अध्यापक से भी जल्दी प्रश्न हल कर लेता है। लड़का सुवृत के उत्तर से अपना उत्तर मिलाकर यह निश्चय कर लेना चाहता था कि उसका उत्तर सही है। पर सुवृत ने नम्रता से उत्तर दिया—मुझसे मत पूछो। यह ठीक नहीं है।

इसी के उत्तर में क्रुद्ध होकर लड़के ने कहा था, "अच्छा लंगड़ मत बताओ।"

बात आसपास के लड़कों ने सुन ली और कक्ष निरीक्षक से कहा। क्या लडके, क्या अध्यापक—सभी सुवृत की प्रतिभा से चमत्कृत रहते हैं और उसे प्रेम करते है। कक्ष निरीक्षक ने तुरंत आकर लड़के का अनुक्रमांक लिखा और प्रधानाचार्य जी से शिकायत की। परीक्षा के बाद अपने कमरे में प्रधानाचार्य जी ने लड़के को बुलाया। कक्ष निरीक्षक अध्यापक और दूसरे अध्यापक भी आए। कई लड़के भी आए। प्रधानाचार्य जी लड़के से बोले, "तुमने सुवृत से क्या कहा ?" लड़के ने जो कहा था, बता दिया।

"क्या यह उचित है ?" प्रधानाचार्य जी ने पूछा।

"भूल हो गई। मैं माफी मांगता हूँ। अब कभी ऐसा नहीं कहूँगा।"

लड़के ने सच्चे हृदय से कहा।

तुम्हें माफी तो सुवृत से मांगनी है,क्योंकि तुमने सुवृत का दिल दुखाया है। प्रधानाचार्य जी ने कहा।

तभी सुवृत बीच में ही बोल पड़ा, "जाने दीजिए सर। ये तो मेरा मित्र है। भूल से कह गया। मुझसे माफी मांगने की जरूरत नहीं है।"सुवृत ने उसका हाथ पकड लिया। लड़का वास्तव में अपने मन में बेहद पश्चाताप का अनुभव कर रहा था। वह भीतर ही भीतर पीड़ित हो कर अपने को घोर से घोर सजा दे रहा था।

पर क्षणभर के लिये तो सुवृत के मन में यह बात आ ही गई कि यदि उसका एक पैर कट न गया होता तो यह बात क्यों होती, उससे ऐसे कोई क्यों कहता। लेकिन जिस तरह बात आई, वैसे ही दूसरों के प्रेम, दुलार और आदर ने उसे इतना बल दिया कि उसका मन प्रसन्न हो उठा। वह खुश हो गया कि लोग उसे इतना प्रेम करते हैं और इतना आदर करतें है।

स्कूल से सूवृत अपने साथियों के साथ घर तक आ गया। उसने दरवाजा खटखटाया। ऊपर खिड़की में से उसकी बहन सुकीर्ति ने उसे देख लिया। वह दौडी हुई आई। सुकीर्ति बी. ए. में पढती है। वह भी बहुत मेधवी है। संगीत और नृत्य मे ही नहीं पेन्टिंग में भी वह बहुत अच्छी है। सुवृत की ही भांति हर परिक्षा मे वह प्रथम रही है। उसके पिता सुवृत और सुकीर्ति को घर के दो जगमगाते दीपक मानते है। बात सही भी है।

सुवृत के साथियों ने सुकीर्ति को देखते ही नमस्ते किया और अपने-अपने घर चल दिए। सुकीर्ति सुवृत को पकड़ कर सीढ़ियों से ऊपर घर में ले गई।

जैसे ही सुवृत वैशाखी अपने कमरे के कोने में रखकर कुर्सी पर बैठा कि उसकी माँ आ गई। उन्होंने उसके माथे का पसीना पोछा और देह पर हाथ फेरने लगी। माँ ने स्कूल की और पढाई लिखाई की बातें पूर्छी। तभी सुकीर्ति चाय और नाश्ता ले आई। जब सुवृत ने चाय नाश्ता ले लिया तो उसकी माँ चली गई। सुवृत स्कूल से आकर थोड़ी देर पढ़ता है।

यद्यपि सुवृत अपने स्कूल, घर तथा दूसरों के व्यवहार से बड़ा प्रसन्न था, पर एक बार उसका दिमाग पुरानी बात पर चला ही गया। तीन साल पहले की बात थी। अन्य लड़कों के साथ वह रेल की यात्रा कर रहा था। जब स्टेशन आता, वह चट प्लेटफार्म पर उतर कर घूमने लगता। जैसे ही गाड़ी चलती, वह दौडकर पावदान पर चढ़ जाता। पर उसी पावदान पर कुछ और लोग भी खड़े हुए थे। गाडी चल पड़ी थी। उसका पैर फिसल गया। डिब्बा आखिरी था, नहीं तो जान जा सकती थी। उसका पैर पटरी पर आ गया और अलग हो गया। वह हमेशा के लिए

लंगडा हो गया।

जाने अनजाने आदमी से गलती हो ही जाती है। कोई नहीं जानता कि किससे कब गलती होगी। गीती होती है और बुरा परिणाम सामने आ जाता है। वह परिणाम आदमी के साथ पूरे जीवन रहता है। पर आदमी फिर कुछ ऐसा करता है कि अपनी भूल पर विजय पा लेता हैं। उसकी गली एकतरफ हो जाती है और उसके अच्छे काम के कारण गलती उसेत तकलीफ नहीं देती।

सुवृत तेज तो था ही। पैर कट जाने पर उसका ध्यान दूसरी तरफ गया। उसने अपने को पढ़ाई के लिए समर्पित कर दिया। वह न केवल अपने स्कूल मे प्रसिद्ध हुआ, बल्कि प्रदेश के मेधावी लड़कों में भी उसका नाम आ गया। आदमी मेहनत से क्या नहीं कर सकता।

सुवृत ने पिछली बातें सोंचीं और दिमाग है निकाल दीं। उसे वार्षिकोत्सव के समय प्रधानाचार्य जी की कही हुई बातें याद आ गई। वार्षिकोत्सव में स्कूल के अध्यक्ष ने उसको पांच सौ एक रुपये का पुरस्कार दिया था। उस समय प्रधानाचार्य जी ने उसका परिचय देते हुए कहा था – सुवृत जैसे छात्र को पाकर हम सब बड़े खुश है। हमें ऐसे छात्र पर अत्यंत गर्व है। सुवृति जितना मेधावी है, उतना ही विनम्र भी भविष्य में यह बालक देश की बहुत बड़ी सेवा करेगा।

पंडाल तालियों की गड़-गड़ाहट से गूंज उठा। सुवृत वैशाखी लगाए मंच पर खड़ा था। नम्रता से उसका सिर झुका रह गया। वह हाथ जोड़ना चाहता था। पर वैशाखी के कारण हाथ न जोड़ सका।

सारी बातों को दिमाग से पौंछकर सुवृत ने पुस्तक उठाई और पढ़ने लगा। चित्त में खुशी की लहरें उठ रही थीं।

वह पढ़ता रहा, पढ़ता रहा, जितनी देर उसे पढ़ना था।

–डॉ. श्री प्रसाद

एन 9/87 डी 77

जानकी नगर, पो. बजरडीहा

वाराणसी – 221109 (उ. प्र.)

विश्वास

काशी में दुर्गाघाट स्थित नाना फड़णवीस बाडा नामक ऐतिहासिक मकान मे एक महाराष्ट्रीय विदुषी महिला रहती थी। नाम था गंगाबाई। गंगाबाई की जहां धर्म मे निष्ठा थी, वहीं ईश्वर पर भी उनका दृढ़ विश्वास था। विशेषकर भगवान् दत्तात्रेय की तो वे नित्य उपासना करतीं थी। गंगाबाई वैदिक परंपरा की होने के कारण शास्त्र के आदेशानुसार अपनी सत्ता को पति की सत्ता में विलीन कर देना ही अपना धर्म समझती थी, इसीलिए उन्होंने अपने पति कों गुरू मानकर उनसे गुरू-मंत्र की दीक्षा भी ली थीं

काशी में पंचगंगा घाट के ऊपर भगवान दत्तात्रेय का एक अति प्राचीन मंदिर है जहां गंगाबाई अपना दैनिक कार्यपूर्ण कर नित्य जाती थी। वहां वे भगवान् दत्तात्रेय की मूर्ति की प्रदक्षिणा करती तथा प्रदक्षिणा करते हुए गुरूमंत्र का जाप भी करती। इस प्रकार इस मंदिर में उन्होंने तीन लाख प्रदक्षिणाएं पूरी कर के सिद्धि प्राप्त की थी, जिसके फलस्वरूप इस मंदिर में उन्हें एक बार सफेद नाग का दर्शन भी हुआ था।

एक बार गंगाबाई अपने नियमानुसार नित्य की प्रद क्षणाएं पूरीकर भगवान दत्तात्रेय के श्री विग्रह के सामने आंखें बन्द कर ध्यान में मग्न थी तभी किसी ने श्री विग्रह के सामने रखी जप की मूंगे की माला चुरा ली। जब गंगाबाई ध्यान से उठीं तब सामने जप की माला न देखकर बहुत अधिक चिंतित हुई। इधर-उधर खोजने पर भी जब माला नहीं तब अकस्मात् एक लड़के पर उन्हें शक हुआ, क्योकि कई दिनों से वह लड़का उनकी प्रदक्षाणा के समय वहीं आस-पास रहता था। लडका उनके मुहल्ले का होने के कारण, उसके परिवार को भी जानतीं थीं।

गंगाबाई मूंगे की माला का मोह नहीं था किन्तु जप की माला खो जाने का उन्हे अत्यधिक दु.ख था। इसीलिए उन्होंने उस लड़के के घर जाकर लड़के के पिता से स्पष्ट कह दिया कि आपके लड़के ने ही मेरी जप की माला चुराई है। उसे मुझे वापस दिलाइये। अपने लड़के पर इस प्रकार किसी महिला द्वारा स्पष्ट चोरी का आरोप सुनकर पिता ने अपने लड़के का ही पक्ष लिया और गंगाबाई को बहुत बुरा-भला कहा। जिसके कारण गंगाबाई को दु:खी मन से घर लौटना पड़ा।

दूसरे दिन गंगाबाई अपने घर का दैनिक कार्य पूर्णकर मंदिर गयीं किन्तु मन

अत्यधिक अशान्त था। अत. उन्होने उसी समय मन मे दृढ़ सकल्प ले लिया कि—जब तक मेरे जप की माला नहीं मिलेगी तब तक ना ही मैं प्रदक्षिणा करूंगी और ना ही जप। इस प्रकार वे उस दिन केवल श्री विग्रह का दर्शनकर घर लौट आयीं।

कहते हैं कि भक्त के विश्वास के आगे ईश्वर को सदैव झुकना ही पड़ा है, यहां भी सम्भवत: भगवान को ही झुकना पड़ा, तभी तो एक चमत्कार हुआ। उस लड़के की आंखों की रोशनी चली गयी, जिसने वह माला चुराई थी। पिता को पुत्र की आंखों की अकारण रोशनी चले जाने से चिन्ता हुई तथा उसे गंगाबाई की कही बातें याद आयीं। उसने तत्काल अपने पुत्र से उस माला को चुराने की बात पूछी, जिसे पुत्र ने भी स्वीकार किया। लज्जित पिता अपने पुत्र को लेकर उस माला को पहुंचाने गंगाबाई के घर गया तथा जप की माला देकर गंगाबाई से क्षमा याचना की। गंगाबाई भी अपने जप की माला मिलने से अत्यधिक खुश थी। अत: उनके मुख से निकल ही गया कि "जाओ सब ठीक हो जाएगा" और वही गंगाबाई की वाणी ईश्वर की वाणी सिद्ध हुई। कुछ ही दिनों में उस लड़के की आंखें की रोशनी पुन: वापस आयी तथा वह फिर से पहले जैसा हो गया।

—संजय महाड़कर 'वासुदेव'
के. 29/27, गणेश दीक्षित लेन
दुर्गाघाट, वाराणसी - 221001

टणी-प्रेम

कई साल पहले की बात है काशी में एक महाराष्ट्री ब्राह्मण रहते थे। नाम था गणपति शास्त्री। गणपति शास्त्री काशी के एक वरिष्ठ विद्वान तथा अपने समय के सर्वोच्च वेद परिक्षक वेदमूर्ति कृष्ण दीक्षित के छः पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र थे। हिन्दी में एक मुहावरा है–दिया तले अन्धेरा "सम्भवतः गणपति शास्त्री पर ये मुहावरा एकदम सटीक बैठता था, क्योंकि वे इतने बड़े विद्वान पिता के पुत्र होकर भी बहुत अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे। साथ ही उन्होंने अपनी परंपरा से हटकर एक व्यवसायी का जीवन बिताना स्वयं ही पसंद किया था, तभी तो वे बनारसी साड़ी का व्यवसाय करते थे। आजन्म अविवाहित ही रहने के कारण गणपति शास्त्री घर मे अकेले ही रहते थे। अपनी तनहाई को कम करने की गरज से या आस्थावश, कारण चाहे जो भी रहा हो, किन्तु वे थे एक सच्चे गौ-सेवक। गणपति शास्त्री की गौ–सेवा प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने जीवनकाल में एक के बाद एक कर कई गायो की सेवा की थी। सन् 1972–73 के आस पास उनके पास जो गाय थी उसका नाम उन्होंने "टणी" रखा था। यह टणी लाल रंग की बड़ी–बड़ी आँखों वाली एक बेहद मरकही गाय थी। किन्तु इस गाय की एक विशेषता थी कि यह अधिकतर बडे-बुजुर्गो पर ही अपने छोटे–छोटे किन्तु नुकीले सींगों का प्रयोग करती थी, बच्चों से तो जैसे उसे बेहद प्यार था। यहाँ तक की कई बार बच्चे इससे खेलते तो कई बार इसके पैरों के नीचे से इधर-उधर आते-जाते किन्तु मजाल है कि उन्हे यह मरकही टणी जरा सा भी नुकसान पहुँचाए।

गणपति शास्त्री को इस टणी से बेहद प्यार था तभी तो वे इसे हरी-हरी घास चरने के लिए गंगापार भेजा करते थे, जिसके लिए उन्होंने बंगड़ नाम के एक चरवाहे को भी मासिक वेतन पर रखा था। यह बंगड़ प्रतिदिन ग्यारह - साढ़ेग्यारह तक शास्त्रीजी के घर जाता और उस टणी को हरी-हरी घस चरने के लिए राजघाट से गंगापर ले जाता। फिर तो टणी शाम को ही लगभग चार साढे चार बजे के आस-पास अकेले ही घर लौटती। प्रतिदिन आने-जाने के कारण रास्ता अब उसे याद हो गया था।

एक बार की बात है शहर में एक अभियान चला था, छुट्टे पशुओं को पकड़ने का पता नहीं कैसे इतनी मरकही टणी उन पशुओं में पकड़ली गयी। सम्भवतः एक

अच्छी नस्ल की गाय को देखकर इस अभियान दल ने इसे घर दबोचा होगा क्योंकि यह राजघाट से शाम को घर अकेले ही लौटती थी।

अपने निश्चित समयपर उस दिन टणी के घर न लौटने से गणपति शास्त्री बेहद चिंतित हो उठे और वे कुछ इन्तजार के बाद ही उसे ढूंढने निकल पडे। उसी समय एक बार तो वे स्वयं उस स्थान तक भी हो आये जहाँ टणी घास चरने के लिए गंगापार जाया करती थी। कहीं-कहीं रास्ते में ही रुककर कुछ परिचित दुकानदारों से पूछते भी–"क्या आपने हमारी गाय को आज लौटते हुए देखा है ?" इधर चरवाहा बंगड़ भी टणी के घर न लौटने से परेशान था। वह भी टणी की खोज में ही लगा था। वैसे बंगड़ ने टणी के घर अकेले ही लौटने की बात गणपति शास्त्री को पहले ही बता दी थी अतः वह जिम्मेदारी से तो मुक्त था किन्तु जहाँ गणपति शासत्री पर उसकी अगाध श्रद्धा थी वहीं रोज ही इस गाय को ले जाने के कारण उसे भी प्यार था।

दो दिन की अथक भाग दौड़ के बाद अंततः गणपति शास्त्री को टणी का पता मिल ही गया। पता चला कि टणी कांजी-हाउस में है। (गौ-शाला में है) दो दिन से टणी की खोज में भूखे-प्यासे ही भटकते गणपति शास्त्री पता पाते ही कांजी-हाउस पहुँचे और वहाँ के अधिकारियों से सम्पर्क कर उनसे टणी को छोड़ने का निवेदन करने लगे। कांजी-हाउस का नियम है कि जिन पशुओं को पकड़ा जाता है यदि वे किसी के पालतू हैं तो उन्हें छुड़वाने के लिए जुर्माना या उन पशुओं का खाने-पीने, रहने का खर्च वहाँ देना पड़ता है। गणपति शास्त्री तो उसे भी देने को तैयार थे किन्तु वहाँ के ही एक अधिकारी बलराम सिंह यादव ने यह कहकर गाय को देने से इन्कार कर दिया कि–"आपके पास क्या प्रमाण है कि यह गाय आपकी ही है।" अपनी टणी की खोज में पागलों की तरह दो दिन से भटकते गणपति शास्त्री के तो जैसे पैरों तले जमीन खिसक गयी" उनका चेहरा गुस्से से तमतमा गया तथा वे कुछ क्षण सोचकर एकाएक पीछे मुड़े और वहां से अपनी भारी भरकम आवाज में एक जोरदार आवाज लगायी। टणी...।

उधर टणी भी जैसे दो दिन से इसी आवाज की प्रतिक्षा में खड़ी थी। उसने भी दो दिन से सामने नांद में पड़े सूखे भूसे को मुह तक नहीं लगाया था। भूखे रहने का असर तो उसके हृष्ट-पुष्ट शरीर पर भी स्पष्ट दिखायी पड़ रहा था। दो दिन से प्रतिक्षा रत टणी ने जब गणपति शास्त्री की चिर-परिचित आवाज सुनी तो वह और व्याकुल हो उठी। मारे छटपटाहट में भागने का प्रयास करती-टणी बार-बार रम्भा रही थी। इसी बीच खूटे से बंधी उसके गले की रस्सी टूट गयी और वह सीधे दौड़ती हुई गणपति शास्त्री के पास आकर रुकी तथा मारे स्नेह के कभी उनके हाथ तो कभी उनके पैर चाटने लगी।

इस अद्‌भुत टणी प्रेम को देखकर तो बलराम सिंह भी अब अपनी ही कही बात

पर शर्मिंदा था। खिसियाई आवाज में ही सही किन्तु उसके मुख से अनायास निकल ही गया कि "मान गये पंडित जी कि यह आपकी ही गाय है। जब गणपति शास्त्री वहां के नियमानुसार अपनी टणी के खाने-पीने, रहने का खर्च बलराम सिंह से पूछने लगे तो उसने यह कहते हुए खर्च लेने से इनकार कर दिया कि "वैसे भी इसने कुछ खाया नहीं है अतः खर्च मैं किस बात का लूं। इस प्रकार गणपति शास्त्री अपनी टणी पर स्नेह के हांथ फेरते हुए उसे लेकर अपने घर की ओर चल दिये। उस समय उनके चेहरे पर केवल प्रसन्नता थी।

—संजय महाड़कर वासुदेव
के० **29/27**, गणेश दीक्षित लेन
दुर्गाघाट, वाराणसी - **221001**

प्रायश्चित

रमेश और मोहन पक्के मित्र थे। रमेश शहर के एक प्रसिद्ध वकील आदित्य नाथ सिन्हा एवं मोहन प्रो. रंजन वर्मा का लड़का था। दोनों मित्र एक ही कक्षा मे पढ़ते थे। साथ-साथ स्कूल जाते व साथ ही साथ घर लौटते थे। परन्तु दोनों मे एक अन्तर था। रमेश पढ़ने में होशियार, सुशील एवं बुद्धिमान बालक था। वहीं मोहन शरारती व लापरवाह था। उसे पढ़ाई-लिखाई की कोई चिन्ता न थी।

घर से मोहन को जो जेब खर्च मिलता, उसे वह स्कूल आकर चाट पकौड़ों मे खर्च कर देता। परन्तु रमेश तो अपनी जेब खर्च को इकट्ठा करता रहता। मोहन का चटोरापन रमेश को भी ज्ञात था। वह उसे मना भी करता, परन्तु इन सब बातों का मोहन पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं था। उसे शरारतें करने का भी काफी शौक था। घर से स्कूल के रास्ते में पड़े माली के बच्चे को अकारण ही पीट देना कुत्तों को पत्थर मारना, घर के पास से जाते हुए। किसी आदमी को चिढ़ाकर भागना आदि तो उसकी साधारण शरारतें थीं।

एक बार स्कूल से घर जाते समय रमेश ने मोहन को समझाया--"मोहन ! तुम्हारी ये हकरतें, ये चटोरापन आखिर कहां तक ठीक होगी ? तुम्हारे मम्मी पापा का तुम्हें स्कूल भेजने का उद्देश्य यह है कि तुम अच्छे बनो। पर तुम सुधरने का नाम...।" ऊंह, छोडो भी यार ये सब बातें, पहले यह बताओ किशमिश खाओगे ? मोहन ने रमेश को बीच में ही झिड़कते हुए कहा। मैं यह सब नहीं खाता। कहकर रमेश आगे बढ़ गया।

मोहन मौज-मस्ती करके देर से घर पहुंचा। मम्मी रसोई घर में कुछ कर रही थी। बोली, "अरे बेटे मोहन ! तुमने देर क्यों की ? रमेश तो कब का आया हुआ है ?"

"मम्मी वो क्या है कि.. !" मोहन सकपका गया।

"क्या मोहन !" मम्मी ने पूछा।

"जरा मास्टर जी ने रोक लिया था; और कुछ नहीं।" मोहन ने बात पूरी की। मम्मी अधिक ध्यान न देते हुए खाना लगाकर अपने काम में जुट गयीं।

एक दिन पड़ौसी शर्मा जी के लड़के कौशल ने आकर मोहन की मम्मी से कहा "आण्टी जी ! मोहन ने गेंद से मेरे घर का शीशे का रोशनदान तोड़ दिया है उन्होने मोहन को डांट दिया और मोहन क पापा प्रो रञ्जन वर्मा से कहने लगीं

देखिए, पड़ौसी आए दिन मोहन की शिकायतें लेकर पहुचते हैं। लड़का गलत न होता तो ऐसा होता क्यों ? अवश्य वह शरारतें करता होगा।'' पर वे मामले पर अधिक ध्यान न देते हुए टाल जाते। कहते, ''अरे भाई ! बच्चे हैं। शरारतें तो करते ही रहते हैं। इसमें कौन सी बड़ी बात है भला ?'' और प्रो. रंजन वर्मा अपने काम में व्यस्त हो जाते।

रविवार का दिन था। प्रोफेसर साहब लॉन में बैठे अखबार देख रहे थे। मोहन की मम्मी स्वैटर बुन रहीं थीं। मोहन का मन घर में नहीं लग रहा था। उसने साईकिल निकालते हुए पापा से कहा, ''पापा ! मैं अभी रमेश के घर होकर आता है।'' ''जाओ पर जल्दी आना।'' पापा ने मोहन को एक बार देखा और फिर अखबार के पन्नों में खो गए।''

मोहन गली से निकला कर साईकिल दौड़ता हुआ सड़क पर चला जा रहा था। उसने लापरवाही में हैन्डिल से हाथ हटा लिया और जोर-जोर से पैडिल मारने लगा। आगे एक कुत्ता जो मोहन की आती साईकिल को नहीं देख रहा था, और उसी की ओर दौड़ा चला आ रहा था, मोहन की साइकिल से टकरा गया। मोहन सड़क पर और साईकिल सड़क के नीचे झुरमुट में गिरी। मोहन एक कार की चपेट में आ गया।

मोहन की जब आंखें खुलीं तो उसने अपने को अस्पताल में पाया। उसके आस-पास उसके मम्मी-पापा, रमेश, रमेश के पापा अदित्यनाथ सिन्हा एवं रमेश की मम्मी आदि खड़े थे। मोहन को उसके पापा से मालूम हुआ कि जिस कार से वह टकराया था, वह किसी अन्य की नहीं, बल्कि सिन्हा साहब की ही थी। उन्होंने ही उसकी साइकिल घर पहुंचायी, मोहन को अस्पताल पहुंचाया व उसके घर खबर पहुंचायी।

मोहन की मम्मी रो रही थीं। रमेश की मम्मी ने उन्हें चुप कराया। प्रो. रजन ने कहा, ''सिन्हा सहाब, मैं आपका उपकार जीवन भर नहीं भूलूंगा। आप महान् हैं।''

''अरे इसमें उपकार की क्या बात है ? यह तो मेरा फर्ज था।'' सिन्हा साहब ने मुस्कराते हुए कहा।

रमेश और मोहन गले मिले। मोहन बोला, ''भाई रमेश ! मैं तुमसे क्षमा . ।''

''अरे पगले ! तू मुझसे क्यों क्षमा मांग रहा है ? अपने माता-पिता से क्षमा माग और अपने कर्मों का प्राशश्चित कर ले।''

मोहन ने अपने मम्मी-पापा के चरण हुए और उनसे क्षमा मांगी। यही उसका प्रायाश्चित था।

सत्य मिश्र 'सत्य'

ग्रा. डूड़ी (कैथोलिया), पो. चिलमा बाजार,

जिला बस्ती (उ प्र) 27230

जैसी करनी वैसा फल

शेखर और विवेक दो मित्र थे। दोनों एक ही कक्षा के छात्र थे। दोनों कक्षा सात में पढ़ते थे। पढ़ाई में दोनों बड़े होशियार थे। पढाई करना उनका पहला काम था। अन्य चीजों पर वे बाद में ध्यान देते थे। उनकी कॉलोनीवाले उन्हें बहुत कम ही खेलते-कूदते देखते।

पढाई में उन दोनों की होड़ लगी रहती थी। कभी विवेक प्रथम आता, तो कभी शेखर ! दोनों में यह बताना मुश्किल था कि पढ़ाई में कौन आगे है ? दोनों को उनके क्लास टीचर भी बहुत चाहते थे। क्लास में शेखर और विवेक की धाक जमी रहती थी। क्लास के सभी बच्चे उन दोनों का बहुत आदर करते थे, क्योंकि वे दोनों पढाई में होशियार होने के साथ ही साथ दयालु और नम्र स्वभाव के थे।

कक्षा सात की परीक्षा हुई। दोनों ने जमकर परीक्षा दी। परीक्षाफल भी घोषित हुआ। इस बार का परीक्षाफल विवेक और शेखर तो क्या, क्लास के सभी बच्चे और खुद कक्षाध्यापक भी आश्चर्यचकित रह गए। हर परीक्षाओं में तो शेखर और विवेक लगभग साथ-साथ ही रहते थे, मतलब कभी शेखर विवेक से दस-पन्द्रह नम्बरों से आगे रहता तो कभी विवेक शेखर से। मगर इस बार न जाने क्या हुआ कि शेखर ने विवेक से ढाई सौ नम्बरों से बाजी मार ली।

एक बार दोनों स्कूल से घर लौट रहे थे। विवेक ने शेखर से कहा, "क्यो शेखर ! इस बार तो तुम मुझे बहुत पीछे छोड़ गए। मेरा ऐसा भाग्य कहाँ; जो तुम्हारे जैसा नम्बर पा सकूं।"

"नहीं विवेक ! ऐसा तो नहीं।" मुस्कराता हुआ शेखर बोला। वह अपनी प्रशंसा सुनकर फूला नहीं समा रहा था।

कहने को तो शेखर ने विवेक के प्रति सहानुभूति व्यक्त कर दिया, परन्तु मन ही मन उसे अपने क्लास में सबसे अधिक नम्बरों से पास होने एवं विवेक के द्वार प्रशंसित होने से उसके मन में अभिमान जाग उठा। वह विवेक को करारी हार देने से अपने को क्लास का हीरो समझ बैठा।

घमण्ड में शेखर के मन-मस्तिष्क पर ऐसा बुरा असर छोड़ा कि वह पढ़ाई रं धीरे-धीरे विमुख होने लगा। कमरे में जब अध्यापक पढ़ाने लगते तो वह किस बच्चे से बातें करने लगता। एक-दो बार अध्यापक ने यूं ही टाल दिया. परन

बार बार उसे क्लास मे ही बात करते देख उनको कुछ शका होने लगी जरूर वह पढाई से कतरा रहा है।

एक दिन टीचर गणित के सवाल समझा रहे थे। तीसरी पंक्ति में बैठे शेखर को बगल के एक लड़के से बातें करते देख अध्यापक महोदय ने टोका—"शेखर !" शेखर सकपका कर खड़ा हो गया। अध्यापक ने कहा, "मैं गणित के सवाल समझा रहा हूं और तुम बातें कर रहे हो। सिर्फ आज ही नहीं, तुम्हारा नित्य का यही रवैया रहता है। आज तो तुम्हें इसकी सजा भुगतनी ही पड़ेगी।" कहकर टीचर जी ने अपनी बैत की छड़ी से शेखर को पीटा, और फिर चले गये।

इस सजा से शेखर का क्लास में बातें करना तो बन्द हो गया परन्तु पढ़ाई पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

वह घमण्ड में आकर विवेक से भी कम बोलने लगा। बात-बात पर उसे झिड़क लेता। विवेक चुप हो जाता। उसकी पढ़ाई के प्रति लापरवाही इस हद तक बढ़ गयी कि वह क्लास के आवारा बच्चों के साथ घूमने और चाट पकौड़े खाने लगा।

धीरे-धीरे परीक्षा सन्निकट आने लगी। क्लास के बच्चे जी जान से पढाई मे सलग्न थे। कोई लड़का उससे पूछता, "शेखर ! पढ़ाई क्यों नहीं करते। परीक्षा भी सिर पर है।" इस पर वह कह देता, "चलो यार, पढ़ लेंगे। मुझसे प्रथम श्रेणी कौन छीन सकता है भला ?" शेखर पढ़ रहा है या नहीं। इस बात पर ध्यान न देता हुआ विवेक पढ़ाई करने में तल्लीन था। उसे मेहनत पर ही भरोसा था।

परीक्षा हुई। परीक्षाफल निकला। विवेक प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ था, जबकि शेखर इस बार अपना परीक्षाफल देखकर चौंक पड़ा। वह परीक्षा में फेल था।

अब उसे अपनी करनी पर पछतावा हो रहा था। पर वह कर भी क्या सकता था ? अब पछताए क्या होत जब, चिड़िया चुग गयीं खेत। शेखर की अपनी करनी का फल मिल चुका था। उसने उसी समय से पढ़ाई प्रारम्भ कर दी। उसे अगली परीक्षा में प्रथम श्रेणी से पास जो होना था।

—सत्य मिश्र 'सत्य'
ग्राम: डूड़ी (कैथेलिया)
पोस्ट – चिलमा बाजार
जिला – बस्ती (उ. प्र.)–273201

बबीता

सुबह का समय था। मैं बरामदे में बैठी चाय पी रही थी। तभी सात-आठ साल की एक बालिका फाटक पर आ खड़ी हुई। मैंने प्रश्न सूचक दृष्टि उस पर डाली तो वह बोल पडी, 'मेरे लिए कुछ काम है क्या ?''

मैं समझी नहीं क्या कह रही है ? पूछा "काम ? कैसा काम ?'' क्या बर्तन मांजती है या झाडू पौंछा करती है। वैसा तो कोई काम नहीं है मेरे पास। सबेरे सबेरे क्या काम बताऊं तुझे, छोटी सी लड़की तू क्या काम कर पायेगी ? "काम तो मैं सभी कर सकती हूं आप बताइये तो मैं उसे अच्छी तरह कर दूंगी।''

'अच्छा क्या नाम है तेरा ?'

'जी बबीता; उसने कहा मैं मन ही मन हंसी, अभिनेत्री है यह। फिर सोचने लगी। याद आया कि रसोई के पीछे काफी गंदगी है यह सोचकर मैं उसे घर के पीछे ले गई सफाई के लिए। गंदगी देखकर मैं वहां से खिसक आई। उसके छोटे-छोटे हाथ उसकी सफाई में जुटे रहे। उलझे रूखे बाल और फटी हुई गंदी फ्राक पहने वह गंदगी साफ कर रही थी। घंटे भर बाद आकर वह बोली मैंने सफाई कर दी है।

साबुन का छोटा सा टुकड़ा देकर मैंने उसके हाथ धुलवा दिए और पांच रुपए देकर उस दिन विदा कर दिया। रुपए लेकर वह बहुत प्रसन्न हो गई थी।

दो चार दिन बाद वह एक दिन फिर मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी मैंने कहा "आज तुम्हारे लिए कोई काम नहीं है। हां, पैसों की जरूरत हो तो ले जाओ'' वह कहने लगी-आपसे यों ही मुफ्त मे पैसे ले जाऊंगी तो वह भीख मांगना हुआ। मैं तो काम करके ही पैसा लेती हूं। आज तो मैं काम करने नहीं आयी हूं। मैं अपने भाई को स्कूल भेजने के लिए काम करती हूं। कुछ रुपए इकट्ठा हो जायेंगे तो दो महिने बाद उसको स्कूल में भर्ती करवा दूँगी। लेकिन अभी तो वह छोटा है कोई भी काम नहीं कर सकता। आज तो वह बीमार है। उसे खसरा निकल आया है। डाक्टर की फीस के लिए पांच रुपए की जरूरत है। मैं आपका काम कल या परसों आकर कर जाऊँगी आज कृपा करके अभी पांच रुपए दे दिजिए।

उसकी भोली-भाली शक्ल देखकर मैं द्रवित हो गयी। पांच रुपये देकर कहा, 'देखो बेटी ! मैं अपने परिचित डाक्टर को फोन कर देती हूँ। वे मेरे घर आ जाएगे तुम उन्हे अपने घर ले जाना और हा फीस उनकी मैं दे दूंगी तुम दवा

ले आना

डाक्टर को मैंने फोन किया तो उन्होंने आध घंटे का समय दिया। बबीता को मैंने तब तक रोके रखा। उसके बाद दो चार दिन तक बबीता नहीं आयी। मुझे उसका कोई समाचार भी नहीं मिला। एक दिन आते ही बोली–

"माताजी ! आपने मुझे पांच रुपए दिए थे न ? मैं काम करने आ गई हूँ। भैया को स्कूल भेजना है इसलिए अब तो और भी अधिक काम करना पड़ेगा।'' मैंने कहा, "तुम्हारे भाई को मैं स्कूल में दाखिल करवा दूंगी और कपडों के लिए तथा कागज़ पैंसिल कॉपी के लिए दस रुपए महिने और दे दिया करूंगी इस पर वह हस पडी। कृतज्ञता का भाव उसके मुख पर साफ झलक आया। मैंने उसे कुरेदा "तुम भी क्यों नहीं पढ़ना शुरू कर देतीं ?

उसने बताया कि उसकी माँ कई घरों में काम करती है। इसलिए घर के और सब काम उसी को करने पड़ते हैं खाना भी बनाती है। बर्तन साफ करती है। फिर पढने की बात कैसे सोच सकती है। मां को भाई की पढ़ाई के लिए राजी कर लिया है। आपने सहायता दे दी लेकिन मैं तो लड़की हूँ। मां कहती हैं कि लड़की का पढ़ना जरूरी थोड़े ही है। उसे तो घर का काम करना आना चाहिए। आप े घर का काम तो मैं मां से छुपकर चुपचाप कर जाती हूं। मां तो उपले थापने के लिए भेजती है उसी समय में दो चार काम और भी कर लेती हूं।

लगभग एक माह बीत गया। बबीता, भाई की फीस के पैसों को भी लेने नहीं आई। पता नहीं क्या बात हो गई ? आती तो उससे कुछ काम करवा लेती। मैं इन विचारों में खाई थी कि एक लडकी स्कूल के ड्रेस पहन कर आकर मेरे सामने खडी हो गई। कुछ देर में पहचाना–अरे बबीता। आज तो तुम बड़ी अच्छी लग रही हो। तेल डालकर काढ़े हुए बाल, लाल-लाल रिबन और ये जूते, बात क्या है ?

वह हंसने लगी। आप चौंक गयीं न ? मैं आपको चौंकाना ही चाहती थी। आपने उस दिन कहा था न कि मैं क्यों नहीं पढ़ती तो मैंने सोचा कि मैं भी पढूंगी। मैने इतने पैसे कमा लिए थे कि स्कूल में प्रवेश पा लूं। कापी किताबें ड्रेस खरीद सकूं। भैया का प्रबंध तो आपने कर ही दिया था अपने लिए पैसे मैंने इकट्ठा कर लिए। स्कूल जाने से पहले और लौटकर काम करती हूं। थोडे पैसे मां को भी दे देती है। आप ही के कहने से मैंने वह सब किया है। मुझे उसकी आंखों में भविष्य के सपनों की झलक दिखाई दी। उस बालिका में प्रगति के लक्षण देखकर मैं आश्वस्त हो गई।

–सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

सरोज निलयम, डैम्पियर नगर, मथुरा 281001 (उ. प्र)

बांगडू बंदर

एक वन में खूब बड़े बड़े और घने वृक्ष थे। नीचे उगनेवाली बेलें टहनियों को पकड़कर झूल रही थीं। इन बड़े वृक्षों की जड़ें धरती पर इस तरह फैल गयीं थीं कि बीच में कोई स्थान खाली नहीं बचा था। कीड़े-मकोड़े घूम रहे थे। खरगोश शेर तेन्दुआ आदि पशुओं ने भी अपने मार्ग बना लिए थे। वे उन्हीं के बीच आते-जाते थे। हाथी जब कभी जाता तो उसे छोटे-छोटे पेड़ों को उखाड़कर रास्ता बनाना पड़ता था।

एक बड़े बरगद के पेड़ पर एक बड़ा बंदर बांगड़ नाम जिसे दिया गया था अपने परिवार के साथ रहता था। वह जिधर भी जाता सबको साथ लेकर ही जाता। छोटे बच्चों को बंदरिया अपने सीने से चिपटा लेती। दो-तीन बच्चे उसके पीछे चलते। सबसे आगे बांगड़ू चलता। पत्ते फूल और फलों को खाते हुए वे सब एक तालाब के किनारे आ जाते। बंदरिया अपने छोटे बच्चे को अपने से अलग करके खेलने के लिए छोड़ देती फिर सब एक-एक कर झुककर उस तालाब से पानी पीते, उन सबकी परछाई तालाब के पानी में दिखायी पड़ती।

एक दिन हाथी पर बैठकर कुछ लोग उस वन में आए। उनके हाथों में कुल्हाडी और आरी थीं बांगड़ू बंदर ने यह देखा तो वह खों-खों करने लगा। उसके बच्चे भी वैसा ही करने लगे। बंदरिया कहीं गयी थी। आवाज सुनकर वह दौड़ी आई और कुल्हाड़ी वाले आदमी के कंधे पर चढ़ गयी। अचानक उस आदमी के हाथ से कुल्हाड़ी गिर पड़ी, उधर बंदर के बच्चे भी बराबर शोर मचा रहे थे।

दो आदमी अपने साथ आरी लाए थे। उन्होंने आरी को जमीन पर रख दिया। फिर अपनी जेब से पिस्तौल निकाली और उसे बंदरों की ओर दाग दिया। लेकिन निशाना बेकार गया। अब बांगड़ू परिवार का गुस्सा उबल पड़ा वे सभी जोर-जोर से शोर मचाने लगे और उछल-कूद करके कभी ऊपर की टहनी पर चढ़ जाते और कभी नीचे की शाखाओं पर उछल-कूद मचाते बांगड़ू समझदार था। उसने पिस्तौल दागनेवाले आदमी का हाथ झटक दिया। जमीन पर बैठकर उसके हाथों को अपने दांतों से काट लिया। दांत लगते ही उस आदमी के हाथ से पिस्तौल गिर गई।

बागड़ पिस्तौल को मुंह में दबाकर पेड की सबसे ऊची टहनी पर चढ गया।

वह आदमी भौंचक्का सा देखता रह गया। दांतों से काट-काट कर बंदरिया और बच्चों ने बाकी दोनों आदमियों को लहु-लुहान कर दिया। इस प्रकार बांगडू परिवार ने हरे-भरे पेड़ों को कटने से बचा लिया।

सोनू-मोनू अपने पिता के साथ उस दिन वन की सैर करने गये थे। बंदरों का तमाशा देखकर वे बड़े प्रभावित हुए। पिताजी ने पेड़ काटनेवालों को पकड़वा दिया।

—सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
सरोज निलयम
डैम्पीयर नगर,
मथुरा-281001 (उ. प्र.)

लाल गुलाब

राजन ने जब से पढ़ा था कि चाचा नेहरू को लाल गुलाब बहुत पसंद था और वे हमेशा अपनी शेरवानी में लाल गुलाब लगाते थे, तभी से वह भी अपनी शर्ट मे लाल गुलाब लगाने लगा था। राजन सोचता था कि लाल गुलाब लगाने से वह भी चाचा नेहरू के समान महान् बन जाएगा। लेकिन उसे आश्चर्य हो रहा था कि जब से उस ने गुलाब लगाना शुरू किया है उसके प्रश्न गलत होने लगे हैं। इतिहास और विज्ञान के घंटों में उसे बैंच पर खड़ा रहना पड़ा था क्यों कि वह प्रश्नों के उत्तर ठीक से नहीं दे सका था। वह मन ही मन सोचने लगा था कि गुलाब लगाना अपशगुन तो नहीं ? उसकी दादी ने बताया था कि खाली बाल्टी मिलना, काली बिल्ली का रास्ता काटना आदि अपशगुन होता है लेकिन मास्टर जी कहते हैं कि यह सब बातें बकवास होती हैं इन पर ध्यान नहीं देना चाहिये।

मास्टर साहब गणित का सवाल समझा रहे थे और राजन का ध्यान अपने गुलाब की ओर था जो उसकी गोद में पड़ा था।

"राजन, मैंने अभी क्या बताया ?" अचानक मास्टर जी ने पूछा।

राजन हड़बड़ा कर खड़ा हो गया।

"मैंने अभी क्या बताया था ?" मास्टर जी ने फिर पूछा।

"जी...वह..." राजन को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या बताये क्योंकि जब मास्टर जी समझा रहे थे उस समय उसका ध्यान गुलाब की ओर था।

"यहां आओ," मास्टर जी ने बुलाया।

राजन सिर झुकाये हुए जैसे ही मास्टर जी के पास पहुंचा मास्टर जी का जोर दार तमाचा उसके गाल पर पड़ा और वह दर्द से रो पड़ा।

"कोने की ओर मुंह खड़े हो जाओ" मास्टर जी ने कहा।

राजन सुबकता हुआ चुपचाप दीवार की ओर मुंह करके खडा हो गया। आज उसे गुलाब के कारण मार खानी पड़ी थी। उसने निश्चय कर लिया कि वह गुलाब नहीं लगायेगा।

छुट्टी में जब राजन घर लौट रहा था रास्ते में पार्क में खिले गुलाब को देखकर उसका मन उसे शर्ट में लगाने के लिए मचल उठा। वह तेजी से पार्क में घुसा और एक लाल गुलाब तोड़ लिया।

"ए लड़के, फूल तोडता है," दूर से माली चिल्लाता हुआ डंडा लेकर दौड़ा।

माली को देखकर राजन तेजी से भागा। भागने में वह आ रहे ट्रक को नहीं देख सका था, यदि ट्रक ड्राइवर ने होशियारी से ट्रक मोड़ न दिया होता तो वह ट्रक से जरूर टकरा जाता।

घर आकर राजन ने नाश्ता किया और होमवर्क करने बैठ गया। मेज पर वही लाल गुलाब पड़ा था, जिसे वह पार्क से तोड़ कर लाया था। इस गुलाब के कारण उसकी स्कूल में पिटाई भी हुई थी और ट्रक से टकराते-टकराते बचा था। उसकी इच्छा हो रही थी कि गुलाब की एक-एक पंखुड़ी नोच कर फेंक दे।

"गलती तुम करते हो, सजा मुझे दोगे।"

राजन का बढता हाथ रुक गया, वह आश्चर्य से बोला।

"तुम बोलते भी हो ?"

"हां, कभी-कभी, वैसे तो तुमने भी पढ़ा है कि पेड़-पौधों में जान होती है," गुलाब बोला।

"मैं तुम्हें नोच डालूंगा। तुम्हारे कारण मेरी पिटाई हुई," राजन गुस्से मे बोला।

"इसमें मेरा क्या दोष ? पहली गलती तो तुम मुझे तोड़कर करते हो फिर तुम्हारा ध्यान पढ़ाई में न लग कर मेरी ओर लगा रहता है जिससे तुम्हारी कक्षा मे पिटाई होती है," गुलाब बोला।

"मैं तुम्हें लगाकर चाचा नेहरू की तरह बनना चाहता हूं," राजन अपनी गलती महसूस करते हुए धीरे से बोला।

"किसी का नाम रख लेने या नकल करने से कोई महान नहीं बन जाता। महान बनने के लिए उसकी तरह मेहनत करनी पड़ती है, पहले मन लगा कर खूब पढो और अच्छे काम करो तभी महान बन सकते हो," गुलाब ने समझाया।

राजन की बात समझ में आ गई थी, उसने निश्चय कर लिया कि अब वह नकल न करके खूब पढ़ेगा और अच्छे काम करेगा।

"राजन, अभी से सो गये ?"

राजन ने चौंक कर देखा, मम्मी उसे जगा रही थी और गुलाब मेज पर पडा मुस्करा रहा था। वह समझ गया कि वह सपना देख रहा था लेकिन सपने में उसने बहुत कुछ सीख लिया था।

—साबिर हुसैन

अभिव्यक्ति, पलिया कलां,

खीरी–262902

पहचान

दामोदर चुपचाप मैदान के बाहर खड़ा हॉकी मैच देख रहा था। उसकी बडी इच्छा था कि कॉलेज टीम के लिए हो रहे इस हॉकी मैच में वह भी खेले, लेकिन उसे कोई अवसर ही नहीं दे रहा था।

दामोदर ने देखा, खेल अध्यापक एक ओर खड़े थे, वह उनके पास जाकर धीरे से बोला, "सर, मैं भी खेलना चाहता हू।"

"मैंने तुम्हारा खेल देखा है, अभी अभ्यास करो।" खेल अध्यापक उपेक्षा से बोले।

दामोदर निराश होकर एक ओर बैठ गया। पिछली बार जब कक्षा टीम बनायी जा रही थी तो उसनें भी अपना नाम लिखा दिया था। उस समय वह ठीक से खेल नहीं पाया था और उसकी लापरवाही से एक लड़के के चोट लग गई थी, तभी खेल अध्यापक ने उसे मैदान से बाहर कर दिया था। उस समय असलम और मंजीत ने उसका खूब मजाक उड़ाया था।

असलम तो कह देता, "बेकार ही हॉकी खेल कर दूसरे की टांग तोड़ोगे अभी तुम गुल्ली डंडा ही खेलो।"

दामोदर असलम की बात का कोई उत्तर नहीं देता लेकिन उसने निश्चय कर लिया था कि वह एक दिन दिखा देगा कि वह भी अच्छा खिलाड़ी है। वह रोज मुहल्ले के लड़कों के साथ हॉकी का अभ्यास करता। अब अच्छा खेलता था और चाहता था कि खेल अध्यापक उसका खेल देख लें, लेकिन उसे खेलने का अवसर ही नहीं मिल रहा था।

खेल तेजी से चल रहा था असलम और मंजीत सभी खिलाड़ियों पर भारी पड़ रहे थे। कक्षा 12 एक गोल से पीछे थी, कक्षा 12 के खिलाड़ी बहुत प्रयास के बाद भी गोल नहीं कर पा रहे थे क्योंकि उन्हें सुरक्षात्मक खेल-खेलना पड़ रहा था। अचानक कक्षा 12 की टीम के एक खिलाड़ी के चोट लग गई वह मैदान से बाहर आ गया।

तभी खेल अध्यापक ने दामोदर को इशारा कर दिया कि वह कक्षा 12 की टीम में खेले। दामोदर बड़े उत्साह से मैदान में चला गया। उसे देखकर असलम और मजीत व्यंग्य से मुस्करा दिए। असलम ने गेंद धीरे से दामोदर की ओर बढ़ा दी, उसने सोचा वह अभी दामोदर से गेंद छीन लेगा। दामोदर गेंद लेकर तेजी से आगे बढ गया असलम ने कई बार हॉकी लगाकर दामोदर से गेंद छीननी चाही लेकिन दामोदर गेंद लेकर आगे बढ़ गया जब उसे दो-तीन खिलाड़ियों ने घेरा तो उसने गेंद दूसरे खिलाडी को पास कर दी और उस खिलाडी ने गेंद को गोल में डाल

दिया। दोनों टीमें एक-एक गोल से बराबर हो गयीं। असलम को आश्चर्य हो रहा था कि दामोदर इतनी अच्छी हॉकी कैसे खेलने लगा। दोनों टीमों ने जबरदस्त खेल का प्रदर्शन किया किन्तु कोई टीम गोल न कर सकी।

दोनों टीमों में से खेल अध्यापक ने कॉलेज टीम का चयन कर लिया। दामोदर को अतिरिक्त खिलाड़ी के रूप में टीम में शामिल किया था।

"तुम लोग मेहनत से अभ्यास करते रहना, इस बार फाइनल में पहुंचना है'' खेल अध्यापक बोले।

"इस बार हम जीत कर रहेंगे'' असलम ने कहा और सभी लड़के चले गये।

दामोदर जब असलम आदि के साथ खेलता, असलम और मंजीत उसे गेंद ही नहीं देते। दामोदर उनसे कुछ न कहता लेकिन मुहल्ले के लड़कों के साथ खूब अभ्यास करता। उसके खेल की सभी लड़के प्रशंसा करते।

जिले के विद्यालयों की हॉकी प्रतियोगिता शुरू हो चुकी थी। दामोदर के विद्यालय की टीम लगातार जीतती हुई फाइनल मे पहुंच गई थी। इस प्रतियोगिता मे अभी तक दामोदर को कोई मैच खेलने का अवसर नहीं मिला था।

फाइनल मैच चल रहा था। विरोधी टीम ने खेल शुरू होते ही असलम की टीम पर गोल कर दिया था। असलम और मंजीत को आशा ही नहीं थी कि इतनी जल्दी गोल हो जायेगा। उसे बाद उन्होंने गोल करने का बहुत प्रयास किया लेकिन विरोधी टीम के खिलाड़ी उन्हें आगे ही नहीं बढ़ने दे रहे थे। मंजीत और असलम को गेंद मिलते ही उसे कई खिलाड़ी घेर लेते। मध्यान्तर हो चुका था विरोधी टीम सुरक्षात्मक-खेल खेल रही थी, इसी में उसकी जीत थी। असलम और मंजीत भी हताश होते जा रहे थे।

अचानक खेल अध्यापक ने एक लड़के को मैदान से बाहर बुला लिया और दामोदर को मैदान मे जाने का संकेत कर दिया। दामोदर ने उत्साह से हॉकी उठाई और मैदान में दौड़ गया। दामोदर ने जाती हुई गेंद को अपनी हॉकी से रोका और तेजी से गेंद लेकर विपक्षी गोल की ओर दौड़ पड़ा, उसने कई खिलाड़ियों से गेद बचाते हुए साथ में दौड़ रहे मंजीत की ओर बढ़ा दी। कई खिलाड़ी मंजीत की ओर झपटे तो मंजीत ने डी में आ गये दामोदर की ओर गेंद वापस कर दी और दामोदर ने भरपूर शॉट लगा कर गेंद को गोल में डाल दिया। गोल होते ही मंजीत ने दामोदर को गोद में उठा लिया। गोल बराबर होते ही टीम में नई जान आ गई।

असलम और मंजीत समझ गये, दामोदर सचमुच अच्छा खिलाड़ी है, खेल शुरू होते ही तीनों विरोधी टीम पर भारी पड़ने लगे और खेल समाप्त होने से पहले उन्होंने दो गोल और कर मैच जीत लिया।

दामोदर ने अपनी पहचान बना ली थी। असलम, मंजीत ही नहीं सभी उसकी प्रशंसा कर रहे थे क्योंकि उसके मैदान में उतरते ही खेल का पासा पलट गया था।

—साबिर हुसैन

अभिव्यक्ति पलिया कलां खीरी-262902

आवाज वन देवता की

गांव से थोड़ी ही दूर परएक छोटा सा जंगल था। जंगल छोटा होने के बावजूद उसमें एक शेर रहता था। शेर बड़ा पराक्रमी था, जंगल में उसी का शासन चलता था। वह जो भी कहता वही होता था।

शेर के सामने किसी को बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। परन्तु एक दिन ऐसी घटना घटी, जिससे सब गड़बड़ हो गया। हुआ यह कि उसी जंगल का एक सियार एक दिन गांव में टहलते हुए गया। वहां उसके हाथ मन्दिर का एक घटा लग गया। सियार ने जब घंटे को मुंह में दबाया तो उससे टन-टन-टन की आवाज हुयी। घंटे की आवाज सुनकर सियार बहुत प्रसन्न हुआ तथा अपने मुंह मे दबाए सीधे अपने गांव की ओर चल दिया।

गांव में पहुंचकर सियार ने घंटे को एक कोने में रख दिया तथा एक पत्थर का टुकड़ा लाकर उसे टन टन टन बजाने लगा। आवाज सुनकर सियार मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ।

अचानक सियार के मन में एक योजना आई। वह शीघ्र ही उसे साकार करने मे जुट गया। सबसे पहले वह सीधे जंगल के राजा शेर के पास गया और बोला, "शेर जी वन देवता मेरी मांद में आकर बैठे हैं। उन्होने मुझे जंगल का गुरू बनाया है। वे कहते हैं जो कोई जंगल के गुरू की आज्ञा नहीं मानेगा। वे उसे मार डालेंगे।"

शेर ठहरा जंगल का राजा। उसे सियार की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सियार से कहा, "क्या तुम मुझे वन देवता से मिलवा दोगे ?"

यह सुनकर सियार की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी, परन्तु वह अपने को संभालते हुए बोला, "इस समय तो वन देवता जी समाधि में बैठे हैं परन्तु हां उनकी आवाज मैं तुम्हें सुनवा सकता हूं।"

इतना कहकर सियार शेर को लेकर अपने गांव जा पहुंचा। उसने शेर को माद के दरवाजे पर ही रुकने के लिए कहा तथा स्वयं मांद के अन्दर जाकर घंटा बजा दिया। घंटे की आवाज सुनकर शेर को सियार की बातों पर विश्वास हो गया।

धीरे-धीरे यह बात पूरे जंगल में आग की तरह फैल गयी कि सियार को वन देवता ने जंगल का गुरू बनाया है तथा स्वयं उसके गांव में आकर बैठे हैं। अब तो जगल के सभी जानवर सियार से डरने लगे तथा उसकी बातें मानने लगे।

अब सियार की दसों उंगलियां घी में थी। उसे किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं थी। वह जब भी जो कोई चीज चाहता उसे आसानी से प्राप्त हो जाती थी। कई जानवर तो उसकी मांद के दरवाजे पर हमेशा हाथ जोड़े खड़े रहते थे। परन्तु सियार उनमें से किसी को भी मांद के अन्दर नहीं जाने देता था। उसने सब जानवरों से कह रखा था कि वनदेवता उसके अतिरिक्त अगर किसी को मांद के अन्दर देख लेंगे तो उसे जलाकर भस्म कर देंगे।

इससे सभी जानवर मांद के अन्दर जाने में डरते थे। वे बाहर से ही सियार की हर प्रकार की सेवा किया करते थे।

अब सियार के दिन मौज से कट रहे थे। तभी एक दिन एक चालाक लोमड़ी उधर से गुजरी वह प्रायः गांव में जाया करती थी।

अतः उसने घंटे की आवाज सुन रखी थी। जब वह सियार की मांद के पास से गुजर रही थी तो उसने मांद के अन्दर बजते घंटे की आवाज सुनी, सियार की माद के बाहर लगी जानवरों की भीड़ को देखकर लोमड़ी भी मांद के पास गयी।

तभी रीछ ने लोमड़ी को बताया, "यहां मांद के अन्दर वन देवता बैठे हैं और उन्होंने सियार को जंगल का गुरू बनाया है। यह आवाज उसी वन देवता की है।"

रीछ की बात सुनकर लोमड़ी को हंसी आ गई। परन्तु दूसरे ही क्षण उसे सियार पर बहुत गुस्सा आया। उसने मन ही मन सियार को सबक सिखाने का निश्चय किया। वह दौड़कर शेर के पास गई। शेर उस समय वन देवता के बारे में ही सोच रहा था।

लोमड़ी ने झुककर शेर को प्रणाम किया और कहा, "महाराज ! यह सियार आपको और सभी जानवरों का ठगकर जंगल का गुरू बना हुआ है। इसकी माद मे न तो कोई वन देवता है और न तो वह वनदेवता की आवाज ही है। वह आवाज तो एक घंटे की है जिसे सियार ने अपनी मांद में छिपा रखा है। आप मेरे साथ चलें तो मैं उस घंटे को मांद के बाहर निकाल दूं।

अब शेर को सियार पर बहुत गुस्सा आया। वह तुरन्त लोमड़ी के साथ सियार की मांद पर पहुंचा। वहां अभी भी कई जानवर तैनात थे। शेर ने सियार को बाहर बुलवाया तथा उसे बाहर ही खड़े रहने को कहा इसी बीच लोमड़ी सब की नजर बचाकर मांद के अन्दर चली गयी और घंटा लेकर टन-टन करती हुई मांद के बाहर आ गई।

अब सियार डर के मारे थर-थर कांपने लगा। वह भागने ही वाला था कि शेर ने उसे धर दबोचा तथा एक ही वार में उसका काम तमाम कर दिया। सभी जानवरों ने लोमड़ी की बुद्धि की प्रशसा की।

—डॉ. सुरेन्द्र विक्रम
सी 3295 राजाजी पुरम,
लखनऊ-226017

मुंह लगा नौकर

बहुत दिनों की बात है। एक राजा था, नाम था चन्द्रसेन। चन्द्रसेन के पास एक ऐसा नौकर था जो हमेशा उसे साथ ही रहता था। सोते-जागते, उठते बैठते वह हमेशा राजा की सेवा में लगा रहता था। हमेशा साथ-साथ रहने के कारण वह नौकर राजा को मुँह लगा हो गया था।

एक दिन राजा चन्द्रसेन अपने बगीचे में टहल रहे थे। साथ में उनका मुँह लगा नौकर भी था। घूमते-घूमते राज वहाँ पहुँचा,। जहां क्यारी में सुन्दर-सुन्दर बैंगन लगे थे। बैंगन को देखकर राजा ने नौकर से कहा, "बैंगन बड़ा सुन्दर साग है। खाने में खूब स्वादिष्ट भी होता है।

राजा के मुख से बैंगन का नाम निकलते ही नौकर ने बैंगन की प्रशंसा करनी शुरू कर दी। उसने कहा, "महाराज ! बैंगन ही एक ऐसा साग है जो सागों का राजा कहलाता है। इसीलिए तो भगावान ने इसके सिर पर प्यारा सा मुकुट रख दिया है।"

थोड़ी दूर जाने पर राजा ने.मिर्च के पेड़ देखे। लाल-लाल मिर्च धूप में चमक रही थीं। मिर्च तो साग का आभूषण है इसके बिना साग में कोई स्वाद ही नहीं आता है।"

नौकर झट से बोल पड़ा, "महाराज, मिर्च सागों में रत्न है। रत्न ! इसका रंग भी माणिक जैसा लाल है ईश्वर ने उसे खूब गढ़कर बनाया है।"

थोड़ी दूर और जाने पर राजा को इमली का पेड़ मिला। हवा में लहराती इमलियों को देखकर राजा के मुँह में पानी आ गया। उसने इमली की प्रशंसा करते हुए कहा, "इमली भी क्या उत्तम फल है। नाम लिया नहीं कि मुँह में पानी आ जाता है।"

नौकर ने राजा के मुँह की बात लगभग छीनते हुए कहा,"महाराज ! इमली का क्या पूछना। यह तो फलों में ठकुराइन है। हमेशा हवा में झूले झूला करती है।

बगीचे से लौटकर आने के बाद उस दिन राजा ने अपने रसोइए को मिर्च और इमली डालकर बैंगन का साग बनाने को कहा।

रसोइए ने खूब.म न लगाकर साग बन।।। नरम-नरम बैंगन काटकर उसमें इमली और मिर्च डालकर साग तैयार किया

साग तैयार हो गया तो राजा ने खूब पेट भर साग खाया और खूब प्रशंसा की मगर दूसरे ही दिन उसका पेट गड़बड़ हो गया। उसने पलंग पकड़ लिया।

राजा ने पलंग पर लेटे-लेटे अपने नौकर से कहा, "बैंगन तो बड़ा बेकार साग है। उसे खाने से पेट में दर्द होता है तथा गैस बनती है।"

नौकर ने राजा को दण्डवत प्रणाम किया और बोला, "महाराज नाम न लीजिए। जिसका नाम ही बेगुन है, वह बीमारी तो पैदा ही करेगा। सब से बेकार बैंगन का ही साग होता है।"

तभी राजा के पेट में जलन शुरू हुई उसने पेट पकड़कर कहा, "मिर्च तो बहुत खराब है। इसे खाने से पेट में जलन और दर्द ही होता है।"

नौकर झट से बोल पड़ा, "महाराज, मिर्च भी कोई खाने की चीज है, यह तो पूरी आग है। जहाँ-जहाँ जाती है, सारा अंग जला देती है।"

तभी राजा के जेट में बड़ी जोर से ऐंठन हुई। उसने करवट बदल कर कहा, "इमली भी अच्छा फल नहीं है, उसे खाते ही दाँत खट्टे हो जाते हैं।"

नौकर तुरन्त बोल पडा, "महाराज ! इमली तो सब रोगों को घर है। उसे खाकर भी भला कोई स्वस्थ रह सकता है।"

राजा को नौकर की बातें कुछ समझ में नहीं आई उसकी चापलूसी भरी बातों से राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने नौकर को डाँटते हुए कहा, "तुम तो उस दिन मेरे साथ बगीचे में इमली, मिर्च और बैंगन की प्रशंसा कर रहे थे, और आज उसकी बुराई कर रहे हो।"

नौकर ने हाथ जोड़कर कहा, "क्षमा करें, महाराज ! मैं न तो बैंगन का नौकर हूँ न मिर्च का और न ही इमली का, मैं तो सिर्फ आपका नौकर हूँ।"

नौकर की बुद्धिमत्ता पूर्ण बातें सुनकर राजा का सारा गुस्सा हवा हो गया।

—डा. सुरेन्द्र विक्रम
सी - 3295
राजाजी पुरम,
लखनऊ - 226017

आस के दिए

रामी रमई का घर भी, कभी गाँव का खुशहाल घर था। साल भर के त्योहार खूब धूमधाम और सजधज के साथ मनाए जाते थे। दीवाली पर तो, धूम ही मच जाती। बप्पा, शहर जाकर सबके लिए नए कपड़े लाते थे। अम्माँ, चाची, बुआ, मिलकर मिठाइयाँ बनातीं। दीवाली पर आस-पड़ोस के घरों में त्योहारी बाँटती। खील, बताशे तो इतने आते कि, महीनों खाते। कोठरी में बड़ा सा जंग लगा, बड़े से ताल वाला बक्सा था। अम्माँ पूजा के लिए ब्याह का जोड़ा निकालती। चाहे जितने, जतन से छुपा कर, अम्माँ बक्सा खोलती, रामी रमई पहुँच ही जाते। वह बक्सा, उन्हें जादू का पिटारा लगता था। लाल कपड़े में लिपटी, लक्ष्मी गणेश की मूर्ति, अम्माँ के, चमकते मोटे से चाँदी के कड़े रामी को बहुत अच्छे लगते थे। संध्या होती, तो दीवाली के दिए जलते, फिर पूजा होती और अम्माँ कहानी कहती, वही हर साल पुरानी भाटनी की कहानी। पर रामी रमई के लिए उसका हर शब्द नए आश्चर्य का सृजन करता। दीवाली की रात, सूखा काजल आँखों में लगा कर, दोनों लक्ष्मी जी के आने की राह देखते।

आहट होती, ओ अम्माँ पूछती,

"क्यूँ रे रमई सोता क्यूँ नहीं

"अम्माँ लक्ष्मी जी आई नहीं, क्या लक्खी के घर चली गई ?''

अम्माँ दिन भर की थकी निंदासी, प्यार से भींच लेती।'' पगले वह तो कहानी थी'' कह कर सो जातीं। पर रामी रमई एक दूसरे से सटे हुए, हर आहट पर, झांक लेते थे दोनों ही सोचते लक्ष्मी जी का आना, कहानी नहीं हो सकता, धीरे-धीरे आँखें मुंद जातीं।

आज वही लाल ईंटों का खुशहाल घर बंसी काका की आढ़त हो गया है। पिछली बाढ़ में बच्चा, अम्मा, दादी, तीनों ही नहीं बचे। रामी रमई अपनी ननिहाली में थे, दूर के मामा का ब्याह था, अम्माँ बप्पा, तो लौट आए, रामी वहीं रह गए। लौटे तो कुछ भी नहीं बचा था।

बिन माँ- बाप के बच्चों को दो जून की रोटी भी कठिनाई से ही मिलती थी। जहाँ, बप्पा चाक पर काम करते थे उसी की तरफ, एक खपरैली मड़ैया में दोनो भाई बहिन रहते। गाँव के घरों में छोटा मोटा काम करते रहते फिर भी अक्सर

भूखे ही सोना पडता

भूख न सह पाता तो रमई खेतो से चुग कर साग पात ले आता . सारे गाव का गदा पानी इधर ही बहता था। झाड़-झंखाड़ अलग से। रामी बड़ी दु:खी हो जाती अम्मॉ की याद आती तो टप-टप ऑंसू गिरते। रमई की आदतें भी बिगड़ती जा रही थी। जब तब खेत वाले उसे दौड़ाते , तो कुछ वह, तोड़ जाता, उसी के सामने मुट्ठी से छीन कर फेंक देता।

रामी सोचती, क्या करें, कि रमई का पेट भरे और वह यह सब न करे।

"रमई, एक बात सुन, तु नदी से मिट्टी ला सकता है'' रामी ने कहा।

हॉं हॉं क्यूं नहीं रमई उत्साह से बोला तो बस ! अब हम भूखे नहीं रहेंगे।

"कैसे'' रमई की ऑंखों में, खाने की बात सोच कर ही चमक आ गई थी।

बप्पा का चाक तो है ही, वह तो किसी ने नहीं लिया, तू मिट्टी ले आना, हम उसे सानेंगे, चाक पर चढ़ाएंगे, मैं दिए बनाउंगा, तु सुखाना, दीवाली आने वाली है गॉव की हाट में दिए बेच लेंगे। यूँ भी तो काम करने से कुछ खाने को मिलता है।

"बप्पा जँहा से मिट्टी लाते थे वह स्थान हमें मालूम है''।

फिर दोनों ने देर नहीं की। बड़े मेहनत से अच्छे दिए बनाए, सभी ने उन्हे रगा भी और घर-घर जाकर बेच भी आए। सभी को घर बैठे दिए मिल गए। हाट भी जाना नहीं पड़ा। दिए बनाते, रंगते, बेचते, दोनों ही थक कर चूर हो गए, बिना खाए पिए वहीं बैठ गए।

"रमई, पिछले साल, गुड़ की पूरी भेली आई थी, पगी खीलों के लिए'' रामी ने यादों में डूबते हुए कहा।

"अच्छा रामी, अम्माँ का लोहे का बक्सा तो कोई उठा कर ले नहीं जा सकता। बशी काका से मांगेंगे'' रमई ने कहा।

नहीं रमई, हम कुछ नहीं मागेगे। हमने बप्पा का काम उठा लिया है। हम अपना घर बनाएंगे, दीवाली पर लक्ष्मी जी को बुलाएंगे। बात करते-करते, दोनो ही सो गए। "रमई ! ओ रमई'' आ इधर आ, लगा अम्मॉ कह रही है। बेटा, दीवाली के घर नहीं करते। घर तो आपसी प्यार से होता है। लक्ष्मी जी, सब जगह नहीं जाती, वहीं जाती है जॅहा उन्हें बसने के लिए साफ-सुथरी जगह मिले तुम लोग सब भूल गए। तुलसी चौरे को लीप कर, रामी से संध्या बाती करवा दे लच्छमी जी आए तो कैसे ? उनके लिए रास्ता तो बना।''

"अम्मॉ'' ? ?, रमई हडबड़ा कर उठा, हाँ अम्माँ ही आई थीं।

रामी, ने जग कर, रमई को सम्हाला, उसके माथे का पसीना पोंछा, पानी दिया, "रमई क्या सपना देख रहा था''।

सपना ! हाँ सपना ही तो था. पर हम रामी, अम्मॉ का सिखया हम सब कितनी जल्दी भूल गए''–रामी, अम्माँ कह रही थी, लछमी जी के लिए रास्ता तो बना।

भोर होते ही रमई, को जैसे भूत सवार हो गया झोंपड़ी के चारों ओर का झाड़ झंखाड़ काट कर सफाई कर डाली। ईटों व मिट्टी से मुंडेर बनाई, और गंदे पानी का निकास बनाया। रामी ने झोंपड़ी की लिपाई पुताई की। जब अहाता साफ हो गया, तो रमई ने, वहाँ तुलसी चौरा बनाया, छोटा सा बिरवा रोप दिया। रामी, रमई। लोटा डोर लेकर कुँए की ओर बढे।

नहा धोकर, तब रामी ने तुलसी चौरे पर एक दीप, दीवाली की अगवानी में जलाया।" रामी, अब तो भाटनी की तरह लक्ष्मी जी हमारे घर भी आएंगी न'' रमई की आँखों में उत्साह की चमक थी।

''हाँ'' हमने रास्ता जो बना दिया है।'', वह रहा, उनके लिए दरवाजा--चाक की ओर इशारा करते हुए, रामी ने कहा, ''संतोष से दोनों के चेहरे भरे हुए थे, आँखों में आशा के दीप जगमगा रहे थे।

--सुषमा श्रीवास्तव
19/1152 आस्था
इन्दिरा नगर, लखनऊ

सुंदर कौन ?

कविता ! फिर तुने जूते मोज़े बिसतर पर फेंक दिए। "कितनी बार कहा तुझे कि ठीक जगह पर रखा करो'' मम्मी ने झुंझलाते हुए कहा।

ओ मम्मी ! बड़ी भूख लगी है। पहले खाना दो।

अच्छा चल ! हाथ मुंह धोकर आजा।

ओ हो, खना तो दो।

जब तक मीना, हाथ मुंह धोकर कपड़े बदल कर आई, तब तक कविता गपड-गपड़ खा कर खेलने चली गई।

"मीना बेटी ज़रा कविता के भी जूते मोजे अलमारी पर रख देना'' रोज़ ही ऐसा होता था। रेशमी, सुनहले, घुंघराले बालों वाली, गोरी चुलबुली कविता सभी की प्यारी थी। पापा भी उसे बहुत चाहते थे। स्कूल में उसकी मिस भी चाहती खेलकूद व नाटकों में वह बराबर हिस्सा लेती। कविता के अपनी सुंदरता पर बडा घमड था। मीना के सीधे बालों के ऊपर हमेशा ही वह एक नफरत की निगाह डालती थी। रमिया नौकरानी की लड़की मकुली उसे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी। उसके चीकट से बाल मटमैले कपड़े कविता का बस चलता, तो उसे घर मे ही घुसने न देती, पर मकली न आए तो सुबह ही चाय लेने के लिए मीना को ही आवाज देनी पड़ती। चलो मकुली ठीक है। मम्मी का हाथ बँटाती है। एक मुकुली ही नहीं चिकड़ा-चीकट कंबल ओढ़े फकीर बाबा उसे फटी आँख नहीं सुहाते आखिर लोग ऐसे, क्यों होते हैं। मुझे तो अजय मीरा किशोर अच्छे लगते हैं। क्या कपड़े पहनते है। बड़ी सी गाड़ी है उनकी और अपन तो बस ऐसे ही हैं। पुरानी मोटर साइकिल हुंह, पापा फेंक क्यों नहीं देते उसे। कूड़ा सी लगती है। वह तो जब भी बाजार जाएगी मौसी की गाड़ी में जाएगी। कविता सोचती पता नहीं मीना दीदी इतनी काली कैसे हो गई। मेरी बहन तो उसे कोई मानता ही नहीं। पर हैं बडी अच्छी। कविता को स्कूल मे जब भी डाँट पड़ती है, मम्मी को कभी नहीं बताती। उसके हिससे का सारा काम खुद कर देती है कि मुझे डाँट नहीं पड़े। गुलेल चला कर जब उसने उस मरियल कुत्ते की टांग तोड़ दी थी तब भी मीना ही उसे अदर खींच ले गई थी। नहीं तो कोई उसे पीटे बगैर छोड़ता नहीं। मीना दीदी तो उस कुत्ते को गोद मे लेकर पैर सहला रही थी उस दिन तो दो तीन घटे कमरे से

बाहर नहीं निकली फिर मीना दीदी ने ही कहा, आज किसी को नहीं मालूम कि गुलेल तूने ही चलाई थी। मैनें मम्मी से भी कुछ नहीं कहा। मीना उसका हाथ पकड़ कर बाहर ले आई थी।

आंगन में हल्की धूप पसरी थी। चारों ओर सब्जियों की क्यारियां थी। अमरूद का पेड़ था। उसमें मैना का पिंजड़ा टंगा था। अभी अभी मीना ने उसे नहला कर टाँगा है। पेड़ से छनती धूप में, मैना अपने पर फड़फड़ा कर सुखा रही थी। मीना बाहर से पिंजरा पोंछ रही थी। ये सारे काम उसी के थे।

तभी मम्मी बाहर से लौटीं। सारा सामान खाट पर डाल कर एक पैकेट से दो खूबसूरत स्कार्फ निकालते हुए बोली, "लो, तुम दोनों एक-एक ले लो। लाल रंग का फूलोंवाला स्कार्फ मीना को बहुत पसंद आया उसने ले लिया। कविता ने, दूसरे स्कार्फ को तोड़-मोड़ कर मीना पर फेंक दिया। मीना से लाल स्कार्फ छीनते हुए बोली, "यह मैं लूंगी, यह मेरा है। पापा कहते हैं लाल रंग मेरे ऊपर ही फबता है। मीना दीदी पर नहीं। यह तो काली है उनके ऊपर बिल्कुल अच्छा नहीं लग सकता।"

मम्मी चिल्लाई –"कविता ये क्या हरकत है। ले आ, तेरे लिए ऐसा ही दूसरा ले दूंगी।" पर कविता तो उसे लेकर बाहर भाग गई थी। मीना चुप हो गई थी। उसके साथ अक्सर ही ऐसा होता था। कोई भी सामान आता कविता ही पहले चुनती। पापा के दोस्त आते, कविता ही बाहर जाती। उनके दोस्त कहते क्या प्यारी बच्ची है। पापा खिल उठते। शाम होने पर जब मम्मी ने स्कार्फवाली बात पापा को बताई तो यही बोले ठीक है भई छोटी है, मीना को दूसरा ला दो जाकर। मीना का चेहरा बुझ गया। क्या गोरा होना ही सब कुछ है। फिर भगवान ने मुझे गोरा क्यों नहीं बनाया। क्या गोरे होने से ही कोई भी शैतानी की जा सकती है। गुलेल से किसी की जान ली जा सकती है। क्या रेशम के बाल होने से ही कोई सबका लाड़ला दुलारा हो सकता है। हे भगवान थोड़े से रेशमी बाल मुझे क्यों नहीं दे दिये। क्या मैंने कोई अपराध किया था।

स्कूल में वार्षिकोत्सव होनेवाले थे। मीना सोच रही थी कल स्कूल के वार्षिकोत्सव में नाटक के लिए उसका चुनाव होगा या नहीं। अभी तक हर नाटक में उसका चुनाव हुआ है उसे प्रथम पुरस्कार मिला है। पर ये मिस तो कविता को ही पसंद करती है। हिन्दी मिस ने उसके बारे में उनसे कहा भी था। पर उन्होंने कहा देखेंगे। उसके लायक कोई रोल होगा तो देखेंगे।

मीना का मन था कि नाटक में मालिन का रोल उसे ही मिलता था। फूल छड़ीवाले नृत्य का भी तो उसे अच्छा अभ्यास था पर शायद सोचते-सोचते उसे नींद आ गई थी।

धडकते दिल से दूसरे दिन वह स्कूल गई थी। जैसी आशंका थी वैसा ही हुआ था उसके पूछने पर मिस बोली 'मालिन के लिए जैसी सुदर चुलबुली लड़की

जरूरत थी वह गुण कविता में ही थे। इसीलिए ये रोल मैनें कविता को दिया था।'' एक गरीब लड़की का रोल है चाहो तो कर लो। बड़ा स्ट्रांग करेक्टर है। फिर समझाते हुए बोली भई ये तो नाटक है। एक बार फिर वह आहत हुई थी। बात तो ठीक ही थी। परंतु उसे कहीं चोट लगी थी।

घंटी बजते ही कविता दौड़ती आई। मीना दीदी बड़ी मिस ने मुझे चीफ गेस्ट को माला पहनाने को कहा है। उसकी गर्दन गर्व से ऐंठी जा रही थी। अच्छा कह कर मीना चुप हो गई। रोज ही वार्षिकोत्सव के लिए रिहर्सल होते। मीना ने नाटक छोड़ कर सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया था। प्रतियोगिताएं चल रही थीं।

वो दिन भी आ गया जिस दिन वार्षिकोत्सव था। सांस्कृतिक कार्यक्रम व पुरसकार वितरण होना था। पंडाल खूबसूरती से सजा था। मुख्य द्वार तक लड़िया सजी थी। फूलों के वंदनवार से सजे गेट पर अल्पना सजी खड़ी थी। चीफ गेस्ट को इसी द्वार से प्रवेश करना था। अचानक प्रिंसिपल के चिल्लाने की आवाज़ आई। सभी अध्यापिकाएं इधर-उधर भाग रही थी। चीफ गेस्ट आ गए थे। प्रिंसिपल उनके स्वागत में मुख्य द्वार पर आ गई थीं। परंतु पहला अभिनंदन गीत गानेवाली उर्मिला का कहीं पता न था। अचानक मीना ने देखा कि प्रधानाध्यापिका उसी को इशारे से बुला रही थीं। मीना जल्दी से गई, प्रिंसिपल धीरे से बोली, "मीना वर दे, सरस्वती वंदना गाओ।'' और मीना की मधुर स्वर लहरी पांडाल में गूँज उठी। वर दे वर दे, स्वर साकार हो कर उसके कंठ से झर रहे थे। चीफ गेस्ट, तालियो की गड़गड़ाहट के बीच उठ कर मीना के पास आए और कविता की पहनाई हुई माला मीना के गले में डालकर बोले शाबाश बेटी तूने तो अपने सुर से सबको जीत लिया। पंडाल में तालियाँ गूंज रही थी। चीफ गेस्ट के व्यस्त कार्यक्रम के कारण सबसे पहले पुरस्कार वितरण ही हुआ। लोगों के आश्चर्य की सीमा न थीं। वाद विवाद, संगीत, दौड़, निबंध, लेखन सभी विषयों के प्रथम पुरस्कार मीना को ही मिले। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कविता व मीना दोनों ही मंच पर थी। मीना का मन प्रसन्नता और आत्मसंतोष से भर उठा था। उसके उस सौदर्य के सामने कविता का गोरा रंग आज फीका हो गया था।

—सुषमा श्रीवास्तव
19/1152 आस्था
इंदिरा नगर, लखनऊ

मूर्ख राजा

विन्ध्याचल के उत्तरी वृत्त में सिन्धु नदी के किनारे महर्षि विश्वामित्र का सुन्दर सा आश्रम था। उस आश्रम में एक विशाल वट वृक्ष था। वट वृक्ष काफी प्राचीन था। उसकी घनी छायादार शाखायें दूर-दूर तक फैली थीं। बहुत सारे पक्षियों का आश्रय स्थल भी था यह वट वृक्ष। आश्रम की अद्भुत शांति में गूंजता मधुर कलरव बहुत ही मन-मोहक लगता था। इसी वट वृक्ष पर एक बड़ा ही विचित्र पक्षी रहता था यह पक्षी सोने की बीट करता था तथा मनुष्य की बोली बोल लेता था।

एक दिन सोने की बीट करनेवाला यह पक्षी भोजन की तलाश में उड़ते-उड़ते जंगल में काफी दूर निकल गया और दुर्भाग्य से एक बहेलिये के जाल में फंस गया। बहेलिये ने जाल समेट कर जैसे ही पक्षी को पकड़ा उसने सोने की बीट कर दी। बहेलिया आश्चर्य में पड़ गया, वह उस पक्षी को मारने या बेचने का इरादा छोड पिंजरे में बंद कर अपने घर ले गया। कुछ ही दिनों में बहेलिया स्वर्ण बीट से धनवान हो गया। उसके यहाँ अब किसी चीज की कमी नहीं थी। परन्तु उसे एक चिन्ता बराबर सताती रहती कि कहीं राजा को इस स्वर्ण बीटवाले पक्षी के बारे में पता चल गया, तो उसे सजा भी हो सकती है।

बहेलिया ने एक दिन अपनी पत्नी से यह बात कही, पत्नी भी सुनकर चिन्तित हो उठी। काफी सोच विचार के बाद उसने सुझाव दिया कि "हमें अब तक इस पक्षी की बीट से इतना सोना मिल चुका है, कि अपनी और बच्चों की जिंदगी आराम से कट जायेगी, अतः अब क्यों न इस पक्षी को आजाद कर दें।"

बहेलिया को पत्नी की यह बात पसंद नहीं आयी। उसने कहा, "यदि इसके बाद भी महाराज को पता चल गया तो और भी मुश्किल हो जायेगी। अतः क्यों न कुछ ऐसा किया जाये कि 'आम के आम और गुठलियों के दाम' वाली कहावत सिद्ध हो जाये। इसके लिये यह पक्षी राजा को ही भेंट कर दिया जाये। क्योंकि हम इससे अब तक तो काफी सोना पा ही चुके हैं, ऐसा अद्भुत पक्षी पाकर प्रसन्न हो राजा भी ढेरों इनाम देगा। सो अलग !

पत्नी को बहेलिया की बाता पसंद आ गई। उसने इस बात के लिये सहमति दे दी। दूसरे दिन ही बहेलिया पिंजरे में पक्षी लेकर राज दरबार में पहुँचा तथा पक्षी

की विशेषता बताते हुये राजा को भेट किया।

राजा बहेलिया को इनाम देने की घोषणा करने ही वाले थे कि तभी राजा का मत्री जो एक आँख से काना था, बीच में ही बोल पड़ा "महाराज ! लगता है यह पक्षियों का शिकारी आपको बेवकूफ बना कर पुरस्कार पाना चाहता है। भला साधरण दाना खानेवाला पक्षी सोने की बीट कैसे कर सकता है ?"

राजा उस काने मंत्री की हर बात मानता था। या यू कहे कि वह उसके ही कहने में चलता था। अतः बिना विचारे घोषणा बर दी कि पक्षी को आजाद कर, बहेलिया को धक्के देकर दरबार से बाहर निकाल दो।"

सेवकों ने शीघ्रता से राजा की आज्ञा का पालन किया। आजाद होते ही पक्षी दरबार के एक सतम्भ पर बैठ गया तथा मनुष्य की बोली में बोला, 'हे राजा ! पहले तो तेरा काना मंत्री मूर्ख है, जिसने सच्चाई की परीक्षा किये बिना बहेलिया कि बात पर अविश्वास किया और दूसरा तू स्वयं मूर्ख है, जिसने मूर्ख मंत्री की सलाह पर जरा भी विचार नहीं किया। हे राजा जो शासक चाटुकारों और चमचों के कहने में बिना विचारे निर्णय लेता है उसका राज्य नष्ट हो जाता है।"

राजा के सेवक पक्षी को पकड़ने झपटे, परंतु वह उड़ गया। लेकिन उड़ने से पूर्व वहाँ बीट कर गया। सोने की बीट देखकर राजा अपनी मूर्खता पर पछताने लगा। सच है, बिना विचारे और परीक्षण किये किसी की बात को मानने पर पछताना ही पड़ता है।

हरिश्चन्द्र गौड़
95, बड़ा पुराना बाजार थरेट
जिला – दतिया (म. प्र.)
475673

नम्रता जीती घमण्ड हारा

इस बार बटेर ने अण्डा देने के लिये समुद्र किनारे एक सुनसान जगह चुनी। बटेरिन ने आशंका प्रकट की "कहीं समुद्र हमारे अण्डे न बहा ले जाये," इस पर बटेर ने समझाया—"नहीं समुद्र ऐसा नहीं कर सकता वह महान् है, मर्यादा का प्रतीक है। उसका पानी निश्चित सीमा तोड़ कर हमारे अण्डों तक नहीं पहुँचेगा। वैसे भी वह बलवान है, और बलवान कमजोर को नहीं सताते।"

"लेकिन स्वामी ! जैसा आप सोच रहे हैं। वैसा समुद्र ने ना सोचा और अपने बल का प्रदर्शन हम पर किया। तब आप क्या कर सकेंगे।

"तब हम भी चुप नहीं बैठेंगे, समुद्र को सबक सिखा देंगे"—बटेर ने गर्व से कहा।

बटेरिन तो आश्वस्त हो गयी परन्तु बटेर की बातों से समुद्र का अहं बढ़ गया, उसकी आखिरी बात से उसे गुस्सा भी आ गया क्या यह जरा सा बटेर मुझे सबक सिखायेगा ?"

और बटेरिन ने जब अण्डे दिये तो एक दिन समुद्र ने एक लहर को थोड़ा आगे बढ़ाकर अण्डे समेट लिये। अपने अण्डे पानी में डूबे देख बटेरिन काफी दुःखी हुई, दु.ख बटेर को भी हुआ, लेकिन उसने धैर्य के साथ विचार किया। फिर बटेरिन से कहकर वह पास ही रहनेवाले बगुला के पास चला गया। बटेर को अपने पास आया देख बगुला ने कुशलक्षेम पूँछी। बटेर ने दुःखी हो समुद्र के अन्याय का वृतान्त सुना दिया।

बटेर ने कहा "दादा। लगता है समुद्र को अपनी शक्ति पर भारी अहंकार हो गया है। मैंने बार-बार उससे अण्डे वापस देने की प्रार्थना की लेकिन उसने मेरी नहीं सुनी।"

बगुला भी गंभीर हो गया। सागर तो शक्तिवान है, उसके आगे भला हम छोटे छोटे परिंदो की क्या बिसात.. ?

तभी बटेर ने फिर कहा, "दादा ! मैं आपके पास सहायता की आशा से आया हूँ।"

"लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि मैं किस प्रकार तुम्हारी सहायता करूँ बगुला ने लाचार शब्दों में कहा

"दादा ! सुना है, मानसरोवर पर एक हंस पति-पत्नि रहते हैं। पक्षी-जाति में वह देव तुल्य हैं। मैं तो इतनी दूर उड़ नहीं सकता, अतः आप उनके पास चले जायें और उन्ही से मुझे न्याय दिलाने की बात कहें।"

बगुला बटेर की विनम्रता से प्रसन्न था। अतः वह मानसरोवर जाने के लिये सहर्ष तैयार हो गया।

कई दिन की उड़ान के बाद आखिर बगुला मानसरोवर पर पक्षी श्रेष्ठ हँसों के निवास स्थल पर पहुँचा। हंसों ने बगूला का स्वागत किया और इतनी दूर से आने का कारण पूछा। बगुला ने समुद्र द्वारा बटेर के बच्चे छिपा लिये जाने की बात बताई और कहा, 'हे पक्षी श्रेष्ठ आप कोई ऐसा उपाय बतायें जिससे बटेर को उसके अण्डे मिल जायें।"

समुद्र द्वारा युगों से निश्चित सीमा की मर्यादा तोड़ देना कोई सहज घटना नहीं थी। हंस दम्पत्ति भी सोच में पड़ गये, निश्चय ही सागर अपना अहं प्रदर्शित कर रहा है। अहंकार से विवेक का नाश हो जाता है। फिर कुछ भी सोचने समझने की शक्ति क्षीण हो जाती हैं। भला जब बटेर सागर को खुद ही शक्तिमान मान रहा है। फिर उस पर बल का प्रयोग क्यों ?

काफी सोच विचार के बाद हँस ने बगुला से वहीं ठहरने को कहकर उड़ान भरी । हँस का विचार था, कि इस समस्या से पक्षीराज गरुड़ को अवगत करायें तथा कुछ उपाय पूँछें। कुछ ही दिनों की उड़ान के बाद वह गरुड़ के पास पहुँचा। हँस और गरुड़ गहरे मित्र थे। गरुड़ ने मित्र का स्वागत किया तथा मान सरोवर के हाल चाल पूछे-तब हँस ने सागर के अमर्यादित आचरण की बात गरुड़ को बता दी तथा कमजोर परिंदे को सताने के अपराध में समुद्र को दण्डित किये जाने की प्रार्थना की।

"अच्छा तो समुद्र का घमण्ड इतना हो गया है कि वह जरा से बटेर पर अपनी शक्ति दिखा रहा है।" गरुड़ को गुस्सा आ गया। वह गुस्से में ही भगवान् विष्णु के पास पहुँचे।

गरुड़ जी का तमतमाया चेहरा और लाल-लाल आंखें देखकर भगवान विष्णु ने पूछा-"पक्षीराज-कहो कौन सी ऐसी बात हो गयी कि क्रोध की साक्षात मूर्ति दिखाई दे रहे हो ?"

"भगवन ! समुद्र को भारी घमण्ड हो गया है, उसने मर्यादा छोड़कर सीमा से आगे बढ़कर बटेर के अण्डे चुरा लिये हैं। भगवन उसके उस अहंकार को तोडना होगा।" गरुड़जी ने आवेश में कहा।

मधुर मुसकान के साथ विष्णु भगवान ने कहा, "पक्षीराज यह काम तो बखूबी शेषनाग ही पूर्ण कर देंगे, अतः उन्ही के पास चले जाओ।"

गरुड जी शीघ्रता से शेषनाग जी के पास पहुँचे तथा सारी बात बताई शेषनाग

जी को भी आश्चर्य हुआ कि सागर ने यह क्षुद्र कार्य किया वह भी अहंकार वश ....यह अहंकार तोड़ना और सागर को सबक सिखाना जरूरी है।

बस फिर क्या था। शेषनागजी ने पृथ्वी का एक ओर का हिस्सा थोड़ा सा दबा दिया। समुद्र अचानक इस झोंक को न सह पाया। वह बुरी तरह लड़खडा गया। जिस जगह पर बटेर के अण्डे थे। उससे कई मील पीछे उसे खिसकना पड़ा। काफी जोर लगाया। अपने भीतर दो से चार गुना तक वेग से ज्वार पैदा किया, परन्तु वह पुनः उसी स्थान पर न पहुँच सका। सारी स्थिति ज्ञात होते ही सागर तिलमिला गया। प्रतिकार के लिये वह निरन्तर प्रयास करने लगा। परन्तु सफल नहीं हुआ। समुद्र ने क्रोधित हो उग्ररूप धारण कर लिया, भारी तूफान पैदा हो गया। सभी किनारों पर खलबली मच गयी, लेकिन वह फिर भी बटेर के अण्डों तक पुनः नहीं पहुँच पाया। समुद्र के अहंकार को ठेस लगी, वह भारी तबाही पर उतर आया। तभी विष्णु भगवान् वहाँ आये, और समुद्र को शांत करते हुये कहा, 'हे मर्यादा के प्रतीक, एक निरीह प्राणी को अपनी ताकत बताना अहंकार होता है, और अहंकार की हार ही होती है। फिर मुकाबला चाहे कमजोर से ही क्यों न हो। आपने अहंकार के वश बटेर को तुच्छ समझा। छोटा और कमजोर प्राणी को भी सबल बना देती हैं। अतः नम्र होना सबसे बड़ी ताकता है।''

समुद्र को अपनी भूल का अहसास हुआ। उसने आकर भगवान विष्णु के चरण श्पर्श किये। और फिर शांत हो गया--गंभीर। बटेरिन अपने अण्डा पाकर प्रसन्न हो गयी।

--हरिश्चन्द्र गौड़

95, पुराना बाजार थरेट **475673**

जिला - दतिया (म. प्र.)
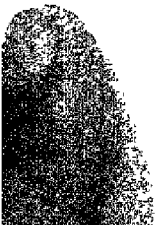
मोटा अखरोट

शहर की एक दुकान में एक मोटा अखरोट कैद था। वह अन्य अखरोटों के साथ डिब्बे में बंद था।

एक दिन एक ग्राहक आया। उसने अखरोट मांगे। दुकानदार ने अखरोट तोलकर दिये। उन अखरोटों के साथ मोटा अखरोट भी बिक गया। अखरोटों की थैली लेकर ग्राहक अपने घर आया। उसका नाम दीनानाथ था। वह जैसे ही घर पहुँचा तो अखरोट देखकर बच्चों ने उसको घेर लिया।

"पिताजी पिताजी ! मुझे अखरोट चाहिए।"

"मुझे भी चाहिए।"

"मैं दो लूंगा।"

"मैं तीन लूंगा।"

बच्चे अखरोट खाने के लिए मचलने लगे। दीनानाथ ने कहा, "किसी को भी अखरोट नहीं मिलेंगे। इन अखरोटों की मिठाई बनेगी। मिठाई खाएंगे तो मज़ा आ जाएगा। आओ हम सब मिलकर उन अखरोटों को तोड़ें।"

अखरोटों को फर्श पर फैला दिया गया। गोल-गोल अखरोट मार के डर से यहा-वहां भागने लगे। मार से तो भूत भी भागते हैं, ये तो अखरोट थे। घर का हर कोई सदस्य कोई न कोई साधन ले आया। किसी ने ली हथौड़ी तो किसी ने ली मूसली। हो गया हमला चालू। सभी अखरोटों की हड्डी पसलियां टूटने लगीं। मोटा अखरोट अपने भाइयों की ऐसी गंभीर हालत देखकर बगले झांकने लगा। सोचने लगा कि कोई युक्ति करके वहां से खिसक जाऊँ। लेकिन घर के लोगो का पहरा इतना तो सख्त था कि भगना मुश्किल था। अंत में मोटा अखरोट दीनानाथ के हाथ में आ गया। दीनानाथ ने उसे पकड़कर उस पर हथौड़ी का वार किया—सट्टाक !

मोटे अखरोट पर हथौड़ी का वार पूरी तरह पड़े उसके पहले ही उसने खुद को सरका लिया। इसलिए उसे ज़्यादा चोट नहीं लगी। उसकी खाल थी मोटी और पक्की सो वह टूटा नहीं बल्कि दूर जाकर पड़ा। दीनानाथ बड़बड़ाने लगा, "यह टूटता क्यों नहीं ?" और उसे फिर से हाथ में अच्छी तरह से पकड़कर ज़ोर से मारी हथौडी—सट्टाक।

इस बार भी अखरोट ने खुद को बचा लिया। पर वार था जोरदार, इसलिए अखरोट उड़ने लगा। ऊपर ! घर की खिड़की खुली थी सो अखरोट खिडकी में से पासवाले घर में जा गिरा और ज़ोर से आवाज़ हुई–खटाक् !

उसी घर में राजू नाम का एक लड़का स्कूल का पाठ याद कर रहा था। उसने जब कोई चीज़ गिरने की आवाज सुनी तो अपनी किताब बंद करके खिड़की की ओर दौड़ा। राजू वहां पहुँचे उसके पहले ही उसकी छोटी बहन नीतू वहाँ पहुँच गई और अखरोट ले आई।

"राजू भैया, रसोई-घर के स्टेन्ड पर यह अखरोट पता नहीं कंहा से आकर गिरा....''

राजू के पिताजी ने जब यह बात सुनी तो कहा, "खबरदार नीतू ! उसे खाना मत। यहां ला....देखूँ तो सही कि यह अखरोट ही है या और कुछ.... ?

नीतू ने अपने पिताजी को अखरोट दिया तो उसके पिताजी उसे उलट-पुलट कर ध्यान से देखने लगे। अखरोट को आश्चर्य हुआ कि आखिर यह आदमी उसे ऐसे घूरकर क्यों देख रहा है ?

तब नीतू ने कहा, "पिताजी, अखरोट को आप इस तरह क्यों देख रहे हैं ?

पिताली ने कहा, "तुमको पता नहीं कि आजकल आंतकवादी लोग अलग-अलग वस्तुओं या खिलौनों में बम छुपाकर बेकसूर लोगों की जान ले रहे हैं। तुम भी ऐसी कोई चीज देखो तो उसे हाथ मत लगाना। तुम्हारी छोटी-सी भूल तुमको बड़ा नुकसान पहुँचा सकती है।''

पिताजी ने फिर से अखरोट को ध्यान से देखा और बाद में अपना निर्णय सुनाया, "यह लो...यह सचमुच अखरोट ही है।''

यह सुनकर अखरोट को अब अपने आप पर गर्व होने लगा कि वह सचमुच ही अखरोट है।

नीतू बोली, "राजू भैया, आजा इसे तोड़कर खाएं मैं मूसली लेकर आती हूँ।'' और वह रसोई-घर से मूसली ले आई।

राजू ने हाथ में दस्ता लिया तो अखरोट की आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा। और जैसे ही राजू ने उस पर वार किया तो उसे दिन में तारे दिखाई देने लगे। लेकिन शुक्र है कि उसकी खाल मोटी थी, इसलिए टूटी नहीं और वह मूसली की चोट खाकर उड़नखटोले की तरह फिर से उड़ने लगा। वहाँ से जो उड़ा तो सीधा जाकर एक झोंपडी में गिरा। उस समय अखरोट ने चैन की सांस ली कि अच्छा हुआ कि बच गया। अब वह जिस झोंपड़ी में आकर गिरा था उसमें एक गरीब लडका कालू अपनी मां के साथ रहता था। वे बहुत गरीब थे। कालू एक सरकारी स्कूल में पढता था उसे किताबें भी एक संस्था से मुफ्त में मिलती थीं

कालू ने अखरोट देखा तो उसे लेकर अपनी मां के पास आया पूछने लगा,

'मा, यह क्या है ?

यह सूनकर अखरोट को अजीब सा लगा कि यह कैसा लड़का है जो उसे भी नहीं पहचानता,

तब माँ ने कालू को बताया, "बेटा, यह अखरोट है।''

कालू ने फिर पूछा, "माँ, अखरोट क्या होता है ?''

अरे ! यह लड़का तो बिल्कुल अनाड़ी लगता है। अखरोट ने सोचा, आज बड़े-बडे लोग उसे अपने पास रखना चाहते हैं और यह है कि उसका नाम तक नहीं जानता।

अखरोट के विचारों में खोया हुआ था कि कालू की माँ ने कहा, "बेटा, यह खाने की चीज होती है। पिस्ता, बादाम और अखरोट जैसी चीज़ें बहुत मंहगी होती है। इसलिए हम जैसे गरीब लोगों के भाग्य में ये नहीं है।'' तभी अखरोट को पता चला कि इस लड़के को उसके बारे में क्यों पता नहीं था।

कालू उसी समय अखरोट को अपने मुँह में डालकर खाने की कोशिश करने लगा कि माँ ने कहा "बेटा, इसकी खाल बहुत सख्त होती है। यह मुँह से नहीं टूटेगा। बाहर से एक पत्थर ले आ तो उसे तोड़ दूँ।

कालू दौड़ता-दौड़ता बाहर गया।

थोड़ी देर में बाहर से एक बडा पत्थर ले आया। उसकी मां पत्थर से अखरोट को तोड़ने लगी तो हर बार अखरोट अपने आपको बचा लेता। अखरोट की खाल मोटी और मजबूत थी इसलिए उसका बाल भी बांका नहीं हुआ। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी अखरोट नहीं टूटा। मां बोली. "यह नहीं टूटता।'' कालू रोने लगा, "मुझे अखरोट खाना है।''

मां ने उसे समझाते हुए कहा मैं तुम्हें कभी दूसरा अखरोट ला दूंगी। ला, इसे फेंक दूं।''

लकिन कालू ज़िद पर अड़ा रहा । "मैं तो यही अखरोट खाऊंगा।''

मां ने लाचार होकर कहा, "अच्छा-अच्छा ! ला मैं फिर से कोशिश करके देखूं।''

गरीब लड़के को यूं मचलता देखकर अखरोट का दिल पिघलने लगा। उसनें सोचा, 'अब तक तो मैं हर बार कोई न कोई युक्ति करके खुद को बचाता रहा। पर आज इस लड़के को अपने स्वाद से परिचित कराना चाहिए। मैं कुरबान हो गया तो कोई परवाह नहीं।'

ऐसा सोचकर अखरोट ने अपने आपको पत्थर के वार के लिए तैयार किया। अब कालू की मां ने जैसे ही पत्थर का वार किया तो वह टुकड़े-टुकड़े हो गया।

–डॉ. हूंदराज नलवाणी

172, महारथी सोसायटी

सरदार नगर, अहमदाबाद 382475 (गुजरात)

मुर्गाराम और तोताराम

एक घर था। उसमें मुर्गाराम और तोताराम रहते थे। घर के लोगों के लिए दोनों ही बड़े उपयोगी थे। इसलिए सभी उन्हें प्यार करते थे।

मुर्गाराम सुबह को सबेरे उठता था और जोरदार बांग लगाकर सभी को सुबह होने की सूचना देता था। मुर्गाराम की बांग सुनकर घर के सभी सदस्य उठ जाते थे और अपने-अपने काम में व्यस्त हो जाते थे। घर का मालिक दयाराम भी तैयार होकर अपनी दुकान पर जाता था।

तोताराम की भी इसी तरह एक ड्यूटी थी। घर के लोग उससे मीठी-मीठी बाते बुलवाते। 'सीताराम' कहलाते। वह उनकी बातों की नकल करता।

बहुत समय से एक ही घर में रहने के कारण मुर्गाराम और तोताराम की बातें शुरू होती थीं। मुर्गाराम धीरे-धीरे चलकर तोताराम के पिंजरे के पास आता था और वे दोनों बातों में खो जाते थे।

रोज़ की तरह एक दिन मुर्गाराम, तोताराम के पिंजरे के पास आया और कहने लगा, "भाई तोताराम, मैं तो हर रोज सुबह को जोर-जोर से बांग लगाकर थक गया हूं। यदि यही स्थिति रही तो मैं बीमार पड जाऊंगा।"

तोताराम बोला, "दोस्त, ऐसा करना हमारे भाग्य में लिखा है। मैं भी तेरी तरह ड्यूटी कर रहा हू। देख, मैं इन लोगों के आनंद के लिए तरह-तरह की मिमिक्री भी करता हूं। हमारे पूर्वज भी ऐसा करते थे जैसा हम करते हैं। हमारे बच्चे भी ऐसा ही करेंगे।

लेकिन मुर्गाराम का मिज़ाज तो आज न जाने क्यों इतना गरम था कि उसे तोताराम की बात अच्छी नहीं लगी। उसने कहा, हमारे पूर्वजों की परम्परा मुझे पसद नहीं। अब इक्कीसवीं सदी आनेवाली है। ज़माना बदल रहा है। नये ज़माने मे मैं भी पुरानी परम्पराओं को तोड़ना चाहता हूं। यह भी कोई जिन्दगी है ? रोज सुबह को उठो और बांग लगाकर सब को उठाओ। मेरे बदले और कोई घर का सदस्य क्यों नहीं बांग लगाता ? सिर्फ मैंने ही यह ठेका लिया है क्या ?"

तोताराम को समझ में नहीं आ रहा था कि वह मुर्गाराम को क्या जवाब दे। उसे शांत देखकर मुर्गाराम कहने लगा, "तोताराम, मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते ?"

तब तोताराम ने कहा, "देख दोस्त, मैं समझता हूं कि तू गलत सोचता है ईश्वर ने हर एक को निश्चित काम सौंपे हैं। तुझे तेरा काम करना है, मुझे मेरा काम करना है। न तू मेरा काम कर सकता है, न मैं तेरा। शुरू से जो बात होती आई है वह होती रहेगी। फिर जमाना बीसवीं सदी का हो, चाहे इक्कीसवीं सदी का। इसलिए तुझे मेरी सलाह है कि अपने बड़ों के किए हुए कामों को इस तरह टालने की कोशिश मत कर।"

लेकिन मुर्गाराम पर तोताराम की सलाह का कोई असर नहीं हुआ। उसने गुस्से होकर कहा, "तुझे अपनी ड्यूटी करनी है तो भले ही कर। मेरे लिए अब यह सभव नहीं है।"

तोताराम ने कहा, "मेरी समझ में नहीं आ रहा कि आखिर तूने क्या सोचा है ? मुझे भी तो बता।"

तब मुर्गाराम ने अपनी योजना बनाई, "देख, मैं कल से सुबह सवेरे नहीं उठूंगा और न ही मैं बांग लगाऊंगा। तू भी एक काम कर। तू मिमिक्री करना बद कर दे। नकल करने से अपनी अक्ल भी कमजोर हो जाती है। अब यह नक्ल करना बंद कर दे। बता, है कबूल ?

तोताराम ने कहा, "भाई, मैं तो ऐसा नहीं कर सकता। सीताराम और राधेश्याम मेरी रग-रग में समाए हुए हैं। प्रभु के गुणगान तो मुझे भी अच्छे लगते है। लोग इसी लिए तो मुझे प्यार करते हैं और अपने पास रखते हैं।"

तोताराम की यह बात सुनकर मुर्गाराम का मिजाज सातवें आसमान पर पहुंच गया। "अगर तू मेरी बात नहीं मानता तो तेरे साथ कुट्टी। कल से मुझे जो करना होगा वह मैं करूंगा। तुझे जो करना है सो कर। अब मेरे साथ बात मत करना।"

ऐसा कहकर मुर्गाराम जाने लगा। तोताराम ने सोचा, 'बेकार में एक मामूली सी बात के लेकर वर्षों की मित्रता टूट जाए, यह अच्छी बात नहीं।' और उसने मुर्गाराम को जाने से रोककर कहा, "दोस्त, बता हमें करना क्या है।"

"करना क्या है ? कल से अपनी-अपनी ड्यूटी बंद। न मैं बांग लगाऊंगा और ना ही तू सीताराम बोलेगा। ठीक है ?"

तोताराम की इच्छा नहीं थी फिर भी उसने अपने दोस्त को खातिरी दी।

दूसरे दिन सुबह हुई तो मुर्गाराम ने बांग नहीं लगाई और आराम से सोता रहा। मुर्गा राम ने बांग नहीं लगाई तो घर के सदस्यों की आंख भी नहीं खुली। सूर्य ऊपर चढ़ आया तो भी घर के सदस्य सोते रहे।

आखिर जब सब की आख खुली तो सब आश्चर्यचकित रह गए कि आज मुर्गाराम ने बांग क्यों नहीं लगाई। घर के मालिक दयाराम का भी दुकान जाने का समय कब का हो चुका था। जल्दी-जल्दी में वह तैयार होकर दुकान पर तो पहुचा लेकिन उसे मुर्गाराम पर गुस्सा आ रहा था।

उधर तोताराम से भी घर की एक छोटी बच्ची ने रोज़ की तरह आकर कहा, 'मिठ्ठू, बोल सीताराम !'' तो तोताराम ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपने दोस्त से वादा लिया था इसलिए चुप रहा। बच्ची ने दो-तीन बार कोशिश की फिर भी तोताराम कुछ नहीं बोला; और लोगों ने भी तोताराम से बात करनी चाही लेकिन सब व्यर्थ।

रात के समय जब घर के सभी लोग खाना खाने बैठे तब सब ने मुर्गाराम और तोताराम के व्यवहार में आए परिवर्तन की आपस में बात की। पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ था।

दूसरे दिन भी सुबह को न मुर्गाराम ने बांग लगाई और न ही तोताराम ने अपनी ज़बान खोली।

इसी तरह कई दिनों तक चलता रहा। एक दिन घर का मालिक दयाराम घर लौटा तो उसके हाथ में अलार्म घड़ी थी।

उसी दिन, रात को मुर्गाराम और तोताराम की सभा हुई।

तोताराम बोला, "मुर्गाराम तुझे पता है कि आज अपना मालिक एक घड़ी लाया है ? सुना है कि उसमें एक घंटी भी होती है। जिस समय नींद से उठना चाहो उस समय घंटी बजती है।''

मुर्गाराम बोला, "ऐसी बात है ? तुझे किसने कहा ?'' "आज मालिक सब को बता रहा था। मैंने भी सुना।''

मुर्गाराम खुश होकर नाचने लगा-"अगर ऐसी बात है तो फिर मैं हमेशा के लिए मुक्त हो गया। अब मुझे कभी चिल्लाना नहीं पड़ेगा।''

तोताराम बोला, "इसका मतलब कि अब मुझे भी हमेशा के लिए सीताराम बोलने से छूटकारा ?''

"हाँ, अब मज़ा आएगा।'' मुर्गाराम ने उत्तर दिया उसके बाद दोनों आराम से सो गए। सुबह को सबेरे घंटी बजी तो दयाराम उठ खड़ा हुआ। बहुत दिनों के बाद वह सही समय पर अपनी दुकान पर पहुँचा।

शाम को घर के सभी सदस्य इकट्ठे हुए। उन्होंने आपस में खुसर-फुसर की। फिर दयाराम के बड़े बेटे ने मुर्गाराम और तोताराम को एक जगह इकट्ठा करके हुक्म पढ़कर सुनाया। आप दोनों अपनी ड्यूटी पूरी तरह नहीं करते इसलिए इस घर से दोनों को निकाल दिया जाता है।

हुक्म सुनकर दोनों के होश उड़ गए। तोताराम को लगा कि मुर्गाराम की बातों में रहकर उसने अच्छा नहीं किया। अत: उसने मुर्गाराम से कहा, "चलकर मालिक से माफी मांगते हैं। मालिक दयालु है, माफ कर देगा।''

मुर्गाराम ज़िद्दी था, नहीं माना।

तोताराम मालिक के पास गया और माफी मांगी। मालिक ने उसे माफ कर

दिया

मुर्गाराम को निकाल दिया गया। वह कई दिनो तक इधर-उधर भटकता रहा। बहुत दिनों के बाद उसे महसूस हुआ कि उसने अपने दोस्त तोताराम की सलाह न मानकर अच्छा नहीं किया। पर अब तो बहुत देर हो चली थी। बाद मे वह काम प्राप्त करने के लिए बहुत जगह भटका परंतु किसी ने उसे काम नहीं दिया। सबने कहा, "अब इक्कीसवीं सदी आ गई है। हम जागने के लिए कम्प्यूटर घड़ी का इस्तेमाल करते है। जगाने के लिए तुम्हे घर में रखना अब पुरानी बात हो गई है।"

मुर्गाराम बहुत पछताया। लेकिन अब पछताने से क्या फायदा ?

—हूंद राम नलवाणी

172 महारथी सोसायटी

सरदार नगर अहमदाबाद-

(गुजरात)

तेल चोर

दीपावली का त्योहार अनोखा त्योहार है। पूरे पांच दिनों तक चलनेवाला त्योहार। इस बार दिवाकर ने पापा के सहयोग से रंगाई पुताई की। पापा ने अपनी पगार में से 200 रु. पुताई के रखे थे। पटाखे बजट में नहीं थे। पुताई का खर्च बचा कर दिवाकर ने पटाखों में उसे खर्च करने का सोचा। तभी मम्मी ने बताया-सजावट के दीप और बिजली के छोटे बल्ब भी लाने हैं। सौ रुपए उस पर खर्च हुए। बाकी बचे सौ रुपए। पापा खुद जाकर पटाखे ले आए। शाम को दीप जलाए। उनमें तेल डाला। वे भीतर गए तो देखा-दीप बुझने लगे थे। दिवाकर ने देखा दीए एकदम तेल रहित थे। मुंडेर पर तेल टपका भी था। दिवाकर ने सोचा कोई तेल चुरा ले गया है। उसने तय किया कि तेल चोर को पकड़ कर रहेगा। उसके बाद ही अपनी जीत की पटाखे छोड़ेगा। अगले दिन शाम को उसने दीपों में तेल डाला और जलाए बीच में उसी आकार का बल्ब भी जला दिया उसमें जुड़ेतार में करंट कम था। जानबूझकर तार थोड़ा खुला रखा। थोड़ी देर बाद किसी के 'ओहाहो' की आवाज सुनी। बाहर गया तो एक काला सा लड़का हाथा झटकता मिला। उसके पास बर्तन था। आधे दीए तेल से भरे थे। आधों का तेल बरतन में भरा था। दिबाकर ने उसके पास जाकर डांटा-चोर, तेल चुराता है। वह बोला, "मैं गरीब हूं। सब्जी में तेल नही डाल पाता। उस लिए तेल।" दिवाकर ने कहा, "मेहनत करो, चोरी से स्वाद थोड़ी आता है।" चलो मैं काम दिलाता हूं। दिवाकर उसे दीए बेचनेवाले बूढ़े बाबा के पास ले गया। बोला, "बाबा आपसे अपनी टोकरी नहीं उठती न, ये लड़का उठायेगा।" आप घूम-घूम कर ज्यादा दीए बेच पायेंगे। इसे मजदूरी दे देना। बाबा ने कहा, "ठीक है भई दे दूंगा मजदूरी।" उसके बाद दीपू घर लौट आया। वह खाली दीपों में तेल भरके उन्हें रोशन करके लक्ष्मीपूजा में जुट गया। मां ने मिठाई व्यंजन बना लिए थे। उन्हें खाकर दिवाकर पटाखे छोड़ने के लिए निकला तो वही लड़का सामने था। दिवाकर ने पूछा, "क्यों ? क्याकाम न करते बना।" आ गए फिर तेल की चोरी करने ? उस लड़के ने कहा, "सारे दीए बिकवा आया। बाबा ने मेहनत के पन्द्रह रुपए दिए हैं। मैं आपको ध न्यवाद करने आया हूं।"

दिवाकर ने कहा, "शाबास, रुको मैं अभी आया।" घर में मम्मी को बाता

बताई। मम्मी ने बड़ी सी पुड़िया मे मिठाई-व्यजन दे दिए। दिवाकर ने कुछ पटाखे दिए। वह लडका संकोच करने लगा। दिवाकर ने कहा, "देखो यह तुम्हारी मेहनत का इनाम है।" चोरी से सजा मिलती है। जाओ और घर पर भाई बहनों को देना। पटाखे छोड़ना। वह चला गया। दिवाकर दूनी खुशी से भर गया था। उसने पटाखे चलाए तो कुछ ज्यादा ही आनंद आया

–गफूर स्नेही
नयापुरा तराना
जिला–उज्जैन (म०प्र०)–456665

ईर्ष्या

सोनू को चित्रकला प्रतियोगिता में इनाम मिला था। इनाम स्कूल के बाहर की संस्था ने दिया था। सोनू की कक्षा की अध्यापिका ने उससे इनाम में मिली वस्तुएँ ले कर स्कूल आने को कहा था। आज वह सभी वस्तुएँ और प्रमाणपत्र ले कर स्कूल गया था। प्रमाण पत्र पर प्रदेश के राज्यपाल के हस्ताक्षर थे। यह बहुत बड़ी उपलब्धि समझी जा रही थी। इसीलिए प्रार्थना होने के बाद प्रधानाचार्या ने सोनू की प्रशंसा की और सभी को पुरस्कार की वस्तुएँ दिखाईं।

पूरे स्कूल में सोनू की ही चर्चा थी।

सोनू पढ़ने में भी कमजोर नहीं था।

सोनू के पड़ोस में निर्मल रहता था। निर्मल था तो उम्र में सोनू से छोटा मगर शरीर से उससे काफी बड़ा लगता था। उसकी माँ हर समय उसको पौष्टिक भोजन कराती रहती थी। उसकी जेब में काजू-बादाम भरे रहते थे। वह अपने साथियों से छिपा कर खाता रहता था। इसीलिए वह जल्दी बड़ा हो रहा था। लाड़-प्यार में पल रहा था। इस कारण जिद्दी और लापरवाह भी हो गया था। निर्मल की लापरवाही ने उसे निकम्मा बना दिया था। कला में जो गृह कार्य दिया जाता उसे पूरा नहीं कर पाता। फलस्वरूप आए दिन उसे सजा भुगतनी पड़ती।

जिस दिन सोनू को मिले पुरस्कार के लिए पूरे स्कूल में उसकी प्रशंसा हो रही थी, निर्मल को कई घंटे बेंच पर खड़ा किया गया।

निर्मल ने यह बात अपनी माँ को बताई। उसकी माँ ने उसे अपनी बेइज्जती समझा। वह सोनू के घर जा कर उसकी माँ से उलाहना देने लगी, "अरे पुरस्कार क्या मिल गया है कि सारे स्कूल में नचा-नचा कर दिखा रहा था। और हमारे निर्मल को बेंच पर खड़ा करवा दिया।"

"किसने खड़ा करवा दिया बेंच पर? सोनू ने?" सोनू की माँ ने पूछा।

उन्हें पूरी स्थिति का पता नहीं था।

"हाँ, और क्या?"

'सोनू को क्या पड़ी है जो बेंच पर खड़ा करवाता। सबक याद नहीं किया होगा या कोई काम नहीं किया होगा।"

"अरे दुश्मनी निकलवाते हैं। जलते हैं कि हम अच्छा खाते हैं अच्छा पहनते

हैं।'' निर्मल की माँ तीखी आवाज में बोली।

मगर सोनू की माँ ने धीरज से काम लिया। बोली, "कल स्कूल चल कर पता किया जायेगा, क्या बात हुई।''

"स्कूल जाये मेरा ठेंगा। मैं देख लूंगी एक-एक को। स्कूल के मैनेजर से कह कर उस मास्टरनी को न निकलवा दिया तो कहना। जब देखो तब हमारे निर्मल को सजा देती रहती है। अरे, और भी तो बच्चे हैं स्कूल में।''

तभी सोनू घर में आया। आते ही उसने उत्साह में कहा, "मां, आज बड़ा मजा आया !...''

"हाँ, मजा क्यों नहीं आया होगा? निर्मल को बैंच पर खड़ा करवा कर वाहवाही जो लूटी जा रही थी।''

सोनू सहम गया। उसे यह पता था कि निर्मल को बेंच पर खड़ा किया गया था। वह धीरे से बोला, "चाची, निर्मल दो दिन से होम वर्क नहीं करके ले जा रहा है। इसीलिए उसे सजा मिली। मैंने कहा, 'मेरी कॉपी से उतार ले। वह भी वह नहीं करता।''

"हाँ, तू तो बहुत तेज है। मास्टरनी की मक्खनबाजी करता है। तभी तो वह कुछ नहीं कहती। देख लूंगी सबको !...'' कहती हुई वह चली गई।

सोनू की माँ निर्मल की माँ को देखती रह गई। फिर उन्होंने सोनू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "चल, बस्ता रख कर हाथ मुँह धो ले। स्कूल से इतनी देर मे क्यों आया?''

"वह माँ, एक दोस्त अपने घर ले गया था। उसकी माँ भी पुरस्कार की चीजे देख कर बहुत खुश हुई। मुझे मिठाई भी खिलाई।''

"वह पढ़ाई में कैसा है?''

'ठीक है। कह रहा था, "मुझे भी चित्र बनाना सिखा दो।'' सोनू ने कहा, "हा-हां, सिखा देना।'' उसकी माँ ने कहा तो उसके चेहरे पर गर्व के भाव तैर गये।

—घनश्याम रंजन

65, कैंट रोड, उदय गज,

लखनऊ – 226001

फोन : 22175५

मन के जीते जीत

विद्यालय में पूरी छुट्टी की घंटी बज गई टन्.....टन्.... टन्न्न्. ...टन्न्।

विद्यार्थी अपने-अपना बस्ता संभाले, चार-चार पाँच-पाँच बच्चों के झुंड में बंटकर हँसते-खिलखिलाते घर पर चल पड़े। कक्षा सात का विद्यार्थी रोहन भी बैसाखी के सहारे चलता, अपने गाँव के लड़कों की टोली में शामिल हो गया। आज वह मन-ही-मन कुछ सोचता हुआ रोज की अपेक्षा काफी धीमा चल रहा था। सहपाठी उसे जल्दी ही पीछे छोड़ते हुए आगे निकल गए। यहाँ तक कि उसका बड़ा भाई सोहन भी सहपाठियों की ही-हा, ही-ही के बीच उसे भूल गया था।

तीन-चार साल पहले, पोलियो के असर से रोहन की एक टाँग कमजोर और पतली पड़ गई थी। फलस्वरूप उसे बैसाखी के सहारे चलना पड़ता था। रोहन का पिता मोती बेटे के भविष्य को लेकर अत्यधिक परेशान रहता था। अभी कल की बात है, रात में रोहन को नींद नहीं आई थी।

इसी समय मोती भोजन करके ओसारे में आया। थोड़ी देर में रोहन की माँ भी आ गई। उन दोनों के बीच घर-गृहस्थी की बात छिड़ गई। धीरे-धीरे घूम फिरकर बातचीत बच्चों पर आ टिकी। रोहन ने सुना, उसका पिता कह रहा था, "सोहन की तो हमें कोई चिन्ता नहीं है। शरीर से दुरूस्त है, बड़ा होकर मजे में कमा-खा लेगा। चिन्ता है तो हमें रोहन की, बेचारा लंगड़ा है। पता नहीं ज़िन्दगी में किस-किस मुसीबत का शिकार होगा।"

माँ ठण्डी साँस खींचकर बोली, " सिर्फ, भगवान् का भरोसा है। वही ऐसे बच्चों का बेड़ा पार लगा सकता है"

यह सुनकर रोहन को बड़ा दुःख हुआ। वास्त्व में उसका एक पैर ही खराब था। बाकी डील-डौल में वह सोहन से कम न था। पढ़ाई में तो अच्छा था ही, उसका सबके प्रति नम्र व्यवहार भी कम मोहक न था। किन्तु माँ-बाप थे कि इन विशेषताओं से आँख मूंदे, उसकी एकमात्र कमी को लेकर चिन्तित थे।

रोहन ने चारपाई पर करवट बदलते हुए सोचा, "माता पिता मेरे विषय में गलत भ्रम पाल बैठे हैं। जैसे भी बन पड़े, जल्दी से जल्दी इसे समाप्त करना होगा। मगर काफी माथा पच्ची के बाद भी उसकी समझ में ऐसा कोई उपाय नहीं आया, जिससे वह माता पिता को अपने विषय में बेकार चिन्ता करने से रोक सकता

विद्यालय से लौटते समय भी रोहन इसी उधेड़-बुन में उलझा था। अचानक उसकी निगाह गाँव के बाहर खुले "कताई-बुनाई केन्द्र" पर पड गई। यह केन्द्र चलते लगभग एक महीना हो चुका था, पर इच्छा रहने के बाद भी वह अब तक नज़दीक से इसे नहीं देख सका था।

आज उसका जी न माना। वह जाकर केन्द्र के दरवाजे के सामने खड़ा हो गया और कौतुहल से अन्दर झाँकने लगा। भीतर उसकी उम्र के कई लड़के अटेरन पर लिपटा सूत उतारकर मुंडी बनाने में जुटे थे। कुछ लड़के करघे पर बैठे थे और बुनकर उन्हें दरी-चादर बुनना सिखा रहे थे।

इसी समय केन्द्र के प्रबन्धक रवि ठाकुर निकले। दरवाजे पर रोहन को देख, रुक गए। बोले, "क्या बात है बेटे"?

उसने करघे की तरफ अँगुली दिखाई, "यही देख रहा हूँ"।

"कोई बात नहीं। मन हो तो अन्दर जाकर देख लो।" उन्होंने स्नेह से कहा, "और अपनी साइकिल लेकर गाँव की तरफ चल दिए।

रोहन बेझिझक केन्द्र के अन्दर चला गया। वहाँ कई तरह के करघे और चरखे चल रहे थे। वह घूम-घूमकर ध्यान से सब कुछ देखने लगा। यहाँ उसे बड़ा अच्छा लग रहा था। जल्दी ही वह काम करनेवाले लड़कों में घुल मिल गया। सभी लडके आसपास के गाँवों से आते थे। यहाँ काम सीखने के साथ-साथ उनको कुछ पैसा भी मिलता था। उसने सोचा-अगर मुझे भी ठाकुर साहब केन्द्र में रख लें, तो क्या ही अच्छा हो? छुट्टी के बाद रोज डेढ़-दो घंटा का काम है, आराम से सात-आठ महीने में कारीगर बन जाऊँगा। बस फिर माँ-बाप मेरी सामर्थ्य से परिचित हो जायेंगे और उनकी मेरे बारे में जो फिक्र है, वह चुटकी बजाते ही रफूचक्कर हो जायेगी।

यह सोचते हुए उसका दिल खुशी से उछलने लगा। उसने इसी समय ठाकुर साहब से बात करने की सोची। लेकिन अभी वे वापस नहीं लौटे थे। उसके इन्तजार में रोहन आधा घंटा रुका रहा। फिर भी वह नहीं आए, तो अगले दिन बात करने का निश्चय करके वह घर चला आया।

रोहन की वह रात सपनों में कट गई। सपने में वह एक बड़े से कताई-धुनाई केन्द्र में अकेला पहुँच गया था, जहाँ कभी वह करघे पर बैठकर रंग बिरंगी चादर बुनता और कभी चरखा चलाकर लम्बे-लम्बे सूत निकालता। अगले दिन सपना सच करने के लिए वह विद्यालय से सीधे केन्द्र आया। ठाकुर साहब से मिलकर कहा, "मैं भी यहाँ सीखने आना चाहता हूँ। क्या एक अवसर आप मुझे भी दे सकेंगे ?"

रवि ठाकुर को उसकी बातचीत का ढग बडा प्यारा लगा उन्होंने उसे सामने की कर्सी पर बैठाया और प्रेम से बोले "बेटा यह केन्द्र तो ने उन बच्चों

को अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाने के लिए खोला है, जो किसी कारण से स्कूल नहीं जाते। तुम तो अभी पढ़ते हो। पहले शिक्षा पूरी कर लो। बाद में काम भी सीख लेना।''

"इसका मतलब आप मुझे काम नहीं सिखा सकते।'' रोहन ने निराश होकर कहा, "एक खास बात है, जिसके कारण मुझे काम सीखने की इच्छा थी।''

रवि ठाकुर ने कारण पूछा। रोहन ने साफ-साफ बता दिया। ठाकुर साहब ने मेज की दराज से नियमावली निकाली और पन्ने पलट-पलट कर कुछ पढ़ने लगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने नियमावली मेज पर रखते हुए कहा, "बेटा, तुम्हारा काम बन जायेगा। पढ़नेवाले विकलांग लड़के भी यहाँ खाली समय में काम सीखने के लिए भर्ती किए जा सकते हैं।''

"तब मैं कल से आया करूँ ?'' उसने बड़ी आशा से रवि ठाकुर को देखा

"हाँ। "उन्होंने समझाया--"रोज छुट्टी के बाद आ जाया करना। जितनी देर काम करोगे, वह समय मैं लिखता जाऊँगा। आठ घंटे पूरे होने पर तुमको केन्द्र की तरफ से पाँच रु० पारिश्रमिक भी मिलेगा।''

अगले दिन से स्कूल की छुट्टी पूरी होने पर रोहन घर आकर बस्ता रखता और खाना खाकर खेलने के बहाने बैसाखी के सहारे चलता हुआ केन्द्र में पहुँच जाता। केन्द्र के कारीगर उससे जो भी काम कहते, "वह बड़ी लगन से करता। उसे कोई बात बार-बार समझानी भी नहीं पड़ती थी। उसका उत्साह देख, रवि ठाकुर इतने प्रसन्न हुए कि उसे ज्यादा काम सीखने का मौका देने का फैसला कर लिया। एक दिन उन्होंने रोहन से पूछा, "छुट्टियों में क्या करते हो ?''

"होम-वर्क और खेलकूद।''--उसने जवाब दिया।

ठाकुर साहब ने सुझाव दिया--"खेल-कूद से मन ऊब जाया करे तो यहीं आ जाया करो, साधारण स्कूली छुट्टियों में भी केन्द्र खुला रहता है।''

रोहन तोयह चाहता ही था कि अधिक से अधिक समय देकर जल्दी काम सीखा जाए। किन्तु अपनी तरफ से कहने में संकोच करता था--कहीं लालची न समझ लिया जाऊँ। अगले दिन रविवार की छुट्टी थी। उसने दस बजे तक स्कूल का काम पूरा कर लिया और भोजन करके केन्द्र में पहुँच गया। उसने पूर आठ घंटे काम किया। अब पढ़ाई वाले दिनों में दो घंटे काम करने के साथ-साथ वह छुट्टियों में पूरे दिन काम करने लगा।

उसे अक्सर घर से गायब देख, माँ-बाप को चिन्ता होने लगी, एक रात जब वह केन्द्र से लौटा तो उसके पिता मोती ने पूछ ही लिया, "बेटा, आजकल तुम कहाँ घूमा करते हो ?''

"घूमता नहीं हूँ।''--रोहन ने जवाब दिया--"अपने गाँव के रवि ठाकुर जो कताई बुनाई केन्द्र चलाते हैं वहीं जाता हूँ

उसने पूरी बात नहीं बताई थी। मा-बाप ने भी जानने की जरूरत नहीं समझी, क्योंकी ठाकुर साहब गाँव के नेक व्यक्ति थे। उनके साथ उठन-बैठने मे लडके के बिगड़ने का डर नहीं था। धीरे-धीरे रोहन को काम सीखते तीन महीने हो गए। एक रात जब वह घर चलने लगा तो ठाकुर साहब बोले, "बेटा, अभी तक तुमने अपना हिसाब नहीं लिया, आज पैसे लेकर जाओ।''

"कितना पैसा निकल रहा है मेरा ?'' उसने जानाना चाहा।

रवि ठाकुर ने बही निकाली। हिसाब लगाकर बताया--"कुल तीन सौ दस रुपये तुम्हारा पारिश्रमिक बना है। साथ ही सबने तुम्हारे काम और व्यवहार की तारीफ की है। इसलिए केन्द्र की तरफ से तुम्हें पन्द्रह रुपये इनाम दिया गया है। इस प्रकार तुम्हारे कुल सवा तीन सौ रुपये निकलते हैं।''

रोहन ने उमंग में डूबते-उतरते हुए कहा, "मेरा पैसा अपने ही पास रहने दे। जरूरत पर मांग लूँगा।''

"नहीं, यह कायदा ठीक नहीं है।''--उन्होंने सुझाव दिया--"जरूरत के लिए बचा रखना है, तो मैं पोस्ट ऑफिस में तुम्हारा बचत बैंक खाता खुलवा दूँगा। इस खाते में जमा रकम पर तुम्हें ब्याज भी मिलेगा।''

रोहन सहमत हो गया। रवि ठाकुर ने दूसरे दिन पोस्ट ऑफिस में उसके नाम से खाता खुलवा दिया। अब उसे केन्द्र से जो पैसा मिलता वह उसको अपने खाते मे जमा कर देता। धीरे-धीरे उसे केन्द्र में काम करते डेढ़ साल हो गए। उस बीच उसे दस रुपये प्रति घंटा के हिसाब से कारीगरों वाला पारिश्रमिक मिलने लगा था। उसके बचत बैंक खाते में अच्छी रकम जमा हो चुकी थी। किसी घरेलू जरूरत के वक्त इस रकम से वह माँ-बाप को चकित करना चाहता था, लेकिन ऐसा कोई मौका आता, इसके पहले एक घटना घट गई।

हुआ यह कि अचानक केन्द्र का निरीक्षण करने एक बड़े अफसर आ गए। वह स्कूल की छुट्टी का दिन था। रोहन प्रभावित हुआ। निरीक्षण समाप्त कर, उसने रवि ठाकुर से रोहन के विषय में पूछताछ की। सारी बातें जानकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने अपने बैग से एक फार्म निकालकर रवि ठाकुर को देते हुए कहा, "ऐसे होनहार बच्चों को प्रोत्साहित करना हमारा कर्तव्य है। आप रोहन के पिता से मिलकर यह फार्म भरवा लें और मेरे पास भेज दें। मुझे हर जिले में सरकारी खर्च पर कताई-बुनाई और डिजाइनिंग के उच्च प्रशिक्षण के लिए एक-एक लड़के का चुनाव करना है। इसमें मैं रोहन का चुनाव भी कर लूंगा।''

अगले दिन फार्म लेकर रवि ठाकुर रोहन के पिता मोती से मिले। पूरा मामला जानकर मोती हक्का-बक्का रह गया। कुछेक क्षण बाद बरबस उसके मुँह से निकला--"ठाकुर साहब ! क्या कह रहे हैं आप ?''

"वही जो तुमने सुना।''--रवि ठाकुर ने उसे समझाया--"वास्तव में यह तुम्हारे

मन का कोरा भ्रम है कि रोहन कोई बड़ा काम नहीं कर सकता , अगर आदमी मे लगन हो तो शरीर की छोटी-मोटी कमियां उसे आगे बढ़ने से कभी नहीं रोक सकतीं। तुम्हारा भ्रम दूर करने के लिए ही रोहन केन्द्र में भर्ती हुआ था। यहाँ उसने अपनी मेहनत और आत्मविश्वास से एक अच्छा अवसर ही नहीं प्राप्त किया बल्कि अपनी कमाई के हजार से अधिक रुपये भी जमा कर रखे हैं।

रोहल का पिता बेहद प्रसन्न हुआ। रवि ठाकुर की बात से उसे लगा, चिन्ता का एक पहाड़ सा बोझ उसके ऊपर से उतर गया है।

—चित्रेश

पो० आ० जातापुरा
गोसाईगंज - 228 119
सुलतानपुर (उ०प्र०)

खुशियाँ लौट आयीं

आज दीवाली थी। सुबह से ही नन्दु के गाँव के सभी लोग अपने-अपने घरो को सजाने में लगे थे। लगभग सभी घरों में पुताई हो चुकी थी। दीवाली की रात को गाँव भर के बच्चे अपने-अपने पटाखे लेकर चौपाल के सामनेवाले बड़े से मैदान में एकत्र होते थे। वहीं खूब धूम-धडाका होती थी। पूजन के बाद गाँव के प्रधान की ओर से सभी बच्चों को एक-एक फुलझड़ी का पैकेट तथा मिठाइयाँ बाँटी जाती थीं। सारा गाँव बच्चों के उस आतिशबाजी कार्यक्रम में शामिल होकर आनन्द लेता था।

अपने घर के दरवाजे की चौखट पर बैठा नन्दू मन ही मन सोच रहा था कि उसका भैया चन्दू शाम को शहर से आएगा तो उसके लिए ढेरों पटाखे और मिठाई लाएगा।

दो वर्ष पहले पिताजी का देहान्त हो जाने के बाद से चन्दू शहर में मजदूरी करके घर का खर्च चलाता था। माँ प्रधान जी के यहाँ काम करती थी। चन्दू अपने भाई को खूब पढ़ा लिखा कर बड़ा आदमी बनाने के सपने देखता था। वह नन्दू से कहता, "तुम मन लगाकर पढ़ाई करो। मैं जीतोड़ मेहनत करके तुम्हें इतना पढ़ाऊँगा कि तुम खूब बड़े आदमी बन सको। फिर हम सबके दुःख दूर हो जाएगे।"

आज सुबह शहर जाते समय माँ ने चन्दू से कहा था, "चन्दू आज जल्दी घर आ जाना। "धीरे-धीरे शाम हो गयी। रात भी घिर आई। लेकिन चन्दू घर नहीं आया। सब बच्चे अपने-अपने पटाखे लेकर मैदान में इकट्ठे हो गए थे। नन्दू के पास तो पटाखे थे नहीं। वह कैसे जाए ? यही सोच-सो कर उसे रुआंसी आने लगी। पता नहीं चन्दू भैया अब तक क्यों नहीं आए ? माँ को भी चिन्ता होने लगी थी। गुस्सा भी आ रहा था। चन्दू पर, "जब कह दिया था कि जल्दी घर आ जाना, तो जल्दी आ जाना चाहिए था।"

सभी घरों में दीपक जल चुके थे। परन्तु नन्दू के घर पर अन्धकार था। बच्चो के पटाखों की आवाज से सारा गाँव गूँज रहा था। जैसे-जैसे पटाखें को शोर बढता जा रहा था नन्दू की सिसकियाँ भी बढती जा रहीं थीं मा भी बेचारी क्या करती

खूब पटाखे चलाना।

धीरे-धीरे आधी रात बीत गयी। पटाखों का शोर समाप्त हो गया था। सब लोग सो गए थे। बस टिमटिमाते हुए दीपक रात के अँधेरे को भगा रहे थे। नन्दू भी रोते-रोते बिना कुछ खाए-पीए ही सो गया था।

रात को लगभग एक बजे चन्दू ने घर में कदम रखा। उसे देखते ही माँ मारे गुस्से के उबल पड़ी, कहाँ आवारा गर्दी करता रहा ? क्या समय हो रहा है, कुछ पता है ? यह समय है आने का ? बेचारा नन्दू तेरी राह देखते-देखते रोते-रोते सो गया। आज तेरे पिताजी होते तो मेरे नन्दू को पटाखों के लिए इतना रोना नहीं पडता। कहते-कहते माँ की आँखों से आँसू बह निकले, "कितने अरमान थे तुझसे ? लेकिन लगता है, मेरी आशाएँ बस सपने ही हैं, जो शायद कभी पूरे नहीं होंगे। आज त्योहार के दिन जिसे माँ और भाई का ध्यान नहीं, वह घर की क्या देख भाल करेगा ? धिक्कार है तुझ पर ?'' गुस्से में माँ और भी न जाने क्या-क्या कह गयीं।

जब माँ ने बोलना बन्द किया तो चन्दू ने अपना थैला खोला और उसमें से पटाखे और मिठाई का डिब्बा निकालकर माँ की ओर बढ़ाते हुऐ कहा, "माँ मैंने आवारागर्दी नहीं की..........मैंने तुम्हारी आशाओं पर पानी नहीं फेरा माँ..... । मैं तो तुम्हारे एक-एक सपने को पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे अपनी माँ और भाई का स्वयं से ज्यादा ध्यान है।''

"आज सुबह शहर में मजदूरी न मिलने के कारण मैं बहुत परेशान था। समझ मे नहीं आ रहा था कि नन्दू के लिए शाम को पटाखे और मिठाई कैसे ले जाऊँगा। यही सोचकर मैं धीरे-धीरे सड़क के किनारे बने फुटपाथ पर चला जा रहा था। तभी एक आदमी मेरे पास आकर बोला, "ढुलाई करोगे ? "काम मिलने की खुशी मे मैंने तुरन्त हामी भर दी। ट्रकों पर धान के बोरों की ढुलाई करनी थी। सेठ जी ने मुझसे कहा, " जब तक ढुलाई पूरी नहीं हो जाती, तुम्हें छुट्टी नहीं मिलेगी। खूब सोच लो। मजदूरी अच्छी मिलने के लालच में मैंने हाँ कर दी।

"दोपहर को खाने की छुट्टी में मैंने सेठजी से अपनी दोपहर तक की मजदूरी के रुपये लेकर नन्दू के लिए मिठाई, पटाखे तथा यह सूट खरीदा। वापस आकर मैंने फिर ढुलाई शुरु कर दी। रात को 12 बजे ढुलाई पूरी हो पायी। सेठ जी ने मेरे काम से खुश होकर मुझे नौकरी पर रख लिया है। उन्होंने मुझे 100 रुपये भी दिए।'' यह कहकर चन्दू ने अपनी जेब से 100 रुपये का नोट निकाला और माँ को देते हुए बोला, "यदि मैं यह मजदूरी नहीं करता माँ, तो खाली हाथ घर आने पर कितना दुःख होता ? त्यौहार के दिन बेचारे नन्दू को पटाखे कैसे लाकर देता ?" कहते कहते चन्दू रुआँसा हो गया

चन्दू की सारी दास्तान सुनकर माँ की आँखों से झर झर आँसू बह निकले

उन्हे अपने आप पर ग्लानि हो रही थी अपने हीरे जैसे बेटे को उन्होने गुस्से मे न जाने क्या-क्या कह डाला था। उन्होने मन ही मन अपने लाडले को अनगिनत दुआएं दे डालीं। मुँह से कुछ कहना चाहा, लेकिन बोल नहीं फूटे। बस होंठ हिलकर रह गए। उन्होंने चन्दू को अपने गले से लगाकर उसका मस्तक चूम लिया।

फिर चन्दू ने नन्दू को जगाकर नया सूट पहनाया। सबने मिठाई खाई। दोनों भाइयों ने मिलकर खूब सारे पटाखे चलाए। कुछ समय के लिए खोई दिवाली की खुशियाँ फिर लौट आयीं थी।

—डा० देशबन्धु "शाहजहाँपुरी,
256, खलील शर्की, शाहजहाँपुर
242001 (उ०प्र०)

चोर के कटे पैर

कभी-कहीं एक गाँव था, अब नहीं है -- सीना जोरा। उस गाँव में एक चोर था, जिसका असली नाम तो था काज़ल, लेकिन लोग उसकी चोरी और ऊपर से सीना ज़ोरी की आदत के कारण, उसे सीना ज़ोर कहने लगे थे। सीना ज़ोर ने ज्तिनी भी चोरियाँ की थीं कभी किसी भी चोरी में रंगे हाथों नहीं पकड़ा गया। लोग उस पर शक तो करते थे, और जब उससे पूछ-ताछ भी करते थे, तो वह उनको आडे हाथों लेता था। लोग खीझ कर रह जाते थे।

'चोरी की चोरी ऊपर से सीना-ज़ोरी'' की कहावत उस गाँव में उसी सीनाजोर के नाम पर चल पड़ी थी। उसकी चोरी में शिफत या कमाल तो यही था कि अगर वह किसी की आँखों से काजल भी चुरा ले, तो किसी को पता न चले।

कहने का मतलब यह है कि उस गाँव के अलावा आस-पास के गाँव-गिराँव के तमाम लोग उस कालिया भुजंग सीना-जोर काजल के नाम से बेहद चिढ़े हुऐ थे। लाख निगरानी करने पर भी सीना ज़ोर जिस माल को ताड़ लेता था, उसे लोगो की आँखो से काजल की तरह साफ कर ले जाता था। उनकी सारी मुस्तैदी धरी रह जाती थी। हर बार साँप तो निकल जाता था, लोग बाद में लकीर पीटते रह जाते थे।

ऐसी बात नहीं कि कभी चोरी करने के बाद भागते हुए पकड़ा न गया हो, लेकिन चोरी के पक्के सबूत न मिलने के कारण वह हर बार बाइज्जत रिहा कर दिया जाता था। सीना ज़ोर फिर पहले की तरह गाँव भर में मूँछों पर ताव देता फिरता था, और उसे पकडने और पकडानेवालों की मूँछें नीची हो जाती थीं।

झूठ के आगे जब सच्चाई को बार-बार मुँह की खानी पड़ती है, तो उसके जो बुरे नतीजे होते हैं, वही उस गाँववालों के अलावा दूसरे तमाम दूर-दराज़ के गाँव वालों को भी भुगतने पड़ रहे थे। दिन-दहाड़े लूट और चोरियाँ इसलिए बढ़ती आ रही थीं कि सीना-ज़ोर के हाथों की सफाई के मुरीद तमाम कामचोर काहिल और जाहिल रंगरूट उसके साथ मिलकर चोरी-चपाटी में हिस्सा बंटाने लगे थे। कुछ नहीं तो सीना जोर क: माल में दसवें हिस्स, का हकदार हो जाता था। बाकी नीचे से ऊपर थाना पुलिस और कचहरी तक सीन जोर खुद ही निबट लेता था। उसके आगे किसी की दाल नहीं गलती थी।

कहत हैं जब हमारा देश आजाद हुआ तो महात्मा गाधी यानी बापू की सत्य अहिसा का बोलबाला था। आजादी के बाद हमारे नेताओ से लेकर थानो और अदालतों में सच्चाई की धाक जम गई थी। लोगों को अपना आजाद देश इतना प्यारा था कि नेता और थानेदार सभी 'जयहिन्द'' बोलने लगे, अदालतों मे ''सत्यमेव जयते'' के नीचे बैठनेवाले आला अफसर और कर्मचारी तक बेहद-सच्चे और ईमानदार हो गये।

उस गाँव के थाने में जो थानेदार आया, वह भी बेहद सच्चाई और ईमानदारी का पुतला था। उसने एक-एक चोर-डकैत बदमाश की गुलाम आदतों को ठिकाने लगाने का बीड़ा उठा लिया। कहते हैं, उसने सीना-ज़ोर का सीना भी अपने बेत के ''हूलों'' से पिचका दिया।

सीना-ज़ोर की तरह हमारे आजाद देश के लोगों की आदतें तो गुलाम थी ही। उन्होने नये-नये आजाद देश के आदर्शों की भूख में सत्य. अहिंसा और सदाचार के फरिश्ते ''बापू जी'' की कसम तो खाई, लेकिन उनकी गुलाम भूख इतनी तेज थी कि उन्होंने न सिर्फ प्यारे बापू को ही मौत के घाट उतार दिया, बल्कि सत्य, अहिंसा और सदाचार को भी सदा-सदा के लिए दफ़ना दिया।

फिर भी हर दुराचारी का दर्दनाक अन्त या खात्मा तो भगवान ने लिख ही दिया है। सीना-ज़ोर का खात्मा भी बहुत दर्दनाक था। थानेदार की डॉट-डपट और सीख को मानकर वह लोहारी के काम में लग गया। अब वह लोहा पीटता था। सुनते हैं, गाँववालों के हँसिया-गड़सि,, खुर्पी और हल पीटने के अलावा वह चोरी-छिपे हथियार भी बनाता था। वे हथियार चोर-डकैत, गुडे,बदमाशों को देकर सीना-जोर अब भी पहले की तरह सीना-ज़ोर बना हुआ था।

क्या जानता था बेचारा, जो गडॉसा उसने धर्मू किसान के लिए बनाया था उसी से उसके दोनों पैर काटे जायेंगे।

एक दिन विलसिया ने मौका पाकर उसके कानों में धीरे से फुसफुसा दिया, ''ऐ सीना-ज़ोर.....धर्मू के घर महियाँ बड़ो माल है।''

''कितनों' ''कहकर सीना-जोर का सीना फूल गया, 'तुम आँखिन देखै हो चचिया?.''

''चचिया आँखिन ने देखैं तो....बतावैं कइसे !'' विलसिया ने भी आँखें नचाकर सीना-जोर के सीने में सनसनाता हुआ तीर मारा,'' पहिले हमारी हिस्सौ कबूलो ..।''

''अरे चचिया ! सब तुम्हारौ..माल तो बतावौ !'' सीना-जोर ने अपना सिर खुजलाते हुए विलसिया के दोनों हाथ पकडकर भींज दिए-''सब तुम्हारौ..बाकी हमारौ।''

विलसिया जानती थी, सीना-ज़ोर ने कभी उसकी बताई सेंध में साँप नहीं जाने

देया सीना जोर ने बराबर मालमत्ता देकर उसे भी अब तक खुश रखा था

विलसिया ने उसकी आखो मे धीरे से कुरेद दिया, घर के बाहेरे....भीतर. . आजुइ लेव।''

"आजुइ ...''सीना-ज़ोर ने बात पक्की कर ली।

विलसिया सीना-ज़ोर गाँव की पुरानी-पुरखिन थी। गाँव के तमाम जवान-जहान लड़के..लड़कियाँ सब उसी के पैदा किए हुए थे। आज छठा दिन था। जच्चा-बच्चा की तेल मालिश करने के लिए किसी भी घर में विलसिया चाची की पहुँच हफ्तों तक पक्की हो जाती थी। ज्यादातर घरों में बच्चे के साथ जच्चा भी पड़ी रहती थी। अक्सर धरा-उठाई के काम विलसिया को ही देखने और करने का मौका मिलता था। इतने अर्से में वह किसी के घर में कौन सा माल-असवाब कहाँ रखा है, देख-भाल लेती थी।

आज विलसिया कुछ ज्यादा ही बातें कर रही थी, 'ऐ, धर्मू की बहू। थोड़ी तेल अउर लगिहे, संवर महियौ जच्चा की जितनी तेल मालिश करि देई, उसनै रंग और तन्दरूस्ती खिल जाई है।''

"का बात है, चचिया ! आज बहुतै खुश हौ, औ मारे खुशी के सब दिन की मालिश एक दिन महियौ पूरी करै पर उतारू हौ का ?'' धर्मू की घरवाली ने विलसिया के मन को टटोलने की कोशिश की ।

विलसिया कटोरी में तेल निकालने के लिए भीतर वाली कोठरी में चलके गई और वहीं से बातें उछालनें लगी,'' अरी, बहू ! हम तो भगवान से मनाइत है कि तुम्हारी "बीसा'' होय। तुम बीस-बीस लरिकन की महतारी बनौ और चचियौ का धोती-कपड़ा नेग-नकदी मिलत रहे बस। दूधन नहाव औ पूतन फलौ।''

"अरे, चचिया ! तुम्हू कइस आशीर्वाद दइ रही हो ? लरिकन की कसबजार लगाव से का फायदा ! बस राम-लछिमन की एक जोड़ी बहुत है, इयो आशिर्वाद करौ, तौ ठीक है।''

"ठीक का है, बहू !'' विलसिया ने भीतर की कोठरी की दीवाल पर एक जगह कोयले से कील काँटे जैसी लकीरें खींच दी, और कटोरी में तेल लेकर बहू की तेल मालिश करती हुई बोली, "हमरेहे देखौ, दर्जनभर लरिका-बिटिया भए, तकदीर म कुल तीनै बदे रहै..बाकी सब भगवान उठा लिहिन..।''

"हाँ, बिटिया !'' विलसिया ने गहरी साँस खींची,'' सब लिलार महियौ लिखो-पढ़े की बातै हैं। उई देखो कुलकुल..अरे वहे मुनक्की चाचा....पूरे बीस लरिकन के बाद चचिया के साथ दूसरि शादी कीन्हिति रहे....तब हमहू ई गाँव की नई-नई बहुरिया रहन। हमरी सास बतुउती रहै कि बीसी लरिका पर्दा में बइठारे में, औ पर्दा की ओट महियौ उनकी महतारी फिर मुनक्की चचुवा के साथ भवरी घूमिन रहै।''

अब तो घोर कलिजुग महियाँ खाय-पिये के लाले है चचिया एक से दुई से तीन नहीं तो बस। हमारी दिदिया तो नवीं बिटिया महियाँ स्वर्ग सिधार गई। तौन चचिया हमें दुई-तीन लरिकन से ज्यादा लालच महियाँ नरक नहीं जाय का है।''

धीरे-धीरे उन दोनों की बातें खत्म हुईं और विलसिया भी अपना काम पूरा करके घर चली गई। उसकी बार-बार की धराउठाई से धर्मू की घरवाली के मन में जैसे कोई चोर ही बैठ गया था। तेल मालिश के बाद उसकी देह भी फूल जैसी हलकी हो गई थी। बाहरी दरवाजे की साँकल बन्द करके वह भीतरवाली कोठरी मे चली गई। सब सामान जैसे का तैसा ठीकठाक था। कहीं कोई कमी या हेरफेर नहीं था। उसके बाद वह चैन से अपनी दुधमुँही बच्ची के पास दोपहर तक सोती रही। खबर थी कि उसकी बड़ी ननद दोपहर के बाद आ ही जायेंगी, लेकिन जब वह नहीं आई, तो धर्मू को ही खेतों से लौटकर खाना बनाना पडा।

तभी धर्मू की निगाह कोठरी के भीतर कोयले के कील-काटेवाले निशानों पर पड़ी और वह अपने दोनों लड़कों धुन्नी और मुन्नी की इस काली करतूत पर झुझलाता रहा, "हजार बार इन दोउन को समझाइ चुके....कोइला से कील-काटा वाली लकीरें न खींचो....कर्जा बढ़त है....ई मान्त नहीं....।''

धुन्नी और मुन्नी स्कूल से लौटे, तो दोनों पर झड़ पड़ी। कोई भी यह मानने के लिए तैयार न था कि कोयले की लकीरें उन्होंने अपने हाथ से खींची हैं। आखिर धर्मू की घर वाली ने भी अपना दिमाग दौड़ाया, लेकिन किसी खास नतीजे पर वह न पहुँच सकी। वह भी जानती थी कि दोनों जब तब चोरी-छिपे कोयले की लकीरें खींचने का कील-काँटेवाला खेल ही रहते हैं। शायद मार के डर से कबूल नहीं रहे थे।

शायद धर्मू ने अपनी बहन का नेग पिछले बच्चे में पूरा नहीं दिया था, इसीलिए जब शाम होने तक वह नहीं आई, तो मन मानकर दोपहर का बासी खाना-दोनों बच्चों को खिलाने के बाद धर्मू ने रही-सही एक दो रोटियाँ खाकर जैसे-तैसे पेट की आग ठंडी कर ली, और रात के पहले ही पहर में रजाई ओढ़कर बाल-बच्चों सहित नींद में खर्राटे भरने लगा।

घरवाली जानती थी कि धर्मू गहरी नींद में'' घोड़े बेचकर'' रात भर खर्राटे भरता रहा, जैसे खेतों में हल की जगह ट्रैक्टर चला रहा हो। रात के दूसरे या तीसरे पहर में अचानक धर्मू के खर्राटों से उसकी नींद खुल गई। उसे लगा जैसे पिछली कोठरी में कुछ भरभराकर गिर रहा हो। उसने तेल की कुप्पी जलाई, और कोठरी में आहट लेने के लिए चुपचाप पहुँची ही थी कि यह देखकर उसके हाथ-पैर ढील पड़ गए--किसी ने बाहर से सेंध लगाकर अपने दोनों पैर उसी सेंध से भीतर डाल रखे थे। कोठरी में उसके जाने से कुछ आहट हुई थी, इसलिए पैरों में कोई हरकत नहीं हो रही थी।

धर्मू की घरवाली ने पहले सोचा कि धर्मू को जगा दे, लेकिन अचानक उसकी निगाह में रसोई की दीवार पर रखा हुआ धारदार गड़ाँसा दिख गया। थोड़ी भी देर करने से कुछ का कुछ हो जाता। वह दबे पैरों रसोई तक आई। देखते ही देखते गड़ाँसा उसके हाथ में था।

पैर भीतर की तरफ सरक रहे थे। उसने आव देखा न ताव, दोनों हाथ से गड़ाँसा का भरपूर वार उन दोनों पैरों पर कर दिया। कटे हुऐ दोनों पैर छटपटाकर ठंडे पड़ गए। उसी बीच बाहर भी कुछ आहट-कराहट और हड़बड़ाहट सी हुई। मौका पाकर वह धर्मू को जगाने पहुँच गई। बाद में जब धर्मू ने जागकर अपने पड़ोसी नन्हे और बन्ने के साथ घर के पिछवाड़े लगाई गई सेंध देखी, तो वहाँ उन लोगों के अलावा कोई चोर नहीं दिखा।

बाद में धर्मू अपने घर के भीतर जागता रहा। सुबह जब पूरे गाँव में उस सेंध की सुगबुग हुई, तो सीना ज़ोर नहीं दिखा। तब तक धर्मू की घरवानी की समझ में सब कुछ आ गया था। दूसरे दिन विलसिया तेल लगाने गई, तो धर्मू की घरवाली ने अपने नहान की नेग न्यौछावर के साथ ही एक पीतल की परात में खाना-पकवान का परोसा भी लाल-रंगीन कपड़े से ढक कर कोठरी के भीतर से लाकर उसे थमा दिया। परोसा पाकर वह जितनी खुश थी, घर जाकर उसे उतना ही रोना पड़ा।

सीना-ज़ोर के कटे हुए पैर उस परात में लहू-लुहान पड़े थे।

—डा० "निष्काम"

349/4, शास्त्रीनगर, कानपुर

मोनू की समझदारी

मोनू के पापा दफ्तर से लौटे तो उन्होंने आते ही मोनू को आवाज दी, परन्तु मोनू ने नहीं सुनी। मोनू की माँ ने आकर बताया कि वह तो ऊपर छत पर पतंग उडा रहा है। मोनू के पापा ने कहा, "मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया है कि इसे दिन भर पतंग उड़ाने से रोका करो। सुबह शाम बस छत पर पतंग उड़ाता रहता है यह। उसे जरा नीचे बुलाओ।''

मोनू की माँ पापा का डर दिखाकर उसे नीचे ले आई। मोनू के पापा उससे बोले, 'देखो मोनू, अब तो तुम दिन भर पतंग उड़ाने लगे। थोड़ा पढाई पर ध्यान दो। अब तो अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं में केवल सात दिन ही बाकी रह गये हैं।''

'लेकिन पापा में दिन भर पतंग कहाँ उड़ाता हूँ। मैं तो बस अभी ऊपर गया था।'' मोनू ने कहा।

'देखो, सुबह सकूल जाने से पहने पतंग उड़ाते मिलते हो तो शाम को स्कूल से लौटते ही ऊपर छत पर चले जाते हो। तुम्हें तो पतंग उड़ाने का शौक इतना भयकर रूप रोग लग गया है कि तुमि पढ़ाई को पूरा समय नहीं दे पा रहे हो।'' मोनू के पापा ने कहा।

"लेकिन पापा मैं सारा होमवर्क करके ले जाता हूँ। कभी मेरी कोई शिकायत मिली आपको। मैं पढ़ा तब ही तो गत वर्ष प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ था।'' मोनू बोला।

वे कहने लगे, 'देखो मैं तुम्हें फिर समझाता हूँ कि तुम खेलो, परन्तु इतना नहीं कि तुम अपने पहले पढाई के लक्ष्य से ही भटक जाओ।''

इस बार मोनू की मम्मी बीच में ही बोल पड़ी, "आप तो सारे दिन बस इसके पीछे पड़े रहते हो।'' ऑफिस से आये नहीं कि मोनू कहाँ है। सारे बच्चे खेलते कूदते हैं। क्या यह भी थोड़ी देर नहीं खेले ?''

'देखो तुम इतना लाड-प्यार मत दो कि यह बिगड़ने लगे। जरा सोचो, "सात दिन बाद अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ शुरु हो रही हैं। इस परीक्षा में अंक कम आये तो क्या पूरे परीक्षा-परिणाम पर असर नहीं पड़ेगा। उस दिन वह स्वयं और खुद तुम पछताओगी।'' उन्होंने कहा।

'आप चिंता मत करिये यह पढाई मे इतना होशियार है कि नम्बर कम आने

का तो प्रश्न ही नहीं उठता।'' मीनू की माँ बोली।

"तो ठीक है, जो चाहो वह करो। मैं तो आज के बाद उससे कुछ कहने से रहा। मैं खेलना बुरा नहीं बताता परन्तु दिन भर जो बच्चा खेलता ही रहेगा, भला वह पढ़ाई को क्या समय दे पायेगा। अब तुम जानो और यह जाने। मैं तो चुप रहूँगा।'' वे बोले।

मोनू की माँ ने मोनू से कहा, "जाओ बेटा खेलो।''

मोनू भाग कर छत पर चला गया और पतंग उड़ाने लगा।

अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ शुरू हो गई। परन्तु मोनू की तो पतंगबाजी का शौक, लत के रूप में लग गया था। मौका मिलते ही वह छत पर जा धमकता। पढ़ाई पर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाता। परीक्षा के बाद अंक तालिका दी गई तो वह सुन्न रह गया। उसकी आँख खुली रह गईं। उसके कक्षा में सबसे कम अंक आये थे। उत्तीर्ण तो वह सभी विषयों में हो गया था, परन्तु अंक सबसे कम थे। उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह कक्षा के दूसरे छात्रों से आँख मिला सके। कुछ छात्र ऐसे भी थे--जो उसके कम नम्बर आने से उससे मजाक कर रहे थे। अब उसे याद आया कि पापा उसे पतंग उड़ाने से क्यों रोक रहे थे ? पतंग के खेल में इतना डूब गया कि वह पढ़ाई से वंचित रह गया।

मोनू स्कूल से घर की ओर चला तो जैसे उसके पाँव बेदम थे। घर आकर वह चुपचाप पलंग पर लेट गया। उसकी माँ को मीनू के आने का पता चला तो वह उसके पास आकर बोली, "क्यों, बेटा लेट क्यों गये, जाओ थोड़ी देर खेल आओ।''

मोनू को लगा कि माँ भी जैसे उसका मजाक उड़ा रही है। वह कुछ नहीं बोला, "माँ ने फिर कहा, "क्यों उदास से पड़े हो। तबीयत तो ठीक है न ? सच बताओ क्या बात है ?''

मोनू माँ की बात सुनकर तो रो पड़ा। उसने रोते हुऐ बस्ते में से अपनी अंक तालिका निकाल कर थमा दी। मीनू की माँ अंक तालिका देखते ही सकते में वह बोली, 'यह क्या हुआ मोनू। तुम्हारे इतने कम नम्बर।''

'हाँ मम्मी।' यह कहकर वह लिपट कर जोरों से सुबकने लगा। माँ उसे दिलासा देने लगी। तभी मोनू के पापा भी आ गये। वे मोनू को इतने जोरों से रोता देखकर सहम गये। उन्होंने उसे कभी इतने जोरों से रोता नहीं देखा था। वे वहाँ आकर बोले, "क्यों क्या हुआ मोनू की मम्मी ?''

डरते-डरते आँख झुकाये ही मोनू की मम्मी ने उन्हें अंक तालिका पकड़ा दी। मोनू के इतने कम नंबर देखकर उन्हें एक बार तो झटका लगा। परन्तु उन्होंने इस बात को प्रकट नहीं किया तथा बहुत ही सहज रूप में हँसते हुए बोले, "अ बस इसी बात पर रोने लगे। क्या हुआ अब पढ़ोगे तो यह कमी तो पूरी हो जायेगी।''

इस बार मोनू ने मम्मी को छोड दिया और वह पापा की टागो से लिपट कर रोते हुए बोला, 'नहीं पापा, मैने आपका 'कहना नहीं माना'।

'नहीं, रोओ मत मोनू! तुम तो समझदार हो, कितनी समझदारी की बातें करते हो। चलो चुप हो जाओ। तुम इस बात को महसूस कर रहे हो, बस यही तुम्हारा सबसे बड़ा प्रायश्चित है।'' उन्होंने कहा।

'लेकिन पापा आपका कहा मानता तो इतने कम नंबर नहीं आते।'

'कोई बात नहीं बेटा। सुबह का भूला शाम को घर लौट आता है तो वह भूला नहीं माना जाता। तुम्हारी आँखें समय पर ही खुल गई हैं। अभी वार्षिक परीक्षाएँ होंगी, तुम उसमें ज्यादा अंक ले आना। चलो उठो हम साथ बेठ कर नाश्ता करेंगे।' मोनू के पापा उसे खाने की मेज पर ले आये। मोनू की मम्मी ने चाय के साथ पकौड़ियाँ तल दीं। सब साथ-साथ खाने लगे। परन्तु मोनू ने तो मन में संकल्प ले लिया था कि वह अब पतंग नहीं उड़ायेगा तथा जमकर पढ़ाई करेगा। खेलना चाहिए परन्तु जितना जरूरी हो उतना ही।

वार्षिक परीक्षाएँ हुईं और परीक्षा परिणाम आया तो उसके मम्मी पापा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मोनू पहले की तरह प्रथम श्रेणी से ही उत्तीर्ण हो गया था।

मोनू के पापा बाजार से पतंग डोर ले आये और बोले, "जाओ मोनू, अब उड़ाओ जमकर पतंग। मैं खेलने से कब मना करता हूँ।'' मोनू की मम्मी ने उसे गोद में उठाकर चूम लिया। घर खुशीयों से भर गया।

—पूरन शर्मा
124161-62,
अग्रवाल फार्म,
जयपुर - 20

ज्योतिषि भालू

एक जंगल में एक भालू रहता था। वह नम्बर एक का आलसी और मक्कार था। कुछ भी करना वह अपनी शान के खिलाफ समझता था। लेकिन जब भूखों मरने की नौबत आयी तो उसने माथे पर मिट्टी लगायी और बाबा बन गया। बाल तो उसके पहले ही बड़े थे। जहाँ पहुँचता, डमरू बजाकर कहता, "बच्चा ! सीधा हिमालय से चला आ रहा हूँ, बहुत समय तक तपस्या की है। हर आदमी का भाग्य बता सकता हूँ। और तो और भाग्य बदल भी सकता हूँ।''

लोग उसकी बातों में आ जाते और वह सबका हाथ देखता। झूठ-सच बताकर लोगों को ठगकर पेट पालने लगा। अब तो उसकी चैन की बंसी बजती, जबकि उसका पड़ोसी बन्दर रात-दिन मेहनत करके भी मुश्किल से पेट पाल रहा था। उसकी बंदरिया कपड़े-लत्तों को तरसाती और उसके बच्चे दूध के बिना सूखकर ढाँचा हो रहे थे। एक दिन बंदरिया ने गरीबी से ऊबकर बन्दर से कहा, 'देखो भालू भाई बिना कुछ किये–धरे कितनी मौज से रहते हैं।''

बन्दर ने कहा, "मुन्ना की माँ ! यह ठगी अधिक दिन नहीं चलेगी। देख लेना, भालू भाई ऐसा धोख खायेंगे कि देखनेवाले याद करेंगे।''

यही हुआ। उन दिनों जंगल का राजा शेर बीमार था। भालू भाई झाड़-फूँक के लिए बुलाए गये। वे शेर का हाथ देखकर गमगीन होकर बोले, "महाराज, आपके दिन समाप्त हो चुके हैं।''

मौत के डर से कांपते हुए शेर हाथ जोड़कर भालू जी से बोला, 'महात्मा जी! आप ही कुछ कीजिए। मैं आपकी शरण में हूँ। जंगल का आधा राज्य आपके चरणों में अर्पित करूँगा।''

भालू ने सिर हिलाकर कहा, 'मेरे लिए कोई भी बात कठिन नहीं है। तुम धीरज रखो। मैं अपनी तपस्या के बल से तुम्हें नयी जिन्दगी दूँगा।''

बीमार शेर की चारपाई के पास ही भालू ने अंड-बंड बड़बड़ा कर मंत्र पढ़े और शेर के ऊपर पानी के छींटे मार कर चलते-चलते कहा, "पाँच दिन बाद ठीक हो जाओगे। मगर अपनी बात याद रखना।''

भालू ने सोचा बदहजमी का शिकार शेर पाँच दिन में ठीक हो जायेगा और अगर वह मर गया तो उसने दूसरी चाल सोच रखी थी शेर के पास जाते समय

रास्ते मे उसे चीता मिल गया था। उसने चीते से कहा, 'जजमान ! शेर मरने ही वाला है। अब तो जंगल के राजा आप ही होंगे। मेरा ज्योतिष यही कहता है।''

चीते को अपने राजा होने की कल्पना भी नहीं थी। वह आनन्द से चीख उठा, "क्या सच ? ऐसा हो जाये तो आधा राज्य आपको दे दूँगा।''

भालू भाई के दोनों हाथों में लड्डू थे। अगर शेर जिन्दा रहा, तो आधा राज्य मिलेगा और मर गया तो चीता ही सबसे ताकतवर जानवर होने के कारण राजा होगा। वह भी भालू को आधा राज्य तो देगा ही। शेर के बच जाने पर चीता उसके डर से भालू की बात का भेद भी नहीं खोलेगा।

पाँच दिन बाद शेर का फूला पेट सही हो गया। अपने वचन के मुताबिक शेर ने आधा राज्य भालू को दे दिया। अक तो भालू के ठाठ हो गये। किन्तु चीते को बडा दुःख हुआ। उसे लगा कि वह राजा होते-होते रह गया। उसे भालू की दुष्टता पर बड़ा क्रोध आया। उसने भी एक चाल चली। वह शेर के पैरों पर माथा रखकर रोने लगा। शेर ने पूछा, "क्यों रोते हो ?''

चीता बोला, "महाराज ! रोता इसलिए हूँ कि आप पर विपत्ति पड़ी और आधा राज्य चला गया। अब भालू के मन में लोभ आ गया है। वह पूरा राज्य पाने की कोशिश में है। कह रहा था कि वह कल से एक मंत्र जपेगा, जिससे आठ दिन के अन्दर शेर मर जायेगा और वह पूरे जंगल का राजा हो जायेगा।''

चीते ने बात इस तरह कही कि शेर को उस पर विश्वास हो गया। उसने लालची भालू को मंत्र जाप से पहले ही खत्म कर देने का फैसला किया।

दूसरे दिन सबेरे ही भालू का पेट फाड़कर शेर ने उसकी लाश कुत्तों से नुचवा दी।

भालू की यह दुर्गति देखकर बँदरिया बंदर से बोली, "तुम ठीक ही कहते थे। मेहनत की रूखी रोटी हराम की चुपडी से बेहतर होती है।''

—कु० मधु गुप्ता
द्वारा, श्रीदरगाहीलाल सियाराम
कहौना, हरदोई, (उत्तर प्रदेश)

परी बिटिया धरती पर आई

मैं परी-देश की "बिटिया रानी" हूँ। एक दिन मैं धरती पर आने को मचल गई, क्योंकि माँ ने मुझे धरती के बारे में कई अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाई थीं। मेरा मन हुआ कि एक बार मैं धरती पर जाऊँ और धरती के बच्चों के साथ खेलूं। मां ने मुझे बहुत मना किया, बोली, धरती पर बच्चे पहले जैसे नहीं रहे, बिटिया रानी। तुम्हें उनसे मिलकर दुःख ही होगा। पर मैं नहीं मानी। आखिर माँ ने इजाजत दे दी और चन्द्रकिरन के रथ पर बैठकर धरती पर उत्तर आई। माँ की आज्ञानुसार मैं हर दिन की बात अपनी डायरी में लिखती गई।

पहला दिन

आज धरती पर जहाँ मैं उतरी, वह एक बगीचा था। रंग-बिरंगे फूलों से लदा-फदा, बेलों से ढका हुआ, खूब घनी छांव वाला। भंवरों की गुनगुन, चिड़ियों की चीं-चीं सुन और रंग-बिरंगी तितलियों के झुण्ड देख मैं फूली नहीं समाई। बगीचे के एक ओर से जो हवा आ रही थी, उसमें इतनी खुशबू भरी थी कि मैं तुरन्त उधर ही चली गई। देखा, गुलाब की क्यारियाँ थीं। लाल, पीले, सफेद, गुलाबी रंग के गुलाब थे। मैं सूरज निकलने तक गुलाब की झाड़ियों की ओट में बैठी रही। सोचती रही, जैसे ही कोई घूमता हुआ बच्चा इधर आएगा तो मैं उसे चौंका दूंगी। उसे अपने पास बैठाकर बातें करूंगी। अपने देश के हाल-चाल कहूंगी। यहाँ के बारे में नयी-नयी बातें पूछूंगी, पर तब मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि पूरे बगीचे में सूरज निकलने तक एक भी बच्चा घूमने नहीं आया। हार कर मैं सारा दिन चंचल तितलियों से खेलती रही और शाम होते ही सो गई।

दूसरा दिन

आज प्रात. ही मैं बगीचे के पासवाले एक मकान में चली गई। मैंने खिड़की की राह से देखा कि एक बहुत ही प्यारा सा बच्चा सो रहा है। मैं उसके उठने की प्रतीक्षा करने लगी।

थोड़ी ही देर बाद मैंने सुना, उसकी माँ आवाज दे रही थी। बच्चे का नाम राकेश था। राकेश ने माँ की आवाज सुन कर आँखें खोलीं और करवट बदलकर फिर सो गया और आठ बजे तक नहीं उठा। आखिर राकेश की माँ गुस्से से बड़बड़ाती आयी और राकेश को जगाते हुए बोली, "स्कूल नहीं जाना है ? घंटे भर से आवाज दे रही हूँ। पढ़ाई के नाम मौत आने लगी है तुझे आजकल।

'आज तो इतवार है माँ' ।

तेरे घर में होगा इतवार, इतवार तो कल था।'

'ओह ! मैं तो समझा था आज है इतवार ! अब ? मैंने तो मासटरजी का दिया हुआ काम नहीं किया माँ। मैं स्कूल जाऊँगा, तो मासटरजी मारेंगे।'

'तू क्यों करने लगा काम। तुझे दिन भर खेलने और सोने से फुरसत मिले तब न ! आलसी कहीं का।'

न जाने क्यों मुझे उस सुन्दर बच्चे से एकदम नफरत हो गई और मै वहाँ से चली आई। मैंने सोचा, आलसी और कामचोर बच्चों के साथ क्या खेलूँ। दिन भर मन उदास रहा।

शाम को मैंने घर में चार बच्चों को घुसते देखा। बड़े बने ठने थे। कन्धों पर बस्ते लटकाए, दो लड़कियाँ और दो लड़के थे। मुझे ये बच्चे अच्छे लगे। मैंने दूसरे दिन इसी घर में जाने का निश्चय किया और सो गई।

तीसरा दिन

आज गई थी वहां। चारों अलग-अलग खेल रहे थे। सबसे बड़ी लड़की का नाम मीना, छोटी का बीना था। बड़े लड़के का नाम बिल्लू और छोटे का नाम पप्पी था। बच्चों की दादी ने बच्चों को एक प्लेट में कुछ खाने को लाकर दिया। लाकर रखते ही मीना और नीना टूट पड़ी और जल्दी-जल्दी गपागप उठाकर खा गई। बेचारे बिल्लू के कुल दो ही टुकड़े हाथ आए और पप्पी के एक। पप्पी रो पड़ा। मुझे पप्पी पर बहुत दया आई और मीन-नीना पर गुस्सा। अपने छोटे भाई-बहनो के साथ ऐसा बर्ताव करनेवाली लड़कियों के साथ मैं तो कभी न खेलूं। (मैं तो अपने भाई किट्टू को बहुत प्यार करती हूँ।) वे सब पप्पी को रोता छोड़कर भाग गये। मैंनें पप्पी को खाने के लिए एक फल दिया। एक क्षण पप्पी मेरी ओर देख, रोता हुआ बोला, 'तुम कौन हो ?'

'मैं परी हूँ।'

'मैं तुम्हारे हाथ की चीज नहीं खाऊँगा'।

'क्यों भला ?'

'माँ मारती है। कहती है, किसी दूसरे की चीज नहीं खानी चाहिए।' और पप्पी वहाँ से चला गया। मुझे बहुत अच्छा लगा पप्पी। इच्छा हुई कि उसे उठाकर बगीचे में ले जाऊँ और उसके साथ खूब खेलूं।

चौथा दिन

आज दिन भर मुझे माँ की याद आती रही। तीन दिन से मैं बिल्कुल नहीं खेली हूँ। मेरे साथ खेलनेवाली परी सहेलियां तोषी और पिन्टू भी मुझे बहुत याद आई। इसीलिए आज मैं कहीं नहीं गई। बगीचे में ही गुलाब की झाड़ियों में रही। दिन भर भवरों की गुन-गुन और चिड़ियों के मीठे गीतों से जी बहलाती रही।

पांचवा दिन

बहुत गरीब घर था, जहाँ आज मैं गई। उस घर में बूढ़ी दादी के साथ तीन

ब-चे रहते थे बच्चो की माँ शहर मे काम पर चली जाती है बच्चे दादी के पास खेलते रहते हैं। बड़ा बच्चा जितना शैतान है, सबसे छोटा चीना उतना ही सीधा और भोला है। बीचवाला कुन्ना बहुत कम बोलता है। मुझे कुन्ना और चीना बहुत पसन्द आये। बंटी चीना को बात-बात में डांटता है, मारता है। चीना रोकर यही कहता है, मैं भी तुमाले जितना बला हो जाऊँगा, तब मालना जला......हाँ। ......जब कभी बंटी चीना के हाथ से कुछ छीन कर खा जाता है, तो चीना उससे रोता हुआ कहता है, "मैं अपनी पत्नी से कह दूँगा, हाँ, तुम्हें खूब मालेगी, लाक्षस बन कल खा जाएगी, हाँ. ....'

धरती पर मुझे चीना ही ऐसा बच्चा मिला जो परी की बात करता है। मैं सारी रात चांदनी रात में सोए नन्हें चीना के पास बैठी रही। उसे मीठे-मीठे सपने देती रही। एकाएक रात को बंटी चीख पड़ा। वह डर गया था। उसकी चीख सुन चीना और कुन्ना भी जाग गए। चीना जल्दी से उठकर बंटी के पास गया और उसके गालों पर हाथ फेरते हुए बड़े प्यार से बोला, "तुम डल गए, भैया ? तुमने कोई डलावना छपना देखा था. .? मैंने तो पत्नी ने डला दिया तुम्हें। बहुत खलाब है यह पली। है न बंटी भैया ?'

बंटी अपना डर भूल गया। उसे चीना की बातें सुन उस पर प्यार आ गया। चीना को दुलारते हुए बोला, 'तु मेरे पास सो जा, चीना फिर मुझे डर नहीं लगेगा।''

छप्पर पर से कूदकर बिल्ली बंटी पर होकर गुजर गई थी, उसी से डर गया था वह। मैं कल चीना से अवश्य दोस्ती कर लूंगी। मुझे चीना बहुत अच्छा लगा।

छठा दिन

सुबह जल्दी उठी और चीना के घर गई। वह अपनी माँ के साथ आज शहर चला गया था। मेरा कहीं और जाने को जी नहीं हुआ। बगीचे में ही लौट आई। एक उड़ती हुई तितली को देख रही थी कि तभी मेरी नजर बगीचे में आ रहे एक बच्चे पर पड़ी। बड़ा डरता-डरता, दुबकता हुआ आ रहा था। कन्धे पर थैला लटकाए था। मैं समझ गई कि यह जरूर स्कूल न जाकर यहाँ आ छिपा है। वह एक मोटे पेड़ की ओट में बैठ गया। मेरी इच्छा तो हुई कि उससे ही बातें करूं, पूछूं कि यह स्कूल क्यों नहीं गया ? फिर सोचा कि ऐसे पढ़ाई-चोर बच्चों से बात नहीं करूंगी। (हमारे परी देश में तो बच्चे पढ़ने से जी नहीं चुराते।)

सातवां दिन

एक चोरी कल देखी थी, एक आज। दोनों ही चोरियां पढ़ाई की थीं। मुझे बड़ा दुःख हुआ, इच्छा हुई कि ऐसे पढ़ाई-चोर बच्चों के देश में से मैं जल्दी ही भाग जाऊँ।

आज एक बच्चे के पीछे-पीछे मैं उसके स्कूल चली गई। रोशनदान से देखती रही। मास्टरजी इमला लिखा रहे थे। वही बच्चा अपने पासवाले लड़के की कापी में बार-बार चोरी से नजर डालता और अपनी कापी में लिख देता मास्टरजी ने

देख लिया, तो डाँटा और पूछा, 'नकल कर रहा था'।

'जी नहीं', बच्चे ने एकदम झूठ बोला।

मैं वहां एक मिनट भी नहीं ठहरी। झूठ बोलने वाले बच्चों से मुझे बहुत नफरत है। ऐसे बच्चे कभी अच्छे बच्चे नहीं हो सकते। आज दिन भर बैठी-बैठी यो ही सोचती रही। माँ की बहुत याद आई।

आठवां दिन

थोड़े बहुत जिद्दी तो सभी बच्चे होते हैं (मैं भी हूँ) पर जैसा जिद्दी बच्चा आज देखा, पहले कभी नहीं देखा था। मिनट-मिनट में नई-नई जिद करता। गुस्सा इतना कि जो चीज हाथ में आ जाती उठाकर फेंक देता। जमीन पर लोटपोट होने लगता। यह भी नहीं देखता कि जहाँ वह लोटपोट हो रहा है कैसी जगह है, अच्छी है या गन्दी। कभी कहता है, पड़ोसवाले मोहन जैसी पैंट पहनूंगा। कभी कहता है, ऐसा थैला लूंगा। कभी, उस थाली में नहीं खाऊँगा। और भी ऐसी अजीब-अजीब तरह की जिद करता है, रोता है। माँ-बाप तो परेशान हैं ही, खुद बच्चा भी बीमार सा रहता है—बिल्कुल दुबला पतला और कमजोर।

खूब रोनेवाले और जिद्दी बच्चों का यही हाल होता है।

नौवा दिन

आज सकूल से बाहर निकलते ही तीन बच्चों को आपस में गुत्थम-गुत्था देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। (हमारे परी देश में तो बच्चे इस तरह कभी नहीं लडते।)

लडाई इस बात पर थी कि दिनेश ने सुधीर से कोई किताब पढ़ने को ली थी। फिर वापस लौटाई-नहीं। अन्त में सुधीर के रोज-रोज मांगने पर जब किताब लौटाई, तो उसके ऊपर नीचे के चार-चार पेज गायब थे। मुड़ी तुड़ी हालत मे थी किताब। अन्दर से भी सारी गन्दी कर रखी थी।

मैंने दिनेश की स्वयं की किताबें देखीं, वे सब भी ऐसी ही हालत में थीं। अजीब है दिनेश भी। एक तो किसी ने किताब ली। वह भी जल्दी पढ़कर नहीं लौटाई और लौटाई, तो फाड़ कर। ऊपर लड़ने लगा, सो अलग।

ऐसे गन्दे बच्चों को, जो न खुद साफ रहें न किताबें-कापियां साफ रखें, कोई भी अच्छा बच्चा नहीं कहता। अब माँ की बात पर विश्वास हो चला कि धरती के बच्चे अच्छे नहीं रहे। बड़ा दुःख हुआ।

दसंवा दिन

आज सुबह से ही बगीचे में बड़ी चहल-पहल थी, कोई बड़ी पार्टी थी। मैं इतने आदमियों को देख मन ही मन बड़ी डर रही थी। शाम को पार्टी शुरू हुई। बने-ठने, सजे-सँवरे वह बच्चे भी आए थे। मेरी गुलाब की झाड़ी के पास ही एक टेबल पर एक बच्चा अपने माँ-बाप के साथ बैठा था। टेबल पर जैसे ही मिठाई की प्लेट रखी गई कि उस बच्चे ने उठाकर खाना शुरू कर दिया। दूसरी चीजों की प्लेटें आने से पहले ही उसने मिठाई की प्लेट साफ कर दी। उसी तरह

पेटूमल उठा उठाकर बेढगे तरीके से ठूँस ठूस कर खाते रहे माँ बाप ने लाख मना किया, पर कौन सुनता है। यहाँ तक कि जमीन पर गिरी हुई चीज तक उठाकर खा ली। अंत में आइसक्रीम की प्लेट को उठाकर जीभ से और उँगलियो से चाटने लगा। आस-पास के सब बच्चे, बड़े-बूढ़े ठठाकर हंस पड़े। मुझे भी खूब हँसी आई उसके बिगडे हुए कपड़े और मुँह देखकर। मैंने देखा कि बच्चे का पेट शरीर से अधिक मोटा था।

गयारहवां दिन

आज मैं सोच रही थी कि अपने देश लौट जाऊँ। तभी बगीचे के बाहर एक मोटर आकर ठहरी। मैंने इसकी सवारी कभी नहीं की थी। चुपके से जा बैठी। थोड़ी ही देर में माली से फूलों का गुलदस्ता लेकर वह आदमी भी लौट आया और गाड़ी चल दी। बड़ा मजा आया।

गाड़ी एक बड़े से मकान के आगे रुकी। गाड़ी का हार्न सुनकर एक औरत एक बच्चे को लिए बाहर आई और बच्चे से बोली, 'मामाजी को नमस्ते करो, बेटा।' 'नहीं करता।'

मोटर वाले मामाजी ने बच्चे को उठाकर चूमते हुए वह गुलदस्ता दिया। बच्चे की वर्षगाठ थी आज। बच्चे ने गुलदस्ता वापस मामाजी पर फेंक दिया। मामाजी तो हंस दिये, पर बच्चे की माँ को बहुत गुस्सा आया बच्चे पर।

जब चाय पीने बैठे, तो बच्चे ने एक के बाद एक तीन चार बिस्कुट ठूंस लिए मुँह में।

'बिल्कुल बन्दर है....' मामाजी ने हँसते हुए कहा।

'तू है बन्दर....बच्चे ने कहा। मैंने जैसे ही सुना, तो अपने कान बन्द कर लिए। अब ऐसे बच्चे की बात कौन सुने।

'नहीं बेटा, मामाजी को ऐसे नहीं कहते, माफी मांगो मामाजी से ।'

'नहीं मांगता'।

'...तो मैं मारूंगा' मामाजी ने फिर हंसते हुए कहा, तो बच्चे ने उनके मुँह पर थूक दिया।

माँ यह सब सहन नहीं कर सकी। दो-चार चांटे जड़ दिये उसके। इतना समझाती हूँ, इतना सिखाती हूँ इसे, पर यह हमेशा अपने से बड़ों से ऐसे ही पेश आता है। इसीलिए मैं उसे अपने साथ कहीं नहीं ले जाती।'

और क्या, कौन ले जाएगा ऐसे बच्चे को अपने साथ, जिसे न बोलने की तमीज है, न बड़ों की इज्ज़त करने का ढंग आता है।

बारहवां दिन

मैं अब यहाँ के बच्चों से ऊब-सी गई हूँ। आज एक ऐसी लड़की को देखा था, जो दिन भर गुड़िया से खेलने में लगी रहती है, न बीमार माँ की देखभाल करती है. न घर का काम। ऐसी भी लड़कीयां किस काम की जो न अपनी माँ के काम में हाथ बंटाए और न माँ की सेवा करे

तेरहवा दिन

आज तोषी और पिन्टू की बहुत याद आ रही है। पता नहीं मेरे खिलौने कैसे होगे ? मेरी प्यारी गुड़िया का क्या हाल होगा। बस, कल एक बार चले जाने के बाद मुझे यह बगीचा जरूर याद आएगा और हाँ, पप्पी और चीना को भी नहीं भूल सकती, बहुत प्यारे बच्चे हैं।

चौदहवां दिन

आज मैंने एक बच्वी को किताबों की दुकान से एक किताब खरीदजते देखा। वह बच्ची बड़ी खुश-खुश किताब लेकर चल दी। मैं भी उसी के पीछे हो गई। बच्ची किताब पढ़ने को इतनी उतावली हो रही थी कि रास्ते में चलते-चलते ही पढने लगी। मुझे डर लगने लगा कि कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए। तभी एक ओर से आवाज आई, 'हैलो मिक्की।'

'हैलो, पिन्की।' और मिक्की अपनी सहेली की ओर बढ़ गई। दोनों एक ओर खडी होकर किताब देखने लगीं। मैं भी छिपकर देख रही थी। ऐसी रंग-बिरगी, कहानियाँ और कविताओं से भरपूर थी वह किताब। मेरा जी हुआ कि मैं मिक्की से छीन लूं।'

तभी मिक्की किताब में से पढती हुई बोली, "सुन पिन्की लिखा है : हम अगले अक में अपने नन्हें मुन्नों को परी देश की सैर कराएगें। परियों के गीत, परियो से दो-दो बातें...।'

अरे वाह, तब तो बड़ा मजा आएगा।

और वे हंसती-कूदती घर को भाग चलीं, मैं भी पीछे-पीछे हो ली।

पन्द्रहवां दिन

मैं रात भर मिक्की के यहां रही। वह किताब पूरी पढ़कर अभी लौटी हूं और साथ ही अपनी पन्द्रह दिन की उस डायरी को अलग कागज पर भी लिख लाई हूँ।

उस किताब के संपादकजी को लिख दिया है : मैं परी हूँ, परी-देश से घूमने आई थी।.. अपनी डायरी के कुछ पृष्ठ भेज रही हूँ...।

मैं आज बहुत खुश हूँ। कल भी बहुत खुश थी। धरती पर मेरे अंतिम दो दिन सचमुच बहुत अच्छे रहे।

"अच्छा, धरती के नन्हे-मुन्ने साथियो, बिदा ! मेरे अच्छे दोस्त-पप्पी, चीना और मिक्की बिदा ! फिर मिलेंगे।

—मनोहर वर्मा

334, तोपदड़ा, अजमेर

अंकिल तोप

उनके विनय सिंह से अंकिल तोप बन जाने की एक कहानी है। उनके परिवार के एक लड़के द्वारा शरारत करने पर दुकानदार ने कह दिया, "जाओ, अपने अंकिल से कह दो। वे कोई तोप नहीं हैं, जो मुझे उड़ा देंगे।"

घर से बात बाहर आई और अंकिल तोप चर्चा में आ गये। छोटे-बड़े सभी उन्हें उसी नाम से जानने लगे। स्वयं विनय सिंह को भी अपना नया नाम खासा पसन्द आया। कम से कम इस नाम से जहाँ अलग पहचान बनी, वहीं दम-खम का प्रभाव भी पड़ा।

अंकिल तोप उस दूकानदार से कैसे निपटा, इसे तो कोई नहीं जान सका, पर एक दूसरी घटना ने अंकिल तोप को वास्तव में प्रसिद्ध दिला दी।

अपने परिवार के एक बच्चे को नगर के सबसे अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाने में अंकिल तोप की पूरी भूमिका रही। बच्चे को मनचाही कक्षा में प्रवेश न मिलने पर वह उखड़ गए, बोले, "मैं सब जानता हूँ, कि कैसे प्रवेश दिया जाता है। मैं अंकिल तोप नाम से जाना जाता हूँ, इतना बताना काफी है।"

स्कूलवालों ने अलग जाकर परामर्श किया, फिर आकर बताया, "वैसे तो उस कक्षा के योग्य बच्चा नहीं है, पर आप कहते हैं, तो प्रवेश मिल जाएगा। आप घर में पढ़ाने की व्यवस्था जरूर कर लें।

अंकिल तोप 'धन्यवाद' कहकर चले आए।

इधर ये अपनी सफलता पर गर्व करने लगे थे और उधर बच्चे ने घर और बाहर अंकिल तोप की शानदार जाति की बातें सबको सुनाईं।

स्वाभाविक था कि अंकिल तोप का रुतबा नगर में बढ़ गया। इसी तरह आगे उन्होंने एक स्थानिय कार्यालय में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पद पर अपने घरेलू नौकर की नियुक्ति कर दी। पैसा देने के स्थान पर नाम के रोब-दाब से काम चल गया।

अब अंकिल तोप नगर के प्रभावशाली व्यक्तियों में गिने जाने लगे थे। इसी प्रकार पुलिस विभाग में भी उन्होंने अपनी खासी घुसपैठ बना ली! अब तो वे स्थानिय स्तर के काम कराने में अग्रणी हो गए। शीघ्र ही खाली घूम रहे लोग उनसे आ जुड़े। तमाम अनुचर आगे-पीछे चलने लगे। धीरे से कोर्ट-कचहरी में भी उनका प्रवेश हो गया गरज कि अंकिल तोप चारों ओर छा गए हां वे मारपीट

से अलग हो रहते, पर उनका आतंक काम करने लगा था।

तभी एक अनहोनी घटना हो गई। अंकिल तोप के एक साथी को हत्या के एक मामले में पकड़ लिया गया। वादी ने षडयंत्र रचकर अंकिल तोप का नाम भी रिपोर्ट में बढ़वा दिया।

अब तो अंकिल तोप को भी दिन में तारे दिखाई देने लगे। निर्दोष होने पर भी उसे सिद्ध करना था। मामला उलझा देखकर अंकिल तोप कुछ दिनों मे लिए, जब तक मामले की जाँच हो, बाहर चले गए। कानूनी जाँच चलती रही।

जाँच में अंकिल तोप निकल तो गए, पर उनमें एकदम जैसे महान परिवर्तन आ गया। अब उनसे बढ़ कर नगर में दूसरा कोई अन्य विनम्र नहीं था। नगरवासी प्रसन्न थे कि चलो अंकिल तोप का गर्व तो चूर हुआ। अब आदमी को आदमी कहेंगे और तोप से उड़ाने की बात सदा के लिए भूल जाऐंगे।

—महेश चन्द्र सरल
महात्मा गाँधी मार्ग
हरदोई – 241 001 (उ०प्र०)

लाख टके की बात

रामधन ने शहर जाकर परचून की दूकान खोल ली थी। इस दूकान से उसे खूब आमदनी हुई। थोड़े ही दिनों में उसके पास काफी धन इकट्ठा हो गया।

उसने सोचा कि अब उसे गांव के मकान की मरम्मत करवा लेना चाहिए। रामधन ने गांव में मजदूरी करनेवाले रामू और गंगाराम को बुलवा कर काम शुरू करवा दिया। नया कमरा बनाने के लिए जब वे नींव खोद रहे थे, अचानक रामू का फावड़ा नींव में गड़ी किसी सख्त चीज से टकराया।

रामधन बोला, "सावधानी से खोदो और इसे निकालो।"

रामू ने सावधानी से धूल हटाकर देखा वहां पीतल का एक कलश था। जब उसे खोला गया तो सबकी आंखें फटी की फटी रह गईं। उसमें सोने की बहुत-सी मुहरें थीं।

उस समय रामधन का दोस्त केशव वहां आ गया था। उसे ज्योतिष में रुचि थी। ज्योतिष के नाम पर लोगों को बेवकूफ बनाकर वह अपना गुजारा चलाता था। उसने रामधन की खुदाई में निकला कलश और सोने की मुहरें देख लीं।

वह रामधन से बोला, "तुम्हारे तो पौ-बारह हो गये दोस्त। इस जगह सोने की मुहरों से भरे और भी कलश तुम्हें मिल सकते हैं। जिस जगह मुहरों से भरा यह कलश निकला है उस जगह लक्ष्मी का मंदिर बनवाओ। दिन-रात लक्ष्मी की उपासना करो। दूसरे हिस्सों को खुदवा कर गड़े धन की तलाश करो।" केशव ने कहा और अपनी दक्षिणा लेकर चला गया।

रामधन ने सोने की मुहरें अपने कब्जे में कीं और उस जगह लक्ष्मी का मंदिर बनवा दिया। अचानक मुफ्त में मिली मुहरों की चकाचौंध में अपने सब कर्तव्य भूलकर वह रात-दिन लक्ष्मी की सेवा आराधना में लग गया। जमीन को खुदवा-खुदवा कर वह गड़े धन को खोजता।

ऐसा करते हुए काफी समय व्यतीत हो गया। इस अरसे में उसका शहर का व्यापार ठप्प हो गया। एक रात को उसका नौकर दूकान का सारा माल लेकर चम्पत हो गया। धीरे-धीरे घर के खर्चे, पूजा-पाठ और रोजगार के कामों में कलश की मुहरें भी खत्म हो गईं। रामधन कंगाल हो गया। बाकी गड़ा धन पाने की चाह में वह बर्बाद हो गया

अभाव और निराश से घिरा हुआ रामधन एक दिन अपने ज्योतिषी मित्र केशव के पास पहुंचा और बोला, "केशव, तुम तो कहते थे कि लक्ष्मी मुझे मालामाल कर देगी, लेकिन मैं तो बर्बाद हो गया।"

"तुम विश्वास रखो, और लक्ष्मी की पूजा करते रहो।"

"पर केशव, मेरी हालत बड़ी खराब हो गई है। फिर भी तुम मुझे विश्वास रखने को कह रहे हो।" रामधन मायूस होते हुए बोला।

"रामधन भाई, लक्ष्मी की उपासना मुश्किल से होती है।" केशव बोला।

घर पहुंचते ही रामधन ने फावड़ा उठाया और लक्ष्मी का मन्दिर तोड़ना शुरू कर दिया। उसका दोस्त माधव उधर से गुजर रहा था। उसने रामधन के हाथ से फावड़ा छीन कर गुस्से का कारण पूछा।

"आज मैं लक्ष्मी की मूर्ति तोड़कर ही रहूंगा।" रामधन ने कहा। माधव को कलश मिलने और उसके बाद की सारी कहानी मालूम थी। वह बोला, "ठीक है मूर्ति तोड़ दो। मगर यह दोष इस पत्थर की मूर्ति का नहीं बल्कि तुम्हारे अंधविश्वास का है। तुमने धन के लोभ में आकर केशव की झूंठी बातों पर भरोसा किया। असल में कलश से देवी का कोई लेना-देना नहीं था।"

"तो क्या, सोने की मुहरों से भरा कलश मुझे देवी की कृपा से नहीं मिला ?" रामधन ने पूछा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं। असल में वर्षों पहले लोग अपना धन जमीन में गाडकर रखते थे। तब यह कलश किसी ने जमीन में दबाकर रखा होगा। खुदाई करने पर यह अचानक तुम्हें मिल गया। बस, इतनी-सी बात है।"

"लेकिन मैं तो समझा था कि..."

"अरे भाई रामधन, मैंने तो पहले भी कई बार तुम्हें बताना चाहा, किन्तु तुम तो धन के पीछे ऐसे पागल हो रहे थे कि किसी की बात ही नहीं सुनते थे। अब तो सब बात तुम्हारी समझ में आ गई। अब तुम सभी तरह के अंधविश्वासो को मन से निकाल दो और अपने उजड़े धन्धे को सम्भालो, यही लाख टके की बात है।" माधव ने समझाया।

"तुम ठीक कहते हो भाई, अब मैं ऐसी बातों पर कभी विश्वास नहीं करूंगा और लगन के साथ अपने व्यापार को जमाने और उसकी तरक्की करने पर ध्यान दूंगा।" रामधन ने कहा।

कुछ ही दिनों में रामधन का व्यापार फिर से चल निकला।

—राजकुमार जैन 'राजन
चित्रा प्रकाशन
आकोला-312205 (चित्तौड़गढ़), राजस्थान

पंख किसने रंगे हैं ?

पांच साल की रंजना का कुछ ही दिन पहले नर्सरी कक्षा में दाखिला कराया गया है। घर के लोग उसे प्यार से रंजू कहा करते हैं। यह छोटी लड़की बड़े जिज्ञासु स्वभाव की है। कभी बाबा की फुलबगिया में खिलनेवाले अनेक तरह के फूलों की चर्चा करती है तो कभी बादल को देखकर उसके बारे में पूछने लगती है, 'ये बादल कहां से आते हैं ? पानी कैसे बरसता है ? सात रंगोंवाला इन्द्रधनुष कैसे बनता है ?'' आदि-आदि। खेत में लगी तीसी के नीले फूल या किसी खेत में लगी सरसों के पीले फूल देखती है तो बस मिनटों तक देखती ही रह जाती है।

उस दिन वह अपना होमवर्क पूरा करने के लिए बैठी ही थी कि उसकी नजर बरामदे के सामनेवाली क्यारी में लगे फूलों पर पड़ी। वहां गेंदा, गुलाब, गुलदाउदी, बेला आदि के रंग-बिरंगे फूल खिलकर अपनी भीनी-भीनी खुशबू बिखेर रहे थे। उन फूलों पर प्यारी-प्यारी तितलियां मंडरा रही थीं। तितलियों को देखते ही रंजू का मन होमवर्क से हटकर वहां जा रमा। उसने देखा एक तितली गेंदा के फूल पर बैठी है जिसके दोनों पंख बिल्कुल काले हैं। एक तितली गुलाब के फूल की नन्हीं पंखुड़ियों के बीच घुसी जा रही है, उसके दोनों पंख पीले हैं। एक तितली गुलदाउदी के फूल पर बैठी कुछ चूसने में मगन है जिसके पंख काले और पीले रंगों के हैं। रंजू की उत्सुकता और बढ़ गई। वह उठकर बाग में चली गई और वहां खड़ी होकर गौर से सभी तितलियों को निहारने लगी। वह सोचने लगी: आखिर इन तितलियों के पंख किसने रंगे हैं ? जरूर ही किसी ने इनके पंख रंगे हैं। नहीं तो भिन्न-भिन्न तितलियों के पंख भिन्न-भिन्न रंगों के कैसे हो सकते थे ? सचमुच रंग-बिरंगे पंखोंवाली ये तितलियां कितनी सुन्दर लग रही हैं ? मन करता है बस इन्हें ही देखती रहूं।

वह खड़ी-खड़ी सोच ही रही थी कि एक उजले पंखोंवाली तितली आकर बेला के फूल पर बैठ गई। रंजू ने उसे देखा तो फिर सोचने लगी-'जरूर उस तितल के पंख किसी ने नहीं रंगे हैं।' तभी तो इसके पंख बिल्कुल सादे हैं। क्यों न मैं ही उसके पंख रंग दूं ? भैया के पास रंग हैं। वह चित्रों में भरता है। वह उस समय घर में है भी नहीं कि मुझे रोक सके।

इतना सोचने के बाद वह उस उजले पंखोंवाली तितली को पकड़ने के जुगाड़

मे लग गई। वह धीरे-धीरे उसके निकट गई और एक हाथ से जैसे ही उसकी पूंछ पकडना चाहा कि वह तितली उड़ गई। कुछ क्षण उड़ने के बाद वह फिर एक गुलाब के फूल पर बैठ गई। रंजू बुदबुदाई-'बड़ी चालाक है। मगर मैं तो उसे पकड़कर उसके पंख रगूंगी जरूर। इस बार वह बिना कुछ आहट किए तितली के निकट गई और दोनों हाथों की अंगुली में उसे पकड़ लेने को लपकी। पर इस बार भी तितली उसके हाथ नहीं लगी। वह क्यारी में ही इधर-उधर उड़ती रही।

रंजू ने सोचा कि यह तितली समझ नहीं पा रही है कि मैं उसे क्यों पकड़ना चाहती हूं ? आखिर उसे सुन्दर ही तो बनाना चाहती हूं।

कुछ ही क्षणों में वह तितली फिर एक गेंदा के फूल पर जा बैठी। रंजू धीरे-धीरे उसके निकट पहुंची। यह सोचकर कि उसे अपना उद्देश्य बता दूंगी तो यह नहीं भागेगी, वह बोली, "ऐ तितली, मैं तुम्हारे सादे पंखों को रंगने के लिए तुम्हे पकड़ना चाहती हूं और तुम हो कि भागती फिरती हो। मैं तुम्हारा कुछ बिगाड़ूंगी थोड़े ही ? पंख रंगने के बाद तुम भी दूसरी तितलियों की तरह खूब सुन्दर लगोगी।"

तितली अपने पंख फड़फड़ाकर जैसे कुछ कहना चाह रही थी, पर रंजू की समझ में कुछ नहीं आया। उसने फिर उसे पकड़ने की कोशिश की पर इस बार भी तितली उसकी पकड़ में नहीं आई और उड़कर कहीं दूर चली गई।

अब तो रंजू सुबक-सुबक कर रोने लगी। उसके रोने की आवाज़ सुनकर उसकी मम्मी रसोई से दौड़ती हुई आई। रंजू से रोने का कारण पूछा। रंजू ने बताया कि एक बिल्कुल सादे पंखोंवाली तितली को मैं पकड़ना चाह ही थी, पर वह मेरे बार-बार के प्रयास के बाद भी पकड़ में नहीं आई और उड़कर भाग गई।

"तितली बड़ी भोली और प्यारी होती है। वह फूलों पर मंडराती है तो कितनी अच्छी लगती है ? तुम उसे पकड़कर उसके पंख मसल दोगी, या मार ही दोगी। अच्छे बच्चे ऐसा नहीं करते। मेरी प्यारी बच्ची, चलो अपना काम करो। उसके लिए रोना कैसा ?" मम्मी ने समझाते हुए कहा।

"पर मैं उसे पकडकर मारना नहीं चाहती थी। मैं उसके सादे पंखों को रगना चाहती थी। और तितलियों ने भी तो अपने पंख रंगवा लिए हैं। पंख रंग देने से वह भी कितनी सुन्दर लगती हैं ?" रंजू ने अपनी आंखों के आंसू पोंछते हुए कहा।

रंजू की बात सुनते ही उसकी मम्मी ठहाके लगाकर हंसने लगी और बोली, "अरी पगली, तुम्हें पता नहीं कि तितलियों के पंख कोई नहीं रंगता। उसके पख तो जन्म से ही भिन्न-भिन्न रंगों के होते हैं। सादे पंखोंवाली तितली के भी पर जन्म से ही सादे हैं। आखिर उजला रंग भी तो देखने में अच्छा लगता है ? लाल, पीले, काले आदि रंगोंवाली तितलियों के बीच उजले पंखोंवाली तितली उडती है या फूलों पर मंडराती है तो वह भी खूब सुन्दर लगती है जैसे तुम्हारे स्वेटर में पीले

नीले और लाल रंगों की धारियों के बीच बिलकुल सफेद रंग का फूल कढ़ा हुआ है, वह कितना सुंदर लगता है ?''

"तो तितलियों के पंख किसी ने नहीं रंगे हैं ? जन्म से ही उनके पंख अलग-अलग रंगो के हैं ? हूंह ! मैंने तो सोचा इन सबके पंख भी किसी न किसी ने रंग दिए होंगे।'' इतना कहकर रंजू हंसने लगी। उसकी मम्मी भी हंस रही थी।

''चलो मम्मी, मुझे बहुत होमवर्क करना है मैं बेकार ही तितली के पीछे पड़ गई थी।'' कहकर रंजू मम्मी के आंचल से लिपट गई।

—डा० रोहिताश्व अस्थाना

पता : प्रोफेसर कॉलोनी, हाजी पुर
बिहार-844101

लड्डूराम

लड्डूराम को अपने पिता कलाकंद पर बहुत अभिमान था। उसका यह अभिमान, आसमान छू रहा था। इसी कारण लड्डूराम कभी-कभी अपने साथियों के झुण्ड के बीच बड़े-बड़े और खड़े शब्दों में ऐसी शान बघारने से नहीं चूकता था—"देखा, बाप हो तो ऐसा। चारों ओर नाम की धूम मची रहती है। हवा और पानी की तरह चर्चाएं फैली रहती हैं। मेरे बाप को भोजनवीर, भोजनभट्ट, पेटू, खुराकीलाल आदि की अनेक उपाधियां प्राप्त हैं। उसका कहना है कि जीने के लिए खाना सरासर मूर्खता है और खाने के लिए जीना समझदारी है। जितना बने पेलते जाओ, जितना बने झेलते जाओ। मैं भी सेर का सवासेर न निकला तो मेरा नाम लड्डूराम से बुद्धूराम रख देना।"

कलाकंद के घर के बाहर एक तख्ती टंगी हुई थी, उस पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिख था—"यहां निमंत्रण चौबीस घंटे स्वीकार किए जाते हैं।" कलाकंद जी जथा नाम तथा गुण थे। मिठाई खाने में उन्हें चुनौती देनेवाला क्षेत्रभर में कोई नहीं था। अगर पाली माकर खाने में मन लगाकर भिड़ जाएं तो परोसनेवाले और खिलानेवाले के होश ठिकाने आ जाएं। उनको न्योतने के बाद अच्छों-अच्छों के छक्के छूटने की बात सबको पता थी।

एक मंदिर में वे पुजारी थे। एक दिन शाम को वे उस मंदिर के सामने बने सपाट मैदान में अपनी सुंदर मुठियादार छड़ी लहराते हुए घूम रहे थे। उसी समय मंदिर में पूजा करके लौट रहे कुछ बाहरी तीर्थ यात्रियों की दृष्टि पंडित कलाकंद पर पड़ी। भारी-भरकम शरीर, चौड़े माथे पर थोपे गये चंदर पर झिलमिलाता तिलक, भरी हुई टंकी की तरह उभरी तोंद, मलुंग भुजाएं, दबंग मूंछें, गोरा रंग यह सब देखकर यात्रीदल का मुखिया इतना प्रभावित हुआ कि वह पंडित जी के सामने जाकर, हाथ जोड़कर विनयपूर्वक बोला—"हे पंडित जी महाराज, मेरी इच्छा है कि आप कुछ ग्रहण कर लें तो पुण्य मिलेगा, हमारे कुछ पाप कट जाएंगे। आप हमारी प्रार्थना सुन लीजिए प्रभो!"

आग्रह मनचाहा था, सो कलाकंद जी सुनते ही गद्गद् हो गए। पास के एक छोटे से होटल में उस आदमी ने श्रद्धापूर्वक कलाकंद जी को बैठाकर दूकानदार से कहा, "पंडित जी जो भी खाएं, आप खिलाते जाएं। मैं थोड़ी देर में आकर स हिसाब चुका दूंगा।" जब इतना कहकर वह आदमी बाहर जाने लगा तो दूकानदार ने अपनी ओर से चाहा— देखो भाईसाहब पंडित जी को मिष्ठान्न बहुत

प्रिय है लेकिन वाक्य पूरा होने के पहले ही वह आदमी बोल पड़ा, "लेकिन-वेकिन मैं नहीं सुनना चाहता। आप इन्हें पेटभर मिठाई खिला दें बस।'' इतना कहकर वह होटल के बाहर हो गया। उसने सोचा कि पंडित जी आखिर कितनी मिठाई खाएंगे, ज्यादा से ज्यादा एक किलो बस।

वह आदमी लगभग डेढ़ घंटे बाद लौटकर आया तब तक कलाकंद जी अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए वहां से जा चुके थे। पूछने पर जब दूकानदार ने बिल बताया तो उस आदमी को पसीना आ गया। वह हैरान होकर बोल उठा-"अरे बाप रे, इतना बिल ?'' तब दूकानदार ने मुस्कराते हुए कहा, "भाई साहब मैंने पहले ही आपको पंडित जी के कोटे के बारे में बताना चाहा था, लेकिन आपने मेरी सुनी ही नहीं। ये पंडित जी खाने में नंबर वन हैं। इनके टक्कर का यहां कोई नहीं है। इन्होंने आज मात्र छः किलो मीठा खाया है, जबकि ये आठ किलो तक खा जाते हैं।'' किसी तरह बिल चुकाने के बाद वह आदमी मूर्छित सा हो गया था।

लड्डूराम भी अपने पिताजी के लक्षण लिए था। वह अपनी उम्र के हिसाब से अपने साथियों में खाने में बहुत आगे था। वह भले ही पढ़ने में बहुत पीछे था।

एक दिन कुछ शरारती लड़कों ने लड्डूराम का मजा चखाने की सोची। गुप्त रूप से एक योजना भी तैयार हो गई। उस योजनानुसार उसके कुछ साथियों ने उत्साह से उछलते हुए बताया-"यार लड्डू, हम लोगों ने हलवा-पूरी प्रतियोगिता रखी है। उसमें केवल लडके ही भाग ले सकते हैं। क्षेत्रभर में इसका प्रचार किया जाएगा और प्रथम आनेवाले को विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। यदि तुम प्रथम आए तो हम लोग खुशी में तुम्हारी शोभा-यात्रा निकालेंगे।''

यह सुनते ही लड्डू के मन में लड्डू फूटने लगे। वह शेखी बघारते हुए बोला, "मैं बता दूंगा कि मैं किस बाप का बेटा हूं।''

प्रतियोगिता की तिथि घोषित हुई। साथियों के सुझाव पर लड्डूराम ने दो दिन पहले से ही भोजन करना छोड़ दिया था। वह थोड़ा-थोड़ा पानी भर पी लेता था। दिन में तीन-चार बार खानेवाला लड्डूराम अब भूख के मारे आकुल-व्याकुल हो रहा था। उसने सोचा कि कष्ट झेलकर बिलकुल खाली पेट रखा जाए तो प्रतियोगिता में वह सबसे ज्यादा खाने में सफल हो जाएगा। पेट में तो चूहे कबड्डी मैच खेल रहे थे लेकिन वह बेचारा क्या करता, शान का जो सवाल है।

जिस समय दो दिन पूरे होने को हुए, उस समय लड्डूराम को बताया गया कि किसी कारणवश प्रतियोगिता रद्द कर दी गई है। अब क्या था। बेचारा हाय-हाय करते हुए पछताने लगा।

-राजा चौरसिया
उभरियायान,
जबलपुर (म॰प्र॰)

सबक

टोला पुखा में एक किसान परिवार रहता था। उस परिवार में दो भाई रहते थे। जितेन्द्र बड़ा भाई और वीरेन्द्र छोटा भाई था, जिसमें जितेन्द्र की शादी हो चुकी थी। जितेन्द्र की पत्नी विमला में एक बुरी आदत यह थी कि वह घर की हर बात अपने पड़ोसियों को बता दिया करती थी। इस बात को लेकर जितेन्द्र बहुत परेशान रहा करता था। एक दिन उसने सोचा क्यों न विमला को सबक सिखा दिया जाये। और उसने एक योजना बनाई।

जितेन्द्र ने विमला को बिना बताये अपने छोटे भाई वीरेन्द्र को शहर भेज दिया। योजना के अनुसार उसी रात उसने अपने घर के आंगन में गड्ढा खोदकर उसमें एक मरा हुआ कुत्ता डाल दिया। जब जितेन्द्र गड्ढे को भर रहा था तभी विमला की नींद खुल गई। उसने देखा कि उसके पति घर के आंगन में एक गड्ढे को भर रहे हैं। उसने पास आकर धीरे से पूछा, "अजी ये क्या कर रहे हैं ?" जितेन्द्र ने इशारा करते हुए कहा, "चुप रहो। मैंने छोटे भाई को जान से मार डाला है और उसकी लाश यहीं गाड दी है। अब यह घर और खेत हमारा है। यदि छोटा भाई होता तो हमें उसका हिस्सा देना पड़ता। इसलिये उसे रास्ते से ही हटा दिया। यह बात तुम किसी से न कहना।" इतना कहकर जितेन्द्र गड्ढे की मिट्टी को बराबर करके घर में सोने को चला गया।

दूसरे दिन सुबह जितेन्द्र खेत में काम करने चला गया। विमला भी अपना घर का काम निपटाकर पड़ोस में बैठने चली गई। बात ही बात में उसने अपनी पडोसिन से कहा, "अरी बहू किसी से कहना मत, कल रात हमारे पति ने अपने छोटे भाई को जान से मार डाला।" यह बात शाम होते-होते पूरे गांव में फैल गई। पुलिस में भी किसी ने इस बात की सूचना दे दी।

शाम को जब जितेन्द्र खेत से लौटा तो देखा उसके घर पर एक दरोगा और दो पुलिस वाले खड़े हैं। यह देखकर वह बिलकुल घबराया नहीं ! दरोगा ने कडकदार आवाज में कहा, "हमें खबर मिली है कि तुमने छोटे भाई को जान से मार दिया है और उसकी लाश कहीं छिपा दी है।" यह सुनकर जितेन्द्र बोला, "दरोगा साहब भला मैं अपने भाई को जान से क्यों मारूंगा ? कल ही मैंने उसे घर के काम से शहर भेजा है शायद वह अब आता ही होगा हां रात में मैंने आगन

में एक गड्ढा खोदा और उसमें एक मरा हुआ कुत्ता गाड़ दिया है। यह मैंने इसलिए किया क्योंकि मेरी पत्नी की एक बुरी आदत थी कि वह घर की जरा-सी बात को बाहर के लोगों को बता देती थी। उसकी आदत को सुधारने के लिये मैंने यह सब कुछ किया। ताकि इससे उसे सबक मिल जाय।'' इतना कहकर जितेन्द्र ने दरोगा को गड्ढे के पास ले गया और खोद कर मरा हुआ कुत्ता दिखा दिया।

विमला ने सब के सामने अपने पति से क्षमा मांगते हुए कहा, "अब मैं भविष्य में कभी भी घर की बात बाहर नहीं करूंगी।''

—राजेन्द्र प्रकाश शर्मा
कवि कुटीर
6/11/255, मुगलपुरा
(हैदरगंज) फैजाबाद
उ०प्र०-224001

टमरक टूं

एक चौधरी था। नाम था उदमीराम। खेता करता था। खेत बहुत बड़ा और उपजाऊ था। उदमीराम पूरी फसल लेने के लिए खड़ी मेहनत करतात था अपनी फसल को पशु-पक्षियों से बचाने की पूरी कोशिश किया करता। उसकी फसल वर्षा पर ही निर्भर थी क्योंकि उसके पास न तो कोई नहर ही लगती थी और न खेत मे कुआं था। राजस्थान के अधिकतर किसान वर्षा पर ही निर्भर रहते हैं। समय समय पर अच्छी वर्षा हो जाती है तो अच्छी फसल होती है वरना उन्हें बडी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। हां, तो उदमीराम जुलाई के महीने में तो अपने खेत में मोठ, बाजरा, ज्वार और ग्वार बोया करता तथा अक्टूबर के अन्त मे चने।

वैसे तो चौधरी उदमीराम अपने खेत के चारों ओर ऊंची-ऊंची मेड बना दिया करता जिससे पशु उसके खेत में नुकसान नहीं कर पाते किन्तु जब फसल पक जाती तो पक्षी उसे सताने लगते। पक्षियों में हानि पहुंचानेवाले राजस्थान में प्राय दो ही पक्षी होते हैं–मोड़ी और चिड़िया। मोड़ी कबूतर से थोडी छोटी होती है तथा उसका रंग कबूतर जैसा ही होता है। राजस्थान में उसे कमेड़ी भी कहते हैं तथा पजाब में उसे घुघ्घी कहते हैं। एक मोड़ी चौधरी को बहुत तंग किया करती तथा घू घू की आवाज करके दूसरे पक्षियों को भी बुला लिया करती। चौधरी उदमीराम उसे पकड़ना चाहता था पर मौका नहीं मिल रहा था। ज्योंही वह पकड़ने के लिए भागता वह फुर्र से उड़ जाया करती।

एक दिन चौधरी ने उसे दूर से बोरा फेंक कर अपने चंगुल में ले लिया। चौधरी ने उसके पंजे को रस्सी से बांधा और उसे एक पेड़ की डाली घर बाध दिया। अब मोडी की कैद हो गई। मोडी चौधरी से कहने लगी–

टमरक टूं भाई टमरक टूं
चौधरी मनें क्यूं पकड़ी,
बांध जेवड़ी क्यूं जकड़ी
टमरक टूं भाई टमरक टूं
चौधरी ने उत्तर दिया–
टमरक टूं भाई टमरक टूं

मोठ बाजरो खागीं स्यूं ?
इब तनै मैं छोड़ू क्यू ?
टमरक टूं भाई टमरक टूं।

चौधरी ने मोडी को छोड़ने से साफ इन्कार कर दिया। इतने में बैल वहां आया तथा मोडी छुड़वाने के लिए उससे प्रार्थना की लेकिन चौधरी ने लठ्ठ दिखा कर वहा से भगा दिया। फिर एक ऊंट वहां आया किन्तु चौधरी ने उसे भी वहां से खदेड़ दिया। इतने में चौधरी के खेत में दूसरे छोर पर पशु घुस आए और वे फसल को खाने लगे। चौधरी ने सोचा मोडी को तो बांध ही रखा है, यह कहां जायेगी, मैं इन पशुओं को खदेड़ आता हूं। चौधरी चला गया। चौधरी के जाने के बाद वहां एक चूहा आया। मोडी ने चूहे से कहा, "चूहा भइया, मैं तुम्हारी बहिन हूं। क्या तुम अपनी बहिन को नहीं छुड़ाओगे ?" चूहे ने कहा, "ठीक है तुम मेरी बहिन बन गई हो लेकिन क्या तुम मेरे रक्षा बन्धनवाले दिन राखी बांधोगी ?" मोडी ने कहा, "जरूर बांधूगी।" इतना कहते ही चूहे ने मोडी के पास आकर अपने दांतों से रस्सी को कुतर दिया और मोडी फुर्र से उड़कर ऊंची डाल पर जा बैठी। चौधरी ने आकर देखा तो उसे समझने में देर नहीं लगी कि वह चूहे की करतूत है।

"परोपकाराय पुण्याय - पापाय परपीड़नम्"

—रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ'
पिलानी (राज०)

समय की कीमत

राकेश ने देखा, जहांगीराबाद के बस स्टॉप पर काफी भीड़ थी। लोग उत्सुकता से नीलकण्ठ प्रतीक्षा की तरह लोकल बस के आने की संभावना से विवश होकर कभी बस स्टॉप से दो सौ मीटर आगे जाते तो कभी पीछे जाते। तभी सात नंबर की बस आई। राकेश आगे बढ़ा। उसे व्यग्रता थी। धक्के का एक रेला आया और राकेश उसके प्रवंग मे अनचाहे ढंग से यात्रियों पर गिरता-पड़ता अन्दर जा पहुंचा।

कंडेक्टर टिकट दे रहा था। उसने राकेश से कहा, "मेरे पास एक रुपये का चेंज नहीं है, पचास पैसे लाइए।"

राकेश ने कहा, "मैं कहां से लाऊं ?" जाना जरूरी है। पन्द्रह मिनट पीरियड मे होने शेष हैं। मुझे 1250 क्वार्टर्स तक जाना है।

कंडक्टर ने उत्तर दिया, "सुबह-सुबह रेजगारी नहीं रहती, मजबूरी है, पैसे लाइये वरना यहीं उतर जाइए।"

राकेश ने हिसिल की आवाज सुनी, काफी कर्कश लगी। उसके हाथ में नोट वजनदार हो गया। बस का टिकट एक विकट समस्या बन गया। गाड़ी रुक गई थी। तभी एक सज्जन ने पचास पैसे का सिक्का निकाला और कंडक्टर को दे दिया। इन सज्जन ने कहा, "हो सकता है उन्हें फिर बस पकड़ने में देर लगे, समय की कीमत पचास पैसों से ज्यादा है।"

राकेश सोच रहा था। वह फुटकर पैसे लाया होता तो समस्या नहीं होती। पन्द्रह मिनट पहले बस स्टॉप पर आ जाता तो भी समय की समस्या नहीं होती।

बस बड़ा तालाब, विधान सभा, विधायक निवास से आगे बढ़ रही थी। उसके हाथ में टिकट था जिसका वजन दिल पर था। तब तक टिनशेड पर बस रुकी। उस बस का यह आखरी स्टॉप था। सब लोग उतरे। राकेश भी उतरा। उसने उन सज्जन को बुलाकर पान खाने का आग्रह किया। उन सज्जन ने कहा, "मैं पान नहीं खाता। अच्छा चलूं हमें समय को पकड़ना चाहिए।"

राकेश ने पानवाले से पचास पैसे का सिक्का लिया और वह उनके पीछे दौड़ा। सज्जन ने इनकार करते हुए कहा, "जिस समय मैंने सिक्का दिया था, वह समय लाइये। सिक्का नहीं चाहिए। मैंने तो समय दिया है, वह समय जिसे काटने के लि समय के हाथों लोग शिकार बन जाते हैं"

चंदर

बात बहुत पुरानी है। तब मगध में नंदवंश के राजा घनानंद का राज्य था। वह बहुत विलासी था। हमेशा अपने ऐशोआराम में ही डूबा रहता था। वह प्रजा के दु:ख-सुख की भी परवाह नहीं करता था। और प्रजा पर तरह-तरह के अत्याचार किया करता था। प्रजा उसके अत्याचारों से दु:खी थी लेकिन राजा का विरोध करने की उसमें हिम्मत नहीं थी।

एक बार राजा घनानंद अपने राज्य के एक गरीब लकड़हारे की सुन्दर लडकी पर मोहित हो गया। उसने अपने सैनिकों को भेजकर मंगवाया। लकड़हारे की लडकी का नाम था मुरा। वह बहुत सुंदर लेकिन गरीब थी। राजा से उसने छोड देने की प्रार्थना की लेकिन राजा को उस पर तनिक भी दया न आयी। उसने जबरदस्ती भुरा से विवाह कर लिया। धीरे-धीरे भुरा भी राजा की इच्छानुसार रहने लगी।

राजा घनानंद कुछ दिनों तक उसके प्रेम में डूबा रहा पर जल्दी ही वह उससे ऊब गया। वह फिर बुरी आदतों और शराब में डूबने लगा। इसी बीच उसकी नजर एक दूसरी कन्या पर पडत्री और उससे भी उसने जबरदस्ती विवाह कर लिया। नई रानी के लिए उसने भुरा को महल से निकालकर महल नई रानी को दे दिया। भुरा उस समय गर्भवती थी। राजा के इस तरह अपमान करने पर वह एक रात चुपचाप तक्षशिला चली गयी और वहीं छिपकर रहने लगी।

गॉव वालों ने उसे दु:खी औरत समझकर उसके लिए एक झोपड़ी बना दी। गॉव वालों के घर नौकरानी का छोटा-मोटा काम करके वह उसी झोपड़ी में रहने लगी। वही भुरा ने एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया। बच्चे की सुन्दरता के कारण उसका नाम रखा गया चंदर।

भुरा के साथ उसका बच्चा भी दुख के दिन काटता। उसकी गरीबी के साथ पलने लगा। धीरे-धीरे वह आठ वर्ष का हो गया। मां ने बचपन में ही उसे तीर और तलवार चलाना सिखा दिया। भुरा जब काम करने गांव चली जाती तो चदर अपना छोटा-सा बांस का बना धनुष और बंस के ही नुकीले तीर लेकर जंगल की ओर निकल जाता। शाम होने तक वह एकाध छोटा शिकार मारकर घर लौट आता। उसके शिकारों को देखकर भुरा उसे शाबाशी देकर कहती, 'तू जिस दिन

ेर मारकर लायेगा उस दिन तुझे सच्चा बहादुर समझूंगी।

दिनभर जंगल में भटकते रहने के कारण चंदर की जंगली जानवरों से अच्छी दोस्ती हो गयी थी। वह निडर होकर उनके बीच घूमता रहता। हिंसक जानवरों से वह सावधान रहता और अहिंसक जानवरों के साथ सुरक्षित स्थानों पर खेला करता। मोर उसे बहुत अच्छे लगते थे और वह मोरों के पीछे सारे दिन दौड़ता फिरता।

एक बार की बात है। चंदर अपने प्यारे पक्षी मोरों के साथ खेल रहा था। मोर मस्ती में अपने पंख फैलाकर झूम-झूमकर नाच रहे थे। और वह एक हिरन के बच्चे को गोद में लिए हरी-हरी घास पर बैठा उन्हें नाचता हुआ देख रहा था। अचानक हल्की-सी खरखराहट की आवाज हुई। चंदर ने सावधान होकर देखा। सामने झाड़ी के पीछे एक शेर उसे झपटने ही वाला था। चंदर ने फुर्ती से हिरण के बच्चे को एक ओर धकेला और स्वयं दूसरी ओर लुड़क गया। उसी समय शेर ने छलांग लगा दी तब तक चंदर अपना धनुष उठाकर उसे तीखे तीरों से घायल कर चुका था। लेकिन कहां जंगल का राजा शेर और कहां आठ वर्ष का बालक चंदर शेर पूरी ताकत से उस पर झपट पड़ा।

चंदर भी अपनी जान की परवाह न करके उससे भिड़ गया। शेर ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया लेकिन फिर भी वह बार-बार उठकर गुस्से से उससे भिड़ जाता। तभी किसी ने एक जहरीला वाण मारकर शेर को मार डाला।

चंदर शेर से अलग हो गया। उसका सारा शरीर खून से लथपथ हो रहा था। सामने एक दुबले पतले ब्राह्मण को धनुष लिये खड़ा देखकर वह गुस्से से बोला, "आपने उसे वाण क्यों मार दिया आज तो मैं उस अपने हाथों से ही मार डालता।"

चंदर की उत्साह भरी बातें सुनकर उसे घायल शरीर को देखते हुए ब्राह्मण ने कहा, "तुम्हारी इस बहादरी से मैं बहुत खुश हूं। इसी बहादुरी और साहस के कारण तुम एकदिन वीरों के सिमौर बनोगे। बच्चे तुम किसके पुत्र हो ?"

चंदर ने उसे अपनी मां का नाम बताते हुए कहा, "पिताजी ? का नाम मैं नहीं जानता। मेरी मां का नाम भुरा है। वे ही मेरी माता और पिता हैं। वह ब्राह्मण चंदर को साथ लेकर उसकी मां के पास पहुंचा। उसके शरीर से खून बहते देखकर भुरा ने व्याकुल होकर पूछा, "मेरे बेटे को यह क्या हुआ ?"

"यह तो कुछ भी नहीं है देवी। आज तुम्हारा बच्चा शेर से भिड़ गया था। उस निहत्थे बच्चे की वीरता से में बहुत खुश हूं।" ब्राह्मण ने कहा।

"आप कौन हैं भाई ?" भुरा ने पूछा।

"मेरा नाम विष्णुगुप्त है। मैं चणक ग्राम का रहने वाला हूं। ब्राह्मण हूं लेकिन जंगली जानवरों से रक्षा के लिए धनुष वा लिए रहता हूं।" ब्राह्मण ने कहा। और बड़े प्रेम से चदर के बालों में हाथ फिर त हुए उसे आशीर्वाद दिया "यह बच्चा

अपने छोटे से शरीर मे असीम शक्ति और साहस छिपाये हुए है जैसे प्रथमा के चन्द्रमा में सोलह कलाएं छिपी रहती हैं। आज से इसका नाम चन्द्रगुप्त होगा। मोरों से प्रेम करने तथा भुरा का होने क कारण यह मौर्य कहलायेगा। मैं इसके चक्रवर्ती होने की भविष्यवाणी करता हूं। यह मगध के नंदवंश का नाश करके मौर्यवंश की स्थापना करेगा।

रानी भुरा ने श्रद्धा से सर झुका लिया। उसकी आंखे खुशी से चमकने लगीं। वह बोली, "आपका आशीर्वाद सत्य हो ब्राह्मण देवता।" और बच्चों, बडा होकर यही बालक चंदर चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

—डॉ० रंजना वर्मा
कवि कुटीर
6/11/255, मुगलपुरा (हिदरजंग)
फैजाबाद (उ०प्र०)–**224001**

डा. रोहिताश्व अस्थाना

• संपादक

---

1 जन्म	1-12-1949 अटवा अली मर्दन पुर, हरदोई (उ.प्र)
2 शिक्षा	एम.ए. (हिन्दी) बी०एड०पी०एच०डी०
3 वृत्ति	अध्यापन
4 प्रकाशित बाल साहित्य	
बाल उपन्यास	स्वप्नलोक, काफिले का सूरज, बच्चों की वापसी, सोनू की उड़ान !
बाल कथा संग्रह	भूत से टक्कर, कोयल की सीख, सुनो कहानी-सुनो कहानी
बाल काव्य	आओ गाएं धूम मचाएं, आओ गाएं गीत रसीले, आओ, गाएं मन बहलाएं, आओ बच्चो: गाओ बच्चो, नन्ही गज़लें, सोन्नू के गीत, भारत माँ के राज दुलारे, धूप गुनगुनी हमें बुलाए, अक्षर सीखें गाते-गाते, जय इंदिरा 'गीतमाला' खेलो गाओ: बढ़ते जाओ आदि.... ...
सम्पादित बाल साहित्य	चुने हुए बाल गीत (दो खंडों में) नन्ही कविताएं (शिशुगीत संग्रह-3 भागों में)
पुरस्कार	उ.प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा सूर पुरस्कार से सम्मानित ! शकुन्तला सिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार, बाल कल्याण संस्थान पुरस्कार सहित बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित
अन्य	"डा. रोहिताश्व अस्थाना के विशेष सन्दर्भ में स्वातन्त्र्योत्तरी हिन्दी बाल साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर आगरा विश्व-विद्यालय में पी०एच०डी० स्तर का शोध कार्य हो रहा है।
सम्पर्क	'ऐकांतिका; निकट बावन चुंगी चौराहा गेई - 241001 (उ.प्र)